केशव पण्डित

127 वाँ नया उपन्यास

श्मशान में लूंगी 7 फेरे

धोखे से बचें! नक्कालों से सावधान!

करोड़ों पाठकों की पसंद

एक ही पुस्तक में सम्पूर्ण उपन्यास

धीरज पॉकेट बुक्स

केशव पण्डित के अब तक प्रकाशित 127 उपन्यास

1. सुहाग की हत्या
2. हत्यारा जज
3. खून से सनी वर्दी
4. कानून की दहशत
5. कानून किसी का बाप नहीं
6. सोलह साल का हिटलर
7. कब मिटेगी गुण्डागर्दी
8. नसीब वाला गुण्डा
9. डण्डे की दुनिया
10. केशव का चक्रव्यूह
11. गुण्डों की जंग
12. हिंसा भड़क उठी
13. वर्दी में भरा बारूद
14. मां टकरायेगी कानून से
15. दिमाग का जादूगर
16. धमाका करेगी रोटी
17. लाठी की आवाज
18. जंग का ऐलान
19. तबाही का तूफान
20. जज खड़ा कटहरे में
21. कोर्ट रूम
22. टाइम बम
23. टुकड़े कर दो कानून के
24. लाश पर सजा तिरंगा
25. कानून की लोमड़ी
26. मुंहतोड़ जवाब
27. खून बहा दे लाल मेरे
28. शेर की औलाद
29. मां करोड़ों हैं लाल तेरे
30. दुनिया मेरे कदमों में
31. हिटलर का अवतार
32. मत बेचो कानून को
33. मकड़ी का जाल
34. जिसकी लाठी उसकी भैंस
35. यमराज
36. तबाही मचायेगी विधवा
37. नाच नचायेगा मदारी
38. कानून का खिलाड़ी
39. तिगनी का नाच
40. होली खेलेगा तिरंगा
41. छक्के छुड़ा दूंगा
42. दुल्हन लड़ेगी कानून से
43. खादी में लिपटा माफिया
44. जूता करेगा राज
45. आंचल में है बारूद
46. डाक बंगला
47. मां ललकारे शैतान को
48. चींटी लड़ेगी हाथी से
49. पगली माई बोले जयहिन्द
50. तू लोमड़ी मैं चाणक्य
51. मास्टर माइंड
52. दस दिन का सिकन्दर
53. लड़ेगा भाई भगवान से
54. 48 इंच का हिटलर
55. दिमाग की जंग
56. शेर-चीते की लड़ाई
57. रिंग मास्टर
58. ढाई इंच का बाजीगर
59. चूहे-बिल्ली का खेल
60. बन जा बेटा भस्मासुर
61. अन्धा वकील गूंगा गवाह
62. गंगा बहेगी अदालत में
63. ढाई आने का वकील
64. कानून का जोकर
65. बच्चा-बच्चा है हिन्दुस्तानी
66. बावन गज का बौना
67. आया ऊंट पहाड़ के नीचे
68. जूता ऊंचा रहे हमारा
69. चवन्नी का हाथी
70. डकैती एक रुपये की
71. आंटी बड़ी शैतान है
72. गुरु-चेले की जंग
73. कानून की दुकान
74. तू पण्डित मैं कसाई
75. बब्बर शेर
76. चकमा
77. सास-बहू की जंग
78. ये देश है वीर जवानों का
79. मेरा रंग दे बसंती चोला
80. काला कातिल गोरी लाश
81. पचास करोड़ का भिखारी
82. सौ सुनार की एक लोहार की
83. छूमंतर
84. मर्डर मिस्ट्री
85. बालम का चक्रव्यूह
86. झटका 440 वोल्ट का
87. मुर्दा बड़ा बदमाश है
88. कंकड़ा
89. बारात जायेगी पाकिस्तान
90. किन्नर बादशाह
91. हिमालय से ऊँचा है कानून
92. कातिल मिलेगा माचिस में
93. अन्धा नहीं है कानून
94. दीपावली मनायेंगे सरहद पर
95. दिमाग घूम जायेगा
96. फंस गया जादूगर
97. मर्डर स्पेशलिस्ट
98. तू सेर मैं सवा सेर
99. जिसका डंडा उसका कानून
100. केशव की शादी
101. अर्जुन एक कौरव 101
102. कंकर का जवाब गोली
103. दुल्हन एक रुपये की
104. देख तमाशा नागिन का
105. वो लाश खाने वाला
106. ये शहर है चूहों का
107. डेढ़ पसली का रावण
108. चिराग लड़ेगा तूफान से
109. सिकन्दर हारेगा दिमाग से
110. मेरी बीवी झांसी की रानी
111. बन जाओ सजना तानाशाह
112. शंख बजाऊंगा हाथी नचाऊंगा
113. कब आओगे कृष्ण कन्हैया
114. शेर बोलेगा म्याऊं-म्याऊं
115. कश्मीर नहीं कटोरा मिलेगा
116. बच्चों की बनेगी बटालियन
117. शादी करूंगी यमराज से
118. चिड़ियां लड़ाऊंगा बाज से
119. पुतला नहीं रावण जलेगा
120. तलवार उठा लो गाँधीजी
121. सुदर्शन चक्र है दिमाग मेरा
122. मेरे पति हैं 10 हजार
123. मैं हूं कानून का अवतार
124. अंग्रेजों वापस आ जाओ
125. 125 साल का महापण्डित
126. घुंघरू बांध नाचेगा मुर्दा
127. श्मशान में लूंगी 7 फेरे

128वां आगामी नया उपन्यास हड्डियों से बनेगा ताजमहल

127 उपन्यासों के रचयिता

केशव पण्डित

असली की पहचान



127 उपन्यासों के रचयिता, दिमाग के जादूगर केशव पण्डित के असली एवं नये उपन्यास अब केवल दो फर्म धीरज पॉकेट बुक्स एवं तुलसी साहित्य पब्लिकेशन्स द्वारा ही प्रकाशित होते हैं

अन्य कहीं से नहीं।

उपन्यास : श्मशान में लूंगी 7 फेरे
लेखक : केशव पण्डित
© : प्रकाशकाधीन

प्रकाशक : धीरज पॉकेट बुक्स
अग्रवाल कॉलोनी,
रामलीला ग्राउण्ड के सामने,
दिल्ली रोड, मेरठ-250 002 (उ० प्र०)
फोन : (0121) 2400092, 3257035
मुद्रक : श्री बालाजी ऑफसैट
मेरठ।

श्मशान में लूंगी 7 फेरे : उपन्यास : केशव पण्डित

मूल्य : पचास रुपये केवल

श्मशान में लूंगी 7 फेरे

के कुछ प्रमुख पात्र

क्रान्ति—"शेरनी-सी खूंखार, नागिन-सी खतरनाक और लोमड़ी जैसी चालाक वो बला, जो इन्तकाम की डगर पर चलते हुये शैतान की नानी बन चुकी है।"

सोनू—"पच्चीस साल की उम्र में ही स्वयं को एक सौ पचीस साल का महापण्डित कहता है—क्योंकि उसका दिमाग आम आदमी के दिमाग के मुकाबले पांच गुणा ज्यादा काम करता है।"

सिंगही—"दुनिया का सबसे बड़ा वैज्ञानिक और खतरनाक मुजरिम—जिस पर दुनिया को फतह करके विश्व सम्राट बनने का जुनून सवार है।"

अलफांसे—"इन्टरनेशनल क्रिमिनल, जिसने मोटी दौलत हासिल करने के लिये एक खेल खेला—लेकिन वो नहीं जानता कि कोई उसके साथ ही खेल, खेल रहा है।"

महावीरा—"मुम्बई का गैंगस्टर, जो अपने शिकार को डायरेक्ट सजा नहीं देता, बल्कि उसे उसकी पसन्द का मुकाबला करने का मौका देता है।"

श्मशान में लूंगी 7 फेरे

जुर्म की इस महाभारत में यूं तो कई योद्धा हैं और वो अपना-अपना खेल, खेल रहे हैं। साजिशों के तीर चल रहे हैं—लेकिन उनसे भी बड़ा एक और महारथी है, जो अपने दिमाग के चक्रव्यूह में सभी को फंसाये चला जा रहा है।

"तू शेरनी से ज्यादा शक्तिशाली, नागिन से ज्यादा खतरनाक और लोमड़ी से ज्यादा बुद्धिमान है सोफिया। लेकिन तेरी कमजोरी ये थी कि तू भारतीय नारी थी, जो कि अपने पति और सन्तान के लिये कोई भी बलिदान कर सकती है। तेरी इसी कमजोरी का फायदा उठाया मैंने और आज तू किसी कठपुतली की तरह ही मेरी उंगलियों के इशारे पर नाचने के लिये विवश है...मजबूर है। मुझे तेरे साथ शादी करनी है और तुझे अपनी बीवी बनाना है। मैं समझता हूं कि तू मेरे गले में 'वरमाला' डालने और मेरे साथ सात फेरे लेने से इन्कार करने की हालत में नहीं है। अभी बोल कि मेरे साथ शादी करेगी कि नहीं?"

"हां—मैं तेरे साथ शादी करूंगी—लेकिन मेरी एक शर्त है। मैं तेरे साथ श्मशान में ही सात फेरे लूंगी। क्या तुझे मेरी शर्त कबूल है?"

कौन है वो, जिसने दिमाग के जादूगर 'केशव पण्डित' की धर्मपत्नी सोफिया को अपने साथ शादी करने के लिये विवश कर दिया है?

सोफिया पण्डित ने ये शर्त क्यों रखी कि वो सिर्फ श्मशान में ही सात फेरे लेगी?

श्मशान में लूंगी 7 फेरे

आदि से अन्त तक तेज रफ्तार, रोचक और अविस्मरणीय वो उपन्यास, जिसे सिर्फ दिमाग का जादूगर **केशव पण्डित** ही लिख सकता है।

श्मशान में लूंगी 7 फेरे

केशव पण्डित

"इन्हें जिन्दा कहा जाये कि मुर्दा...?" स्वर्ग की अप्सरा-सी खूबसूरत तथा पन्ना जैसी हरी आंखों वाली सोफिया के कण्ठ से मानो कोयल ही कूक रही थी, "यदि सांस लेने का नाम ही जिन्दगी है तो...इन्हें जिन्दा कहा जा सकता है—वरना तो ये दोनों मुर्दा ही हैं। बोल नहीं सकते—हिल नहीं सकते। अपनी पलकें...यहां तक कि आंखों की पुतलियां तक नहीं हिला सकते। दर्द होने, भूख-प्यास लगने पर बतला नहीं सकते। खुजली होने पर खुजला नहीं सकते—किसी को कुछ बोल नहीं सकते। नाक में रबर की नलकियां लगी हुई हैं। इन्हें भूख-प्यास लगी हो, चाहे नहीं लगी हो—नर्स फिक्स टाइम पर नलकियों में लिक्विड भोजन डालकर इनके पेट तक पहुंचा देती है। ये अभागे कह भी नहीं सकते कि इनका पेट भर गया है कि नहीं? ये...ये भी कोई जिन्दगी है? इससे तो मौत भली। मेरे ख्याल से इन दोनों के साथ घोर अन्याय हो रहा है...।"

कहने पर सोफिया आशीर्वाद को घूरने लगी।

सोफिया और दिमाग के जादूगर केशव पण्डित का पन्द्रह वर्षीय सुपुत्र आशीर्वाद पण्डित सकपकाकर बोला—"आ...आप मुझे यूं क्यों घूर रही हैं मम्मी जी? आखिर मैंने किया क्या है—?"

"तुमने नहीं किया तो किसने किया है...?" क्रोधित भाव से

बोली रूप की रानी, "तुमने ही इन दोनों की कनपटियों को अंगूठे से दबाया था। अपने गुरु शाओलीन जी से सीखी खास विद्या का इस्तेमाल करके तुमने इन दोनों को कोमा वाली हालत में पहुंचा दिया था। दोनों को जिन्दा लाश में तब्दील करने वाले तुम ही तो थे। क्या इन्हें इस कन्डीशन में पहुंचाने वाले तुम ही नहीं हो शैतान लड़के...?"

"ले...लेकिन मैंने तो वो ही किया...जो डैडी जी ने कहा था। डैडी जी का आदेश था—सो मैंने इन दोनों को इस हाल में पहुंचा दिया था। वैसे इस काम में बुराई कुछ नहीं थी। ये दोनों ऐसी ही किसी सजा के पात्र थे। अगर ये नॉर्मल होते तो इन्हें अभी तक फांसी पर चढ़ा दिया जाता...।"

"फांसी पर चढ़ा दिया जाता तो कोई बुराई नहीं थी। इन दोनों को अपने किये की सजा भी मिल जाती और कानून की मर्यादा भी बनी रहती। लेकिन ये जो हुआ, कानून के साथ-साथ मानवता के भी खिलाफ है। किसी को भी कानून को अपने हाथों में लेने का अधिकार नहीं है। इन्हें ठीक करो आशीर्वाद...अभी-के-अभी करो। मुझसे इन दोनों की ऐसी दशा देखी नहीं जा रही है...।"

रंग-रूप, नैन-नक्श में बिल्कुल केशव की प्रतिछाया प्रतीत होते और कद में केशव से भी एक इंच लम्बे आशीर्वाद ने असहाय भाव से चौड़े व ऊंचे कन्धे उचकाये और फिर केशव को यूं देखा कि मानो पूछ रहा हो कि वो क्या करे?

कमरे में राजन शुक्ला, चांदनी तथा करतार सिंह के साथ खड़े केशव पण्डित ने झील-सी नीली आंखों से आशीर्वाद को संयम व धीरज से काम लेने का इशारा किया और फिर दो अलग-अलग बेडों पर लेटे 'उन दोनों' को देखने लगा, जो कि इसलिये जिन्दा कहे जा सकते थे कि उनकी सांसें चल रही थीं ।

"तुमने सुना नहीं लड़के...?" सोफिया आशीर्वाद पर भड़क उठी, "मैंने क्या कहा...क्या वो सुनाई नहीं दिया तुम्हें? इन दोनों को ठीक करो। जिस खास विद्या से इन्हें जिन्दा लाश में तब्दील किया था, उसी विद्या से इन दोनों को नॉर्मल पोजीशन में लाओ...।"

"किसे नॉर्मल पोजीशन में लाना चाहती हो तुम सोफी? इसे...।" दोनों बेडों के बीच पहुंचकर केशव कमजोर हो चली, लेकिन

बला की खूबसूरत नैन-नक्श वाली युवती की निष्प्राण-सी गोल-मटोल कलाई को पकड़कर भभकते-से स्वर में बोला—"जिसका नाम क्रान्ति है? जिसने तुमसे तुम्हारे पति अर्थात् मुझे छीनने की चेष्टा की थी—तुम्हारी सौतन बनने के लिये खतरनाक किस्म की साजिश रची थी? जो देखने में भले ही खूबसूरत युवती है, लेकिन नागिन से ज्यादा जहरीली और मादा भेड़िया से ज्यादा खतरनाक है? ये सिर्फ मेरी ही दुश्मन नहीं है। ये समाज, देश और कानून की भी दुश्मन है। तुम इसके सभी कारनामों से अच्छी तरह वाकिफ हो सोफी। अगर तुम सारी दुनिया में ढूंढने निकलोगी तो इससे...क्रान्ति से खतरनाक दिमाग और काले कारनामों को अन्जाम देने वाली महिला नहीं ढूंढ सकोगी।"

कोमा की अवस्था में लाल कम्बल के नीचे लेटी क्रान्ति की कलाई छोड़कर केशव ने बगल में लेटे युवक के सिर पर हथेली रखकर कहा, "या फिर इसकी बात कर रही हो तुम सोफी? जब ये सिर्फ पन्द्रह साल का ही था तो इसने अपने शहर के चेयरमैन को फांसी के फन्दे पर लटकवा दिया था। जानती हो ना...किसके कत्ल के इल्जाम में? स्वयं अपने कत्ल के झूठे इल्जाम में—जबकि ये जिन्दा था...जिन्दा है। इसने चेयरमैन के हाथों उसी के इकलौते बेटे का कत्ल करवा दिया था। लेकिन साजिश इतनी खतरनाक थी कि अदालत ने चैयरमैन को इसका कातिल माना था और फांसी की सजा दे डाली थी। फिर पच्चीस वर्ष का होने पर ये एक सौ पच्चीस साल का महापण्डित कहलाया—क्योंकि अपनी प्रत्येक सांस में ये चालाकी, धूर्तता, निर्दयता, कपट और विनाश के विषैले तीर छोड़ता था। इसका जुर्म करने का तरीका इतना खतरनाक था कि जुर्म और कानून के महारथियों की भी अक्ल चकराकर रह गई थी। फिर क्रान्ति के साथ मिलकर इसने मुर्दे वाला जो खतरनाक गेम खेला था, उसके बारे में जानती हो तुम सोफी। क्या ये दोनों सुई की नोक बराबर भी दया के काबिल हैं—?"

सोफिया के तेवर थोड़ा ढीले पड़े—लेकिन वो मुट्ठियों को भींचे हुये बोली—जानती भी हूं और मानती भी हूं कि ये दोनों बेहद खतरनाक हैं। इन्हें क्षमा करने के लिये कब बोल रही हूं मैं? इन्हें ठीक करके कानून के हवाले कर दो और फांसी पर चढ़वा दो...।"

"आप कैसी बात कर रही हैं दीदी...?" काफी देर से मूक दर्शक

बनकर खड़ा राजन शुक्ला झिझकते हुये बोला, "गुरुवर ने क्रान्ति और सोनू को कानून के हवाले किया था और दोनों को अदालत में फांसी की सजा सुनाई थी। लेकिन दोनों जेल से फरार हो गये थे। क्रान्ति तो कई बार जेल से फरार हुई। ऐसा तो होता नहीं कि मुजरिम को जेल में भेजा और हाथों-हाथ फांसी पर चढ़ा दिया। हाईकोर्ट और सुप्रीम कोर्ट में अपील होती है। वहां बात ना बने तो राष्ट्रपति के यहां दया की अपील कर दी जाती है। अगर सभी जगह दया की अपील खारिज हो जाये तो ब्लैक वांरट इश्यू होता है और फिर फांसी पर चढ़ाया जाता है। इसमें महीनों, बल्कि वर्षों लग जाते हैं। जबकि क्रान्ति और सोनू इतने खतरनाक हैं कि कोई-ना-कोई जुगाड़ करके जेल से निकल भागेंगे। फिर ये दोनों शातिर दिमाग वाले कौन-सी खतरनाक साजिश रच डालें, या कोई गैर कानूनी कारनामा कर डालें...कहा नहीं जा सकता। समाज, देश और कानून को इनके कुकर्मों से बचाये रखने के लिये यही बेहतर है कि दोनों को इसी कन्डीशन में रखा जाये...।"

"लेकिन इन दोनों की दशा देखकर मुझे अच्छा नहीं लग रहा है राजन। मानती हूं कि दोनों ही खतरनाक किस्म के मुजरिम हैं, लेकिन...जहरीले नाग-नागिन के साथ भी क्रूरता भरा व्यवहार करना पाप होता है। इन्हें कानून फांसी पर चढ़ा दें...कोई गलत बात नहीं। लेकिन इन्हें इस हालत में रखना बहुत गलत है।"

"लेकिन मैडम जी...।" सांवली, लेकिन खूबसूरत नैन-नक्श व शरीर वाली श्वेता गुप्ता कमरे में प्रविष्ट होकर बोली, "इन दोनों को फांसी पर चढ़ाना इतना आसान नहीं। बहुत ही शातिर दिमाग वाले हैं दोनों। इस बार भाग निकलेंगे तो...।"

"ऐसे कैसे भाग निकलेंगे श्वेता...?" थोड़ा कुपित भाव से बोली सोफिया, "क्या हमारे देश में ऐसी कोई जेल नहीं है, जहां इन्हें फांसी होने तक बन्दी बनाकर रखा जा सके? क्या सिक्योरिटी की ऐसी व्यवस्था नहीं की जा सकती कि ये दोनों जेल से भागने की सोच भी ना सकें? अफजल गुरु और कसाब जैसे खतरनाक मुजरिमों को भी टाइट सिक्योरिटी में रखा गया है। वो दोनों लाख कोशिश करके भी जेल से फरार नहीं हो सकते। ना ही कोई बाहरी शक्ति ही उन्हें जेल से निकाल सकती है। ऐसे ही क्रान्ति और सोनू के लिये भी ऐसी टाइट सिक्योरिटी

का बन्दोबस्त किया जा सकता है कि ये अगर भागने की चेष्टा करें तो इन्हें गोलियां मार दी जायें। नहीं...इन्हें इस हाल में रखना गलत है। इन्हें नॉर्मल कन्डीशन में लाकर फांसी पर चढ़ाने के लिये जेल भेज दिया जाये। आशीर्वाद...इन दोनों को कोमा की हालत से बाहर करो...।"

❑❑❑

❑❑❑

आशीर्वाद ने भले ही केशव को प्रश्न-सूचक दृष्टि से देखा—लेकिन उसके चेहरे के हाव-भाव ये चुगली खा रहे थे कि उसे सोफिया की बात कतई पसन्द नहीं आ रही थी—अर्थात् वो सोनू व क्रान्ति को नॉर्मल पोजीशन में लाने का कतई भी इच्छुक नहीं था।

सच तो ये था कि केशव भी नहीं चाहता था कि क्रान्ति और सोनू को होश में लाया जाये।

अपनी आज्ञा की अवहेलना होते देख सोफिया की मुट्ठियां और जबड़े प्रेशर कुकर के ढक्कन की मानिन्द ही भिंच चले।

दूज के चांद-सा धवल चेहरा ढलते सूरज की मानिन्द सुर्ख हो चला।

फूलते-पिचकते नथुनें सांसों की अंधियां छोड़ने लगे।

जबड़े ढीले तो पड़े लेकिन चक्की के पाटों की मानिन्द ही शब्दों के गेहूंओं का आटा-सा पीसने लगे—

"शायद तुम्हारे कानों के पर्दे ठीक से काम नहीं कर रहे हैं लड़के...।"

"ऐसी तोहमत मत लगाइये मम्मी जी...।" चंचल मुस्कान के साथ ही बोला केशव नन्दन, "चींटी भी चकराकर गिर जाये तो मुझे सुनाई पड़ जाता है—।"

"मैं सीरियस हूं और तुम्हें मजाक सूझ रही है...।" सोफिया की क्रोधाग्नि में मानो घी का पूरा टीन उड़ेल दिया गया हो—वो मानो अंगारों पर लोटती हुई चिल्लाई, "कानून, समाज और देश के दुश्मनों से लड़ते-लड़ते तुम भी अपने डैडी की तरह पत्थरदिल हो चले हो। तुम्हारे मन के घोंसले से दया नाम की चिड़िया फुर्र हो चुकी है। मानती हूं कि मुजरिमों और देशद्रोहियों के साथ सख्ती से पेश आना चाहिये—लेकिन किसी के साथ भी ऐसा बुरा व्यवहार नहीं होना चाहिये।

कानून के जरिये फांसी पर लटकवा देना तो न्याय है—लेकिन किसी को जिन्दा लाश बना देना तो सरासर अन्याय है– ।"

"इन दोनों ने अपने शिकारों के साथ जो भी किया...वो हैवानियत थी सोफी... ।" तनिक-सी नाराजगी के साथ बोला केशव, "सोनू और क्रान्ति ने निर्दोष लोगों को बुरी मौत मारा और उनके परिजनों को खून के आंसू रुलाये। इन दोनों को दुनिया की सबसे भयानक और घृणित सजा दी जाये तो...वो कम ही होगी। तुम इन दोनों के काले कारनामे जानती हो—लेकिन ना जाने क्यों तुम्हें आज इन पर इतनी दया क्यों आ रही है...?"

"क्योंकि इन दोनों को पहली बार मैंने इस कन्डीशन में देखा है।" बेडों पर निष्प्राण से लेटे क्रान्ति व सोनू को दयापूर्ण दृष्टि से देखते हुये बोली सोफिया, "खुली आंखों से बस एकटक देखे जा रहे हैं। भले ही इनका जिस्म काम नहीं कर रहा हो...लेकिन दिमाग तो सक्रिय होगा ही। कुछ कहना चाह रहे होंगे—लेकिन कह नहीं पा रहे हैं। भीतर-ही-भीतर छटपटा रहे होंगे...घुट रहे होंगे। यूं एक ही पोजीशन में लेटे-लेटे जिस्म अकड़ रहे होंगे। उफ्फ...कितनी बुरी दशा हो रही होगी दोनों की। नहीं, ये कोई सजा नहीं है...ये तो अन्याय है—अमानवीयता है... ।"

"तुम नाहक ही सेन्टीमेंटल हो रही हो सोफी... ।"

"तुम चाहें जो समझो केशव। लेकिन तुमने आशीर्वाद के जरिये इन दोनों की ऐसी दशा कराके ठीक नहीं किया। इन्हें ठीक कराओ प्लीज। इन्हें कानून के हवाले करो...मेरा मतलब है कि इन्हें हॉस्पिटल से जेल भिजवा दो। वहां इन दोनों को फांसी पर चढ़ा दिया जायेगा। इन्हें इनके किये की सजा मिल जायेगी। रहा सवाल ये कि फांसी लगने से पहले ये दोनों फरार हो सकते हैं—इसकी जिम्मेदारी कानून के रखवालों की है। जब सरकार, प्रशासन और जेल के अधिकारियों को ये मालूम है कि ये दोनों फरार हो सकते हैं तो इनकी कड़ी निगरानी की व्यवस्था की जा सकती है। क्या अपने देश में ऐसे जवान नहीं हैं, जो इन दोनों को फांसी पर चढ़ने तक जेल में कैद करके रख सकें—? बात सिक्योरिटी की नहीं है, तुम ही नहीं चाहते कि इन दोनों को जेल भेजा जाये और

फांसी पर लटकाया जाये। तुम इन्हें जिन्दा लाशें बनाकर रखने में ही खुश हो। लेकिन मैं इन्हें ऐसी दशा में नहीं देख सकती। प्लीज, आशीर्वाद से बोलो कि इन्हें ठीक कर दे... ।"

केशव खामोश रहा—लेकिन उसकी खामोशी किसी चुगलखोर महिला की मानिन्द ही चुगली खा रही थी कि उसे सोफिया की बात या इच्छा पसन्द नहीं आ रही थी—अर्थात् वो क्रान्ति व सोनू को ठीक करने के फेवर में नहीं था।

उसकी मनोदशा को समझ सोफिया की आंखों में सुर्खी उतर आई—

"ठीक है...जैसा तुम चाहो...करो... ।" वह क्रोधातिरेक थर-थर कांपते हुये बोली, "अपनी मनमानी और जिद पूरी करो। लेकिन कान खोलकर सुन लो...तू भी सुन ले रे आशीर्वाद। आज से मेरा खाना-पीना बन्द। पानी की एक बूंद भी होठों से लगाना हराम है मेरे लिये... ।"

"ये तुम क्या कह रही...?"

सोफिया ने दायीं हथेली केशव की आंखों के सामने चीन की दीवार की मानिन्द खड़ी करके उसकी बोलती बन्द कर दी और मानो प्रत्येक शब्द को इमामदस्ते में कूट-कूट कर ही बोली—"कोरी धमकी नहीं दे रही हूं मैं मिस्टर पण्डित। जो बोल रही हूं...वो करूंगी भी। आज से...अभी से मेरा अनशन शुरू। तुम क्रान्ति और सोनू को कष्ट दो—मैं स्वयं को कष्ट दूंगी। मैं कुछ भी खाऊंगी-पीऊंगी नहीं। घर भी नहीं जाऊंगी। यहीं पर बैठूंगी। इन दोनों को देखती रहूंगी। तुम लोग घर जाओ और मौज-मस्ती करो। खूब खाओ और पीओ।"

"लेकिन दीदी... ।"

"तुम चुप रहो राजन। तुम्हें भी कुछ बोलने की जरूरत नहीं। जानती हूं कि तुम भी केशव और आशीर्वाद के फेवर में हो। तुम भी यही चाहते हो कि क्रान्ति और सोनू जिन्दा लाशें बनकर रहें।"

राजन सकपकाकर परे देखने लगा।

वातावरण बोझिल-सा हो चला।

ऐसा सन्नाटा कि अगर कोई मच्छर भी छींके तो ऐसा लगे कि मानो किसी देश ने परमाणु बम का परीक्षण किया हो।

□□□
□□□

करतार सिंह की जुबान ने मेरठ की कैंची बनकर सन्नाटे के पर्दे को काटना शुरू किया—"अगर मैं ये कहूं कि मैं क्रान्ति ते सोनू दे चंगा होने दे फेवर विच हूं तो ये झूठ होगा। लेकिन इन दोनों से कहीं ज्यादा साढे वास्ते परजाई जी दी अहमियत हैगी। परजाई जी नूं दोनों नूं वेखके दुःख हो रहा है ते हम पर की फर्क पेंदा हन? इन दोनों नूं चंगा करके जेल भेज देते हन। ओत्थे इन दोनों दी सिक्योरिटी दे कड़े बन्दोबस्त किये जा सकदे हैं। ये कोशिश की जा सकदी है कि ये दोनों लख कोशिश करके वी फरार नी हो सकें। अगर फरार होने दी कोशिश करें तो इन्हानूं गोलियां मार दी जायें।"

"ये आप क्या कह रहे हैं पटियाले वाले अंकल जी...?"

"चुप करी निक्के पुत्तर जी...।" तनिक नाराजगी के साथ ही आशीर्वाद से बोला करतार सिंह—"की...तुहाड्डे वास्ते क्रान्ति ते सोनू दी दुश्मनी ही मायने रखदी है—साढी परजाई जी दी कोई अहमियत नी है? परजाई जी दी इच्छा दी कोई वैल्यू नी हैगी? वेख्या जाये तो इनकी इच्छा विच कोई बुराई वी नी है। मतलब तो क्रान्ति ते सोनू नूं सजा मिलने से है। दोनों नूं फांसी दे फन्दे तो लटका दियी जावेगा तो...खेल खत्म पैसा हजम। प्राहवा जी...।" वह केशव की तरफ पलटकर विनीत भाव से बोला, "मैं आपसे रिक्वेस्ट करदा हूं कि क्रान्ति ते सोनू नूं चंगे करा दो। परजाई जी ने खाना-पीना छड दीता तो वड्डी प्रॉब्लम खड़ी हो जाणी है। हममें से कोई वी नी चाहेगा कि परजाई जी दी तबियत खराब हो। परजाई जी दी खुशी दे वास्ते कुश भी किया जा सकदा है।"

केशव ने हौले-हौले सिर को जुम्बिश देकर सहमति प्रदान की और फिर सोफिया के करीब पहुंचकर गम्भीर भाव से बोला—"तुम स्वयं को जरा-सा भी कष्ट दो...ये हममें से कोई भी नहीं चाहेगा। तुम जो चाहती हो...वो ही होगा। लेकिन एक बार दिल की बजाय दिमाग से काम लेकर फैसला कर लो। हालांकि क्रान्ति और सोनू की पूरी निगरानी की जायेगी। इनकी जेलों की सिक्योरिटी बढ़ा दी जायेगी। लेकिन पहले भी दोनों को टाइट सिक्योरिटी में रखा गया था। फिर भी ये जेल से

फरार हो गये थे। दोनों ने...खास करके क्रान्ति ने जमकर धमाल मचाया था। इस बार दोनों को फरार होने का मौका मिल गया तो...ना जाने कितनी तबाही मचायेंगे।"

"अगर ऐसा हुआ भी तो इसके लिये वो लोग जिम्मेदार होंगे, जिन पर इनकी निगरानी की जिम्मेदारी होगी। तुम इन्हें ठीक कराकर जेल भिजवाओ—।"

केशव ने असहाय भाव से कन्धे उचकाये और फिर आशीर्वाद से बोला—अपनी मम्मी जी की इच्छा पूरी करो बेटा। क्रान्ति और सोनू को कोमा की हालत से बाहर निकाल दो—।"

"जैसी आपकी आज्ञा...पिताजी महाराज...।" आशीर्वाद कन्धे उचकाकर तथा ठन्डी आह-सी भरकर बोला, "मैं तो इन्हें ठीक कर दूंगा। लेकिन डर है कि कल को ये दोनों कोई बड़ी मुसीबत खड़ी ना कर दें...।"

"इनकी कड़ी निगरानी की जायेगी। मैं जेल मन्त्री से बात करूंगा। उनसे बोलूंगा कि क्रान्ति और सोनू पर चौबीसों घंन्टे नजरें रखी जायें—इनकी तमाम एक्टीविटीज को वाच किया जाये। किसी को इनसे मिलने ना दिया जाये। कुल मिलाकर ऐसी चुस्त व्यवस्था की जाये कि ये फांसी पर चढ़ने से पहले तक जेल से फरार होने की कल्पना भी ना कर सकें। वैसे भी इन दोनों को अलग-अलग जेलों में रखा जायेगा और ये एक-दूसरे से सम्पर्क नहीं कर सकेंगे। तुम इन दोनों को ठीक करो। हम लोग इन्हें जेल तक छोड़कर आयेंगे—।"

अनिच्छा से ही सही, लेकिन आशीर्वाद आगे बढ़ा और दोनों बेडों के बीच रखे स्टूल को हटाकर फर्श पर पदमासन की मुद्रा में बैठ गया।

बायीं हथेली गोद में रखकर उसके ऊपर दायीं हथेली रखी और आंखें मूंदकर अस्फुट स्वर में किसी मन्त्र को बुदबुदाने लगा।

केशव, सोफिया, राजन, चांदनी तथा करतार सिंह मूक दर्शक बने हुये लड़के के क्रिया-कलापों को देखे जा रहे थे।

मन्त्रोच्चारण बन्द करके आशीर्वाद ने झील-सी नीली आंखें खोलीं और नजरों का फोकस सोनू के चेहरे पर केन्द्रित कर दिया।

फिर उसने दायें हाथ के अंगूठे के ऊपरी हिस्से को सोनू के दायें कान और आंख के बीच में रखा।

यूं ही लगा कि कंपकंपता हुआ अंगूठा खाल व गोश्त को भेदकर हड्डी में धंसा जा रहा था।

सोनू के चेहरे पर अचानक ही पीड़ा के भाव उभरे और बन्द होठों से 'ऊं...ऊं' की आवाज निकली।

फिर उसके निष्प्राण से होंठ हिलने पर खुले और वह सिर को झटके-से देते हुये कराहने लगा।

उसके समूचे जिस्म में मानो भूकम्प-सा उत्पन्न हो गया।

घुटनों को मोड़कर और ऊपर उठाकर वो एड़ियों को बिस्तर पर रगड़ने लगा—फिर उसने आशीर्वाद की कलाई को दोनों हथेलियों से पकड़ लिया और कनपटी में धंसते जा रहे अंगूठे को हटाने की चेष्टा करने लगा।

लेकिन आशीर्वाद का अंगूठा भी 'अंगद का पैर' था—हिलाये नहीं हिल रहा था।

जल बिन मछली की मानिन्द तड़पते और छटपटाते सोनू का समूचा जिस्म पसीने से यूं सराबोर हो चला कि मानो किसी झील में डुबोकर बाहर निकाला गया हो।

अचानक ही तेज व पीड़ा भरी चींख के साथ उसने आंखें खोल दीं और दमे के मरीज की मानिन्द ही हांफने व कराहने लगा।

□□□

□□□

सोनू को नॉर्मल होने में पांच मिनट लगी।

"मुर्दा हो गया...जिन्दा...।"

उक्त आवाज को सुनकर उसने केशव को देखा।

चारमीनार की सिगरेट में कश लगाकर और गुलाबी होठों को गोलाकार करके केशव ने सोनू के पीलिया के मरीज जैसे हल्के पीले चेहरे पर धुंऐं का गोला दागा और फिर व्यंग भरे लहजे में बोला—"ऐसे क्यों देख रहे हो—जैसे सुहाग सेज पर बैठी दुल्हन अपने दूल्हे राजा को वारी हो जाने वाली नजरों से देखा करती है?"

"मैं...मैं कहां हूं...?"

"मुम्बई के हॉस्पिटल में...।"

"ले...लेकन मुझे हुआ क्या था...?" सोनू दुविधा के चक्रवात

में फंसा हुआ बोला। "इतना तो याद है कि आशीर्वाद ने अंगूठे से मेरी कनपटी को दबाया था और शायद मैं बेहोश हो गया...।"

"बेहोश नहीं हुये थे प्यारे...मुर्दा बन गये थे...।"

"मु...मुर्दा?"

"हां, मुर्दा...।" उसके चेहरे पर झुककर और उसकी दुविधा भरी आंखों में झांकते हुये बोला केशव, "कोमा की हालत में पहुंचा व्यक्ति मुर्दे के समान ही तो होता है। आशीर्वाद किसी को भी कोमा की दशा में पहुंचाने वाली विद्या में पारंगत है। इसके शिकार को दुनिया का कोई भी डॉक्टर, सर्जन या साइंटिस ठीक नहीं कर सकता। तुम सिर्फ इसलिये जिन्दा थे—क्योंकि तुम्हारी सांसें चल रही थीं—वरना तुममें और किसी मुर्दे में कोई फर्क नहीं था। तुम बोल नहीं सकते थे—हिल नहीं सकते थे। कोई इशारा नहीं कर सकते थे। आंखें खुली होने पर भी पुतलियां नहीं हिला सकते थे, पलकें तक नहीं झपका सकते थे। आशीर्वाद ने थोड़ी देर पहले ही तुम्हारी नाक में लगी नलकी निकाली है—उसी के जरिये तुम्हारे पेट में लिक्विड भोजन पहुंचाया जा रहा था—या ड्रिप के जरिये जीवन-रक्षक दवाइयां पहुंचाई जा रही थीं...।"

"ले...लेकिन मुझे इस कन्डीशन में क्यों पहुंचाया गया? मैंने जुर्म किये तो इसके लिये कानून मुझे कोई भी सजा देता। बल्कि कानून मुझे पहले ही फांसी की सजा सुना चुका है...।"

"लेकिन फांसी के फन्दे पर झूलने से पहले ही तू भाग निकला था।" आशीर्वाद उसके सिर के बालों में उंगलियों की कंघी-सी करते हुये सर्द-से लहजे में बोला, "इसमें क्रान्ति ने भी तेरी मदद की थी। क्या खूब ड्रामा खेला था तूने। जिन्दा होते हुये भी मुर्दा बन गया था। लेकिन भूल गया था कि मेरे पूजनीय पिताजी अर्थात् श्रीमान केशव पण्डित जी के सामने बड़े-से-बड़े, शातिर-से-शातिर मुजरिम का हजार का नोट भी खोटी चवन्नी में तब्दील हो जाता है। डैडीजी ने तुझे तेरे या क्रान्ति के गुन्डों के सामने ही पैरों में घुंघरू बान्धकर नचवाया था। इतना नचवाया था कि तू दमे के मरीज की तरह ही हांफने लगा था। डैडी जी नहीं चाहते थे कि तुझे और क्रान्ति को फांसी पर चढ़ाया जाये। तुम दोनों को जिन्दा, लेकिन बेजान मुर्दों में परिवर्तित करने का आदेश हुआ था और मैंने आदेश का पालन कर दिया...।"

"क...क्रान्ति...!" बगल वाले बेड पर लेटी क्रान्ति को देखकर वो चौंका और उठ बैठकर बोला, "...तुम भी यहीं पर हो क्रान्ति? क्या हुआ तुम्हें...क्या तबियत खराब है? अरे...तुम कुछ बोलती क्यों नहीं हो– मेरी बात का जवाब क्यों नहीं देती हो...?"

"जवाब तो तभी देगी ना...जब ये होश में हो...।"

"क्या मतलब है तुम्हारा आशीर्वाद–?"

"ये कोमा की हालत में हैं। इसे जिन्दा लाश कहा जाये तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी...।"

"ओह...समझा! तो क्या ये इसी हाल में रहेगी–?"

"रहना तो इसी हाल में ही चाहिये था...।" ठन्डी आह-सी भर कर बोला केशव का छोरा, "...लेकिन पूज्य माताजी की इच्छा और श्रद्धेय पिताजी का आदेश है कि तुम्हारे साथ-साथ क्रान्ति को भी ठीक कर दिया जाये। सो मैं क्रान्ति देवी को भी ठीक करने जा रहा हूँ। देखते हैं कि होश में आने पर इसकी क्या प्रतिक्रिया होती है...?"

❑❑❑

❑❑❑

नॉर्मल होते ही क्रान्ति उठ बैठी और केशव को भस्म कर देने वाली नजरों से घूरते हुये बोली– "ये सब क्या हैं पण्डित? मेरी नाक में नलकी और कलाई में ड्रिप लगी हुई थी। ये रूम शायद किसी हॉस्पिटल का है। मैं और सोनू तो अपने अड्डे पर थे। फिर यहां कैसे आ गये? हमें तो जेल में होना चाहिये था...।"

"तुम शायद भूल गई हो क्रान्ति...इस लड़के आशीर्वाद ने हमारी कनपटियों पर अपने अंगूठे से कुछ किया था...।"

"ओह...हां, हम बेहोश हो...।"

"बेहोश नहीं हुये थे क्रान्ति...कोमा में चले गये थे–या यूं कह लो कि जिन्दा लाश में बदल दिये गये थे...।"

"ये...तुम हमारे साथ कौन-सा खेल खेल रहे हो केशव पण्डित...?" जिस्म की कमजोरी व पीड़ा को नजर अन्दाज करके किसी नागिन की मानिन्द ही फुंफकारी क्रान्ति, "...माना कि इस बार भी अपनी किस्मत दगा दे गई थी और क्लाइमेक्स में बाजी तुम्हारे हाथ

में पहुंच गई थी। लेकिन हमें कानून के हवाले करने की बजाय तूने अपने बेटे के माध्यम से कोमा में क्यों पहुंचवा दिया था?"

"क्योंकि मैं नहीं चाहता था कि तुम दोनों को फांसी पर चढ़ाया जाये..." मुस्कराकर और संयम से काम लेते हुयें ही बोला केशव, "...एक बार तूने ही कहा था कि दुश्मन को मारना नहीं चाहिये। दुश्मन खत्म तो दुश्मनी भी खत्म। दुश्मन को जिन्दा रखना चाहिये– लेकिन उसकी जिन्दगी को मौत से भी बदतर कर देना चाहिये। क्यों...कहा था ना? सो मैंने भी तुम दोनों को जिन्दा लाश में तब्दील कर दिया था...।"

"तो फिर हमें होश में क्यों लाया गया? क्या दुश्मनी खत्म हो गई–?"

"तुम जैसे मुजरिमों से दुश्मनी खत्म होने का तो कोई सवाल ही नहीं बनता। ये हमारी श्रीमती जी हैं ना...सोफिया पण्डित जी ! सनडे का दिन है। हम लोग पिकनिक मनाने के लिये जा रहे थे। रास्ते में ये हॉस्पिटल पड़ा तो मिसेज पण्डित ने तुम दोनों को देखने की इच्छा जाहिर की। तुम दोनों को देखा तो भावुक हो चलीं...तड़प उठीं ! जिद पकड़ ली कि तुम दोनों को ठीक किया जाये...होश में लाया जाये। घर में रहना है तो...श्रीमती जी की बात माननी ही पड़ेगी। सो आशीर्वाद को बोल दिया कि तुम दोनों को ठीक कर दिया जाये। वरना तुम्हारी ये जो आंखें मुझे भस्म कर देने वाले अन्दाज में घूर रही हैं...शून्य में घूर रही होतीं। इनमें आशा की बजाय बेचारगी और लाचारी भरी होती। सोफिया को थैंक्यू बोलो कि इसकी वजह से तुम हिल-डुल रही हो, जिन्दा लाश वाली कन्डीशन से मुक्ति पा चुकी हो...।"

क्रान्ति ने सोफिया को हिकारत भरी नजरों से देखा और बुरा-सा मुंह बनाकर बोली– "...तुम क्या समझती हो... तुम थैंक्यू पाने की हकदार हो? भावुकता और बेवकूफी में खास फर्क नहीं होता। भूल गई कि मैंने तेरे पतिदेव को छीनने की... केशव को अपना बनाने की चेष्टा की थी और इसके लिये बहुत ही खतरनाक खेल, खेल था? अगर मैं कामयाब हो गई होती तो मैं केशव के साथ मजे से गृहस्थी जमा रही होती और तेरी फोटो पर फूलों का हार चढ़ा होता। तुझे मौत के कफन में लपेट कर हमेशा-हमेशा के लिये ऊपर पहुंचाने का बन्दोबस्त कर

दिया था मैंने लेकिन तू जिन्दा है और तेरा पति तेरा ही है तो इसलिये कि तेरा पति अर्थात् केशव पण्डित बहुत स्मार्ट है... चालाक है। हमेशा अपनी चालाकी से ही जीतता है ये। जबकि तूने चालाकी को ताक पर रखकर बेवकूफी से काम लिया है। मेरी जगह दूसरी कोई होती तो तेरा अहसान मानते हुये हाथ जोड़कर आभार व्यक्त करती। हो सकता है कि अपना सिर ही तेरे चरणों में रख देती। लेकिन मुझसे...क्रान्ति से ऐसी उम्मीद मत रखना क्योंकि मैं बेवकूफ मित्र से बढ़कर अक्लमन्द दुशमन को पसन्द करती हूँ...।"

"क...कमाल की औरत है ये...।" सकपकाकर और थोड़ी नराजगी भरे लहजे में बोली सोफिया, "लाश की तरह पड़ी थी ये। हिल नहीं सकती थी... कुछ बोल नहीं सकती थी। यूं ही पड़ी रहती और सड़-सड़ कर मर-खप जाती। ये है कि अहसान मानने की बजाय मुझे बेवकूफ बोल रही है। अगर आशीर्वाद को बोल दूं तो फिर से लाश बन कर रह जायेगी...।"

"तो बोल दे ना...देर क्यों करती है? फांसी पर लटकते वक्त जो तकलीफ होती है... उससे तो बच जाऊंगी। कोमा की हालत में कब मर जाऊंगी...पता भी नहीं चलेगा।"

सोफिया ने हथेलियों को चौड़ाकर और उंगलियों को भीतर की तरफ मोड़कर मोती से दमकते दांतों को यूं पीसा कि मानो क्रान्ति का गला दबोच लेना चाहती हो। फिर पैरों को फर्श पर पटकते हुये और बाहर की तरफ लपकते हुये बोली— "भाड़ में जाये ये कमीनी, मैं गाड़ी में बैठकर तुम सभी का इन्तजार कर रही हूँ...।"

❑❑❑

❑❑❑

"तूने मेरी मम्मी जी के साथ ठीक व्यवहार नहीं किया...।" क्रान्ति को घूरते हुये बोला आशीर्वाद, "...मेरी मजबूरी ये है कि तुझे कम-से-कम अड़तालीस घन्टों तक कोमा वाली कन्डीशन में नहीं पहुंचा सकता— कनपटी के उस खास हिस्से पर अंगूठे का हल्का-सा दबाव पड़ते ही दम तोड़ देगी। कानून और डैडी जी कतई पसन्द नहीं करेंगे कि मेरे हाथों तेरी हत्या हो। अड़तालीस घन्टे तक तुझे कुछ नहीं कर सकता।"

"अब इसे और सोनू को कुछ नहीं करना है...।" केशव आशीर्वाद के कन्धे पर हथेली रखकर बोला, "...एक बार इन दोनों को होश में ले आये तो...ले आये! अब इन दोनों को जेल में पहुंचाना है और इनके फांसी के फन्दे पर झूलने का इन्तजार करना है...।"

"मैं दावा तो नहीं करूंगी पण्डित कि हम दोनों को फांसी की सजा नहीं हो पायेगी। लेकिन इस बात का दावा अवश्य करूंगी कि हमें फांसी पर चढ़ाना इतना आसान भी नहीं होगा...।" जिस्म भले ही कमजोर हो चला था, लेकिन क्रान्ति के तेवर फौलादी ही थे, "...हम दोनों अपनी तरफ से जेल से फरार होने की पूरी चेष्टा करेंगे...।"

"कोई फायदा नहीं होगा...।" मुस्कराकर बोला केशव, "तू महिला और सोनू पुरुष जेल में... यानि दोनों अलग-अलग जेलों में रहोगे। तुम दोनों में कोई सम्पर्क नहीं हो पायेगा। तुम्हारी निगरानी के लिये विशेष इन्तजाम किये जायेंगे। तुम्हारी हरेक एक्टीविटीज को वाच किया जायेगा। तुम्हारी एक-एक सांस का हिसाब-किताब रखा जायेगा। अन्डा सैल का नाम तो सुना ही होगा...उसी में रखा जायेगा दोनों को। दूसरे कैदियों के सम्पर्क में नहीं जाने दिया जायेगा। कोई अखबार, कोई रेडियो या टी०वी० नहीं। कुल मिलाकर बाहरी दुनिया से तुम्हारे कनेक्शन काट दिये जायेंगे। शेखचिल्ली की तरह ख्याली पुलाव पकाते रहना और ख्यालों में ही खाते रहना। ऐसा नहीं कि जेल से बाहर नहीं निकलोगे। फांसी के बाद अन्तिम-संस्कार के लिये निकलोगे। लाशों का दावा करने वाला तो कोई होगा नहीं— सो पुलिस वाले ही लावारिस करार देकर फूंक देंगे...।"

मुस्कराई क्रान्ति।

सोनू भी मुस्कराया और फिर बोला— "...हो सकता है कि ऐसा ही हो केशव पण्डित। हमें फांसी पर लटका दिया जाये और लावारिसों की तरह ही फूंक दिया जाये। लेकिन मामला इसके उल्ट भी हो सकता है। इससे पहले भी मुझे फांसी की सजा सुनाकर जेल भेजा गया था और मेरी निगरानी के लिये पूरे जोर लगाये गये थे। लेकिन क्या हुआ था? मैं फरार हो गया था। मुझे अन्डा सैल में रखना, चाहे फौलाद के बने पिंजरे में। लेकिन मेरे दिमाग पर तो पहरा नहीं लगाया जा सकेगा। मेरा दिमाग क्या बला है— ये बतलाने की जरूरत नहीं। सारी दुनिया

जान चुकी है कि एक सौ पच्चीस साल के महापण्डित का दिमाग सुपर कम्प्यूटर से भी तेज काम करता है। मैं टुच्चे मुजरिमों की तरह आम किस्म के जुर्म नहीं करता। ना ही उपन्यासों और फिल्मों से ही आइडिये चुराता हूं। मैं अपने दिमाग में आइडिये तैयार करके उन पर अमल करता हूं। यूं मुस्करा क्यों रहा है तू पण्डित...?"

"ओये खोतेया...? भड़क उठा करतार सिंह, "साठे प्राहवा जी दे नाल तमीज तो पेश आ... नई तो हुणे ई तेरा बूथा भन्न देवांगा। मार-मार कर थोबड़ा इतना बिगाड़ दूंगा कि मलूम नी पड़ेगा कि चेहरा किथे है और सिर किथे...।"

केशव ने हाथ उठाकर करतार सिंह को खामोश किया और सोनू की आंखों में झांकते हुये बोला– "...मेरे मुस्कराने का मतलब नहीं निकाल सकता तू और स्वयं को जुर्म का शहंशाह-ए-आलम समझता है। माना कि तूने बहुत थोड़े वक्त के भीतर ढेर सारे जुर्म किये थे और उन जुर्मों ने लोगों की खोपड़ी भी घुमाकर रख दी थी– लेकिन उन लोगों में मैं शामिल नहीं था। उधर तू जुर्म करता था और इधर मैं बतला देता था कि तूने उस जुर्म को कैसे किया था। फिर जल्दी ही तू मेरे हत्थे चढ़ा था और मैंने तेरी क्या दुर्गति की थी... याद है ना–?"

"वो अपना पहला टकराव था पण्डित। तेरे बारे में सुना था–जानता भी था कि तू माइन्डेड है लेकिन मैं ओवर-कॉंफीडेन्स का शिकार हो गया था। लेकिन इस बार पहले वाली गलतियां नहीं होंगी पण्डित।"

"गलतियां तो तब करेगा ना...जब तुझे मौका मिलेगा। यहां से सीधे जेल और जेल से फांसी के फन्दे पर।"

"बताने की जरूरत नहीं कि हम दोनों को कानून फांसी की सजा सुना चुका है...।" चोटिल नागिन की मानिन्द ही फुंफकारकर बोली क्रान्ति, "कानून के रखवालों का दांव लगा तो हम दोनों को फांसी पर लटका भी देंगे। लेकिन अभी काफी वक्त है। नदियों में ना जाने कितना पानी बह जायेगा। हवाओं के कितने ही झोंके दुनिया की दूरी नाप चुके होंगे। ना जाने कब सैलाब आ जाये, ना जाने कब आंधी और तूफान आ जाये। हमें किश्ती बनकर समन्दर पार करना भी आता है और पतंग बनकर हवा में उड़ने की कला भी आती है। अगर दांव लगा तो हम उड़न छू हो जायेंगे...।"

क्रान्ति के लहजे पर आशीर्वाद, राजन और करतार सिंह ही नहीं, बल्कि चांदनी को भी क्रोध आ रहा था, लेकिन उन लोगों के विपरीत केशव संयम से काम लेते हुये बासुंरी की तान जैसे मधुर लहजे में बोला– "अव्वल तो ऐसा होगा नहीं कि तुम दोनों उड़न छू हो जाओ। अगर ऐसा कोई करिश्मा हो भी गया तो तुम दोनों का सौभाग्य नहीं, दुर्भाग्य ही होगा। क्योंकि तुम दोनों एक बार को यमदूतों से बच सकते हो, लेकिन केशव पण्डित से नहीं। जहां धूप, चांदनी और हवा भी नहीं पहुंच पाती... वहां मैं पहुंच जाया करता हूं। फरार हो भी गये तो कहां जाओगे और कहां छिपोगे? दुनिया के आखिरी सिरे तक पहुंच है मेरी। नाखूनों से पत्थरों को खोदते हुये पाताल में भी पहुंच जाऊंगा। स्वर्ग में तुम दोनों की एन्ट्री नहीं है– नरक में पहुंच गये तो वहां से भी चिमटी से पकड़कर कानून की दुनिया में ले आऊंगा। मेरी पहुंच और पकड़ का नजारा तुम दोनों ही देख चुके हो।"

"इत्तफाक से एक बार बाजी तेरे हाथ लग गई तो...।"

"इत्तफाक नाम की चिड़िया पर सवारी नहीं करता हूं मैं ओये सोनू। मैं तुक्के के धनुष से तीर नहीं चलाता हूं। मेरा निशाना अचूक होता है। बगल में बैठी क्रान्ति से पूछ ले। कई बार फरार हुई ये– लेकिन लाख चेष्टा करके भी ये मेरी पकड़ से दूर नहीं जा सकी। चाहता तो इसका खात्मा कर सकता था। लेकिन मैं इसके साथ ऐसे ही खेलता रहा– जैसे कोई शेर किसी चुहिया के साथ खेला करता है...।"

"चुहिया किसे बोल रहा है तू ओये पण्डित...?" आग-बबूला होकर बोली क्रान्ति, "...शैतान ने नागिन, शेरनी, डायन, चुड़ैल जैसी खतरनाक आत्माओं को इकट्ठा किया और बारूद में तेजाब घोलकर बनाये गये पुतले में उन आत्माओं को प्रविष्ट करा दिया था। भगवान ने नहीं, शैतान ने अविष्कार किया था मेरा। इस खूबसूरत जिस्म के भीतर लावा ही भरा हुआ है। इस हसीन चेहरे के पीछे हैवानियत से भरा दिमाग छिपा हुआ है। अगर किसी को घूरकर देख लूं तो जलाकर भस्म कर दूं। मेरी एक फुंफकार से फौलाद भी मोम की तरह पिघलकर मिटट्री में मिल जायें...।"

"डैडी जी... आज्ञा दीजिये...।" आशीर्वाद ताव खाकर बोला,

"...बहुत जुबान चल रही है इसकी! इसके गले पर ऐसा वार करूंगा कि ये अगले जन्म में भी गूंगी ही पैदा होगी...।"

"क्रोध पर नियन्त्रण करना सीखो प्यारे...।" केशव लड़के के सिर को सहलाते हुये बोला, "...जुबानजोर औरत जुबान नहीं चलायेगी तो... क्या चलायेगी? वैसे भी इसके होश ठिकाने नहीं हैं। कई बार कयामत ढाने की चेष्टा की इसने लेकिन हर बार मुंह की ही खाई। फतह के नाम पर इसकी मुठियों में चुटकी भर मिट्टी ही आई और वो भी हवा के तेज झोंके में उड़ गई। बार-बार मिलने वाली शिकस्त ने इसके दिमाग की दही जमा दी है। इसके होश ठिकाने पर नहीं हैं। जब इसकी आंखों के सामने फांसी का फन्दा होगा... तब होश ठिकाने आयेंगे। मैं समझता हूं कि हमें वक्त बर्बाद नहीं करना चाहिये। इन दोनों को इनकी मन्जिल पर... अर्थात् जेल पहुंचा देते हैं। जल्लाद आयेगा और इनकी गर्दनों का नाप लेकर फन्दा बनाने की तैयारियों में जुट जायेगा। इन दोनों की बोलती बन्द करो, इनके मुंह पर टेप चिपका दो। डोरियों से हाथों को बान्ध दो और गाड़ी में लादकर जेल पहुंचा दो... आने वाला वक्त बतला देगा कि... आगे क्या होता है—!"

❑❑❑

❑❑❑

केशव की आज्ञा का पालन हुआ।

राजन और करतार सिंह ने नायलोन की डोरियों से सोनू और क्रान्ति के ना सिर्फ हाथ, बल्कि पैरों को भी बान्ध दिया— जबकि आशीर्वाद ने दोनों के होठों पर टेप चिपका दी।

दोनों की निगरानी के लिये काफी संख्या में पुलिस वाले हॉस्पिटल के भीतर और बाहर तैनात किये गये थे— जिनका ऑफिसर इन्सपेक्टर अनिल यादव को बनाया गया था।

केशव का फोन पहुंचते ही नई-नवेली बीवी महिमा के साथ आलू-प्याज के परांठों का लुत्फ ले रहा अनिल यादव सिर के बल ही दौड़ता हुआ आया और क्रान्ति व सोनू को अपनी कस्टडी में ले लिया।

पुलिस की जिस गाड़ी में क्रान्ति व सोनू को डाला गया था, उसके आगे और पीछे हथियारबन्द पुलिसवालों से भरी कई गाड़ियां चल रही थीं।

लाल रंग की टाटा सफारी में आशीर्वाद, राजन शुक्ला व करतार सिंह भी साथ चले और क्रान्ति व सोनू को अलग-अलग जेलों में पहुंचा कर और उनकी निगरानी की कड़ी व्यवस्था कराके ही वापिस लौटे।

जबकि केशव सोफिया व चांदनी के साथ दूसरी गाड़ी से घर पहुंचा और दोनों को छोड़कर तुरन्त ही राज्य के जेल-मन्त्री से मिला— उससे कहा कि वो ऐसी व्यवस्था करे कि क्रान्ति और सोनू को फरार होने का मौका ना मिलने पाये।

लेकिन... होना तो कुछ और ही था।

❑❑❑

❑❑❑

15 अगस्त!

भारत की आजादी का दिवस।

पूरा हिन्दुस्तान राष्ट्रीय पर्व मना रहा था।

वो जेल भी इस जश्न से अछूती नहीं थी, जिसमें क्रान्ति को कैदी बनाकर रखा गया था।

महिला जेलर शिवानी ने मुख्य अतिथि के रूप में स्वास्थ्य मन्त्री मनोरमा देश पाण्डे को आमन्त्रित किया था।

जेल के लम्बे-चौड़े प्रागंण के बीचो-बीच सीमेन्ट के गोल चबूतरे में गड़े खम्भे पर तिरंगे को बान्धा गया था और ऐसी व्यवस्था की गई थी कि डोरी के खींचे जाने पर फूलों की पंखुड़ियां इधर-उधर बिखरें और फिर तिरंगा हवा में लहराये।

तिरंगे वाले खम्भे के करीब ही चार फुट ऊंचा और आयताकार मंच था, जिस पर सोफे और मेज रखी हुई थी। मेज पर फूलों का गुलदान और बिसलेरी पानी की चार बोतलें रखी हुई थीं। करीब वाली दूसरी मेज पर कई थालियों में मोतीचूर के लड्डू रखे हुये थे।

स्टेज की बैक साइड में हेलीपैड बनाया गया था।

शिवानी देशपान्डे सिर्फ मन्त्री ही नहीं थी, बल्कि बहुत बड़े उद्योगपति की धर्मपत्नी भी थी और उसके पास निजी हेलीकॉप्टर था, जिसका खर्चा वो स्वयं वहन करती थी।

जेलर और अन्य जेलकर्मी तो बढ़िया पोशाक पहने हुये थे ही—

साथ ही मैदान में बैठी महिला कैदी भी धुली और प्रेस की हुई पोशाक पहने हुये थी।

सिर्फ एक को छोड़ बाकी सभी कैदी मैदान में उपस्थित थीं। जो उपस्थित नहीं थी, वो थी... क्रान्ति।

हांलाकि पहले से ही सुरक्षा व्यवस्था के इन्तजाम थे और मन्त्री के आने के कारण सुरक्षा व्यवस्था को और भी कड़ा कर दिया गया था लेकिन जेलर शिवानी जरा सा भी रिस्क नहीं लेना चाहती थी— इसी लिये उसने निर्णय किया था कि क्रान्ति अन्डा सेल में ही रहेगी और स्वतन्त्रता दिवस के कार्यक्रम में सम्मलित नहीं होगी।

झन्डारोहण का समय हो चुका था, इसलिये व्याकुलता के साथ मन्त्री जी की प्रतीक्षा की जा रही थी।

अचानक ही उभरी इंजिन की गड़गड़ाहट ने सभी का ध्यानाकर्षण किया।

आसमान में उड़ते पीले रंग के हेलीकॉप्टर को देख सभी उत्साहित हो चले तो हथियारों से लैस सुरक्षाकर्मी एलर्ट हो उठे।

आठ बैन्ड-बाजों वालों ने 'सारे जहां से अच्छा... हिन्दोस्तां हमारा' वाली धुन छेड़ दी।

जेलर शिवानी फूलों का हार लेकर हेलीपैड पर पहुंच गई— हेलीकॉप्टर जमीन पर उतरा और चार हथियारबन्द ब्लैक कमान्डोज के साथ स्वास्थ्य मन्त्री मनोरमा देशपाण्डे अभिवादन की मुद्रा में हाथ हिलाते हुये बाहर निकली।

लगभग पैंतालीस वर्षीय मनोरमा देशपाण्डे पीले रंग की साड़ी में थी और कत्थई रंग के लैंसेज वाला चश्मा लगाये हुये थी।

जेलर ने उसको फूलों का हार पहनाया और गदगद भाव से बोली— "...वेलकम मैडम जी! इस महिला कारागार में आपका हार्दिक स्वागत है...। आइये, पधारिये...।"

ब्लैक कमान्डोज से घिरी हुई मनोरमा देशपाण्डे जेलर शिवानी के पीछ-पीछे स्टेज की तरफ चल दी।

महिला कैदी छोटी-छोटी तिरंगी झन्डियां लहराकर मन्त्री महोदया का स्वागत कर रही थीं।

अचानक ही उभरी एक तेज चींख ने सभी लोगों के साथ-साथ मनोरमा देशपाण्डे को भी चौंका दिया।

□□□

□□□

"ये कौन चींखा...?" मनोरमा देशपाण्डे चौंककर बोली, "...क्या कोई दिक्कत में है...?"

"नहीं, दिक्कत में नहीं है मैडम जी। क्रान्ति के बारे में तो सुना ही होगा आपने... न्यूज चैनल्स पर व न्यूज-पेपर्स में भी पढ़ा होगा...।"

"उसके बारे में भला कौन नहीं जानता... जेलर साहिबा। दुनिया में शायद ही उससे खतरनाक मुजरिम हो कोई। हिन्दुस्तान की तो सबसे खतरनाक महिला है ही वो। पण्डित जी से कई बार पंगा ले चुकी है वो। हांलाकि पण्डित जी ने हर बार उसकी बख्शीश की— लेकिन इतनी टेढ़ी औरत है कि बार-बार पण्डित जी से टकराती है। लेकिन वो चींखी क्यों...?"

"वो भी स्वतन्त्रता दिवस के प्रोग्राम में शामिल होना चाहती थी मैडम जी— लेकिन मैंने मना कर दिया था। खामख्वाह ही कोई रिस्क क्यों लें? बड़ी ही डेन्जर लेडी है— ना जाने क्या गड़बडी कर बैठे। मना होते ही बिगड़ गई थी। गन्दी-गन्दी गालियां बकने लगी थी कमीनी कहीं की। अगर पन्द्रह अगस्त का दिन नहीं होता तो हड्डी-पसली तोड़कर रख देती कम्बख्त की। क्रोध में आकर यूं ही चींख-चिल्ला रही है। आप उसकी तरफ ध्यान मत दीजिये मैडम जी। चींख-चींख कर गले के स्पीकर्स फट जायेंगे तो खामोश होकर बैठ जायेगी। चलिये... स्टेज पर चलिये और ध्वजारोहण कीजिये...।"

क्रान्ति की क्रोध भरी चींख पुनः उभरी। मनोरमा देशपाण्डे ने ठिठक कर अन्डे के आकर वाली बैरक की तरफ देखा— फिर सिर को झटक कर आगे बढ़ गई।

—"ये गलत हो रहा है... अन्याय हो रहा है...।" क्रान्ति की तेज आवाज उभरी, "...किसी ने चाहे कितने भी बड़े जुर्म किये हों और उसे फांसी की सजा क्यों ना सुना दी गई हो— लेकिन हिन्दुस्तान का नागरिक होने के नाते उसे पन्द्रह अगस्त के प्रोग्राम में शामिल होने का पूरा अधिकार है— उसे भी आजादी का जश्न मनाने का पूरा हक

है। मुजरिम होते हुये भी मेरे दिल में तिरंगे के प्रति सम्मान है। मैं भी तिरंगे को सैल्यूट करना चाहती थी... राष्ट्रीय गान गाना चाहती थी। लेकिन जेलरनी पूरी तानाशाह है। उसने मुझे प्रोग्राम में शामिलकरने से मना कर दिया।

किस बात का खतरा है मुझसे— क्या कर सकती हूं मैं? मेरे हाथों में हथकड़ियां, पैरों में बेड़ियां हैं। हथियार के नाम पर एक तिनका तक नहीं मेरे पास। ना जाने कितने दिनों तक कोमा की हालत में रही। इतनी कमजोरी आ गई है कि... चक्कर आते रहते हैं। मेरे इस सेल के बाहर... जेल के चप्पे-चप्पे पर हथियार वाले तैनात हैं। चाहकर भी कोई गड़बड़ी नहीं कर सकती मैं! मुझे जश्न-ए-आजादी के प्रोग्राम से महरूम करके गैरकानूनी काम किया जा रहा है। मीडिया वाले तो आते ही रहते हैं। मैं उनके माध्यम से इस बात को उठाऊंगी। पूरे देश और देश की सरकार से सवाल करूंगी कि क्या किसी कैदी को स्वतन्त्रता दिवस के प्रोग्राम से वंचित किया जा सकता है?''

ठिठककर एक स्थान पर खड़ी मनोरमा देशपाण्डे की आंखें सोचने वाली मुद्रा में सिकुड़ी हुई थीं।

''वन्दे मातरम्...।'' क्रान्ति की आवाज उभरी, ''भारत मां की जय! देश के तमाम क्रान्तिकारी और स्वतन्त्रा सेनानी अमर रहें... जय हिन्द... जय भारत...।''

—''नहीं... ये तो अन्याय है। मुजरिमों को भी स्वतन्त्रता दिवस मनाने का अधिकार है। क्रान्ति को बैरक से निकालकर सभी कैदियों के पास लाया जाये...।''

□□□

□□□

जेलर शिवानी पहले तो चिंहुकी, फिर चिन्तित हो चली, फिर कसमसाकर बोली— ''ये...ये आप क्या कह रही हैं मैडम जी! आप तो जानती हैं कि क्रान्ति कितनी खतरनाक है। पण्डित जी ने ना जाने कैसे उसे पकड़ा होगा। जरूरी नहीं कि अगली बार पण्डित जी उसे पकड़ ही पायें। अगर वो फरार हो गई तो...ना जाने कितनी तबाही मचायेगी। उसकी इतनी निगरानी होने और अन्डा सेल में रखने पर भी मुझे हर वक्त यही डर सताता रहता है कि वो फरार ना हो जाये। जब वो फ्रेश

होने के लिये जाती है तो सिर्फ हथकड़ियां ही खोलती हूं उसकी। पैरों में बेड़ियां पड़ी रहती हैं— फिर भी डरती रहती हूं! आपने उसके बारे में सिर्फ सुना ही है— जबकि मैंने उसकी भयानकता और खूंखारता को महसूस भी किया है मैडम जी! अपने ही मुंह से अपने बारे में बतला रही थी वो। बचपन से ही बिगड़ी हुई है वो! पांच साल की उम्र में उसने स्कूल में साथ पढ़ने वाली एक लड़की के सिर और चेहरे पर ईंट मार-मार कर खत्म कर दिया था। उस अभागी का क़सूर इतना ही था कि उसने क्रान्ति को अपनी गुड़िया देने से मना कर दिया था...।''

''हम जानती हैं कि क्रान्ति कितनी खतरनाक है...।'' मनोरमा देशपाण्डे जेलर शिवानी की बात को काटकर बोली, ''लेकिन हम किसी मुजरिम को स्वतन्त्रता दिवस के कार्यक्रम में सम्मलित होने से वंचित नहीं कर सकतीं...।''

''लेकिन...।''

''कोई मुजरिम तभी खरतरनाक होता है जेलर साहिबा, जब उसके पास कुछ करने का मौका हो, क्रान्ति तो बन्दी है। यहां पर चारों तरफ हथियारबन्द जवान दिखलाई पड़ रहे हैं। हमारे चार ब्लैक कमान्डोज भी हैं। किसी नागिन के दांत तोड़ दिये जायें तो वो फुंफकारती भी नहीं। क्रान्ति को फौरन ही बाहर निकालकर लाया जाये...।''

''कोई मेरी फरियाद सुन रहा है कि नहीं...?'' तभी क्रान्ति की तेज आवाज उभरी, ''...आज पन्द्रह अगस्त है... देश की आजादी का दिन...हर कोई तिरंगा लहराकर भारत मां की जय बोल रहा होगा। राष्ट्रीय-गान गा रहा होगा। मेरे बुजुर्गों ने भी आजादी की लड़ाई लड़ी थी— अपना खून बहाया था, प्राण न्योछावर किये थे। अगर मुझे तिरंगे को सलाम करने का मौका नहीं दिया गया तो मैं इस सेल की दीवार से टकराकर सिर फोड़ लूंगी। इस जेलरनी की इतनी हवा खराब क्यों हो रही है? क्या मैं कोई बम हूं कि फटकर इस जेल को तहस-नहस कर डालूंगी? हथियार के नाम पर मेरे सिर के बालों में रबर-बैन्ड तक नहीं है। हथकड़ियों और बेड़ियों से मेरे हाथ-पैर जकड़े हुये हैं। चारों तरफ हथियारबन्द लोग तैनात हैं। अन्याय है ये। मन्त्री साहिबा को आने दो। उन्हीं से शिकायत करूंगी। उन्हें मालूम होगा कि किसी को

भी आजादी के प्रोग्राम में शामिल होने से नहीं रोका जा सकता। पूरी उम्मीद है कि वो मेरे साथ अन्याय नहीं होने देंगी।"

"क्रान्ति को बाहर निकालकर लाओ जेलर साहिबा... ।" मनोरमा देशपाण्डे आदेश भरे लहजे में बोली, "वो भी इस प्रोग्राम में शामिल होगी।"

"मे...मेरी बात तो सुनिये...मैडम जी...।"

"कुछ नहीं सुनना हमें। हम क्रान्ति के यहां आने पर ही ध्वजारोहण करेंगी। उसके आने पर ही प्रोग्राम शुरू होगा... ।"

शिवानी कसमसाकर डिप्टी जेलर से फुसफसाकर बोली—"...क्रान्ति को ले आओ। उसकी हथकड़ी और बेड़ियां खोलने की जरूरत नहीं। पूरी सावधानी बरतना। उस पर हथियार तने हुये होने चाहिये। वो जरा-सी भी गड़बड़ी करे तो फौरन ही उसे गोलियों से भून डालना... ।"

इतना बोलने पर वो मनोरमा देशपाण्डे के साथ कदम-से-कदम मिलाकर चलते हुये बोली—"डिप्टी जेलर को बोल दिया है मैडम जी। वो क्रान्ति को लेकर आ रही है। आपने ठीक ही कहा कि यहां पर सुरक्षा के कड़े इन्तजामात हैं—भला क्रान्ति क्या गड़बड़ी कर सकती है...?"




क्रान्ति सफेद रंग के कुर्ते व सलवार में थी। साधारण पोशाक और कोई मेकअप भी नहीं...फिर भी अपनी खूबसूरती से कयामत ढा रही थी।

गोरी-चिट्टी व गुदाज कलाइयों में स्टेनलेस स्टील की हथकड़ियाँ और पैरों में बेड़ियां होने के कारण वो धीरे-धीरे चल रही थी, लेकिन फिर भी शेरनी की मानिन्द ही तनकर चल रही थी।

जेल के प्रत्येक हिस्से में मौजूद जवानों के हथियारों का रुख क्रान्ति की तरफ ही था और उनके हाव-भाव चुगली खा रहे थे कि क्रान्ति के जरा-सी गड़बड़ी करते ही वो ट्रिगर दबाकर फायरिंग करने को तैयार थे। आठ लम्बी-चौड़ी वार्डन हाथ में डण्डे लिये क्रान्ति को घेरकर चल रही थीं तो डिप्टी जेलर के हाथ में पकड़ी गई रिवॉल्वर का रुख भी क्रान्ति की पीठ पर था।

महिला कैदियों के बीच पहुंचकर क्रान्ति ने सिर झुकाकर स्टेज

पर खड़ी मन्त्री मनोरमा देशपाण्डे का अभिवादन किया और फिर खूबसूरत चेहरे पर दयनीय किस्म के भाव समेटकर बोली, "...हैप्पी इन्डीपेन्डेन्ट डे...मैडम जी। जेलर साहिबा तो मुझे जेल से निकालने को तैयार ही नहीं थीं। आपकी कृपा हुई होगी...तभी मुझे यहां आकर जश्ने-आजादी मनाने का सौभाग्य मिल रहा है। आपने शायद मेरी पुकार सुन ली होगी। थैंक्यू...धन्यवाद। मैं आपकी आभारी रहूंगी... ।"

मनोरमा देशपाण्डे ने मुस्कराकर क्रान्ति का थैंक्यू कबूल किया और फिर बगल में खड़ी जेलर शिवानी से बोली—"कितनी खूबसूरत है कम्बख्त। फिल्मों की कोई भी हीरोइन इसके मुकाबले में टिकने वाली नहीं। कौन कहेगा कि ये खतरनाक किस्म की मुजरिम होगी!"

"मैडम जी...ये कैसी आजादी है...?" क्रान्ति हाथों को ऊपर उठाकर और हथकड़ियों का प्रदर्शन करते हुये बोली, "...बाकी सभी कैदियों के हाथ-पैर खुले हैं। राष्ट्रीय-गान के समय हर किसी को सावधान की पोजीशन में खड़े होना पड़ता है और हाथ नीचे की तरफ तने हुये होने चाहिये। इन बन्धे हाथों से तो राष्ट्रीय-गान का अपमान ही होगा... ।"

"इसकी बात पर ध्यान मत देना मैडम जी... ।" स्टेज पर ही मौजूद जेलर शिवानी चिल्लाकर बोली, "...ये यहां आ गई...यही बहुत है। इसके हाथ खोलना खतरनाक होगा... ।"

"हाथों से हथकड़ी निकलने पर ही भला मैं क्या कर सकूंगी मन्त्री साहिबा? कितने हथियारबन्द लोग मौजूद हैं यहां पर...फिर मैं पैरों की बेड़ियां खोलने के लिये तो नहीं बोल रही हूं ना। राष्ट्रीय गान में हिस्सा लेना है, इसीलिये हथकड़ियों से दो-चार मिनट के लिये मुक्ति पाना चाहती हूं। जेलर साहिबा नहीं चाहती तो...कोई बात नहीं—लेकिन ये राष्ट्रगान का घोर अपमान होगा— ।"

मनोरमा देशपाण्डे ने आदेश दिया—"क्रान्ति की हथकड़ियां खोल दी जायें— ।"




"ये...ये ठीक नहीं होगा...मैडम जी...कतई नहीं... ।" जेलर शिवानी माइक को हथेलियों में छिपाकर फुसफुसाई, "...ये जो खूबसूरत

बला है...आपकी जानकारी और सोच से भी ज्यादा खतरनाक है। इसके हाथों को खोलना ठीक नहीं होगा...।"

"क्रान्ति को भी राष्ट्रीय-गान में सम्मलित होना है जेलर साहिबा...और राष्ट्रीय-गान हथकड़ियों के साथ नहीं हो सकता। वैसे भी यहां पर मौजूद ढेरों जवानों और कमान्डोज ने क्रान्ति पर हथियार ताने हुये हैं। इसने कोई गड़बड़ी की तो...गोलियां बरस उठेंगी। हम आदेश दे चुकी हैं। आदेश को वापिस लेने में हमारी तौहीन होगी। क्रान्ति को फौरन से पेश्तर ही हथकड़ियों से मुक्त कर दिया जाये-।"

जेलर शिवानी ने अनिच्छा से ऐसे भाव से ही कहा कि मानो अपनी फांसी का आदेश दे रही हो-"क...क्रान्ति की हथकड़ियां खोल दी जायें-।"

डिप्टी जेलर के अनचाहे इशारे पर लेडी सन्तरी ने क्रान्ति की हथकड़ी खोल दी-इसी के साथ जेलर शिवानी ने होलेस्टर से रिवॉल्वर निकाली और क्रान्ति पर तान दी।

"ये क्या कर रही हो तुम...?" मनोरमा देशपाण्डे नाराजगी के साथ बोली, "...जेलर होने के नाते क्या आप राष्ट्रीय-गान में हिस्सा नहीं लेंगी...।"

"लूंगी...मैडम जी-।"

"इस रिवॉल्वर के साथ-?"

शिवानी ने कसमसाते हुये रिवॉल्वर को होलेस्टर में पहुंचा दिया और मुंह परे घुमाकर बुदबुदाई-"खुद तो प्रोग्राम कम्पलीट करके हेलीकॉप्टर में बैठकर उड़न छू हो जायेगी। क्रान्ति ने कोई गड़बड़ी कर दी तो भुगतना तो मुझे पड़ेगा। नौकरी जा सकती है। कैदियों वाली पोशाक पहनकर इसी जेल की किसी बैरक में सड़ना पड़ सकता है। हे ईश्वर...कोई गड़बड़ी ना होने पाये। प्रोग्राम के बाद क्रान्ति हथकड़ी पहनकर अपनी बैरक में चली जाये...बस। इक्यावन रुपये का प्रसाद चढ़ाऊंगी। चार-पांच नारियल भी फोड़ूंगी...।"

"ध्वजारोहण का समय हो चुका है जेलर साहिबा...।" मनोरमा देशपाण्डे की आवाज ने उसकी तन्द्रा भंग की, "...क्यों ना हम ध्वज फहरा दें...।"

"अं...हां, मैडम जी...अवश्य...आइये, झन्डा फहराइये...।"

मनोरमा देशपाण्डे झन्डे वाले खम्भे की तरफ बढ़ी ही थी कि कैदियों के बीच खड़ी क्रान्ति चिल्लाकर बोली-"मुझे हथकड़ी से मुक्त कराने के लिये बहुत-बहुत शुक्रिया...।"

ठिठककर मुस्कराई मनोरमा देशपाण्डे और फिर आगे बढ़कर उसने खम्भे से लिपटी डोरी को खोला।

डोरी के खींचे जाने पर पहले हवा में फूलों की ढेर सारी पखुंड़ियां उड़ीं और फिर तिरंगा पूरी आन, बान व शान के साथ लहराने लगा।

रंग-बिरंगी पोशाक से सजे बैन्ड वालों ने राष्ट्रीय-गान की मधुर धुन छेड़ दी।

मन्त्री मनोरमा देशपाण्डे, जेलर शिवानी, बाकी जेलकर्मी, सुरक्षा-कर्मी और क्रान्ति समेत सभी महिला कैदी सावधान की मुद्रा में खड़ी होकर राष्ट्रीय-गान गाने लगीं।

राष्ट्रीय-गान के पश्चात् जेलर शिवानी ने मनोरमा देशपाण्डे का मुंह मीठा कराया और फिर माइक पर पहुंचकर बोली, "...स्वतन्त्रता दिवस के इस पावन अवसर पर सभी का मुंह मीठा कराया जायेगा। इसी के साथ माननीय मन्त्री जी सभी कैदियों को मिठाई बांटेंगी। सभी कैदी लाइन लगा लें और एक-एक करके मन्त्री जी से मिठाई लेकर अपनी-अपनी बैरक की तरफ जाती रहें-।"

सभी कैदियों ने एक लाइन बना ली।

स्टेज के दो तरफ सीढ़ियां बनी हुई थीं। कैदी बायीं तरफ वाली सीढ़ियों से चढ़कर मनोरमा देशपाण्डे से मोतीचूर के लड्डू ले रही थीं और दायीं तरफ वाली सीढ़ियों से उतर रही थीं।

लाइन में लगी क्रान्ति पैरों में बेड़ियां पड़ी होने के कारण धीरे-धीरे चल पा रही थी। सीढ़ियों के करीब पहुंचकर वो ठिठकी और असहाय भाव से कन्धे उचकाकर मनोरमा देशपाण्डे से बोली, "आयम सॉरी, मैडम। मैं सीढ़ियां नहीं चढ़ पाऊंगी...नहीं, आपको आने की कोई जरूरत नहीं। मैं ट्राई करती हूं...।"

धीरे-धीरे करके और दो कैदियों के कन्धों का सहारा लेकर वो सीढ़ियां चढ़ने लगी।

जेलर शिवानी रिवॉल्वर निकाल चुकी थी और उसके निशाने पर क्रान्ति ही थी।

क्रान्ति की बारी आने पर मनोरमा देशपाण्डे ने दो लड्डू उठाकर उसकी तरफ बढ़ाये तो चौंक उठी।

□□□
□□□

मनोरमा देशपाण्डे के चौंकने का कारण थी वो मुस्कान, जो क्रान्ति के गुलाबी, कोमल व रसीले होठों पर अप्रत्याशित रूप से उभर आई थी।

उस्तरे की धार-सी पैनी, नागिन की फुंफकार-सी, खून का पानी कर देने वाली, अंटार्टिका की सर्द हवाओं जैसी सिहरन उत्पन्न कर देने वाली, रायफल से चली बुलेट-सी घातक और पोटेशियम सायनाइड सी जानलेवा ही थी वो मुस्कान–।

क्यों मुस्कराई क्रान्ति?

उसके तेवर अचानक ही क्यों परिवर्तित हुये?

आखिर उसके इरादे क्या हैं?

दोनों हथेलियां मेज पर टिकाकर क्रान्ति ने जिस्म को हवा में उठाया। उसकी लम्बी टांगें मेज के ऊपर से होते हुये 'फ्लाइंग-किक' के रूप में जेलर शिवानी की दोनों कनपटियों से एक साथ टकराईं...तड़ाक।

शिवानी की आंखें फैलकर सुर्ख और गीली हुईं। मुंह भी खुला, लेकिन कोई चींख या आवाज ना निकल पाई। पहले उसके हाथ से रिवॉल्वर छूटी और फिर वो भी भरभराकर स्टेज के फर्श पर जा टपकी।

मेज के उस पार जा पहुंची क्रान्ति ने कुर्ता ऊपर उठाकर सलवार और पेट के बीच खोंसी गई डोरी को खींचा और उसमें बने फन्दे को मनोरमा देशपाण्डे के गले में डालकर और दूसरे सिरे को खींचकर फन्दे को इतना कस दिया कि मनोरमा देशपाण्डे का गला घुटने लगा।

ये सब पलक झपकते ही हो गया–तब हो गया, जबकि क्रान्ति के पैरों में बेड़ियां पड़ी हुई थीं।

"खबरदार...कोई भी साला मुझ पर फायरिंग करने की बेवकूफी ना करे...।" फर्श से जेलर की रिवॉल्वर उठाकर और मनोरमा की कनपटी से लगाकर क्रान्ति चिंघाड़-चिंघाड़कर बोली–"जानती हूं कि मुझ पर ढेर सारे हथियार तने हुये हैं। गोलियां चलाकर मुझे ढेर किया

जा सकता है। मेरी जिन्दगी और मौत के दरमियान मामूली-सी लकीर ही है। लेकिन मैं कोई मामूली या आम लड़की नहीं हूं कि गोलियां चलेंगी और मैं चींख-चिल्लाकर, तड़पते हुये दम तोड़ दूंगी। मुझमें इतना दम है कि मरने से पहले मन्त्री महोदया की सांसों की तार भी तोड़ सकती हूं। मेरे पास रिवॉल्वर है और मेरी उंगली ट्रिगर पर कसी है। उंगली की हल्की-सी जुम्बिश ही फायर कर देगी। गोली मन्त्री जी की खोपड़ी के भीतर और दम बाहर...।" अगर मन्त्री महोदया की टांय-टांय फिस्स होती है तो इसके लिये तुम लोग ही जिम्मेदार होंगे...।"

जेलर शिवानी तो बेहोश पड़ी थी। डिप्टी जेलर, बाकी सुरक्षाकर्मी और मनोरमा देशपाण्डे के साथ आये चारों ब्लैक कमान्डोज असमंजस में पड़ गये–किंकर्त्तव्यविमूढ़ हो गये।

"ये रिवॉल्वर तो इत्तफाक से ही मेरे हाथ लग गई...।" इधर-उधर निगाहें दौड़ते हुये बोली क्रान्ति–"...लग गई तो मन्त्री महोदया की कनपटी पर लगा दी। इस रिवॉल्वर की मोहताज नहीं हूं मैं। पहले ही मैंने प्लान बना लिया था। और आज के दिन उस पर अमल करने का निर्णय कर लिया था। जबरदस्त पहरेदारी में रखा गया था मुझे। चौबीसों घन्टे मुझ पर नजर रखी जाती थी। इस जेल का प्रशासन या कर्मचारी इस गलतफहमी के शिकार थे कि क्रान्ति को नागिन से चुहिया बना दिया–क्रान्ति कुछ भी नहीं कर पायेगी। लेकिन नहीं जानते कि क्रान्ति मामूली मिट्टी से बनी मामूली लड़की नहीं है। खतरनाक बारूद से बनी वो बम हूं, जो फटेगा तो तबाही मचा देगा। जेलवालों ने पूरी चेष्टा की कि मुझे कोई हथियार ना मिल जाये। लेकिन मैंने फिर भी हथियार का जुगाड़ कर ही लिया। अपनी सलवार का एक नाड़ा तोड़ा और बिना नाड़े वाली सलवार को धुलाई के लिये भेज दिया था। नाड़े से फन्दा बनाकर छिपा लिया था। इसके बाद जो हुआ...सभी जानते हैं और देख रहे हैं। फन्दा मन्त्री महोदया के गले पर फिट है। नाड़े का हल्का-सा झटका ही मन्त्रानी का रामनाम सत्य कर देगा।"

"ये...ये तुम ठीक नहीं कर रही हो...।" गले पर कसे फन्दे को ढीला करने की नाकाम चेष्टा करते हुये मनोरमा देशपाण्डे भिंची-भिंची सी आवाज में बोली, "...यहां पर...जेलकर्मियों के साथ हमारे चार ब्लैक...कमाण्डोज भी हैं। सभी ने तुम पर हथियार ताने हुये हैं। कभी

भी गोलियां चल सकती हैं। फायरिंग होगी और तुम खून से लथपथ होकर ल...लाश में तब्दील हो जाओगी। अगर अपनी जान की ख़ैर चाहती हो तो हमें छोड़ दो...।"

"जान...कौन-सी जान क़ी बात कर रही है तू...?" तेवर और लहजा बदला क्रान्ति ने, "...क्या जानती नहीं कि मुझे फांसी की सजा सुनाई जा चुकी है? मरना तो है ही। चन्द रोज बाद फांसी पर लटककर मरने की बजाय आज ही मर जाऊंगी तो कोई खास फर्क नहीं पड़ेगा। लेकिन मैंने नाड़े को झटका दे दिया...या रिवॉल्वर का ट्रिगर दबा दिया तो तुझ पर फर्क पड़ेगा। ये हेलीकॉप्टर डोली बनकर तुझे दुल्हन की तरह यहां लाया था लेकिन फिर ये अर्थी बनकर तेरी लाश को ले जायेगा। मेरी नहीं...अपनी जान की चिन्ता कर। अगर मरना नहीं चाहती तो मेरी शर्तों को फौरन से पेश्तर पूरा कर दे–।"

"श...शर्त? कैसी शर्त...?"

"पहली शर्त ये कि सभी लोग हथियार फेंक दें...फौरन ही...तुरन्त...।" मनारेमा देशपाण्डे से बात करती क्रान्ति इतना तेज बोल रही थी कि आसपास तथा दूर तक खड़े जेलकर्मी सुन सकें, "...दूसरी शर्त ये कि मेरे पैरों से बेड़ियां निकाल दी जायें। तीसरी शर्त थोड़ी कठिन है...लेकिन पूरी तो करनी ही होगी। बगल की ही मर्दाना जेल में मेरा परम मित्र सोनू कैद है–उसको यहां पर लाया जाये...।"

"लेकिन...तुम्हारे इरादे क्या हैं...?"

क्रान्ति ने मनोरमा देशपाण्डे को यूं ही देखा कि मानो उसने बेवकूफी भरी बात पूछ ली हो और वह उस पर तरस खा रही हो।

"इक्कल-दुक्कल या रस्साकूद तो खेलेंगे नहीं हम...।" व्यंगपूर्ण भाव से बोली क्रान्ति, "...चोर-सिपाही या पकड़म-पकड़ाई वाला गेम भी नहीं खेलना हमें। ना अपनी स्वतन्त्रता-दिवस को सेलीब्रेट करने में ही कोई दिलचस्पी है। हम दोनों को इस जेल से निकलना है। कानून और फांसी के फन्दे से बहुत दूर चले जाना है...।"

"ये...ये नहीं हो...ओ...ओ...स सकता...ऊं...ऊं...गों... गों...गूं...घें...घें...।"

क्रान्ति ने डोरी के सिरे को खींचकर फन्दे को इतना कस दिया कि मनोरमा देशपाण्डे का गला भिंच गया और सांसें अवरुद्ध होने के

कारण उसके सुर्ख पड़ते चेहरे की त्वचा खिंचने व तनने लगी तथा कनपटियों पर नसें यूं उभर आईं कि मानो कैंचुऐं छटपटा रहे हों। कटोरियों से बाहर निकलने को तत्पर आंखें ना सिर्फ सुर्ख हो चलीं–वरन उसमें खारा पानी भी उतर आया।

"मै...मैडम को छोड़ दे क्रान्ति...।" एक, ब्लैक कमान्डो बौखलाकर और क्रान्ति पर ए०के० सैंतालीस तानकर बोला, "...वरना भूनकर रख...।"

धांय...।

"आ...आहऽऽऽऽऽ।"

❑❑❑

❑❑❑

क्रान्ति की तर्जनी ने ट्रिगर दबाया और रिवॉल्वर की नाल से चली गोली ने मनोरमा देशपाण्डे के कान के चौथाई हिस्से के चीथड़े उड़ा दिये।

कनपटी, गले व कन्धे पर खून-ही-खून।

घबराई और पीड़ा से भरी मनोरमा देशपाण्डे गिरने को हुई थी–लेकिन गले पर कसा फन्दा और भी कसने लगा तो उसने स्वयं को गिरने से रोका और जख्मी कान पर हथेली रखकर मारे पीड़ा के कराहने लगी।

पसीने से तर-ब-तर जिस्म यूं ही कांप रहा था कि मानो कोई किश्ती ज्वारभाटा की चपेट में आ गई हो।

"मेरा निशाना नहीं चूका...।" गुर्रा सी उठी क्रान्ति, "...हवा में उड़ती चिड़िया की आंख पर गोली चला सकती हूं। ये सिर्फ ट्रेलर था...नमूना। अगर किसी हराम के बच्चे ने मुझे धमकाने की...या मेरी बात ना मानने की जुर्रत की तो अगला वार मन्त्रानी के मुंह में रिवॉल्वर की नाल घुसेड़कर इसके हलक के रास्ते पेट में कई गोलियां उतार दूंगी...।"

हर कोई स्तब्ध रह गया।

वातावरण बोझिल व तनाव भरा हो चला।

क्रान्ति ने मन्त्री महोदया के कान पर गोली चलाकर सभी पर मानसिक दबाव बना दिया था। दबाव को और भी बढ़ाने के लिये उसने

कराह रही मनोरमा देशपाण्डे के मुंह में रिवॉल्वर की बैरल डाल दी और गले पर कसे फन्दे को झटके देते हुये चिल्ला-चिल्लाकर बोली—"...लगता है कि तुम लोगों के लिये इस मिनिस्टरनी की जान की कोई अहमियत नहीं है। मैंने तो स्वयं का सिर ओखली में डालने से पहले ही मूसली की चोटें खाने को तैयार कर लिया था। ये कदम उठाने से पहले ही स्वयं को मौत के लिये तैयार कर लिया था। हथियार सम्भाल लो और मुझ पर फायरिंग करने के लिये तैयार हो जाओ। जितनी भी गोलियां हैं...सब-की-सब मेरे इस खूबसूरत जिस्म में ठूंस देना। मैं मनोरमा देशपाण्डे के पेट में रिवॉल्वर में बची पांचों गोलियां उतारने जा रही...।"

"ऊं...ऊं...ऊं...।" भयवश आंखों को चौड़ाकर और इन्कार की मुद्रा में जल्दी-जल्दी सिर को हिलाते हुये मनोरमा देशपाण्डे ने आंखों की जुबान से जान बख्शी की फरियाद की।

"न...नहीं...।" डिप्टी जेलर भी घबराकर चींख-सी उठी, "मन्त्री महोदया जी को कुछ मत करना...क...क्रान्ति...इन पर गोली मत चलाना। अनर्थ हो जायेगा। हम सभी के लिये मुसीबत खड़ी हो जायेगी। नौकरी तो जायेगी ही...साथ ही सजा भी मिलेगी...।"

मन-ही-मन मुस्कराई क्रान्ति—लेकिन दिखावे में खूंखार लहजे में बोली, "तो फिर मेरे हुक्म का पालन क्यों नहीं हो रहा है? हथियार जमीन पर क्यों नहीं गिराये जा रहे हैं? मेरे पैरों से बेड़ियां क्यों नहीं निकाली जा रही हैं? सोनू को यहां क्यों नहीं लाया जा रहा है...?"

"वो...वो हमें सरकार से...या जेल मन्त्री से इजाजत लेनी होगी।" डिप्टी जेलर मानो गिड़गिड़ाकर ही बोली, "...ऊपर से ऑर्डर मिले बिना...।"

"ऐसी की तैसी तेरी सरकार और जेल मन्त्री की...।" बगुले से सफेद व सच्चे मोती से दमकते दांतों को पीसकर ही बोली क्रान्ति, "...मेरे कब्जे में भी एक मन्त्री है—ये भी जेल मन्त्री से कम नहीं है। तुरन्त ही मेरे आदेश का पालन किया जाये—वरना मैं ट्रिगर दबाने जा रही हूं...।"

"मु...मुझे जेल मन्त्री जी से बात करने के लिये सिर्फ पांच मिनट...दो क्रान्ति। प्लीज, मेरी मजबूरी समझो। मैं सिर्फ डिप्टी जेलर हूं। जेलर साहिबा तो बेहोश पड़ी हुई...।"

"तू पहले जेल मन्त्री से बात करेगी। फिर वो सी०एम० से बात करेगा। फिर सी०एम० होममिनिस्टर, बाकी मिनिस्टर्स और अधिकारियों की मीटिंग लेगा। घन्टों लगा देगा। उसके बाद भी यही निष्कर्ष निकलेगा कि क्रान्ति और सोनू खतरनाक किस्म के मुजरिम हैं...उन्हें छोड़ना गलत होगा...ऐसी कोई तरकीब निकाली जाये कि उन्हें छोड़ा ना जाये और मनोरमा देशपाण्डे को भी बचा लिया जाये। सी०एम० की केशव पण्डित से दोस्ती है। वो केशव पण्डित से सम्पर्क करेगा। फिर वो साला पण्डित अपना दिमाग चलायेगा। वो कामयाब तो नहीं होगा...लेकिन यहां पर खून-खराबा हो जायेगा...।"

"जेल मंत्री जी बगल वाली...मर्दों की जेल में हैं। वो वहां तिरंगा फहराने आये हुये हैं। मैं उन्हें सारी बातें बतलाकर फौरन ही फैसला करने की रिक्वेस्ट करूंगी...।"

"और जेल मन्त्री ने सोनू को छोड़ने या यहां भेजने से मना कर दिया तो? नहीं...कुछ नहीं जानती मैं। तुरन्त ही सभी के हथियार गिरवा कर मेरी बेड़ियां खुलवा और फिर पांच मिनट के भीतर सोनू को यहां लेकर आ। मुझे इससे कोई मतलब नहीं कि तू जेल मन्त्री से बात करती है कि नहीं और जेल मन्त्री क्या डिसिजन लेता हैं। पांच मिनट के भीतर सोनू यहां नहीं आया तो अपने अन्जाम की परवाह ना करते हुये इन माननीया मन्त्री जी को फोड़ डालूंगी। हथियार गिरवा, मेरी बेड़ियां खुलवा और सोनू को लेकर आ...इमीजेटली...।"

डिप्टी जेलर ने पहले अपनी रिवॉल्वर जमीन पर फेंकी और फिर बौखलाहट भरे लहजे में बोली, "...सभी लोग अपने हथियार गिरा दें...।"

सभी ने पहले एक-दूसरे की शक्ल देखी और फिर अपने-अपने हथियार गिरा दिये।

डिप्टी जेलर दौड़कर स्टेज पर पहुंची और क्रान्ति के पैरों को बेड़ियों से मुक्त किया।

क्रान्ति ने उसके कन्धे पर ठोकर मारकर पीछे की तरफ गिरा दिया और फिर बोली, "भागकर जा और सोनू को यहां लेकर आ। जरा-सी भी देर लगाई तो यहां पर इस मिनिस्टरनी की और मेरी लाशें पड़ी होंगी। सोनू को ले आई तो हम दोनों जिन्दा रहेंगी। देखना है कि तू सोनू को यहां लेकर आती है कि नहीं—?"



महिला जेल में चल रहे घटनाक्रम के सन्दर्भ में डिप्टी जेलर के मुंह से सुनकर जेल मन्त्री काली चरण, जेलर और बाकी लोग स्तब्ध भी रह गये और चिन्तातुर भी हो चले।

मामला मामूली कतई नहीं था—इसलिये नहीं कि राज्य सरकार की एक मन्त्री की जिन्दगी दांव पर लगी हुई थी, बल्कि इसलिये भी कि क्रान्ति और सोनू जैसे खतरनाक मुजरिमों को छोड़ देने पर दुष्परिणाम निकलने थे।

जेल मन्त्री कालीचरण ने तुरन्त ही स्टेट के चीफ मिनिस्टर को फोन मिलाया और जल्दी-जल्दी सारी बातें बतलाने पर बोला, "...मामला बहुत ही खतरनाक है सर। मनोरमा देशपाण्डे की जान दांव पर लगी है। क्रान्ति के बारे में आप भी जानते हैं कि वो कितनी खतरनाक है। बार-बार शिकस्त खाने पर भी पण्डित जी से पंगा लेने वाली वो सनकी लड़की पागल ही कही जायेगी। अपने किसी भी परिणाम की चिन्ता नहीं है उसे। अगर उसकी बात नहीं मानी गई तो अपने अन्जाम की चिन्ता किये बिना मनोरमा देशपाण्डे को मार डालेगी।"

"क्यों ना पण्डित जी से कॉन्टेक्ट किया...?"

"मैंने भी सोचा था सर—लेकिन टाइम नहीं है। अगर सोनू को तुरन्त ही दूसरी जेल में ना पहुंचाया गया तो क्रान्ति मनोरमा जी को मार देगी। वो एक-दो मिनट से ज्यादा इन्तजार नहीं करेगी। उसने मनोरमा जी को मार दिया तो...कयामत ही आ जायेगी। ऐसे ही अपनी सरकार पर भ्रष्टाचार को बढ़ावा देने और जुर्म पर कन्ट्रोल ना करने के आरोप लग रहे हैं। खुफिया विभाग की ये रिपोर्ट आई है कि आगामी चुनाव में हमारी पार्टी के दोबारा सत्ता में आने के चान्स नहीं हैं। लोग और मीडिया वाले कहेंगे कि जब हम लोग अपनी पार्टी और सरकार की मन्त्री की रक्षा नहीं कर पाये तो आम नागरिक की क्या सुरक्षा करेंगे?"

"आपके कहने का मतलब है कि हम क्रान्ति और सोनू को छोड़ दें—?"

"ये अपनी मजबूरी है सर...।"

"ले...लेकिन...।"

"अपने पास...अधिक समय नहीं है सर। प्लीज, जल्दी से निर्णय लीजिये—।"

"अब निर्णय ही क्या लेना है कालीचरण जी...।" दूसरी तरफ से सी०एम० साहब ठन्डी आह-सी भरकर बोले, "मनोरमा देशपाण्डे हमारे स्वर्गवासी मित्र की बेटी हैं। उसकी जाति के काफी लोग हैं स्टेट में। आरोप तो लगेगा कि हमने अपनी एक मन्त्री को बचाने के लिये दो खूंखार मुजरिमों को छोड़ दिया—लेकिन किया भी क्या जा सकता है? छोड़ दो। सोनू को दूसरी जेल में भिजवा दो। जल्दी करो। कहीं वो सनकी लड़की क्रान्ति मनोरमा को ना मार दे...।"

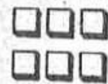
"ठीक है सर। मैं सोनू को दूसरी जेल में भिजवा रहा हूं। ये ईश्वर ही जाने कि आगे क्या होने वाला है...?"

फिर फोन को कान से हटाकर कालीचरण उस जेल के मुच्छड़ जेलर से बोला, "सोनू को दूसरी जेल में जाने दीजिये...।"

"ले...लेकिन सर...।"

"कोई लेकिन-वेकिन नहीं जेलर साहब। जल्दी कीजिये। सोनू को जल्दी से दूसरी जेल में भेजिये। ये हमारा ही नहीं...सी०एम० साहब का भी ऑर्डर है...।"

कैदियों के बीच खड़े सोनू की आंखें कोहिनूर हीरे की मानिन्द चमक उठीं और चेहरा सूरजमुखी के फूल-सा ही खिल उठा।



महिला डिप्टी जेलर के अलावा पुरुष जेल का जेलर अपनी फोर्स के साथ और ब्लैक कमान्डोज के साथ जेल मन्त्री कालीचरण भी था।

सोनू को कई हथियारबन्द जवानों ने घेरा हुआ था। मन्त्री मनोरमा देशपाण्डे के गले में फंदा डाले और कनपटी पर रिवॉल्वर लगाये हुये क्रान्ति क्रोधातिरेक थर-थर कांपते हुये चीखी-सी—"क्या हिमाकत है ये—क्या बेहूदगी है? सोनू को इस तरह हथियारों के साये में लाने का भला क्या मतलब? क्या इस...मनारेमा देशपाण्डे की कुर्बानी देने का मन बनाया जा चुका है...?"

"मनोरमा जी को कुछ मत कहना क्रान्ति—वरना सोनू को शूट

कर दिया जायेगा। फिर तुम भी नहीं बचोगी। तुम पर भी ढेर सारी गोलियां बरस उठेंगी... ।"

गुलाबी होठों पर जहरीली व घातक किस्म की मुस्कान संजोकर और जेल मन्त्री कालीचरण की आंखों में झांकते हुये सर्द से लहजे में बोली क्रान्ति—"मुझे और सोनू को पहले ही फांसी की सजा सुनाई जा चुकी है। किसी भी कोर्ट या राष्ट्रपति के यहां फांसी की सजा माफ नहीं होगी। तीन-चार महीने तक जीकर ही हम दोनों कौन-सा इतिहास बना लेंगे? मरना ही है तो अभी मर जाते हैं। मैं इस मिनिस्टरनी का रामनाम सत्य कर रही हूं—तू अपनी फोर्स से बोल कि मुझ पर और सोनू पर फायरिंग कर दे... ।"

"न...नहीं...मनोरमा जी को मत मारना... ।" शेर से भीगी बिल्ली बनकर मिमिया-सा उठा कालीचरण, "...सोनू को मुक्त कर दिया जायेगा, लेकिन एक बार फिर सोच लो क्रान्ति। कानून के हाथ बहुत लम्बे होते हैं। तुम दोनों कहीं भी चले जाना...बच नहीं पाओगे। बेहतर होगा कि तुम रहम की अपील करो। तुम नारी जा...—तुम्हारी फांसी की सजा उम्रकैद में तब्दील हो... ।"

"अपना भाषण बन्द कर ओये कालीचरण। यहां पर तेरी कोई जनसभा नहीं चल रही है। अपनी सलाह अपने पास रख और अपनी फोर्स को बोल कि फौरन ही वापिस लौट जाये...या हथियार फेंक दे। जल्दी कर...मेरे हाथों की खुजली बढ़ गई तो मनोरमा मैडम जी का तिया-पांचा हो जायेगा। सोनू को छोड़ और अपनी सेना को वापिस भेज। सुना नहीं तूने...?"

कालीचरण को बुरा लगा—बहुत बुरा लगा। लगना भी था—बहरहाल वो मिनिस्टर था। जेल मन्त्री था और जेल में ही खड़ा था—

अर्थात् शेर को उसी की मांद में लोमड़ी जलील कर रही थी और वो गुर्रा भी नहीं पा रहा था।

अंगारों पर लोटते हुये ही उसने जेलर से कहा—"सभी लोग हथियार गिरा दें... ।"

जेलर और बाकी लोगों ने कसमसाते हुये जमीन पर पहले से ही पड़े हथियारों की तादाद बढ़ा दी। सोनू मुस्कराते हुये आगे आया। जब

वो स्टेज की सीढ़ियां चढ़ रहा था तो क्रान्ति ने पहले आंख मारी और फिर चहचहाकर बोली—"हाय...जानी जिगर के छल्ले। आजादी मुबारक हो। लो, पकड़ो— ।"

सोनू ने क्रान्ति द्वारा फेंकी गई रिवॉल्वर को हवा में ही कैच किया और मनोरमा पाण्डे पर तानकर बोला—"...सलवार के नाड़े का इतना बढ़िया उपयोग शायद ही किसी ने किया हो क्रान्ति। फन्दे को थोड़ा ढीला कर दो—कहीं ऐसा ना हो कि इसकी यहीं पर दफा तीन सौ दो लग जाये... ।"

क्रान्ति ने हंसते हुये मनोरमा देशपाण्डे के गले पर कसे फन्दे को थोड़ा ढीला कर दिया और फिर तेज आवाज में सभी को सुनाते हुये बोली—"अब हम लोग यहां से निकलेंगे...निकलने के लिये हेलीकॉप्टर है ही। हमारे साथ मैडम जी भी जायेंगी। हेलीकॉप्टर को मैं उड़ाऊंगी—इसलिये पायलट की जरूरत नहीं पड़ेगी। पुलिस या सेना हमारा पीछा नहीं करेगी—वरना उड़ते हेलीकॉप्टर से मनोरमा मैडम जी को नीचे फेंक दिया जायेगा... ।"

और फिर मनोरमा को साथ लिये हुये क्रान्ति और सोनू हेलीकॉप्टर की तरफ बढ़ गये।

किसी ने भी रोकने या टोकने की जुर्रत नहीं की।

पायलट को नीचे उतारकर मनोरमा देशपाण्डे समेत सोनू व क्रान्ति हेलीकॉप्टर में सवार हुये।

क्रान्ति ने हेलीकॉप्टर का इंजिन स्टार्ट करने पर खिड़की से बाहर सिर निकालकर मखौल उड़ाने वाले अन्दाज में हाथ हिलाकर सभी का अभिवादन किया।

फिर हैलीकॉप्टर धीरे-धीरे जमीन से ऊपर उठकर हवा में परवाज करने लगा। फिर देखते-ही-देखते पूरब दिशा में आंखों से ओझल हो गया।

❑❑❑

❑❑❑

एक पहाड़ी की गोद में अन्डाकार झील।

उसी झील के किनारे हैलीकॉप्टर खड़ा था। हेलीकॉप्टर के भीतर

मनोरमा देशपाण्डे बेहोशी की दशा में पड़ी थी—क्रान्ति ने उसकी कनपटी पर तेज घूंसा जड़ दिया था और फन्दे को गले से निकाल लिया था। हरी व नरम घास वाली जमीन पर क्रान्ति और सोनू लेटे हुये थे और आंखें मूंदकर आजादी की ताजी हवा को नथुनों के रास्ते फेफड़ों तक पहुंचा रहे थे।

फिर आंखें खोलकर क्रान्ति ने सोनू की तरफ करवट ली और उसके होठों को चूमकर बोली, "अभी आराम करने का वक्त नहीं आया सोनू डार्लिंग। इस हेलीकॉप्टर की वजह से हम पकड़े जा सकते हैं। मनोरमा देशपाण्डे ना सिर्फ मिनिस्टर है, बल्कि उद्योगपति घराने की बहू भी है। उससे बढ़कर ये कि हम दोनों कानून के लिये बहुत बड़े पापी हैं। सरकार और कानून के रखवालों के हाथ-पैर फूल चुके होंगे और पूरे जोर-शोर से हमारी तलाश की जा रही होगी। हम पकड़े जायेंगे तो सिर्फ इस हेलीकॉप्टर की वजह से...।"

सोनू ने भी करवट बदलकर क्रान्ति के गाल पर गाल रख दिया और दायीं हथेली से उसकी पीठ सहलाते हुये बोला, "तो फिर क्यों ना हम इस हेलीकॉप्टर से दूर हो जायें?"

"दूर तो हो सकते हैं। लेकिन मैं कुछ और सोच रही थी—।"

"वो क्या—?"

"क्यों ना ऐसा कुछ किया जाये कि हमें कानून और कानून के रखवालों की तरफ से कोई खतरा ही ना रहे...।"

"ऐसा लगता है कि तुम्हारे दिमाग में कोई खिचड़ी पक रही है...।"

"हां...पक तो रही है...।"

"मुझे भी तो उस खिचड़ी के बारे में बतलाओ—।"

क्रान्ति ने एक पैर उठाकर सोनू के पैरों के ऊपर रख दिया और बतलाने लगी कि उसके दिमाग की पतीली में कौन-सी खिचड़ी पक रही है?

सोनू ने पहले उसके गाल और होठों को चूमा और फिर उसे वारी हो जाने वाली नजरों से देखते हुये बोला, "मानता हूं कि दिमाग के मामले में तुम भी कम नहीं हो मेरी जान। चलो, उठो। इधर-उधर चलकर देख लेते हैं कि अपने शिकार कहां पर हैं—।"



"सावन का महीना पवन करे शोर—जीयरा रे झूमे ऐसे जैसे बन में नाचे मोर...।"

करीबी गांव के युवा पति-पत्नी टमाटर के खेत में टमाटर तोड़ने आये थे। टमाटर तोड़ने और कई टोकरियों में भरकर बैलगाड़ी में लादने पर दोनों आम के बाग में पहुंचे। बाग में पहले से ही झूला पड़ा हुआ था। दोनों झूलते हुये और गीत गाते हुये अपनी मस्ती में मस्त थे और उस खतरे से कतई अनभिज्ञ थे, जो कि दबे पांव उनकी तरफ बढ़ रहा था।

सोनू और क्रान्ति ने जब उन मियां-बीवी को देखा तो आंखें चमक उठीं, चेहरे खिल उठे।

फुसफुसाहट भरी आवाज में बात करके दोनों उनके करीब पहुंचे। दोनों को देख बीवी पति की गोद से उतर गई और मारे शर्म के नजरें व चेहरा झुका लिया।

पति भी हड़बड़ाकर झूले से उतरा और बोला, "आप लोग? आपके कपड़े तो जेल के कैदियों जैसे ही हैं। मैंने कई फिल्मों में कैदियों को ऐसे कपड़े पहने देखा है। वैसे भी आप इस इलाके के नहीं लगते। कहीं...आप दोनों जेल से भागकर तो नहीं आये हैं...?"

"जरूरत से ज्यादा समझदार हो तुम...।" जहरीली किस्म की मुस्कान के साथ बोली क्रान्ति, "...ठीक ही पहचाना तुमने। हम दोनों बहुत ही खतरनाक मुजरिम हैं। हमें फांसी की सजा सुनाई गई थी। लेकिन अभी तक ऐसा कोई फन्दा नहीं बना, जो हम दोनों के गले में फिट हो सके। मेरा नाम क्रान्ति...और ये सोनू...?"

"क...क्रान्ति...सोनू...।" सूरज नाम का वो युवक चौंककर तथा बौखलाकर बोला, "...हां, याद आया। मेरे पास डिस एन्टीना है। उसके जरिये टी०वी० पर समाचारों वाले कई चैनल भी आते हैं। तुम दोनों को दिमाग के जादूगर केशव पण्डित ने पकड़ा था। लेकिन तुम दोनों तो बेहोशी की हालत में थे और हस्पताल में थे...।"

"केशव पण्डित की बेवकूफ बीवी सोफिया को हम दोनों पर रहम आ गया था...।" सोनू हंसकर बोला, "उसके कहने पर केशव

के लड़के आशीर्वाद ने हमें ठीक कर दिया था। हमें जेल पहुंचा दिया गया था। पन्द्रह अगस्त के जश्न में एक मन्त्री जेल में आई हुई थी। क्रान्ति ने उसे अपने कब्जे में ले लिया और मुझे भी आजाद करा लिया था। फिर हम उस मन्त्री के हेलीकॉप्टर से भागकर यहां चले आये। झील के किनारे हेलीकॉप्टर खड़ा है और मन्त्री भी उसमें बेहोश पड़ी है।"

"ये दोनों बहुत खतरनाक मुजरिम हैं डोली...।" सूरज अपनी बीवी के करीब पहुंचकर फुसफुसाया, "...मुझे इन दोनों के इरादे ठीक नहीं लग रहे हैं। आसपास कोई हमारी मदद करने वाला दिखलाई भी नहीं पड़ रहा है। बैलों, गाड़ी और टमाटरों का लालच छोड़ो। हम दोनों शोर मचाते हुये गांव की तरफ दौड़ते हैं। खेतों में लोग काम कर रहे होंगे तो हमारी मदद को आ जायेंगे...भागो...।"

दोनों मियां-बीवी एक-दूसरे का हाथ थामकर भागे और चिल्लाये भी—"बचाओ...बचाओ...।"

क्रान्ति और सोनू ना तो हड़बड़ाये, ना ही परेशान हुये—मानो कुछ हुआ ही ना हो।

"मैं दिमाग के दम पर काम करने में विश्वास करता हूं क्रान्ति। मजबूरी में ही हथियार उठाता हूं या हाथ-पैर चलाता हूं। ये डिपार्टमेन्ट तुम्हारा है। इन दोनों से तुम्हीं निपटो—।"

रायफल से निकली गोली की मान्निंद ही क्रान्ति दौड़ लगा रहे पति-पत्नी के पीछे दौड़ी।

फिर किसी शेरनी की मानिन्द ही उसने हवा में छलांग लगा दी और सूरज व डोली को दबोचे हुये जमीन पर गिरी।

तड़ाक...तड़ाक।

दोनों की कनपटियों पर उसने जो घूंसे मारे, वो हथौड़ों के प्रहार से कतई भी कम नहीं थे।

दोनों को छटपटाकर दम तोड़ने में अधिक समय नहीं लगा।

❑❑❑

❑❑❑

सूरज की जेब से निकली बीड़ियों में कश लगा रहे थे दोनों। क्रान्ति सूरज और सोनू डोली की लाश पर बैठा हुआ था।

"एक कहावत है क्रान्ति कि भूख में कुल्हड़ के टुकड़े भी स्वादिष्ट लगते हैं...ऐसे ही हम दोनों को कई दिनों से सिगरेट मयस्सर नहीं हो रही थी। सो इन बीड़ियों में भी मजा आ रहा है...।"

"लेकिन मुझे खास मजा नहीं आ रहा। बीड़ी-सिगरेट के बिना तो रह सकती हूं लेकिन शराब के बिना नहीं...।"

"डोन्ट वरी। अब हम दोनों आजाद हैं। शराब का भी इन्तजाम हो जायेगा। लेकिन पहले वो जरूरी काम तो निपटा लें, जिससे हम कानून और कानून के रखवालों से छुटकारा पा लेंगे...।"

बीड़ी फेंक उठी क्रान्ति और सूरज की लाश को कन्धे पर डालकर चल दी। सोनू ने भी डोली की लाश को उठाकर कन्धे पर डाला और क्रान्ति के साथ हो लिया। दस मिनट में ही वो झील किनारे खड़े हेलीकॉप्टर पर पहुंच गये।

मनोरमा देशपाण्डे अभी भी बेहोश पड़ी थी।

सूरज और डोली की लाशों को भी हेलीकॉप्टर में लादकर दोनों भी सवार हो गये।

पायलट वाली सीट पर बैठकर क्रान्ति ने हेलीकॉप्टर को स्टार्ट किया और उड़ाने लगी।

झील की पूरी परिक्रमा लेने पर क्रान्ति ने हेलीकॉप्टर का रुख पहाड़ी की तरफ किया और फिर सोनू को इशारा करने पर खिड़की खोलकर झील के पानी में कूद गई।

दूसरी तरफ की खिड़की खोलकर सोनू ने भी झील में छलांग लगा दी।

पायलट विहीन हेलीकॉप्टर हवा में झटके-से खाने लगा और फिर पहाड़ी से टकराया।

भयानक किस्म के धमाके के साथ आग का विशालकाय गोला आसमान की तरफ उड़ा, जिसमें हेलीकॉप्टर के चीथड़े भी सम्मलित थे।

❑❑❑

❑❑❑

"तो ये थे प्रधानमन्त्री जी—जिन्होंने स्वास्थ्य मन्त्री मनोरमा देशपाण्डे के निधन पर गहरा दुःख व्यक्त किया। यूं तो प्रदेशभर में

ही शोक का वातावरण है—लेकिन मनोरमा देशपाण्डे के गृहनगर विजयपुर में तो दुख का गहरा वातावरण है। जैसे ही मनोरमा देशपाण्डे की मौत की खबर विजयपुर पहुंची...लोग स्तब्ध रह गये। सभी 'देशपाण्डे विला' की तरफ दौड़ पड़े। सभी दुकानें, फैक्ट्री, स्कूल वगैरा बन्द हो गये। लोगों का रो-रोकर बुरा हाल है। कई लोगों को तबियत बिगड़ने पर हॉस्पिटल पहुंचाया गया है। मनोरमा देशपाण्डे जी के पति जगमोहन देशपाण्डे को दिल का दौरा पड़ने पर देशपाण्डे हॉस्पिटल पहुंचाया गया। जहां सरकार ने तीन दिन के राजकीय शोक की घोषणा की है। आज शाम को पोस्टमार्टम के बाद मनोरमा देशपाण्डे के पार्थिव शरीर को 'देशपाण्डे विला' के हॉल में लाया जायेगा और अन्तिम दर्शन के लिये रखा जायेगा। कल शाम को मोक्षधाम श्मशान घाट पर राजकीय सम्मान के साथ अन्तिम-संस्कार किया जायेगा। अन्तिम-संस्कार में मुख्यमन्त्री और अन्य कई मन्त्रियों के साथ प्रधानमंत्री जी और विपक्ष के नेता भी सम्मलित होंगे...।"

सोफिया ने मेज पर से रिमोट उठाकर टी०वी० का वॉल्यूम कम कर दिया और ड्राइंग रूम में उपस्थित केशव, आशीर्वाद, राजन, चांदनी, करतार सिंह और श्वेता गुप्ता से सम्बोधित होकर बोली—"स्वयं को जरूरत से ज्यादा स्मार्ट समझना और ओवर कॉफिडेंस का शिकार होने का यही परिणाम निकलता है। क्रान्ति पहले भी जेल से फरार हो चुकी थी। सोनू को भी फरार कराने में कामयाब रही थी वो। वह इस कन्फ्यूजन की शिकार हो चली थी कि वो कुछ भी कर सकती है—उसे प्रत्येक काम में सफलता मिलेगी-ही-मिलेगी। इस बार उसे परिणाम भुगतना पड़ गया। उसके साथ-साथ सोनू भी मारा गया...।"

"लेकिन एक काम बुरा हो गया जीजी...।" चांदनी दुखी लहजे में बोली, "...बेचारी मनोरमा देशपाण्डे भी मारी गई। यूं तो नेताओं और मन्त्रियों को बुरा माना जाता है। लेकिन मनोरमा देशपाण्डे को विपक्षी पार्टी वाले भी अच्छी महिला मानते थे।"

"मनोरमा देशपाण्डे राजनीति में नहीं जाना चाहती थीं...।" बोली श्वेता गुप्ता, "...वो समाज सेवा से जुड़ी हुई थीं। उन्होंने 'जयहिन्द' नाम की सामाजिक संस्था बनाई हुई थी, जिसके माध्यम से आधुनिक सुविधाओं वाले कई हॉस्पिटल, स्कूल, अनाथ आश्रम, महिला और वृद्ध

आश्रम बनवाये थे। स्कूलों और हॉस्पिटल में निर्धन लोगों से कोई फीस या किसी भी तरह का खर्चा नहीं लिया जाता था। ना जाने कितनी निर्धन कन्याओं की शादी अपने खर्चे पर कराई थी। विजयनगर के लोगों ने जबरदस्ती और जिद करके इलेक्शन लड़वाया था। शानदार जीत हासिल की और राज्य सरकार में स्वास्थ्य मन्त्री बनीं। मन्त्री बनने पर कई स्वास्थ्य योजनायें चलाई थीं। जिन इलाकों में हॉस्पिटल नहीं थे, वहां हॉस्पिटल बनवाये। सभी हॉस्पिटल में दवाइयों और इलाज के जरूरी सामानों की कमी नहीं आने दी। कभी सरकारी कर्मचारियों ने इस्ट्राइक नहीं की थी।"

"मैनू वी मनोरमा देशपाण्डे दी मौत दा बहुत दुख है...।" बोला करतार सिंह, "...लेकिन क्रान्ति ते सोनू दे मरने दी खुशी वी है। क्रान्ति ने तो नाक विच दम किया हुआ था ही—सोनू वी कम नी था। ओहदा दिमाग भी डेंजर सी। दोनों फरार हो जाते तो ना जाने किन्ना धमाल मचाते। दोनों दे मरने तों कानून, समाज ते देश दा वड्डा फायदा होया है। प्रहावा जी...तुहान्नू कैसा फील हो रहा है...?"

"मुझे अच्छा नहीं लग रहा है...।"

चौंके तो सभी, लेकिन सोफिया तो चिहुंककर ही बोली—"...ये...ये क्या कह रहे हो तुम केशव? क्या क्रान्ति और सोनू की मौत से तुम्हें खुशी नहीं हो रही है...?"

"सन्तोष तो है सोफी कि दो खतरनाक और शातिर किस्म के मुजरिम खत्म हो गये...।" चारमीनार की सिगरेट में कश मारकर और नथुनों के माध्यम से कसैला धुआं उगलने पर बोला केशव, "...लेकिन पर्सनली खुशी नहीं हो रही है...।"

"लेकिन...ऐसा क्यों गुरुजी—?"

"क्योंकि बेवकूफ मित्र से समझदार शत्रु कहीं बेहतर होता है श्वेता...। माना कि क्रान्ति और सोनू खतरनाक किस्म के मुजरिम थे। लेकिन दोनों इन्टेलीजेन्ट थे—माइन्डेड थे। दोनों ने जुर्म की राह नहीं पकड़ी होती तो वैज्ञानिक के रूप में देश की सेवा कर रहे होते। मैं वकील और जासूस होने के साथ-साथ आधा पुलिस और आधा मिलिट्री वाला भी हूं। मुजरिमों के पीछे पड़ना और उन्हें पकड़कर कानून के माध्यम से सजा दिलवाना मेरा शौक है। जरूरत पड़ने पर कानून की बजाय

स्वयं भी मुजरिम को सबक सिखला देता हूं। मामूली किस्म के मुजरिम का पीछा करके उसे पकड़ना और सजा दिलवाने या सजा देने में कोई खास मजा नहीं आता। मजा तो उस मुजरिम को पकड़ने में आता है, जो दिमाग भी खर्च करवाये और जिस्मानी मेहनत भी करवाये। क्रान्ति और सोनू आसानी से काबू में आने वाले नहीं थे। वो कब क्या कर जायें—ये अन्दाजा लगाना भी आसान नहीं था। दोनों से जंग लड़ने में मजा आता था। अब पता नहीं कि उनकी टक्कर का मुजरिम कब मिलेगा? मिलेगा भी या नहीं? दोनों जुर्म के शातिर खिलाड़ी थे। कितनी आसानी से दोनों जेल से भाग निकले थे—दुर्घटना हुई और दोनों बेबसी भरी मौत मारे गये। साथ में बेचारी मनोरमा देशपाण्डे की भी जान चली गई। विश्वास ही नहीं हो रहा है कि क्रान्ति और सोनू इस दुनिया में नही रहे। थोड़ी देर पहले ऐसे ही सोच रहा था कि अगर हेलीकॉप्टर वाला हादसा नहीं हुआ होता और क्रान्ति, सोनू जिन्दा होते तो इस वक्त क्या कर रहे होते—?"

□□□

□□□

जेठ की तपती दुपहरी में किसी को गाड़ी में बैल की जगह जोड़कर घन्टों रेगिस्तान की तपती रेत पर दौड़ाया जाये तो उसकी जो दशा होगी, वो ही दशा क्रान्ति और सोनू की थी।

पसीने से लथपथ भी थे और दमे के मरीज की मानिन्द हांफ भी रहे थे।

एक ही बिस्तर पर थे दोनों। जिस्मों पर वस्त्रों के नाम पर धागे का एक रेशा तक नहीं था।

चेहरों पर थकान, लेकिन आंखों में परम सन्तुष्टी के भाव हिलौरे मार रहे थे। मानो घन्टों की भागा-दौड़ी करने पर भूखी बिल्ली और बिल्ले को मलाई से भरा बर्तन हासिल हुआ और दोनों ने छककर उस मलाई को चट कर डाला हो।

राजहंस जैसे सफेद व सच्चे मोती से चमचमाते दांतों से सोनू के दोनों गालों पर हल्के-हल्के निशान बनाये क्रान्ति ने और फिर उंगलियों को आपस में फंसाकर सोनू की पीठ पर मखमली बांहों का शिकंजा कसकर बोली—"...भीमा के बारे में बतलाया था तुम्हें मैंने। वो मेरा

वफादार गुलाम था। यूं तो कम उम्र में ही मैं मर्दखोर हो गई थी। ना जाने कितने मर्दों के साथ मौज-मस्ती की मैंने—लेकिन भीमा का जवाब नहीं था। उसकी टक्कर का कोई मर्द मेरी जिन्दगी में नहीं आया था। भला शेरनी को कोई चूहा, बिल्ला, हिरण या कुत्ता क्या टक्कर दे पायेगा? भीमा के बाद तुम मिले हो, जो बिस्तर के अखाड़े में मेरा मुकाबला कर सकता है।

वैसे भी काफी वक्त से मर्द से दूर रही मैं। तुमने मनचाही मन्जिल पर पहुंचाकर तबियत खुश कर दी। जीओ मेरे राजा...जवाब नहीं तुम्हारा। देखने में तो भीमा से आधे ही हो लेकिन तुममें पावर और एनर्जी कूट-कूटकर भरी हुई है। लम्बी रेस के घोड़े हो तुम यार। मुझ जैसी मुसाफिर को तुम ही मन्जिल पर पहुंचा सकते हो...वो भी बिना रुके और बिना थके।"

"तुम्हारा भी तो कोई जवाब नहीं है जानेमन...।" तर्जनी उंगली क्रान्ति के होठों व दांतों पर फिराते हुये बोला सोनू, "...जब मैंने जुर्म की दुनिया में कदम रखा था तो तय किया कि औरत के चक्कर में नहीं पड़ूंगा—औरत मर्द को कमजोर बना देती है। लेकिन तुम्हारा साथ मिला तो मेरी सोच बदल गई। जुर्म की पगडन्डियों पर दौड़ने वाले तुम्हारे दिमाग का तो कोई जवाब ही नहीं। लेकिन एक औरत के रूप में भी तुम लाजवाब हो। सिर्फ चेहरा ही खूबसूरत नहीं है, बल्कि जिस्म भी जीता-जागता, हिलता-डुलता ताजमहल है। मानो कुदरत ने एक बर्तन में मोती, सोना, चांदी...मक्खन, रेशम, शहद, नमक, गुलाब की पंखुड़ी, केसर, कस्तूरी और आग को मिक्स करके एक मसाला तैयार किया और उसे खूबसूरत प्रतिमा में ढालकर उसमें जान फूंक दी हो। यूं तो दुनिया में तुम जैसी दूसरी औरतें और भी होंगी—लेकिन मर्द को खुश करने की जो बेहतरीन कला तुम्हारे पास है, वो किसी दूसरी के पास नहीं होगी। तुम्हारे प्यार में ऐसा खौलता हुआ लावा है कि पत्थर को भी पिघलाकर रख दे। किसी भी मर्द के पास दुनिया की सबसे हसीन, सुन्दर बीवी या प्रेमिका ही क्यों ना हो, लेकिन तुम्हें देख वो तुम्हें पाने को बेकरार हो जाये...।"

सोनू के आलिंगन से निकल झटके के साथ उठ बैठी क्रान्ति और क्रोध से भरी हुई फूलते-पिचकते नथुनों से फुंफकारें-सी छोड़ने लगी।

उसका उन्नत सीना तेजी के साथ उठ-गिर रहा था।

"क्या हुआ जानेमन...?" सोनू भी उठ बैठा और उसकी पीठ को होठों से सेंकते हुये फुसफुसाया-सा, "अचानक ही तुम्हारा मूड ऑफ क्यों हो गया मेरी जान...?"

"अनजाने में ही तुमने मेरी दुखती रग को दबा दिया है सोनू...।" नागिन-सी फुंफकार रही थी क्रान्ति, "...केशव पण्डित। हां, केशव पण्डित। हरेक जवान लड़की की तरह मैंने भी अपने तसव्वुर में होने वाले पति की तस्वीर बनानी शुरू की थी—जो दुनिया के सबसे खूबसूरत, शक्तिशाली, बहादुर और बुद्धिमान राजकुमार के जैसी ही थी। केशव पण्डित को देखा था तो चौंक उठी थी। क्योंकि वो मेरे तसब्बुर में बनी तस्वीर से भी कहीं ज्यादा खूबसूरत, हैन्डसम, स्मार्ट, इन्टेलीजेन्ट, माचोमैन, जेन्टल मैन, जीनियस और भी ना जाने क्या-क्या था। मुंह में पानी भर आया था। दिल और दिमाग ने कहा था कि उससे बढ़िया जीवनसाथी सारी दुनिया में हो ही नहीं सकता। पहली बार भगवान को याद किया था और प्रार्थना की थी कि केशव को पति के रूप में हासिल करूं। फिर पता चला कि उसकी सोफिया नाम की बीवी और आशीर्वाद नाम का एक बेटा भी है। लेकिन हिम्मत नहीं हारी थी मैंने। केशव को हासिल करने के लिये दिमाग के सारे घोड़े दौड़ा दिये थे। लेकिन उस साले केशव पर तो सोफिया की मुहब्बत का जुनून सवार था। ठुकरा दिया था उसने मुझे और मेरी मुहब्बत को...दुत्कार दिया था मेरी चाहत को। इतना ही नहीं...साले ने मेरे बड़े भाई की जान ले ली थी। मुझे तेजाब से नहला दिया था। मुहब्बत की बजाय नफरत की उसने...।"

"जो हुआ...उसे भूल जाओ क्रान्ति...।"

"कैसे भूल जाऊं सोनू...कैसे...?" चोटिल नागिन की मानिन्द ही बल खाकर बोली क्रान्ति, "...मेरी दुनिया ही बदलकर रख दी उस साले ने। क्या से क्या हो गई मैं? सुरेन्द्र नगर इलाके की राजकुमारी थी मैं। वहां मेरी तूती बोलती थी। जो चाहती थी...वही होता था। लेकिन आज है कि कानून से भागते-छिपते फिर रहे हैं। अगर सुरेन्द्र नगर में जाऊं तो वहां के लोग शायद हमला बोल दें—या पकड़कर पुलिस के हवाले कर दें क्योंकि उन हरामजादों ने मेरे भाई को ही मार दिया

था—और ऐसा हुआ था उस साले केशव पण्डित की वजह से। केशव ने मेरी जिन्दगी को उलट-पुलट कर दिया सोनू...।"

अपनी नग्नता की परवाह किये बिना क्रान्ति बेड से उतरकर मेज के करीब पहुंची और व्हिस्की की खुली बोतल उठा ली। होठों से लगाकर 'गट-गट' की आवाज के साथ यूं ही पीने लगी कि मानों व्हिस्की ना होकर रूह-अफजा हो।

खाली बोतल फर्श पर फेंक उसने ट्रिपल फाइव की डिब्बी उठाकर एक सिगरेट निकाली और माचिस की तीली से सुलगा ली। कश मारा—होठों को गोलाकार करके ढेर सारा धुआं छोड़ा और फिर बोली, "...मुझे बदला लेना है केशव पण्डित से...सोनू—।"

"वो तो मुझे भी लेना है...।" सोनू भी बेड से उतर आया और क्रान्ति के संगमरमरी जिस्म को बांहों में भरकर और उसके व्हिस्की से गीले हुये होठों को चूमकर बोला—"वो केशव पण्डित ही था, जिसने मुझे पकड़कर कानून के हवाले किया था और फांसी की सजा सुनवाई थी। तुम्हारी मदद से मैं फरार हुआ था और मुर्दे वाला खेल खेला था, लेकिन केशव ने फिर पकड़ लिया था। ना सिर्फ पकड़ लिया था, बल्कि अपने लड़के आशीर्वाद के जरिये हम दोनों को कोमा की हालत में भी पहुंचा दिया था। केशव पण्डित हम दोनों का ही दुश्मन है। उससे इन्तकाम लेना हमारा मकसद है। जब तक वो जिन्दा है...हमारी राह में कांटे बिछाता रहेगा—हमें परेशान करता रहेगा। दुनिया में सिर्फ एक वो ही ऐसा शख्स है, जो हमें परेशानी में डाल सकता है। उसका खात्मा हो जाये तो फिर कोई भी माई का लाल हमें परेशान नहीं कर सकता। हम दोनों जुर्म के माहिर खिलाड़ी हैं। हम अपनी काबिलियत के दम पर जुर्म की दुनिया में राज करेंगे। हमारे पास बेपनाह दौलत होगी। हम किसी विदेशी शहर में अपना ठिकाना बनायेंगे। वहीं से हिन्दुस्तान में अपना बड़ा गैंग संचालित करेंगे...।"

"लेकिन...क्या केशव को मारना जरूरी है...?"

"मैं भी ये बात कहा करता हूं कि दुश्मन को जिन्दा रखो—लेकिन उसकी जिन्दगी को मौत से भी बदतर कर दो। लेकिन केशव पण्डित के बारे में ऐसा सोचना ठीक नहीं है। उसे जिन्दा छोड़ना मुसीबत को

हमेशा के लिये जिन्दा रखना है। वो कितना खतरनाक है—ये हम दोनों ही जानते हैं। मौका मिलने पर वो क्या कर सकता है...ये कहने की बात नहीं है। सो मेरा ख्याल तो यही है कि केशव पण्डित का खात्मा ही कर देना चाहिये। फिर हम दोनों बिना किसी बाधा के अपनी पसन्द के काम कर सकेंगे और शान की जिन्दगी भी जी सकेंगे...।"

"लेकिन...केशव को मार पाना क्या आसान है? ना जाने कितने आतंकी संगठनों, बड़े मुजरिमों ने केशव के खात्मे की चेष्टा की—लेकिन केशव को खत्म करने के बदले वो ही खत्म हो गये।"

"इस बात को मैं भी समझता हूं जानेमन। केशव दिमाग का जादूगर तो है ही...साथ ही भाग्य भी उसका साथ देता है। लेकिन तुम ये भी जानती हो कि दिमाग के मामले में मेरा भी कोई जवाब नहीं। पन्द्रह वर्ष की उम्र में ही मैंने प्लान बनाकर उन पर अमल करना शुरू कर दिया था। ऐसा प्लान बनाऊंगा कि उस साले केशव का दिमाग और भाग्य, दोनों ही धरे-के-धरे रह जायेंगे—।"

"लगता है कि तुम कोई प्लान चुके हो—?"

"हां, ऐसा भी समझ लो—।"

"क्या है तुम्हारा प्लान...?"

❑❑❑

❑❑❑

सुरेश नामक वो अधेड़ अपनी बीवी, सोलह वर्ष की बेटी और बारह वर्ष के बेटे की हालत देखकर पहले तो चिहुंका और फिर खौफजदा हो चला।

उसकी बीवी और बच्चों को तीन अलग-अलग कुर्सियों पर बान्ध कर बैठाया गया था और उनके पेटों पर बम भी बान्धे गये थे।

कमरे में मौजूद रिवॉल्वरधारी सोनू व क्रान्ति से सम्बोधित होकर बोला वह—"कौन लोग हो तुम? मेरी बीवी और बच्चों को यूं क्यों बान्धा है? इनके जिस्म पर बम क्यों बान्धे हैं तुम लोगों ने...?"

आगे बढ़कर क्रान्ति ने सुरेश के माथे के बीचो-बीच रिवॉल्वर की नाल टिका दी। सिगरेट में कश लगाकर उसके चेहरे पर धुअें का गोला दागकर खुरदुरे से लहजे में बोली "क्या टी०वी० नहीं देखता तू? अखबार

नहीं पढ़ता बे? हम दोनों इतनी मशहूर हस्तियां हैं और तूने हमें पहचाना नहीं? सूरदास के खानदान से है क्या साले...?"

सुरेश ने अब क्रान्ति व सोनू को ध्यान से देखा तो उसकी आंखें फैलकर कटोरियों से बाहर कूदने को तत्पर हो चलीं। चेहरा फक्क पड़ चला और समूचा जिस्म पसीने-पसीने हो चला।

"तु...तुम दोनों...।" वह हकलाया-सा, "तु...तुम तो क...क्रान्ति...और सो...सोनू हो...जि...जिन्हें केशव प.पण्डित ने प...पकड़ा था और...।"

"हां—ठीक पहचाना तूने...।" सोनू सिगरेट फूंकते हुये बोला, "ये क्रान्ति और मैं सोनू...।"

"ले...लेकिन तु...तुम दोनों मेरे घर में क...क्या कर रहे हो? मे...मेरी बीवी और ब...बच्चों को बान्धकर...उनके पेट पर ब...बम क्यों...बान्ध दिये है? मैं...मैं तो बहुत गरीब और श...शरीफ आदमी हूं...हम लोगों ने भला तु...तुम दोनों का क...क...क्या बिगाड़ा...?"

"तू तो नाहक ही घबरा रहा है...।" क्रान्ति उसके माथे से रिवॉल्वर हटाकर बोली, "तुझसे एक काम कराना है। वो काम कर दिया तो इनाम के रूप में पूरे दो लाख रुपये मिलेंगे। एक लाख रुपये एडवांस...।"

सोनू ने नीली जींस की जेब से हजार-हजार के नोटों वाली गड्डी निकालकर सुरेश की शर्ट की जेब में ठूंस दी और बोला—"काम होते ही बाकी के एक लाख भी मिल जायेंगे...।"

"ले...लेकिन वो काम क्या है—?'-'

"तू सेठ ताराचन्द के यहां रसोइये की नौकरी करता है...।" क्रान्ति उसकी आंखों में झांकते हुये बोली, "उसकी बीवी मैनावती ने कल दोपहर में सत्यनारायण की कथा और कीर्तन का आयोजन किया है। मैनावती उस महिला कल्याण समिति की महामन्त्री है—जिसकी अध्यक्ष सोफिया पण्डित है...केशव की बीवी। मैनावती ने कथा और कीर्तन में सोफिया के साथ चांदनी और श्वेता गुप्ता को भी इन्वाइट किया है। तुझे प्रसाद और चरणामृत भी तैयार करना है। हम तुझे एक शीशी देंगे। तुझे उस शीशी में भरी दवा को चरणामृत में मिला देना है। बस...इतना-सा ही काम करना है तुझे—जिसके बदले में तुझे पूरे दो लाख रुपये मिलेंगे...।"

सोनू ने कांच की एक छोटी शीशी निकालकर सुरेश की आंखों के सामने लहराई।

"क...क्या है इस शीशी में...?"

"ड्रग...नशे की दवा।" जवाब दिया क्रान्ति ने, "जो भी चरणामृत पीयेगा, वो ही बेहोश हो जायेगा।"

"लेकिन सबके बेहोश होने से तुम्हें क्या फायदा होगा? मेरा मतलब है कि...।"

"हमें तो सिर्फ सोफिया, चांदनी और श्वेता गुप्ता से ही मतलब है। सबके साथ वो तीनों भी बेहोश हो जायेंगी। उनके बेहोश होते ही तुम मेन गेट पर जाकर रूमाल को चेहरे पर यूं फिराओगे कि जैसे पसीना पोंछ रहे हो। ये हमारे आदमियों के लिये सिगनल होगा। वो कोठी में घुसेंगे और बेहोश सोफिया, चांदनी और श्वेता गुप्ता को उठा कर चलते बनेंगे–।"

"लेकिन तुम उन तीनों को किडनेप क्यों करना चाहती हो–?"

"तू जानता ही होगा कि अपना केशव पण्डित के साथ छत्तीस का आंकड़ा है–।" नथुनों से सिगरेट का धुआं उगलते हुये बोली क्रान्ति, "केशव से हिसाब चुकता करने के लिये ही हम उसकी बीवी सोफिया, उसके चेले राजन शुक्ला की बीवी चांदनी और केशव की चेली श्वेता को किडनेप करना चाहते हैं...।"

"ले...लेकिन ये सब करके तो मैं फंस जाऊंगा। मुझी पर इल्जाम आयेगा और मुझे पकड़कर पुलिस के हवाले कर दिया जायेगा–।"

"अक्लमन्दी से काम लेगा तो ऐसा कुछ नहीं होगा। वो चरणामृत तुझे भी पीना है और बेहोश हो जाना है...।"

"मामला पण्डित जी की धर्मपत्नी, राजन शुक्ला की बीवी और पण्डित जी की शिष्या के किडनेप का होगा। क्या पण्डित जी को बेवकूफ बनाया जा सकता है? नहीं, वो मेरी आंखों में झांकते ही हकीकत समझ जायेंगे और मुझे दबोच लेंगे। नहीं...मैं ये काम नहीं कर...आह... आह...।"

क्रान्ति ने दायां पैर उठाकर सुरेश के पेट पर ठोकर मारकर उसे गिरा दिया और फिर उसके सीने पर जूते समेत पैर रखकर फुंफकारी-सी–"इन्कार करने की पोजीशन में नहीं है तू। तेरी बीवी

और बच्चों के पेट पर खिलौने नहीं बन्धे हैं...खतरनाक और बेहद शक्तिशाली बम बन्धे हुये हैं। बमों का कनेक्शन रिमोट से है। एक किलोमीटर की दूरी से भी रिमोट का एक बटन दबाकर तीनों बमों को एक साथ ब्लास्ट किया जा सकता है। बमों के ब्लास्ट होने से इस मकान की एक-एक ईंट उड़ जायेगी। मलबे का ढेर लग जायेगा। सोच ले कि जो बम मकान के लोहे, लकड़ी और पत्थर का पाउडर बना देंगे...वो तेरी बीवी और बच्चों का क्या हाल करेंगे? ढूंढने पर भी तीनों की हड्डी का एक छोटा-सा टुकड़ा भी नहीं मिल पायेगा...।"

"न...नहीं...।"

अपने बीवी-बच्चों के परिणाम की कल्पना मात्र से ही सुरेश के तिरपन्न कांप उठे–खून का मानो पानी बन गया।

उसके सिर के बालों को मुट्ठी में जकड़कर सोनू ने उसे खड़ा किया और फिर गरज कर बोला, "पुलिस या केशव पण्डित...कोई भी तेरी मदद नहीं कर पायेगा। हम इस घर में नहीं रहेंगे। हम तो यहां से चलते बनेंगे। हमारा एक आदमी तेरे घर के आसपास रहेगा। पुलिस या केशव पण्डित यहां आया तो हमारा आदमी हमें फोन कर देगा और हम दूर से ही रिमोट का बटन दबाकर तीनों बमों को ब्लास्ट कर देंगे। रहा सवाल तेरा...तो तू इन बमों को नहीं खोल सकता। कोई बमों का एक्सपर्ट भी इन बमों को खोलने की चेष्टा करेगा तो ये तुरन्त ही फट पड़ेंगे। इन्हें सिर्फ हम दोनों ही खोल सकते हैं। ये वादा रहा कि जैसे ही तू हमारा काम करेगा और हमारे आदमी सोफिया, चांदनी, श्वेता गुप्ता को किडनेप कर लेंगे–हम इन तीनों को बमों से आजाद कर देंगे और बाकी के एक लाख रुपये भी दे जायेंगे। अगर तू पकड़ा भी गया तो कोई खास सजा नहीं होगी। क्योंकि अदालत इस बात का ख्याल रखेगी कि तूने जो कुछ भी किया, अपने बीवी-बच्चों को बचाने के लिये ही किया। अब बोल...तू हमारा काम करेगा कि नहीं?"

बेचारा सुरेश!

क्या वो इन्कार करने की स्थिति में था?

❑❑❑

❑❑❑

प्रश्न बीवी और बच्चों की जिन्दगी का था–सो सुरेश ने वही किया, जो क्रान्ति और सोनू चाहते थे।

अगले दिन वो सेठ ताराचन्द के घर गया तो अपनी घबराहट और मनोदशा को छिपाने की चेष्टा करता रहा। उसने प्रसाद के साथ चरणामृत तैयार किया तो क्रान्ति व सोनू की दी हुई बेहोशी वाली दवा को भी चरणामृत में मिला दिया और इस बात का ध्यान रखा कि कोई देखने ना पाये।

गृह स्वामिनी मैनावती के न्योते पर सोफिया, चांदनी और श्वेता गुप्ता तो आई ही थीं—तीन दर्जन अन्य महिलायें भी पधारी थीं।

पण्डित जी ने पहले सत्यनारायण जी की कथा सुनाई—फिर एक महिला मण्डली ने हारमोनियम, ढोलक व मंजीरों की धुन पर भजन भी सुनाये।

फिर प्रसाद के साथ चरणामृत का भी वितरण हुआ।

चरणामृत में मिलाई गई दवा बे-स्वाद थी और सेवन के पांच मिनट पश्चात् अचानक ही उसका प्रभाव होता था।

सभी बेहोश।

सुरेश मेन गेट पर गया और उसने चेहरे पर रूमाल को यूं फेरा कि जैसे पसीना पोंछ रहा हो—फिर भीतर पहुंचकर उसने भी चरणामृत का सेवन कर लिया।

चार काली पोशाक तथा नकाब वाले आये और उनमें से तीन ने बेहोश सोफिया, चांदनी व श्वेता गुप्ता को कन्धों पर लाद लिया और बाहर खड़ी चोरी की टाटा सफारी में बैठकर 'ये जा...वो जा' हो गये।

रिश्तेदार की शादी में सम्मलित होकर लौटी एक पड़ोसन ने सोचा कि मैनावती ने यहां पहुंचकर तकादा पूरा कर दे और प्रसाद भी ले आये। लेकिन उसने वहां सभी को बेहोश पाया तो घबराकर शोर मचा दिया और फिर पुलिस को फोन कर दिया।

पुलिस आई।

आशीर्वाद, राजन, करतार सिंह के साथ केशव भी आया। पुलिस ने उसे सोफिया, चांदनी व श्वेता के किडनेप की जानकारी दे दी थी।

नौकर सुरेश को देखते ही केशव ने उसे पकड़ लिया और जरा-सी सख्ती की तो सुरेश ने सारी बातें बतला दीं।

केशव, आशीर्वाद, राजन और करतार सिंह सुरेश के साथ उसके घर पहुंचे तो उसकी बीवी और बच्चों ने बतलाया कि क्रान्ति व सोनू

आधा घन्टा पहले ही उन्हें मुक्त कर गये थे और बाकी के एक लाख रुपये भी दे गये थे।

फिर शुरू हुआ क्रान्ति व सोनू के साथ-साथ सोफिया, चांदनी व श्वेता की खोज का अभियान लेकिन किसी का कुछ पता चलकर नहीं दिया।

फिर सोनू व क्रान्ति ने चोरी के फोन पर केशव से बात की और उसे एक स्थान पर पता बतलाकर अकेले और निहत्थे ही आने के लिये कहा।

❑❑❑
❑❑❑

वो बहुत पुराना किला था, जो कि खन्डहर में तब्दील हो चुका था और घने जंगल में छोटी-सी पहाड़ी के ऊपर स्थित था।

सोफिया, चांदनी व श्वेता के अलावा भी यहां पर दो दर्जन महिलायें तथा तीन दर्जन बच्चे भी थे।

सभी को एक चकोर व सूखे कुन्ड के भीतर हाथ-पैर बान्ध कर डाला गया था और उनके जिस्मों पर बम भी बान्धे गये थे।

सोफिया, चांदनी व श्वेता को नजदीक ही पत्थर के गोल खम्भों के साथ बान्धा गया था और उनके पेटों पर भी बम बन्धे हुये थे।

जमीन और टूटी-फूटी दीवारों व छतों के ऊपर काली नकाब व पोशाक वाले दो दर्जन युवक तैनात थे, जो कि ए०के० सैंतालीस, रिवॉल्वर, पिस्टल, माउजर और बन्दूक जैसे हथियार लिये हुये थे।

"आओ...आओ, दिमाग के जादूगर...।" काले चमड़े से निर्मित पोशाक में कैद क्रान्ति बोतल से व्हिस्की की घूंट भरकर व्यंग भरे लहजे में बोली, "बारात तो तैयार थी—सिर्फ दूल्हे का...यानि कि तुम्हारा ही इन्तजार हो रहा था।"

"क्या इसकी तलाशी ली जाये डार्लिंग...?" केशव पर रिवॉल्वर ताने हुये पूछा सोनू ने।

"कोई जरूरत नहीं सोनू...।" खाली हो चुकी बोतल को हवा में उछाल कर और रिमोट का प्रदर्शन करते हुये बोली क्रान्ति, "केशव जुबान का पक्का है। इसने वादा किया था कि अकेला और निहत्था

आयेगा तो ये अकेला और निहत्था ही आया होगा। वैसे भी ये गड़बड़ी करने की कन्डीशन में नहीं है। प्रश्न सोफिया, चांदनी और श्वेता का नहीं है। प्रश्न उन महिलाओं और बच्चों का भी है। केशव ठहरा सखी हातिमताई। ये अपनों की कुर्बानी तो दे सकता है—लेकिन इन निर्दोष औरतों और बच्चों की नहीं।"

गोल्डर कलर के लाइटर से चारमीनार मार्का वाली सिगरेट सुलगा कर और कश लगाकर बोला केशव—"बेमतलब में ही वक्त जाया करने से कोई फायदा नहीं। ये बोलो कि तुम दोनों ने इन लोगों को किडनेप क्यों किया है? मुझसे क्या चाहते हो—?"

सोनू और क्रान्ति ने एक-दूसरे को यूं देखा कि मानो पूछ रहे हों कि उनमें से कौन बोले?

फिर सोनू बोला—"अब दोपहर के बारह बजे हैं। तीन बजे जवाहरलाल नेहरू कॉलेज के मैदान में चीफ मिनिस्टर की रैली हो रही है—चीफ मिनिस्टर लोगों को सम्बोधित करेगा, भाषण देगा। तुम अगर फास्ट ड्राइविंग करोगे तो वहां तीन-साढ़े तीन बजे तक पहुंच ही जाओगे।"

"हां, मैं पहुंच जाऊंगा। लेकिन मुझे करना क्या है—?"

क्रान्ति ने एक सिगरेट सुलगा ली थी, जिसमें कश लगाकर और धुअें के गुबार को केशव के चेहरे पर छोड़कर बोली वह—"तुम्हें एक रिवॉल्वर दी जायेगी। रिवॉल्वर लोडेड होगी। तुम्हें उसकी तमाम गोलियां चीफ मिनिस्टर पर चलानी हैं...।"

"व्हाट...?" चिहुंककर बोला केशव, "क्या बकवास है ये? तुम सी०एम० साहब को मारने की बात कर रही हो—?"

"हां, कर तो रही हूं—।"

"ले...लेकिन सी०एम० साहब से तुम्हारी दुश्मनी क्या है—?"

"कोई दुश्मनी नहीं—।"

"तो फिर उन्हें क्यों मरवाना चाहती हो तुम...?"

"इतना भी नहीं समझते हीरो...।" केशव की परिक्रमा करते हुये बोली क्रान्ति, "जब तू यूं खुले आम...हजारों लोगों के सामने प्रदेश के सी०एम०... यानि मुख्यमन्त्री की हत्या करेगा तो क्या होगा? कानून के बेटे, कानून के पण्डित को कत्ल के इल्जाम में गिरफ्तार कर लिया

जायेगा। हथकड़ियां पहना कर पुलिस स्टेशन ले जाया जायेगा और फिर अदालत में पेश किया जायेगा। मुकदमा चलने ना चलने से कोई फर्क नहीं पड़ने वाला। तू ठहरा सत्यवादी हरिश्चन्द्र का वंशज। कबूल कर लेगा—कि तूने ही सी०एम० को कत्ल किया था। हो सकता है कि तेरे द्वारा देश और कानून की करी हुई सेवाओं को ध्यान में रखते हुये फांसी की सजा ना मिले—लेकिन उम्रकैद की सजा तो मिलेगी-ही-मिलेगी। भले ही उम्र कैद से कम सजा भी क्यों ना मिले...लेकिन तू कातिल तो कहलाया जायेगा ही और कैदियों वाली पोशाक पहनकर जेल में रहेगा। तेरा नाम कानून के रखवालों की फेहरिस्त में से कटकर मुजरिमों की फेहरिस्त में चढ़ जायेगा। कुल मिलाकर जीते-जी ही मर जायेगा तू। ये भी हो सकता है कि तू खुदकुशी ही कर ले।"

"नहीं केशव...नहीं...।" खम्भे के साथ बन्धी खड़ी सोफिया चिल्लाकर बोली, "भले ही कुछ भी हो जाये—लेकिन तुम क्रान्ति और सोनू की शर्त पूरी नहीं करोगे। तुम सी०एम० साहब की हत्या नहीं करोगे।"

"तेरी बात नहीं मानेगा तेरा खसम...।" सोफिया की तरफ घूमा सोनू और कुत्सित किस्म की मुस्कान के साथ बोला, "बहुत मजबूर है ये बेचारा। ये तेरी...चांदनी और श्वेता की कुर्बानी तो दे सकता है लेकिन सूखे कुन्ड में मौजूद दर्जनों औरतों और उनके बच्चों की कुर्बानी नहीं दे सकता। इसने हमारी शर्त पूरी नहीं की तो क्रान्ति रिमोट का बटन दबाकर सभी औरतों और बच्चों के परखच्चे उड़ा देगी। साथ ही तुम तीनों के भी चीथड़े-से उड़ जायेंगे। इतने लोगों को मौत के मुंह में धकेलने से बेहतर तो यही है कि सी०एम० को उड़ा दिया जाये।"

फिर सोनू पलटकर केशव के करीब पहुंचा और उसकी तरफ रिवॉल्वर बढ़ाकर बोला, "समय बहुत कम है दिमाग के जादूगर। चीफ मिनिस्टर हद-से-हद आधा घन्टे का भाषण देकर चलता बनेगा। वो बच गया तो यहां मौजूद ये औरतें और बच्चे नहीं बच पायेंगे। ये रिवॉल्वर ले और अपनी मन्जिल की तरफ दौड़। इन सभी की जान बचाने के लिये तुझे सी०एम० का खात्मा करना ही होगा। लेकिन ध्यान रहे...कोई चालाकी नहीं होनी चाहिये। वैसे भी चालाकी करने का वक्त नहीं है। तुझे कॉलेज के मैदान में पहुंचना है और इस रिवॉल्वर की गोलियों से

सी०एम० को उड़ा देना है। खाली रिवॉल्वर फेंक कर हाथ खड़े कर देना...सरेंडर कर देना। अगर भागने की चेष्टा करेगा तो वहां मौजूद सुरक्षाकर्मी तुझे गोलियों से भून डालेंगे। अब देखना ये है कि तू सी०एम० को मारता है—या रिमोट का बटन दबाकर क्रान्ति इन औरतों और बच्चों को उड़ाती है...?"

❑❑❑

❑❑❑

चीफ मिनिस्टर से पहले होममिनिस्टर देवेश पारिख मैदान में पहुंच गया।

कुछ समय पश्चात् ही उसका सेक्रेटरी लपका हुआ आया और फोन बढ़ा कर बोला, "मिस्टर केशव पण्डित आपसे बात करना चाहते हैं...।"

"केशव पण्डित?" वह आंखों को सिकोड़कर बोला, "वो भला इस वक्त क्या बात करनी चाहता है?"

फिर उसने सेक्रेटरी से फोन लिया और कान से लगाकर बोला, "नमस्कार, पण्डित जी...।"

"नमस्कार, पारिख साहब। एक जरूरी बात करने के लिये फोन किया है...।"

"आप तो कभी भी फोन कर सकते हैं पण्डित जी। कहिये, क्या सेवा कर सकता हूं मैं आपकी...?"

"एक बहुत ही जरूरी जानकारी देनी है आपको पारिख साहब...दूसरी तरफ से केशव की आवाज में सोनू बोल रहा था, "एक आतंकवादी संगठन ने मेरा हमशक्ल बनाया है।"

"क...क्या—?"

"हां। प्लास्टिक सर्जरी की मदद से ना सिर्फ उसे मेरा चेहरा दिया गया है, बल्कि गले का ऑपरेशन करके मेरी जैसी आवाज भी बना दी गई है। कांटेक्ट लैंसेज के जरिये उसकी आंखें नीली कर दी गई हैं और केमिकल से बालों का रंग भी सुनहरा कर दिया गया है। उसकी कद-काठी बिल्कुल मेरे जैसी है। उसने इतनी प्रेक्टिस की है कि उसकी चाल-ढाल, बोलने और खाने-पनी का तरीका भी मुझ जैसा हो गया

है। कुल मिलाकर कोई भी ये नहीं कह सकता कि वो मेरा हमशक्ल नहीं है। उसके साथियों ने मेरी वाइफ, मेरी असिस्टेन्ट श्वेता गुप्ता और राजन शुक्ला की मिसेज चांदनी को तो किडनेप कर ही लिया है—साथ ही कई औरतों और बच्चों को भी किडनेप कर ही लिया है। वो सी०एम० साहब को कत्ल करने के लिये वहां पहुंचने ही वाला होगा...।"

"व्हाट ऽऽऽ?" चिहुंककर और पीसने-पसीने होकर ही बोला होममिनिस्टर देवेश पारिख, "ये...ये आप क्या कह रहे हैं पण्डित जी...?"

"मैं सच कह रहा हूं पारिख साहब...।"

"ओह! फिर तो आपको यहां होना चाहिये। आप तुरन्त ही यहां चले आइये...।"

"काश...काश कि मैं आ सकता पारिख साहब। एक्चुअली, मेरा किडनेप कर लिया गया है...।"

"व्हाट? किडनेप और आपका—?"

"हां, पारिख साहब। उस संगठन की एक महिला ने स्वयं को मुसीबत में बतलाकर मुझे एक घर में बुलाया। वहां पर संगठन के कुछ लोग गुन्डों के भेष में थे—उन्होंने मेरे वहां पहुंचने पर बेहोशी की गैस छोड़कर मुझे बेहोश कर दिया। होश आया तो मैं एक अनजानी जगह पर कैद था। वहां मेरा वो डुप्लीकेट आया। उसने बतलाया कि वो सी०एम० साहब का मर्डर करेगा और फिर बोलेगा कि वो बन्धक बनाये गये सोफिया, चांदनी, श्वेता और बाकी औरतों, बच्चों की वजह से मजबूर हो गया था। उसने ये भी बतलाया कि मौका मिलने पर उसके संगठन के आदमी उसे जेल से फरार करा देंगे और फिर मुझे कानून के हवाले कर दिया जायेगा यानि कानून जो भी सजा देगा, वो मुझी को देगा। उसने ये भी बतलाया कि किसी तरह मेरे फिंगर-प्रिंट्स हासिल करके रबर की बारीक झिल्ली वाले दस्ताने बनाये गये हैं—जिन पर मेरे फिंगर-प्रिंट्स अंकित हैं। यानि वो जिस रिवॉल्वर का इस्तेमाल करेगा, उस पर मेरे ही फिंगर-प्रिंट्स होंगे। वो थोड़ी देर पहले ही निकला है और कमरे के लोहे के मजबूत दरवाजे को बाहर से बन्द कर दिया गया है। मैं चाहकर भी वो दरवाजा नहीं तोड़ पाया हूं। इत्तफाक से मैंने जूते के सोल में मोबाइल फोन छिपाया हुआ था—उसी से आपसे बात कर रहा हूं...।"

"ओह...ये तो बहुत बुरा हुआ। खैर, मैं पुलिस को आपकी खोज में लगाऊंगा पण्डित जी...।"

"वो तो बाद की बात है पारिख साहब। अभी मुझे अपनी नहीं, सी०एम० साहब की चिन्ता है।"

"डोन्ट वरी पण्डित जी। जैसे ही आपका डुप्लीकेट यहां पहुंचेगा—उसे गिरफ्तार कर लिया जायेगा...।"

"नहीं—ऐसी गलती नहीं होनी चाहिये। सी०एम० साहब के साथ-साथ सैकड़ों निर्दोष लोग भी मारे जायेंगे...।"

"भला क्यों—?"

"क्योंकि मेरे डुप्लीकेट ने अपने पेट पर आर०डी०एक्स० बम वाली बैल्ट बान्धी हुई है। खुद को घिरा हुआ पाकर वो एक बटन दबा कर बम विस्फोट कर देगा। वो आत्मघाती है...फिदायीन है। उसे अपनी जान की कोई परवाह नहीं है।"

"ओह नो...तो फिर क्या किया जाये—?"

"उसे देखते ही गोलियों से भून दिया जाये...।"

"ले...लेकिन गोली बम पर लग गई तो...?"

"बम उसके पेट पर बन्धा है। उसके सिर, चेहरे, गले या सीने पर गोली मारी जायें। इतनी गोलियां मारी जायें कि वो तुरन्त ही मर जाये।"

"लेकिन मरने पर वो जमीन पर गिरेगा तो बम का बटन दब सकता है और...।"

"उसके गिरने से बम का बटन नहीं दबेगा। बटन बैल्ट के भीतर की तरफ है। जमीन से बैल्ट टकराने से भी वो बटन नहीं दबेगा। बटन तभी दबेगा, जब बैल्ट के खांचे में उंगली डालकर उसे दबाया जायेगा। आप इस बात से तो बेफिक्र रहिये। फिक्र इस बात की कीजिये कि वो उंगली से बटन ना दबा सके। इसके लिये उसके सिर, चेहरे और गले पर इतनी गोलियां दागी जायें कि वो तुरन्त ही मर जाये और उसे बटन दबाने का मौका ही ना मिल पाये...।"

"लेकिन भीड़ में जब फायरिंग होगी तो लोग-बाग घबराकर चींखते-चिल्लाते हुये इधर-उधर दौड़ेंगे। भगदड़ होने पर कई निर्दोष लोग मारे जायेंगे...।"

"आप उसे मैदान के भीतर आने का मौका ही क्यों देते हैं? वो पहले कार को खड़ी करने पार्किंग में जायेगा। जैसे ही वो कार से बाहर निकले...उस पर फायरिंग हो जानी चाहिये। वो पहुंचने ही वाला होगा। आप उसको ढेर करने की तैयारी कीजिये। मैं फोन बन्द कर रहा हूं...।"

और इसी के साथ दूसरी तरफ से फोन बन्द हो गया। चिन्तित होममिनिस्टर ने तुरन्त ही पुलिस कमिश्नर और पुलिस के बाकी आला अफसरों को बुलाकर सारी बातें बतलाईं और उन्हें प्लान समझाया।

पुलिस कमिश्नर ने उस अभियान के लिये एक दर्जन ऐसे पुलिस जवानों को चुना, जो कि पक्के निशानेबाज थे और एनकाउन्टर करने में माहिर थे।

सभी को प्लान समझा दिया गया।

सभी निशानेबाज पुलिसवाले मैदान के बाहर बने पार्किंग स्थल में पहुंचे और इधर-उधर पोजीशन ले ली।

सफेद रंग की टाटा इन्डिगो कार पार्किंग में दाखिल हुई और उसका ड्राइविंग डोर खोलकर केशव बाहर निकला। पुलिस वाले तैयार थे ही—केशव के सिर, चेहरे व गले को निशाना बनाकर फायरिंग करने लगे—

धांय...धांय...धांय।

तड़...तड़...तड़।

रेट...रेट...रेट...।

❑❑❑

❑❑❑

"न...नहीं SSSS मत मारो...मेरे केशव को मत मारो। तुम लोग पागल हो गये हो क्या? जिसने फोन पर होम मिनिस्टर से बात की थी, वो केशव नहीं, बल्कि सोनू था। केशव की आवाज बनाकर उसने ऐसी चाल चली कि केशव को डुप्लीकेट और आतंकी मान लिया जाये और इस पर गोलियां चला दी जायें। ये डुप्लीकेट नहीं, असली केशव है...दिमाग का जादूगर। जिसने हमेशा कानून की सेवा की...उसी को मार रहे हो तुम लोग? शर्म नहीं आती क्या? बन्द करो...मैं कहता हूं कि फायरिंग बन्द करो...।"

"सोफी...।"

"फायरिंग बन्द कराओ कमिश्नर—वरना मां भारती के सच्चे सपूत को मारने के लिये तुम लोगों को सजा मिलेगी...।"

"क्या बोले जा रही हो तुम सोफी? आंखें खोलो...।"

"केशव के मारने का ऐसा पाप लगेगा कि तुम लोगों को नरक में भी जगह नहीं मिलेगी। सभी देशवासी, यहां तक कि भगवान भी तुम्हें माफ नहीं करेगा। मत मारो मेरे केशव को। केशव को कुछ हो गया तो फिर मजलूमों की मदद कौन करेगा? मुजरिमों को पकड़कर कानून के माध्यम से सजा कौन दिलायेगा? समाज और देश के दुश्मनों के खिलाफ जंग कौन लड़ेगा...के...केशव...केशव...।"

"सोफी...होश में आओ सोफी...पागल हो गई हो क्या...?"

किसी ने पकड़कर बुरी तरह झिंझोड़ा तो सोफिया की तन्द्रा भंग हुई।

आंखें खोलीं उसने और पगलाई-सी केशव को देखने लगी।

इधर-उधर देखा तो ना तो पार्किंग और ना ही पुलिस वाले दिखलाई दिये।

उसने स्वयं को बेडरूम में पाया।

"क्या हुआ सोफी...?" केशव सोफिया की बांहें पकड़े हुये बोला, "यूं पागलों की तरह क्यों देखे जा रही हो तुम? घबराई हुई हो और पसीने-पसीने हो रही हो...।"

"वो...क्रान्ति और सोनू ने बहुत ही खतरनाक चाल चली थी...।"

"क्रान्ति...सोनू...?" केशव की आंखें सिकुड़ चलीं।

"हां। जेल से फरार होने पर उन्होंने मुझे, चांदनी और श्वेता को ही नहीं, बल्कि कई औरतों और बच्चों को किडनेप कर लिया और सभी के जिस्मों पर बम बान्ध दिये थे...।"

"किडनेप...बम...?"

"और तुम्हें बुलाकर कहा कि फौरन ही सी०एम० साहब को मार दो—वरना सभी को उड़ा दिया जायेगा। फिर सोनू ने तुम्हारी आवाज में होममिनिस्टर से झूठ कहा कि तुम्हारा हमशक्ल सी०एम० साहब को मारने आ रहा है और उसने पेट पर आर०डी०एक्स० बम वाली बैल्ट बान्धी हुई है। तुम वहां पहुंचे तो तुम्हें तुम्हारा हमशक्ल समझ पुलिस

वालों ने गोलियां बरसा दीं...तुम्हें कुछ हुआ तो नहीं? तु...तुम ठीक तो हो ना...?"

थप-थप...थप...!

भड़...भड़...भड़...!

तभी बाहर से दरवाजा पीटा और भड़भड़ाया गया।

केशव ने उठकर दरवाजा खोला तो हवा के तेज झोंके की मानिन्द ही आशीर्वाद, राजन, चांदनी और श्वेता गुप्ता भीतर प्रविष्ट हुये।

"क्या हुआ मम्मी जी...?" आशीर्वाद बेड के किनारे बैठकर और सोफिया के कन्धे पर हथेलियां रखकर बोला, "आप काफी जोर-जोर से बोल रही थीं। मैं, राजन अंकल, चांदनी आन्टी और श्वेता दीदी टी०वी० पर ओसामा बिन लादेन के बारे में दिखाई जा रही एक रिपोर्ट देख रहे थे—आपकी तेज आवाजें सुनकर घबरा गये। क्या हुआ था...?"

"कोई खास बात नहीं...।" मुस्कराकर बोला केशव, "श्रीमती जी ख्वाब देख रही थीं...।"

"ख्वाब...?" आशीर्वाद, राजन, चांदनी और श्वेता के साथ सोफिया भी चौंकी। उसने केशव को देखा और उसके जिस्म पर खून या गोलियों के निशान ना पाकर उसने राहत की मीटरों लम्बी सांस छोड़ी और बोली—"बाप रे! क्या वो ख्वाब था?"

"क्या ख्वाब देख रही थीं आप जीजी...?" चांदनी बोली, "प्लीज, बतलाइये ना दीदी...।"

सोफिया ने दीर्घ श्वांस छोड़ी और फिर बतलाने लगी कि उसने ख्वाब में क्या-क्या देखा। फिर हथेली की पुश्त से पेशानी पर उभरे पसीने को पोंछकर बोली—"अभी भी दिल जोर-जोर से धड़क रहा है। यूं लग रहा है कि सब कुछ हकीकत में ही हुआ हो। मैं भी पागल थी। ना जाने क्या हो गया था कि सोनू और क्रान्ति को कोमा की दशा में देखकर तरस आ गया था और जिद करके उन दोनों को ठीक करा दिया था। बहुत-सी बार ख्वाब हकीकत में भी बदल जाता है। प्लीज, फोन करके मालूम करो केशव कि क्रान्ति और सोनू जेल में हैं भी कि नहीं? कहीं ऐसा तो नहीं कि वो दोनों फरार हो चुके हों...?"

"फोन-वोन करने की जरूरत नहीं है सोफी...।" सिगरेट में कश लगाकर और नथुनों से धुआं उगलकर बोला केशव, "तुम्हारे ख्वाब की

तरह क्रान्ति और सोनू को अगल-बगल की जेलों में नहीं रखा गया है। शुरू में उन्हें मुम्बई की जेल में जरूर भेजा गया था—लेकिन बाद में मैंने सी०एम०, होममिनिस्टर और जेलमन्त्री के साथ मीटिंग करके दोनों को गुप्त जेलों में भिजवा दिया था...।"

"गुप्त जेल...।" सोफिया कौतूहलता में फंसी हुई बोली, "ये...गुप्त जेल कौन-सी है केशव—?"

"जब से आतंकवादियों ने हमारे देश में गड़बड़ी मचाई है, हमारे देश की केन्द्र और राज्य सरकारों ने गुप्त जेलें तैयार की हैं। जब कोई खूंखार आतंकी पकड़ा जाता है तो उसे किसी गुप्त जेल में भिजवा दिया जाता है। वहीं पर उससे पूछताछ होती है और उसकी कड़ी निगरानी की जाती है। चूंकि किसी को भी मालूम नहीं होता कि वो कहां पर है—सो उसके साथी या उसका संगठन उसे वहां से निकालने की चेष्टा कैसे करेगा? कई आतंकियों और खूंखार मुजरिमों को गुप्त जेलों में पहुंचा कर ये शो कर दिया जाता है कि वो फलानी जेल में हैं—जबकि वो वहां नहीं होते। सी०एम०, होम मिनिस्टर और जेलमन्त्री के अलावा उस गुप्त जेल के अति विश्वसनीय रक्षकों को ही जानकारी होती है। बड़े-बड़े अफसरों, यहां तक कि बाकी मन्त्रियों को भी कोई जानकारी नहीं होती। क्रान्ति और सोनू को ऐसी ही गुप्त जेलों में रखा गया है। कोई बाहरी शक्ति पूरे जोर लगाने पर भी मालूम नहीं कर पायेगी कि उन दोनों को कहां पर रखा गया है। उन दोनों को भी मालूम नहीं होगा कि उन्हें कहां रखा गया है?"

"फिर भी वो दोनों बहुत ही खतरनाक हैं केशव...।" चिन्तित भाव से बोली सोफिया, "दोनों के आला दर्जे के दिमाग हैं। वो भाग निकलने के रास्ते खोज सकते हैं। मुझसे गलती हुई, जो जिद करके उन्हें ठीक करवा दिया। उन्हें कोमा की हालत में ही रहना चाहिये था। उन दोनों को कोमा की हालत में ही रहना चाहिये...।"

"अब ये मुमकिन नहीं है सोफी...।"

"क्यों? क्यों नहीं है मुमकिन—?"

"जब उन दोनों को पकड़ा था तो वहां पर पुलिस या मीडिया के लोग नहीं थे। आशीर्वाद ने उन्हें कोमा की दशा में पहुंचा दिया था। उन्हें कानून के हवाले करते वक्त बोल दिया था कि संघर्ष के दौरान

दोनों के दिमाग में ऐसी गुम चोटें पहुंची कि वो कोमा में पहुंच गये। अब सबकी जानकारी में वो ठीक होकर जेल पहुंचा दिये गये हैं। उन्हें दोबारा कोमा में पहुंचाया गया तो तरह-तरह के प्रश्न उठ खड़े होंगे। ये काम गैर-कानूनी तो है ही। किसी भी मुजरिम को सजा देने का अधिकार सिर्फ अदालत को ही है।"

"ये...ये तो ठीक नहीं हुआ...।" रूआंसी-सी होकर बोली सोफिया, "दोनों होश में हैं। उनके दिमाग सुचारू रूप से काम कर रहे हैं। दोनों में से किसी के भी दिमाग में खुराफात पैदा हो सकती है। दोनों एक बार आजाद हो गये तो आसानी से पकड़ में नहीं आयेंगे। पहले वो इसी बात की व्यवस्था करेंगे कि कानून या कानून के रखवाले उन्हें पकड़ने ना पायें। वो जुर्म तो करेंगे ही—साथ ही वो तुमसे इन्तकाम लेने की चेष्टा भी करेंगे...।"

"अव्वल तो वो आजाद ही नहीं हो सकेंगे...।" सिगरेट के अवशेष को ऐश-ट्रे में ठूंसकर बोला केशव, "उन्हें यही मालूम नहीं कि उन्हें कहां रखा गया है और उनकी निगरानी के क्या-क्या इन्तजाम किये गये हैं—फिर वो वहां से निकलने के लिये प्लान ही क्या बनायेंगे? भागने की चेष्टा में वो या तो मारे जायेंगे—या फिर उनकी हड्डी-पसलियां तोड़ दी जायेंगी। माना कि कोई चमत्कार हो जाये और वो फरार होने में कामयाब हो भी जायें तो वो पकड़े जायेंगे। क्योंकि वो मुझसे इन्तकाम लेने की चेष्टा अवश्य करेंगे और इस चक्कर में मेरे जाल में फंस जायेंगे। तुम नाहक ही चिन्तित हो रही हो सोफी। वो फरार नहीं हो पायेंगे। जल्दी ही फांसी के फन्दे पर लटका दिये जायेंगे। उनकी चिन्ता छोड़ो और सो जाओ—।"

"बाप रे! कितना भयानक ख्वाब देखा मैंने। उसे याद करके मेरे रोंगटे खड़े हो रहे हैं। कम-से-कम आज की रात तो नींद नहीं आयेगी मुझे। इतनी नर्वस हूं कि आंखें मूंदने की भी हिम्मत नहीं करूंगी। मैं तो टी०वी० देखूंगी और चाय पीऊंगी—।"

"मैं सभी के लिये चाय बनाकर लाती हूं...।"

"फिर ये खाकसार किस काम आयेगा मोहतरमा...।" लाल टी शर्ट और काली जींस में डेढ़ पसली वाले जिस्म को छिपाये हुये, बड़े-बड़े बालों वाला नौकर मुंशी दरवाजे पर श्वेता का रास्ता रोककर बोला,

''बेहतरीन किस्म का दिमाग रखता हूं। गांव और इलाके के लोग किसी दुविधा में फंसने पर मुझसे सलाह लेने आया करते थे। सभी मेरे दिमाग का लोहा मानते थे—इसीलिये तो मेरे नाम के साथ होशियारचन्द जोड़ दिया था...मुंशी होशियारचन्द। लेकिन यहां तो अपने दिमाग की सुई की नोक बराबर भी कद्र नहीं। सर जी तो खैर दिमाग के जादूगर हैं। छोटे सर जी भी दिमाग के चैम्पियन हैं। लेकिन बाकी लोग भी अपनी कद्र नहीं करते, चलिये, नहीं करते तो ना सही। लेकिन मेरे पेट और और मेरी नौकरी पर तो लात मत मारिये। खाना और चाय बनाने में भी पक्का माहिर हूं मैं। सो चाय तो मैं ही बनाकर लाऊंगा...।''

''जरूर...अवश्य...।'' श्वेता मुस्करा कर बोली, ''भला आपको कौन रोक सकता है मुंशी जी...सॉरी...मुंशी होशियारचन्द जी।''

मुंशी पलटकर वापिस चला गया।

श्वेता पहले तो हंसी, फिर केशव से बोली ''वैसे आप बेचारे मुंशी के साथ अन्याय करते हैं गुरुजी। कभी उससे भी सलाह ले लिया कीजिये...।''

केशव सिर्फ मुस्करा भर दिया, जबकि आशीर्वाद, राजन और चांदनी हंस पड़े।

हंसी तो सोफिया भी, लेकिन बहुत फीकी हंसी थी उसकी—शायद देखे गये स्वप्न का ही प्रभाव था वो।

❑❑❑

❑❑❑

कथानक को आगे बढ़ाने से पहले केशव एंड पार्टी के बारे में संक्षिप्त विवरण जान लिया जाये तो कैसा रहेगा?

लंदन से वकालत की डिग्री हासिल करने वाला केशव पण्डित चालीस वर्ष का गोर वर्ण वाला तथा पांच फुट ग्यारह इंच लम्बे व तन्दुरुस्त जिस्म का स्वामी है। हल्के सुनहरे व अर्ध घुंघराले बालों वाले केशव की झील-सी नीली आंखों में ना जाने कौन-सी जादुई शक्ति समाई है कि सामने वाला आकर्षित हुये बिना नहीं रह पाता और मुजरिमों व देशद्रोहियों के जिस्म तो ठन्डे पड़कर पसीना उगलने लगते हैं।

खूबसूरत, गोरी-चिट्टी तथा पन्ना-सी हरी आंखों वाली सोफिया

ने भी केशव के साथ ही लंदन में कानून की डिग्री ली थी और फिर शादी करके मिसेज पण्डित बन गई थी। स्वर्ग की अप्सराओं सी बेहद खूबसूरत सोफिया को देख कोई अजनबी अनुमान ही नहीं लगा सकता कि वो पन्द्रह वर्षीय आशीर्वाद की मां होगी।

केशव और सोफिया का बेटा आशीर्वाद पण्डित उर्फ दिमाग का चैम्पियन केशव का ही हमशक्ल है। कम उम्र में ही वो केशव से एक इंच लम्बा अर्थात पूरे छह फुट का हो चुका है। भुने हुये चने चबाने का शौकीन आशीर्वाद एक गैर सरकारी और देशभक्त संस्था ट्रिपल सी अर्थात् सैन्ट्रल केम्पेनर कम्पनी का महाराष्ट्र प्रदेश शाखा का कमान्डर है। और ब्लैक मास्टर के नाम से जाना जाता था। लेकिन अब तो वह 'जोकर जी' के नाम से भी जाना जाता है— क्योंकि पहले प्रदेश का कमान्डर रहस्यमयी जोकर ही था, लेकिन बाद में ये जिम्मेदारी आशीर्वाद के कन्धों पर आ पड़ी। वैसे आशीर्वाद की गैर मौजूदगी में पुराना जोकर ही आशीर्वाद की जिम्मेदारियों का निर्वाह करता है।

वैसे बेहतर तो यही होगा कि आशीर्वाद पण्डित के बारे में सविस्तार जानकारी हासिल करने के लिये उसके द्वारा लिखे गये उपन्यास पढ़ लें, जो कि 'केशव पण्डित' के उपन्यासों की भांति ही 'तुलसी साहित्य पब्लिकेशन्स' और 'धीरज पॉकेट बुक्स' से प्रकाशित होते हैं।

लगभग पैंतीस वर्षीय, लम्बा, तन्दुरुस्त, गोरा व खूबसूरत राजन शुक्ला केशव का असिस्टेन्ट है और उसकी धर्मपत्नी चांदनी भी बला की खूबसूरत है।

केशव पण्डित के नियमित पाठक तो भली-भांति जानते ही हैं कि राजन और चांदनी फैमली मेम्बर्स की तरह केशव के घर में ही रहते हैं।

जबकि चालीस वर्षीय, हटट्टा-कट्टा सरदार करतार सिंह पटियाला वाला बतौर ड्राइवर केशव के सान्निध्य में आया था। बाद में केशव से मार्शल आर्ट, जासूसी के गुर और कामचलाऊ कानून की जानकारी लेकर केशव का असिस्टेन्ट बन गया है। लेकिन वो किराये के मकान में रहता है। केशव, सोफिया, आशीर्वाद इत्यादि चाहते हैं कि वो भी उनके साथ बंगले में ही रहे, लेकिन वो नहीं मानता। दरअसल करतार सिंह के बीवी-बच्चों की हत्या हो गई थी और उसे लगता है कि उसके बीवी-बच्चों की आत्मायें किराये वाले मकान में रहती हैं।

कानून की डिग्री हासिल कर चुकी श्वेता गुप्ता सेठ ताराचन्द गुप्ता की इकलौती बेटी थी और रवि गोयल नामक युवक से मुहब्बत करती थी। दोनों की शादी भी होने वाली थी— लेकिन रवि गोयल का कत्ल हो गया था और उसके कत्ल को खुदकुशी की शक्ल देने की चेष्टा की गई थी। केशव ने जब इन्वेस्टीगेशन की तो पता चला कि रवि गोयल का कत्ल श्वेता के पिता सेठ ताराचन्द गुप्ता ने किया था और वो अन्डरवर्ल्ड से वाबस्ता था और ड्रेकुला के नाम से जाना-पहचाना जाता था। केशव की मदद से श्वेता ने ही अपने पिता को फांसी की सजा दिलवाई थी। श्वेता ने अपने पिता का घर ही नहीं छोड़ा था बल्कि उसकी तमाम प्रोपर्टी भी एक सामाजिक संस्था को दान कर दी थी। तब केशव श्वेता को अपने घर ले आया था— तब से श्वेता केशव के बंगले में ही फैमली मेम्बर के रूप में रहती है।

कुछ दिनों पहले श्वेता के नानाजी का दिल्ली में निधन हो गया था और वो अपनी वसीयत श्वेता के नाम लिख गये थे। कम-से-कम एक अरब रुपये कीमत की हवेली, मार्केट और बाकी प्रोपर्टी की मालकिन बनने पर भी श्वेता दिल्ली नहीं गई— क्योंकि वो केशव के सान्निध्य में वकालत और जासूसी के गुण सीखना चाहती है और केशव ने उसे अपनी असिस्टेंट भी बना लिया है।

❑❑❑
❑❑❑

जमीन के भीतर चांदी जैसी सफेद व चमकीली धातु से बनी विशालकाय इमारत।

छतें, दीवारें और फर्श...सभी धातु से बनाये गये थे। चूहे की पूंछ जैसी मूछों वाला फांग चांगली के साथ एक गलियारे से गुजर रहा था। उस गलियारे में रोशनी का कोई साधन बल्ब, ट्यूब लाइट वगैरा नहीं दिखलाई पड़ रही थी। लेकिन फिर भी इतनी रोशनी थी कि कोई भी सुई में धागा पिरो सकता था।

गलियारे में मौजूद ऑटोमैटिक हथियारों से लैस काली पोशाक वाले चायनीज कमान्डोज सिर झुकाकर फांग और चांगली का अभिवादन कर रहे थे।

चीनी मूल का फांग सिर्फ पांच फुट कद का ही था, जबकि चीनी

मूल की होने पर भी चांगली पूरे छह फुट की थी। हांलाकि उसके नैन-नक्श चीनियों जैसे ही थे, लेकिन छोटी-छोटी आंखों में गुलाबी डोरे-से तैर रहे थे, एक खुमारी-सी भरी हुई थी। थोड़े मोटे होठ सुर्ख मुलायम तथा रसीले थे । सांचे में ढला संगमरमरी जिस्म और यौवन इतना आकर्षक था कि किसी का भी ईमान डोल जाये।

सिगार में कश लगाकर और सुगन्धमयी धुऐं को नथुनों से छोड़कर लम्बे-लम्बे कश भरते हुये बोली चांग ली—"महामहीम ने अपने वैज्ञानिकों की चार टीमें बनाकर उन्हें अलग-अलग लैबोरेटरी सौंप दी है फांग! टीम नम्बर वन ने एक बड़ी दूरबीन तैयार की है और ऐसे ग्रह की खोज कर रही है, जहां पर पृथ्वी की तरह ही जीवन भी हो और वातावरण भी पृथ्वी जैसा ही हो। वांछित ग्रह मिलते ही वहां पर महामहीम के लिये हैडक्वार्टर तैयार किया जायेगा। टीम नम्बर दो ऐसे सुपर कम्प्यूटर बनाने में जुटी है, जिस पर भविष्य की घटनाओं को देखा जा सके। टीम नम्बर तीन ऐसे हथियार और बम तैयार कर रही है कि दुनिया के सभी हथियार और बम फेल हो जायें। लेकिन टीम नम्बर चार का आविष्कार अभी तक क्लियर नहीं है। टीम के लीडर डॉक्टर डेंग ने इतना ही बतलाया था कि वो ऐसा खतरनाक केमिकल तैयार करेगा कि दुनिया में तहलका मच जायेगा। डॉक्टर डेंग के पास ही... चलते हैं और मालूम करते हैं कि केमिकल तैयार हुआ कि नहीं...क्या कहते हो फांग-?"

"जैसी मैडम जी की इच्छा...।" किसी गुलाम की मानिन्द ही सिर झुकाकर और हथेली सीने पर रखकर बोला फांग, "मैं तो आपका गुलाम हूं। आपके हुक्म का पालन करना मेरा कर्त्तव्य है...।"

"इतनी चमचागिरी करना भी ठीक नहीं है फांग। माना कि मुझे तुम ही यहां लाये थे। होटल में मामूली रकम के लिये नाचने-गाने वाली चांग ली पर तुमने मेहरबानी की थी। मुझे इस इमारत में शानदार रूम, बढ़िया से बढ़िया वस्त्र, खाना-पीना दिया। मुझे किसी भी चीज की कमी नहीं होने दी। लेकिन महामहीम ने मुझे देखा तो पहली ही नजर में मुझ पर मुग्ध हो गये थे। अपनी प्रेमिका बना लिया उन्होंने और मुझे अपने महल में पहुंचा दिया। मुझे नम्बर टू का ओहदा दे दिया । यानि यहां पर महामहीम के पश्चात् मेरा ही आदेश चलता है। सो अब तुम मुझे

देखकर ठन्डी आहें तो भर सकते हो, लेकिन चख नहीं सकते। ये अंगूर तुम्हारे लिये खट्टा हो चुका है...।"

"हां, जानता हूं...।" मुस्कराकर बोला फांग, "लेकिन मुझे जरा-सा भी अफसोस नहीं है। महामहीम जी का खदिम हूं... गुलाम हूं। ये जिन्दगी उनके नाम लिख चुका हूं। मेरी एक-एक सांस महामहीम जी के लिये ही है। मुझे खुशी है कि तुम महामहीम जी का मनोरंजन कर रही हो—उनकी खिदमत कर रही हो। ये ठीक है कि तुम्हें जब होटल में नाचते-गाते देखा था तो फिदा हो गया था। ये तय कर लिया था कि तुम्हें अपनी बनाकर रखूंगा। लेकिन महामहीम जी के लिये तुम जैसी ढेरों हसीनायें कुर्बान कर सकता हूं–।"

"महामहीम बहुत ही खुशनसीब हैं जो उन्हें तुम जैसा वफादार सेवक मिला है। महामहीम भी तो अपने सेवकों का पूरा ख्याल रखते हैं...।" इतना बोलने पर चांग ली एक बन्द और षटकोण आकार के दरवाजे के सामने ठिठकी, जो कि चांदी जैसी धातु का बना था।

उस दरवाजे के ठीक ऊपर क्लोज सर्किट कैमरा लगा हुआ था, जिसका कनेक्शन कन्ट्रोल रूम में लगे टी०वी० से था और वहां उपस्थित सिक्योरिटी डिपार्टमेन्ट के लोग सिर्फ उसी हिस्से को ही नहीं, बल्कि समूचे हैडक्वार्टर को वाच कर रहे थे।

"कृप्या दरवाजे की बगल में लगी कम्प्यूटराइज्ड दूरबीन के लैंसेज पर बारी-बारी से अपनी आंखें टिकाइये...।" दरवाजे के ऊपर लगे एक स्पीकर से विनम्रता भरी आवाज उभरी, "ताकि आप दोनों की आंखों और पुतलियों की रिकॉर्ड में मौजूद आंखों और पुतलियों से मैचिंग की जा सके। महामहीम के बनाये रूल्स का पालन करना सभी के लिये अनिवार्य है। इसी के साथ दरवाजे के दायें हिस्से में फिट काले रंग के शीशे पर हथेलियां रखकर आप दोनों को फिंगर प्रिंट्स के नमूने भी देने होंगे...धन्यवाद...।"

फांग और चांग ली ने दरवाजे की बायीं साइड में लगी कम्प्यूटराइज्ड दूरबीन के व्यू फाइंडर पर दस-दस सैकेंड के लिये बारी-बारी से अपनी आंखें टिकाईं तो ऊपर लगे हरे रंग बल्ब ने रोशन होकर दोनों की चैकिंग को ओ०के० कर दिया।

फिर दोनों ने काले रंग के शीशे पर हथेलियां रखकर अपने फिंगर-प्रिंट्स दिये।

"दरवाजा खुलने जा रहा है...।" स्पीकर से मर्दाना आवाज निकली, "...तुम दोनों के पास हथियार या कोई आपत्तिजनक वस्तु हो तो उसे निकालकर गलियारे की सेफ में रख दो। तुम दोनों जानते ही हो कि भीतर रूम में मैटल डिटेक्टर और एक्स-रे मशीन लगी है। कोई आपत्तिजनक वस्तु होने पर जहरीली गैस निकलेगी और तुम दोनों बेहोश हो जाओगे। दीवारों और छत में लगे गुप्त हथियारों से अन्धा-धुन्ध फायरिंग भी हो सकती है-।"

चूंकि दोनों के पास कोई हथियार या आपत्तिजनक चीज नहीं थी, इसलिये दोनों दरवाजा खुलने पर भीतर प्रविष्ट हो गये।

वह बीस गुणा बीस फुट का कमरा था। वहां पर मैटल डिटेक्टर के साथ ऐसी एक्स-रे मशीन भी लगी थी... जो कि जिस्म के भीतर सुई की नोक बराबर कोई आपत्तिजनक वस्तु होने पर उसकी तस्वीर कण्ट्रोल रूम को प्रेषित कर देती थी।

चूंकि कोई आपत्तिजनक वस्तु उनके पास नहीं थी, इसलिये भीतर जाने के लिये एक दरवाजा खुल गया।

"ये भीतर वाला हिस्सा ज्यादा संवेदनशील हैं चांग ली! क्योंकि इसमें महामहीम जी की रिहाईश है... उनका महल है। हालाकि कोई माई का लाल उनका बाल भी बांका नहीं कर सकता—लेकिन फिर भी सावधानी बरतना आवश्यक है। कोई महामहीम जी का कितना भी खास क्यों ना हो, लेकिन उसे भी चैकिंग से गुजरना पड़ेगा। लैब नम्बर चार आ गई, चलकर देखते हैं कि डॉक्टर डेंग ने वो केमिकल तैयार किया कि नहीं? अगर कर लिया है तो उस केमिकल की विशेषता क्या है?"

□□□
□□□

स्टील जैसी धातु की बनी वो काफी बड़ी लैब थी। उसका आकार ऐसा था कि मानो किसी बड़े कटोरे को औंधा रख दिया गया हो।

फर्श के बीचो-बीच रखी तांबे की मेज पर कई स्प्रिट लैम्प रखे थे, जिन पर छोटे-बड़े कांच के बीकर्स में विभिन्न रंगों के केमिकल्स उबल रहे थे। लकड़ी के कुछ स्टैन्ड्स में परखनलियां लगी हुई थीं।

स्टील के चिमटे, चिमटियां, कांच की कटोरियां, पेपर, पैड, पेन, पेन्सिल, रबर इत्यादि लैब में काम में आने वाले सामान और अन्य

उपकरण तो थे ही—साथ ही पीछे सेल्फ में कांच के छोटे-बड़े मर्तबान और शीशियां भी रखी थीं, जिनमें विभिन्न प्रकार के केमिकल्स भरे हुये थे।

सफेद एप्रिन पहने चार वैज्ञानिक स्टूल पर बैठे हुये डॉक्टर डेंग के निर्देशन में कार्य कर रहे थे।

लगभग सत्तर वर्षीय डेंग चीनी मूल का छोटी-छोटी, मिची-मिची सी आंखों वाला, गंजा, फ्रेन्चकट दाढ़ी वाला था, जो कि अपने साढ़े चार फुट कद के विपरीत काफी बड़ा वैज्ञानिक था। ये बात दूसरी है कि वो ऐसे खतरनाक व्यक्ति के सान्निध्य में रहता था कि तबाही मचाने वाले आविष्कार ही किया करता है—जबकि वो सही राह पर चलता तो कई खतरनाक बीमारियों का खात्मा करने वाली दवाइयों की ईजाद कर सकता था।

"हैलो, डॉक्टर डेंग...।"

"हाय...डॉक्टर डेंग...।"

"गुड नून कमान्डर साहब...।गुड नून मैडम जी...।" उसने स्टूल से उतरकर गंजा सिर झुकाया और सीने के बायें हिस्से अर्थात् दिल वाले स्थान पर हथेली रखकर बोला, "इस लैब में आप दोनों का हार्दिक स्वागत है...।"

व्याकुल भाव से पूछा चांगली ने—"क्या हुआ तुम्हारे उस आविष्कार का...डॉक्टर डेंग? तुम बतला रहे थे कि ऐसा केमिकल तैयार कर रहे हो कि सारी दुनिया में तहलका मच जायेगा। उस केमिकल को तैयार करने में कामयाब रहे कि नहीं—?"

"क्या मेरा खिला हुआ चेहरा इस बात की चुगली नहीं खा रहा है मैडम जी कि मैं अपने मकसद में कामयाब रहा हूं...?"

"गुड...वैरी गुड! मैं तुम्हारे उस आविष्कार को देखने के लिये लालायित हूं डॉक्टर डेंग—।"

"और मैं भी...।"

"मैं भी अपने आविष्कार का डिमॉन्स्ट्रेशन देने के लिये उत्साहित हूं। लेकिन मैं चाहता था कि महामहीम जी भी मेरे आविष्कार को देखें...।"

"हम यहीं पर हैं डॉक्टर डेंग...।"

वो ऐसी अवाज थी कि मानो किसी गहरी कब्र से कोई मुर्दा बोला हो।

फांग और चांगली के साथ-साथ डॉक्टर डेंग इधर-उधर, यहां-वहां देखते हुये बोला—"तो आप यहीं पर हैं महामहीम जी। कृपया करके दर्शन दीजिये...।"

फर्श पर लाल, नीली और पीले रंग की रोशनी उत्पन्न हुई और ऊपर की तरफ उठने लगी। पांच फुट की ऊंचाई तक पहुंचते-पहुंचते उस रोशनी ने मानवाकृति का रूप धारण कर लिया। फिर रोशनी की उस मानवाकृति ने जीते-जागते इन्सान का रूप धारण कर लिया।

लेकिन क्या उसे जीता-जागता इन्सान कहा जा सकता था?

उस पांच फुटे की उम्र का अन्दाजा लगा पाना तो मुमकिन नहीं था, लेकिन काफी बूढ़ा था वो। इतना दुबला और पतला कि मानो इन्सानी कंकाल पर नसों व गोश्त के बिना ही पतली और हल्दी जैसी पीली खाल मढ़ी गई हो।

पैरों में सिल्वर कलर के जूते और जिस्म पर खाल की मानिन्द ही चिपकी-सी गोल्डन कलर की पोशाक।

पीले रंग का लम्बूतरा चेहरा, जिस पर इतनी झुर्रियां थीं कि मानो मकड़ी ने जाला बुन दिया हो। चौड़ी व पिचकी-सी नाक और सूखे सन्तरों की फांकों जैसे पतले-पतले होंठ। जहां पर नथुनों के सिरे समाप्त होते थे, वहां से चूहें की पूंछ जैसी पतली मूंछें शुरू हो रही थीं और फिर होंठों के सिरों के करीब से नीचे की तरफ ठोडी तक लटकी हुई थीं।

छोटी-छोटी, मिची-मिची सी आंखें, जिनमें उस्तरे की धार-सा पैनापन था और कोई ज्यादा देर तक उन आंखों का सामना नहीं कर सकता था।

सिर पर दूसरे इन्सानों के मुकाबले चालीस फीसदी ही बाल थे, लेकिन वो फुट भर लम्बे थे और चुटिया के रूप में गुंथे हुये थे।

वो था सिंगही।

दुनिया का सबसे खतरनाक वैज्ञानिक।

खतरनाक इसलिये कि उसने विज्ञान का इस्तेमाल हमेशा दूसरों

की भलाई के बजाय दूसरों की तबाही के लिये ही किया। अपने खतरनाक आविष्कारों के दम पर वो दुनिया को अपना गुलाम बनाना चाहता है और विश्व-विजेता बनने का ख्वाहिशमन्द है।

सिंगही ने कई मर्तबा विश्व-विजेता, विश्व-सम्राट बनने की चेष्टा की—लेकिन वो कहावत है ना कि वो ही होता है जो मन्जूरे खुदा होता है।

एक बार तो जालिम ने किल्योपैट्रा, सिकन्दर, हिटलर, नादिर शाह, महमूद गजनवी, चंगेज खान और तैमूर लंग जैसे कई इतिहास प्रसिद्ध खतरनाक और बदनाम हस्तियों के डी०एन०ए० हासिल करके उनके क्लोन बना डाले थे और एक ग्रह के लोगों को अपना गुलाम बनाकर और वहां अपना हैडक्वार्टर बनाकर विश्व-विजेता बनने की तैयारियां कर दी थीं—लेकिन कई महाशक्तियों की टोली के साथ मिलकर दिमाग के जादूगर 'केशव पण्डित' ने उसके ख्वाब पर पोंछा फेर दिया था। उसके सभी चेलो-चपाटों को खत्म करके और हैडक्वार्टर को नष्ट करके उसे यान से अन्तरिक्ष में फेंक दिया था—लेकिन किसी तरह वो बच निकला था। उसके बाद केशव पण्डित का नाम उसके दुश्मनों की फेहरिस्त में सबसे ऊपर दर्ज हो गया था। उसने विश्व-विजेता बनने के साथ-साथ केशव पण्डित से इन्तकाम लेने की चेष्टा की थी, लेकिन मुंह की खाई और विजयश्री का सेहरा भारत मां के सच्चे सपूत केशव के सिर ही बन्धा था।

बार-बार मुंह की खाने पर सिंगही ने निर्णय लिया कि वो धैर्य और सब्र से काम लेगा। वो पूरी तैयारियों के साथ ही समूची दुनिया के विरुद्ध युद्ध का बिगुल बजायेगा और केशव पण्डित से भी हिसाब चुकता करेगा।

"महामहीम जी...जिन्दाबाद...!" फांग, चांगली, डेंग और बाकी लोगों ने सीने पर दायीं हथेली रखकर और सिर को झुकाकर सिंगही का अभिवादन किया।

पतले, भिंचे-भिंचे से होठों पर पोटेशियम सायनाइड जैसी घातक मुस्कान सजाये हुये डॉक्टर डेंग से सम्बोधित होकर बोला सिंगही, "हमने तुम्हें एक आइडिया दिया था, क्या उसी पर फार्मूला तैयार किया है—?"

"जी, महामहीम जी...।" सिर झुकाये हुये बोला डॉक्टर डेंग, "आपके आइडिये को दिमाग में रखकर ही मैंने फार्मूला ईजाद किया है।"

"हम उसका डिमोन्स्ट्रेशन देखना चाहेंगे...।"

"अवश्य...महामहीम जी। लेकिन उसके लिये मुझे एक शिकार की आवश्यकता होगी। यहां पर मेरे जो असिस्टेंट मौजूद हैं, वो सभी काम के हैं। इनमें से किसी को जाया करना ठीक नहीं होगा—।"

"कोई बात नहीं। हमारे पास जाया होने वाले आदमियों की कमी थोड़े ही है। बहुत से बलि के बकरे पाले हुये हैं हमने। ऐ सुनो...।" सिंगही लैब में लगे कैमरे की तरफ देखते हुये कन्ट्रोल रूम में मौजूद अपने किसी आदमी से सम्बोधित होकर बोला, "किसी फालतू आदमी को फौरन से पेश्तर यहां भेजो—।" फिर वो डॉक्टर डेंग से बोला—"बलि का बकरा आ रहा है। हम ये जानने के लिये उत्सुक हैं कि तुम अपने खास फार्मूले से उसे कैसे हलाल करते हो—?"

❑❑❑
❑❑❑

स्टील के फ्रेम वाला कांच का काफी बड़ा बॉक्स था वो—जिसे लैब के एक हिस्से में मेज के ऊपर रखा गया था। उस बॉक्स के भीतर हल्के लाल रंग का तरल पदार्थ भरा हुआ था और उस पर बिल्कुल काले रंग के सैकड़ों मच्छर बैठे हुये थे।

फांग व चांगली के साथ उस बॉक्स के करीब पहुंचे सिंगही से बोला डॉक्टर डेंग—"बॉक्स के भीतर आप जो लाल रंग का लिक्विड देख रहे हैं ना महामहीम जी—यही है मेरी नई ईजाद...नया फार्मूला...आविष्कार, जिसके दम पर किसी गांव, कस्बे, शहर या जिले में ही नहीं बल्कि पूरे देश में भी तहलका मचाया जा सकता है। इसका ट्रांसपोर्टर मैंने इस विशेष मच्छर को बनाया है। कहने को तो ये छोटे-छोटे, मामूली मच्छर ही हैं—लेकिन इस तरल पदार्थ को चखने पर ये दुनिया के सबसे डेंजर मच्छर बन चुके हैं। मलेरिया, चिकनगुनिया और डेंगू के मच्छर तो इनके सामने कुछ भी नहीं हैं...कुछ भी नहीं।

बल्कि मैं तो कहूंगा कि गोलियां बरसाने वाला दुनिया का कोई भी हथियार किसी को ऐसी भयानक मौत नहीं दे सकता—जैसी कि ये मच्छर दे सकते हैं।"

"तो क्या ये लिक्विड सिर्फ इन मच्छरों के जरिये ही काम कर सकता है डॉक्टर डेंग—?"

"नहीं...ऐसा भी नहीं है महामहीम जी। ये लिक्विड अपने आप में कम्पलीट है। इन्सान या जानवर के खून से सम्पर्क होते ही ये अपना कमाल दिखलाने लगेगा। इसे इंजेक्शन के जरिये भी इस्तेमाल किया जा सकता है। दूसरे कई तरीके भी हैं। लेकिन मेरी समझ में मच्छर बढ़िया साधन है। बशर्ते कि जहां पर इन मच्छरों को छोड़ा जाये, वहां पर दुश्मन या अपने शिकार ही हों। अपना आदमी वहां हो तो मच्छरों को छोड़ने से पहले खास किस्म की पोशाक पहन ले। वैसे मैं एक खास किस्म की क्रीम भी तैयार कर रहा हूं। उस क्रीम को जिस्म पर मल लिया जाये तो उसकी गन्ध से ये मच्छर जिस्म पर बैठेंगे ही नहीं—ना ही काटेंगे।"

तभी हल्की-सी सरसराहट के साथ लैब की दीवार में फिट दरवाजा किसी शटर की मानिन्द ही ऊपर की तरफ उठता चला गया और जंगली भैंसे जैसा काला-कलूटा व लम्बा-चौड़ा युवक भीतर प्रविष्ट हुआ।

उसके भीतर आते ही दरवाजा स्वमेव ही बन्द हो गया।

सिंगही से एक गज की दूरी पर ठिठक कर भैंसासुर ने सिर झुका कर अभिवादन किया और प्रश्न-सूचक दृष्टि से देखने लगा।

बायीं कलाई पर फिट गोल्डन कलर के और लाल-हरे बटन वाले ब्रेसलेट को सहलाते हुये तथा कालिया की आंखों में झांकते हुये बोला सिंगही—"क्या तुम हमारे लिये जान दे सकते हो गोलू—?"

"ये जिस्म, मेरी जिन्दगी और एक-एक सांस पर आपका ही अधिकार है महामहीम जी...।" निर्विकार भाव से बोला वह, "मैं आपका गुलाम हूं और अहसानमन्द भी। आपके किसी काम आया तो अपनी खुशनसीबी ही समझूंगा।"

"तो फिर ठीक है। तुम्हें जिसे भी अन्तिम बार याद करना हो...कर लो। आज से तुम्हारे घरवालों की जिम्मेदारी हमारी। तुम्हारे घर मोटी रकम पहुंचा दी जायेगी और तुम्हारे घरवालों को किसी भी बात की कमी नहीं होने दी जायेगी।"

बोलने पर सिंगही ने डॉक्टर डेंग को इशारा किया।

डॉक्टर डेंग ने एक मेज पर से मोटी व लम्बी सुईं वाली सीरिंज

उठाई और उसकी सुईं का अगला सिरा शीशे के बॉक्स में एक हिस्से पर टिकाकर बॉक्स के निचले हिस्से में लगे एक बटन को दबाया।

बटन के दबते ही बॉक्स में बहुत बारीक छिद्र उत्पन्न हुआ, जिसमें डॉक्टर डेंग ने सीरिंज की मोटी सुईं डाल दी और उसके पिछले हिस्से को बाहर की तरफ खींचकर हवा के माध्यम से कई मच्छर सुईं के भीतर खींच लिये।

सुईं को बाहर निकालकर और बटन को दबाकर बॉक्स के उस छिद्र को बन्द कर दिया।

भैंसे जैसे युवक की तरफ पलटकर बोला डेंग, "अपना हाथ आगे कर गोलू—।"

गोलू ने चुपचाप दाहिना हाथ डॉक्टर डेंग के सामने कर दिया।

डेंग ने सीरिंज के पिछले हिस्से में लगे एक बटन को दबाया तो सुईं का बन्द मुंह बहुत कम समय के लिये खुला और उसमें से एक काला मच्छर निकलकर गोलू की कलाई पर बैठ गया।

मच्छर ने काटा और काटते ही छटपटाकर शान्त पड़ गया।

"हो गया काम...।" हर्षित भाव से बोला डॉक्टर डेंग, "मच्छर ने काटा और मर गया। मेरे ईजाद किये हुये फार्मूले की यही खूबी है कि मच्छर जैसे ही काटकर केमिकल को शिकार के जिस्म में पहुंचा देता है तो उसकी मौत हो जाती है। अब केमिकल गोलू के जिस्म में पहुंच चुका है और अपने जलवे दिखलाने शुरू कर देगा। अब देखियेगा महामहीम जी कि आपके दिये गये आइडिये पर बना केमिकल कितना खतरनाक है और अब गोलू का क्या हस्र होता है—!"

□□□

□□□

पसीने से लथपथ गोलू परेशान दिखलाई दिया—फिर उसकी परेशानी, बेचैनी, व्याकुलता बढ़ती ही चली गई।

ऐसा लग रहा था कि उसे सांस लेने में तकलीफ हो रही थी। एक हथेली से गला और दूसरी से सीने को मसलते हुये वो दमे के मरीज की मानिन्द ही हांफ रहा था।

फिर जो हुआ, उसे देखकर फांग और चांग ली की आंखें फैलने लगीं—जबकि सिंगही की पहले से ही छोटी आंखें सिकुड़ने लगीं।

कालू के चेहरे और बाकी जिस्म पर मकड़ी के जाल के जैसे बारीक निशान उभर आये—मानो किसी ने लाल रंग के पेन से आड़ी-तिरछी लकीरों का जाल-सा बना दिया हो।

फिर वो लकीरें मोटी होने लगीं।

जिस्म की समूची खाल में ऐसी ही दरारें पड़ने लगीं, जैसे कि पुरानी इमारत के प्लास्टर में पड़ जाती हैं।

इसी के साथ उन दरारों में से भांप-सी उठने लगी।

"ये...ये क्या...?"

बौखलाई, हड़बड़ाई-सी चांगली इतना ही बोली थी कि सिंगही ने 'शीऽऽऽ' की हल्की आवाज निकालकर अपने भिंचे-भिंचे से होंठों पर तर्जनी उंगली रखकर चांगली को खामोश कर दिया और चुपचाप गोलू को देखने का इशारा किया।

तब तक गोलू के जिस्म की दरारें चौड़ी हो चली थीं और उनमें से भाप की बजाय धुआं निकलने लगा।

"ये...ये क्या हो रहा है मुझे...आह...महामहीम जी...!" फर्श पर जा गिरा गोलू छिपकली की काट दी गई पूंछ की मानिन्द ही बुरी तरह तड़फड़ाते, चींखते और कराहते हुये बोला, "मेरे जिस्म में...आग लगी हुई है...आह...मैं जला-फुंका जा रहा हूं...आह...ऐसा लग रहा है कि मेरा खून अंगीठी पर रखे पानी की तरह ही...खौल रहा है...आह... हड्डियां अंगीठी की लकड़ियों की तरह ही...सुलगी जा रही हैं...आह...गोश्त कोलतार की तरह गर्म होकर पिघला जा रहा है...आह...हाय...मर गया रे...मु...मुझे बचा लीजिये म...महामहीम जी...ये तकलीफ बर्दाश्त नहीं हो रही है...आह...मेरी जान निकली जा रही है...मेरा दम निकल रहा है...महामहीम जी...आपके पास कोई दवा या इंजेक्शन तो होगा ही...मुझे इस तकलीफ से छुटकारा दिला दीजिये...आह...ओह...आह...।"

दरारें चौड़ी होती जा रही थीं और उसमें से कोलतार के जैसा काला-काला, गाढ़ा द्रव्य निकलने लगा।

"ये हड्डियां, गोश्त, फेफड़े, दिल, जिगर, आंतें वगैरा हैं महामहीम जी...।" डॉक्टर डेंग हर्षित भाव से चींख-चींख कर बोला, "मेरे ईजाद किये हुये उस केमिकल का ही करिश्मा है ये। मच्छर के जरिये उस

केमिकल का मामूली अंश ही गोलू के जिस्म में गया था और उसी ने उपद्रव मचा दिया है। ये केमिकल दुनिया का सबसे घातक और प्रभावकारी तेजाब भी कहा जा सकता है महामहीम जी।

इन्सान हो या जानवर...किसी भी जीव की बख्शीश नहीं करता—उसे ऐसे ही जलाकर गला देता है जैसे आग मोम को जला-गला देती है। किसी भी जीव का जिस्म, खाल, गोश्त और हड्डियां तो इतनी बड़ी और मजबूत भी नहीं होतीं—अगर केमिकल की एक-दो बूंद किसी धातु या पत्थर पर टपका दी जाये तो उसमें भी छिद्र कर देगी। अभी तो शुरूआत है, आगे-आगे देखिये कि इस गोलू का क्या हस्र होता है! कोई कमजोर दिल वाला तो इसके अन्जाम को देख भी नहीं सकेगा। सूरमाओं के भी कलेजे कांप उठेंगे। देखिये, कितनी तेजी के साथ गोलू का जिस्म जलकर गल रहा है और मोम की तरह पिघलकर बह रहा है...।"

डॉक्टर डेंग ने गलत नहीं कहा था—गोलू का जिस्म गीले कागज की मानिन्द ही यहां-वहां से फटने लगा था और तीखी बदबू वाले धुंएं के साथ काले रंग का गाढ़ा-गाढ़ा द्रव्य बह रहा था। उसकी नाक व मुंह से तो द्रव्य बह ही रहा था, अचानक ही उसकी आंखें फूटी और वहां बने गोल छिद्रों से भी जिस्म का गला हुआ द्रव्य तेजी के साथ बाहर बहने लगा।

चूंकि गोलू ने तड़पने और एड़ियां रगड़ने पर एक हिचकी के साथ प्राण त्याग दिये थे, इसलिये उसके जिस्म में कोई हरकत नहीं थी।

पहले उसके जिस्म की खाल और फिर गोश्त भी गायब हो गया। हड्डियों के कंकाल का आलम ये था कि मानो वो मोम का बना हुआ था और उसे आग पर रख दिया गया था।

हड्डियां गल रही थीं और काले द्रव्य में परिवर्तित होकर फर्श पर बह रही थीं।

देखने में फांग और चांगली भले ही सामान्य दिखलाई पड़ रहे थे लेकिन वास्तविकता ये थी कि भीतर से वो दोनों ही हिले हुये थे। उनकी नब्ज उस चुहिया की मानिन्द ही दौड़ रही थी, जिसके पीछे कोई भूखी बिल्ली पड़ी हुई हो।

दिल का आलम बन्दर के उस शरारती बच्चे जैसा ही था, जिसे जबरदस्ती कपड़े की थैली में बन्द कर दिया गया हो।

गुर्दे थे कि बिफरे साण्डों की मानिन्द ही पसलियों पर टक्कर मारे जा रहे थे।

नसों में भरा खून पहाड़ी नदी के जल की मानिन्द ही दौड़ लगा रहा था।

कनपटियों पर हथौड़े-से बज रहे थे तो कानों में नगाड़े-से बज रहे थे।

लेकिन दोनों ही सिंगही के कोप से बचने के लिये ही जबरन मुस्कराये जा रहे थे।

सिर्फ पांच मिनट के भीतर ही भैंसे जैसे डील-डोल वाला गोलू गायब था और लैब के फर्श पर काले रंग का गाढ़ा तरल पदार्थ फैला हुआ था।

"वाह...क्या बात है...!" सिंगही ने डॉक्टर डेंग की पीठ थपथपाई और उत्साह से भरा हुआ बोला, "क्या फार्मूला ईजाद किया है तुमने डॉक्टर! एक हट्टे-कट्टे युवक को मामूली मच्छर ने काटा—उसके जिस्म में केमिकल का मामूली अंश पहुंचाया और वो गल-गल कर पिघले मोम की तरह ही बह गया। यानि एक मामूली-सा मच्छर अच्छे-भले आदमी का वजूद मिटा सकता है... ।"

"सिर्फ इन्सान का ही नहीं महामहीम जी... ।" अपने आका की प्रशंसा से गदगद हुआ डॉक्टर डेंग इतराते हुये बोला, "दुनिया के किसी भी जीव का यही हस्र होगा। अगर अपना शिकारी मच्छर किसी हाथी को भी काट ले तो वो हाथी भी पांच-छह मिनट के भीतर गलकर बह जायेगा। क्या आप मेरे ईजाद किये हुये फार्मूले से खुश हैं महामहीम जी—?"

"हां, भई...भला खुश क्यों ना होंगे? हमने तो हमेशा ही तबाही का सामान तैयार किया है। दुनिया को दिक्कत में डालने वाले फार्मूले ईजाद किये हैं। हालांकि दुनिया को फतह करने के लिये ये फार्मूला नाकाफी है। विश्व सम्राट बनने के लिये तो हम कोई जोरदार फार्मूला ईजाद करेंगे—जिसका तोड़ दुनिया भर के वैज्ञानिक भी मिलकर ना ढूंढ सकें। लेकिन ये फार्मूला भी कम नहीं है। जरूरत पड़ने पर ये भी अपने काम आयेगा। तुमने इनाम का काम किया है। तुम्हें वी०आई०पी० दर्जा दिया जाता है। तुम अब वी०आई०पी० रूम में रहोगे, जहां पर हर तरह

की सुविधायें उपलब्ध होंगी। तुम बाहर से अपनी पसन्द की चीजें मंगवा सकोगे। तुम तो जानते ही हो कि हमारे इस हैडक्वार्टर में एक हरम भी है, जहां पर देश-विदेश की खूबसूरत हसीनाओं का जमावड़ा है। तुम उनमें से अपनी पसन्द की किसी भी हसीना को पसन्द करके उसे अपने पास रख सकते हो और उसके साथ मौज-मस्ती कर सकते हो। चौबीस घन्टे के बाद अगर उस हसीना से मन भर जाये तो उसे हरम में भेजकर दूसरी हसीना को अपनी सेवा के लिये बुला सकते हो। सप्ताह में एक दिन हेलीकॉप्टर लेकर चीन के भीतर कहीं भी घूमने के लिये जा सकते हो। तुम कुंवारे हो। अगर तुम्हारे बीवी-बच्चे होते तो उन्हें भी तुम्हारे साथ रहने की इजाजत मिल जाती। कुल मिलाकर अब तुम शाही जिन्दगी जीओगे डेंग... ।"

"शु...शुक्रिया...महामहीम जी... ।" डेंग सिर झुकाये हुये बोला, "आपकी खिदमत करके मुझे हार्दिक प्रसन्नता मिलती है। आप देखते रहिये—मैं आगे भी आपके लिये एक-से-एक खतरनाक फार्मूले ईजाद करता रहूंगा... ।"

सिंगही ने कोई जवाब देने की बजाय फांग और चांगली से कहा—"तुम दोनों हमारे साथ कांफ्रेंस हॉल में चलो। जरूरी बात करनी है... ।"

सिंगही ने बायीं कलाई पर फिट ब्रेसलेट में लगे हरे बटन को दबाया और गायब हो गया।

जबकि फांग और चांगली सोचने लगे कि सिंगही उनसे कौन-सी जरूरी बात करनी चाहता है?

❑❑❑

❑❑❑

कांफ्रेस हॉल था तो धातु का बना हुआ, लेकिन उसकी छत गोल्डन, दीवारें कॉपर और फर्श सिल्वर कलर का था।

लम्बी-चौड़ी शीशे के टॉप वाली मेज के इर्द-गिर्द रंग-बिरंगी सनील चढ़ी चांदी की दो दर्जन कुर्सियां रखी हुयी थीं तो एक सिरे पर लाल सनील से मढ़ी सोने की सिंहासननुमा कुर्सी रखी हुई थी, जिस पर बेशकीमती पत्थर भी मढ़े हुये थे।

लिखने की आवश्यकता तो नहीं कि वो कुर्सी सिंगही के लिये ही थी?

हॉल में बेशकीमती फर्नीचर के साथ किसी चाइना आर्टिस्ट द्वारा बनाई गई खूबसूरत व कीमती पेन्टिंग्स भी लगी हुई थीं। एक बार काउन्टर भी था, जिसके पिछले सेल्फ में विदेशी विभिन्न ब्रान्ड की शराब की बोतलें सजी हुई थीं। ड्रिंक के सामान से सजे काउन्टर की बगल में फ्रिज भी रखा हुआ था।

टी०वी०, डी०वी०डी० और कम्प्यूटर तो थे ही—साथ ही एक दीवार पर क्लोज सर्किट वाले कई टी०वी० सैट भी लगे हुये थे, जिन पर पूरे हैडक्वार्टर के सभी हिस्सों का 'लाइव' अवलोकन किया जा सकता था।

दिखलाई तो नहीं पड़ रहा था, लेकिन हॉल की ठन्डक बतला रही थी कि वहां एयर कन्डीशन सिस्टम भी था। फांग के साथ वहां पहुंची चांगली ने म्यूजिक सिस्टम पर धीमी आवाज में चाइनीज सांग चला दिया और फ्रिज से एक बोतल निकालकर सोने के रत्न जड़ित गिलास के साथ सिंगही के सिंहासन के सामने मेज पर रख दी।

षटकोण आकार का एक दरवाजा स्वमेव ही खुला और ट्रॉली धकेलते हुये अमेरिका व जर्मनी की दो खूबसूरत व अर्धनग्न युवतियां भीतर प्रविष्ट हुईं। अमेरिकी हसीना ने सिंगही के सिंहासन के सामने सोने का रत्न जड़ित और ढका हुआ बर्तन, सोने की एक प्लेट, कांटा-छुरी रख दिये।

सिंहासन के करीब वाली दो कुर्सियों के सामने उन्होंने चांदी की प्लेटों में दो तन्दूरी मुर्गे और मसाला बुरके हुये काजुओं व पनीर की प्लेटें रख दीं।

फांग का इशारा होने पर दो हसीनायें ट्रॉली को धकेलते हुये बाहर चली गईं।

तब तक चांगली ने व्हिस्की की बोतल, आइस बॉक्स, सोडा साइफन और दो खाली गिलास रख दिये।

कमरे में अचानक ही लाल-पीली व नीले रंग की रोशनी फर्श की तरफ से उठते हुये पांच फुट की ऊंचाई तक पहुंचकर मानवाकृति में तब्दील हो गई—फिर वो आकृति सिंगही में परिवर्तित हो गई।

"बैठो...दोनों...।" फांग व चांगली से बोलकर सिंगही सिंहासन पर जा बैठा।

"मैं आपके लिये ड्रिंक तैयार करती...।"

"नहीं, रहने दो चांगली...।" मुर्दे जैसा सिंगही मुर्दे जैसी ही ठन्डी सपाट आवाज में बोला, "किसी को इतना कामचोर भी नहीं होना चाहिये कि कोई काम करने के काबिल न रह जाये। अपने और चांग के लिये ड्रिंक तैयार करो...।"

फिर सिंगही ने बर्तन का ढक्कन खोलकर सोने के चिमटे से गोल्डन कलर की तली हुई और मसाला लगी मछली उठाकर प्लेट में रखी और फिर बोतल से गिलास में खून जैसा सुर्ख व गाढ़ा द्रव्य उड़ेलते हुये बोला—"इस खास किस्म की शराब को हमीं ने ईजाद किया था। इसे शराब सिर्फ इसलिये कहा जा सकता है कि ये हल्का नशा करती है। वरना ये टॉनिक है। ये बूढ़े को भी जवान बना देती है। इसका सेवन करने वाले में युवाओं से भी ज्यादा चुस्ती-स्फूर्ति और शक्ति भर जाती है। क्यों चांगली! क्या बिस्तर पर तुम्हें हमसे किसी शिकायत का मौका मिला—?"

"क्या बात करते हैं महामहीम जी...।" अपने और फांग के लिये ड्रिंक तैयार करती चांगली मुस्कराकर बोली, "दुनिया का कोई भी युवक आपकी पॉवर, एनर्जी और फोर्स का मुकाबला नहीं कर सकता। मुझे पेन किलर लेकर घन्टों रेस्ट करना पड़ता है।"

"महामहीम जी...।" फांग तनिक झिझकते हुये बोला, "आप कोई जरूरी बात करनी चाह रहे थे...।"

सिंगही ने गिलास से लाल शराब की घूंट भरी और फिर बोला, "तुम तो क्रान्ति से मिल चुके हो फांग।"

"जी, महामहीम जी...।"

"मैं क्रान्ति से मिली तो नहीं महामहीम जी। लेकिन फांग ने उसके बारे में काफी बतलाया है। वो खूबसूरत है और खतरनाक भी। एक बार वो तेजाब से बुरी तरह झुलस गई थी। उसके हाथ और पैर भी कट गये थे। लेकिन उसने हिम्मत नहीं हारी। मौका मिलने पर उसने अपने जानी दुश्मन केशव पण्डित से इन्तकाम लेने की चेष्टा की। आपने सोनू के बारे में भी बतलाया था। दिमाग के मामले में तो वो भी खतरनाक

है। जुर्म करने के नये और निराले तरीके ईजाद करता था वो। अफ़सोस की बात ये है कि केशव पण्डित के बेटे आशीर्वाद ने उन दोनों को कोमा की हालत में पहुंचा दिया। आपके हुक्म पर मैं मुम्बई गई थी और उनका इलाज करने वाले डॉक्टर से मिली थी। डॉक्टर ने बतलाया था कि दुनिया का कोई भी डॉक्टर उन दोनों को ठीक नहीं कर सकता—वो दोनों मरते दम तक कोमा की हालत में ही रहेंगे। कितने अफसोस की बात है कि जुर्म की खान से निकले दो हीरे कोयले बनकर रहे गये...।"

"वो कोयले फिर से अनमोल हीरे बन चुके हैं चांगली...।"

"क्या मतलब...?" चांगली चौंककर बोली, "क्या वो दोनों ठीक हो गये हैं—?"

"बिल्कुल, वो अब कोमा की दशा में नहीं हैं। होश में हैं और भले-चंगे हैं—।"

"ले...लेकिन ऐसा चमत्कार कैसे हो गया महामहीम जी...?" उत्सुकता से भरा हुआ बोला फांग, "डॉक्टर ने तो दावा किया था कि दुनिया में उन दोनों का कोई ट्रीटमेंट ही नहीं है...।"

"ट्रीटमेंट तो था, लेकिन केशव के लड़के आशीर्वाद के पास ही था। आशीर्वाद का गुरु शाओलीन ना सिर्फ मार्शल आर्ट का मास्टर है—बल्कि उसने बौद्ध लामाओं से युद्ध की कई गुप्त विद्यायें भी सीखी हुई हैं। वो इतना बड़ा उस्ताद है कि उसने अपनी कई युद्ध विद्यायें ईजाद की हुई हैं। उसने आशीर्वाद को भी कई विद्यायें सिखलाई थीं। आशीर्वाद अपने अंगूठे से अपने दुश्मन या शिकार की कनपटी के खास हिस्से को दबाकर उसे हमेशा के लिये कोमा की हालत में पहुंचा देता है। वो चाहे तो अपनी विद्या से कोमा में गये शिकार को फिर से नॉर्मल करके होश में ला सकता है। आशीर्वाद की मां और केशव की बीवी सोफिया ऐसे ही क्रान्ति को सोनू को देखने हॉस्पिटल चली गई थी। दोनों की दशा देख वो बेवकूफ भावुक हो चलीं। उसे क्रान्ति और सोनू पर ऐसी दया आई कि जिद पकड़ ली कि आशीर्वाद को दोनों को ठीक करना होगा। सो आशीर्वाद ने दोनों को नॉर्मल कर दिया।"

"ये...ये तो खुशी की बात है महामहीम जी...।" फांग प्रफुल्लित भाव से बोला, "सोनू और क्रान्ति हमारे काम के बन्दे हैं। एक बार को वो हमारे लिये काम ना भी करें...लेकिन वो हमारे जानी दुश्मन

केशव पण्डित की नाक में दम तो कर ही सकते हैं। उन्हें तो आजाद करा लेना चाहिये...।"

छोटे-छोटे पैने दांतों से मछली के पीस को चबाते हुये बोला सिंगही—"जब आशीर्वाद ने क्रान्ति और सोनू को कोमा की दशा में पहुंचा दिया था तो हमने उनके बारे में सोचना ही छोड़ दिया था। हम चाहते तो उन दोनों को हॉस्पिटल से उठवा सकते थे, लेकिन उन दोनों का करते क्या? वो हमारे किस काम के थे? उनमें और मुर्दों में कोई खास अन्तर नहीं था। बेमतलब में ही उनकी देखभाल करनी पड़ती...।"

"लेकिन आशीर्वाद को तो उन दोनों को ठीक करने के लिये मजबूर किया जा सकता था महामहीम जी...।"

"तुम भी क्या बच्चियों जैसी बात कर रही हो चांगली। उसका नाम आशीर्वाद है...केशव पण्डित का बेटा है वो। अपने बाप की तरह ही जिद्दी और किसी के भी सामने ना झुकने वाला। हम कुछ भी कर लेते लेकिन वो क्रान्ति और सोनू को ठीक नहीं करता। हां, ये हो सकता था कि वो सोनू और क्रान्ति को खत्म कर देता। डॉक्टर भी बोल देते कि दोनों कोमा की दशा में स्वभाविक मौत मारे गये।"

"लेकिन अब तो वो दोनों नॉर्मल हैं महामहीम जी। उन्हें आजाद किया जा सकता है...।"

"हां, सोच तो हम भी यही रहे थे फांग। लेकिन भारत में मौजूद हमारे जासूसों ने रिपोर्ट दी है कि केशव के कहने पर सोनू और क्रान्ति को गुप्त जेलों या गुप्त स्थानों पर भिजवा दिया गया है। मीडिया वालों तक को नहीं मालूम कि दोनों को कहां रखा गया है। सिर्फ केशव पण्डित, चीफ मिनिस्टर, होममिनिस्टर जैसे चन्द खास लोगों को ही मालूम है कि उन दोनों को कहां रखा गया है। हर तरह की चेष्टा करने पर भी हमारे जासूस उन दोनों का पता-ठिकाना मालूम नहीं कर पाये।"

"तो क्या उन दोनों को फांसी पर चढ़ा दिया जायेगा महामहीम जी...?"

सिंगही ने लाल शराब की घूंट भरी और फिर भिंचे-भिंचे से होठों पर किंग कोबरा के दंश जैसी घातक मुस्कान समेटकर बोला, "एक

घबरा गई और बाहर की ओर दौड़ते हुये चींखी—"टीटू के पिताजी...जीरा देखो तो...टिल्लू के बापू को क्या हो रहा है...।"

"मैं...मैं वैद्य जी को बुलाकर लाती हूं टिल्लू...तू अपने बापू के पास ही रहना और घबराना मत...।"

"मां...मां...।" टिल्लू ललिता को घबराई नजरों से देखते हुये बोला, "ये तुम्हारे चेहरे पर लकीरें कैसी बन रही है...?"

ललिता ने घबराकर अपने चेहरे पर हाथ फिराये—फिर हथेलियों पर नजरें पड़ते ही चींख उठी।

वो पसीने से नहाई हुई थी और उसका जिस्म फुंका-सा जा रहा था—ये बात दूसरी थी कि पति की खराब होती जा रही दशा की वजह से उसने अपनी खराब होती जा रही दशा की तरफ ध्यान नहीं दिया था।

"हाय...मेरा जिस्म फुंक रहा है टिल्लू...मेरी हालत भी तेरे बापू के जैसी होती जा रही है...हाय...जा भागकर वैद्य जी को बुला ला...।"

टिल्लू बाहर को दौड़ पड़ा।

ललिता भी फर्श पर जा गिरी और उस मुर्गी की मानिन्द ही तड़फड़ाने व छटपटाने लगी, जिसकी गर्दन को छुरे से आधी काटकर छोड़ दिया गया हो।

उसी वक्त तड़फते सुक्खन ने एक हिचकी के साथ दम तोड़ दिया। उसके जिस्म की समूची खाल तो गायब हो चुकी थी और गोश्त भी गलकर, जलकर कोलतार में परिवर्तित होकर फर्श पर बह रहा था।

फिर उसके भीतरी अंगों के साथ हड्डियों ने भी गलना शुरू कर दिया।

तीन मिनट के अन्तराल पर ललिता का भी सुक्खन जैसा ही हस्र हो रहा था और उसने भी तड़फते, छटपटाते और एड़ियां रगड़ते हुये प्राण त्याग दिये।

वैद्य को बुला लाने को दौड़ा टिल्लू भी गांव के कच्चे रास्ते पर पड़ा तड़प रहा था। उसका जिस्म भी गल रहा था और कोलतार की मानिन्द ही बह रहा था।

ऐसा सिर्फ उन तीन अभागों के साथ ही नहीं हुआ—गांव के कम से कम ढाई हजार लोग उसी अन्जाम, उसी परिणाम को भुगत रहे थे।

दरअसल सिंगही का एक विशेष यान आया था, जिसके स्पेशल इंजिन जरा-सा भी शोर नहीं करते थे।

यान में पायलट की सीट फांग ने सम्भाली हुई थी और उसकी बगल में बैठी चांगली गोद में शीशे का सख्ती से बन्द किया हुआ मर्तबान लिये बैठी थी।

उस मर्तबान में पांच हजार के लगभग काले रंग के मच्छर भरे हुये थे।

यान के गांव के ठीक ऊपर पहुंचने पर दोनों की नजरें मिलीं और मर्तबान को यान की खिड़की से बाहर फेंक दिया।

हवा में तैरता हुआ-सा मर्तबान एक मकान के बाहर ईंटों के बने चबूतरे पर गिरा और छनाक...की आवाज के फूट गया। उसमें भरे मच्छर इधर-उधर उड़ने लगे।

डॉक्टर डेंग के ईजाद किये हुये केमिकल की तासीर ही कुछ ऐसी थी कि वो मच्छर किसी जीव को काटकर उसके जिस्म में केमिकल पहुंचाने को पागल हुये जा रहे थे। उनमें से ढाई हजार के करीब मच्छरों ने मर्दों, औरतों और बच्चों को अपना शिकार बनाया। बाकी के मच्छरों ने पालतू और आवारा जानवरों को काटा और काटते ही दम तोड़ गये।

गांव और आसपास के सैकड़ों जानवर जल और गलकर कोलतार के रूप में बह गये। उनके साथ ही गांव के लगभग ढाई हजार निर्दोष लोगों की भी ऐसी ही परिणति हुई।

क्या मच्छरों का शिकार होने से बचे बाकी के पांच सौ लोग भाग्यशाली थे?

नहीं...कतई नहीं।

उन अभागों ने ऐसा हौलनाक मंजर देखा, जिसकी कि कल्पना भी नहीं की थी, उन्होंने अपने परिजनों, अड़ोसी-पड़ोसियों का भयावना अन्त देखा।

दुःख और खौफ के कारण सौ लोगों को हार्ट अटैक हुआ और उनकी धड़कनें बन्द हो गईं।

बाकियों को ऐसा मानसिक आघात पहुंचा कि वो विक्षिप्त या पागल हो गये।

मुसीबत का पहाड़ सिर्फ नन्दपुरी गांव पर ही टूटता तो गनीमत थी।

फूलपुर नामक एक छोटे-से कस्बे में रविवार के दिन स्कूल के प्ले ग्राउन्ड में इलेक्शन जीतकर और विधायक बनकर आये नेताजी का भाषण चल रहा था। ढाई हजार के करीब श्रोता या विधायक जी के समर्थक मैदान में जमा थे। अचानक ही तड़ाक...की आवाज के साथ मैदान के बीचो-बीच मर्तबान टूटा। आसपास मौजूद लोगों ने मर्तबान के टूटने पर तो ध्यान दिया लेकिन उसमें से बाहर निकले काले रंग के हजारों मच्छरों की तरफ कोई ध्यान नहीं दिया।

"ये मर्तबान किसने फेंका...?" कोई चींखा।

"और भला कौन फेंकेगा...कालूराम के समर्थकों का ही काम होगा। वो लोग बुरी तरह इलेक्शन हारे हैं। कालूराम की जमानत जब्त हो गई है। वो लोग भरे बैठे हैं। सालों के सीनों पर सांप लोट रहे होंगे। किलसकर ऐसी घटिया हरकत की है कमीनों ने...।"

"हम लोगों को कमजोर समझा है क्या हरामियों ने? जब उन्होंने बूथ पर ठप्पेबाजी करनी चाही थी...बूथ पर कब्जा करना चाहा था तो उन्हें पकड़कर ठोका था। कईयों को होस्पिटल पहुंचा दिया था। अगर पुलिस फोर्स नहीं होती तो...जमकर खून-खच्चर करते। ससुरों से हमारा मुकाबला तो हुआ नहीं...ऐसी घटिया हरकत कर डाली। मर्तबान फेंक दिया।"

"उनकी इस घटिया हरकत का जवाब नहीं दिया तो हमें बुजदिल समझ लिया जायेगा...।"

"तो क्या किया जाये—?"

"सभी लोग कालूराम के घेर में जमा होंगे। वहीं चलकर उन्हें सबक सिखलाते हैं...।"

"हां, चलो। हथियार उठा लो और कालूराम के यहां चलो। उन्हें बतलायेंगे कि हम लोगों से पंगा लेने का क्या अन्जाम...अरे...ये तुझे क्या हो रहा है ओये घसीटा...तेरे जिस्म पर ये कैसी लकीरें बन गई हैं...?"

"तेरे जिस्म पर भी मकड़ी का जाल-सा बन गया है ओये

परमेश्वरी...हाय...ये क्या हो रहा है...सारे जिस्म में गर्मी और बेचैनी हो रही है...हाय...।"

"ओह...ये क्या हो रहा है मुझे...ऐसा लग रहा है कि जिस्म में तेजाब भर दिया गया हो...।"

लगभग सभी श्रोता और स्टेज पर चढ़े विधायक जी भी काले मच्छरों के शिकार हुये थे।

सिर्फ वो लोग ही नहीं...बाहर सड़क पर दुकानदार, उनके ग्राहक और राहगीर भी मच्छरों के शिकार हुये थे। पहले सभी के जिस्मों पर मकड़ी के जाल के जैसी पतली दरारें उत्पन्न हुई और फिर चौड़ी होने पर उनमें से पहले भांप-सी, और फिर धुआं निकलने लगा।

हड़कम्प-सा मच गया।

चीखो-पुकार मच गई।

बहुत-से लोग तड़पते, कराहते हुये डॉक्टर या हॉस्पिटल की तरफ दौड़े भी...लेकिन थोड़ी दूर पहुंचने पर ही गिर पड़े और बुरी तरह तड़पने लगे।

देखते-ही-देखते हजारों लोग के जिस्म गले और कोलतार की शक्ल में जमीन पर बह गये। जो लोग मच्छरों का शिकार नहीं बने, वो बुरी तरह घबरा गये और शोर मचाते हुये भाग निकले। जो कमजोर दिल-वाले थे, वो चक्कर खाकर बेहोश हो गये। कईयों को दिल का दौरा पड़ा और उनमें से कई ने दम तोड़ दिया।

❑❑❑

❑❑❑

"जिला रामगढ़ के गांव नन्दपुरी और कस्बे फूलपुर से बहुत ही चौंकाने वाली खबर आई हैं...।"

टी०वी० पर न्यूज रीडर उत्तेजित भाव से चींख-चींखकर बोले जा रही थी, "ऐसी खबर पहले कभी नहीं सुनी गई। नन्दपुरी और फूलपुर में अचानक ही कई हजार लोग मारे गये। सिर्फ मरे ही नहीं, बल्कि उनका अस्तित्व ही समाप्त हो गया। ये बहुत ही निराली, आश्चर्यजनक और अविश्वसीय घटना है। लोगों के जिस्म अचानक ही गलने लगे और पिघले हुये कोलतार की तरह ही पिघल गये। किसी की हड्डी तक भी साबुत नहीं बची है। रामगढ़ में सैटेलाइट और टावर्स की सुविधा ना

होने के कारण हम आपको वहां की तस्वीरें नहीं दिखला पा रहे हैं। वैसे हमारी टीम वहां पहुँचने ही वाली है और फिर हम आपको वहां के दृश्य दिखला सकेंगे। अभी वहां पर हमारे रिपोर्टर प्रशान्त दूबे हैं और वो फोन लाइन से जुड़े हुये हैं। आइये, उनसे बात करके वहां की ताजा जानकारी लेते हैं। दूबे जी...इस वक्त आप कहां पर हैं...?"

"मैं नन्दनपुरी गांव का दौरा करके थोड़ी देर पहले ही फूलपुर में आया हूं नेहा जी...।" बोलने वाले की आवाज में उत्तेजना और घबराहट स्पष्ट झलक रही थी,

"अपनी जिन्दगी में इतना हौलनाक मंजर कभी नहीं देखा मैंने। रियल लाइफ में तो क्या...बॉलीवुड और हॉलीवुड की फिल्मों में भी नहीं देखा। जगह-जगह कोलतार जैसा द्रव्य बिखरा हुआ है। प्रत्यक्षदर्शियों के मुताबिक वो द्रव्य उनके घरवालों, रिश्तेदारों, जान-पहचान वालों का है, इन्सानों का है। साथ ही कई जानवर भी जल और गलकर द्रव्य में परिवर्तित हो गये हैं। नेहा जी...जो लोग बच गये हैं, उनकी दशा भी खराब है। कई लोगों को मारे खौफ के हार्ट अटैक पड़ा है। कई लोग बेहोश हैं तो कई लोग पागल होकर ऊट-पटांग किस्म की हरकत कर रहे हैं।"

"लेकिन ये सब हुआ कैसे दूबे जी–?"

"फूलपुर में एक स्कूल के मैदान में इलेक्शन जीतकर आये विधायक जी की सभा चल रही थी। अचानक ही कांच का एक मर्तबान टूटा। लोगों ने ये समझा था कि वो अपोजिशन पार्टी वालों की शरारत थी। लेकिन बुद्ध प्रकाश नाम के एक विक्षिप्त-से हो चुके व्यक्ति ने बतलाया कि उस मर्तबान में काले रंग के मच्छर थे–वो उड़े और उन्होंने जिसे भी काटा–उसके ही जिस्म में पहले दरारें पड़ीं और फिर भाप सी उड़ी। फिर जिस्म से धुआं निकलने के साथ ही काले रंग का द्रव्य भी निकलने लगा और जिस्म फटने लगे। देखते-ही-देखते जिस्म गल गये और बाकी रह गया कोलतार जैसा काला और गाढ़ा द्रव्य। नन्दपुरी गांव में भी एक अधेड़ ने यही बतलाया कि उसकी बीवी के जिस्म पर एक काला मच्छर बैठा था। उसकी बीवी तड़पने लगी। उसने ऐसी शिकायत की कि उसके जिस्म के भीतर मानो किसी ने तेजाब भर दिया हो और वो जली जा रही हो। उस महिला के जिस्म पर पहले मकड़ी

के जाले जैसी लाल रंग की महीन दरारें पड़ी थीं और भांप सी निकलने लगी थी। फिर वो दरारें चौड़ी होने लगीं और उनमें से धुआं उठने लगा। देखते- ही-देखते काले रंग का द्रव्य बहने लगा और जिस्म आग में फेंक दिये गये मोम की तरह ही गलता चला गया। मैं आपसे बातें अवश्य कर रहा हूं नेहा जी...लेकिन मारे घबराहट के बुरा हाल है मेरा। धड़कनें अनियन्त्रित हैं और तेज चक्कर भी महसूस हो रहे हैं। हो सकता है कि मैं बात करते-करते ही बेहोश हो जाऊं...।"

"आप थोड़ा पानी पी लीजिये दूबे जी और धैर्य, साहस से काम लीजिये। हमारी टीम रवाना हो चुकी है और वहां पहुंचने ही वाली होगी। आपका फोन आने के बाद हमारे चीफ एडीटर साहब ने प्राइम मिनिस्टर साहब और होम मिनिस्टर साहब से फोन पर बात की थी। उन्होंने जल्दी ही कोई कदम उठाने की बात की थी। आप अपना ख्याल रखना दूबे जी। हमारा आपसे फोन पर सम्पर्क बना रहेगा–। हमारे स्टूडियो में मशहूर साइंटिस्ट ए०के० साहनी जी मौजूद हैं। अभी हमें लेना होगा एक छोटा-सा कमर्शियल ब्रेक। ब्रेक के बाद हम साहनी साहब से नन्दपुरी और फूलपुर में घटी हैरतअंगेज घटनाओं के सन्दर्भ में बातें करेंगे...।"

लक्स, निरमा, सनफिस्ट, सर्फ, रिन, खेतान, बजाज डिस्कवर, टाटा नैनो, इमामी, फेयर एंड लवली और हिमानी नवरत्न जैसे विभिन्न कम्पनी के उत्पादों के विज्ञापन दिखलाये गये, फिर स्क्रीन पर न्यूज रीडर एक अधगंजे और फ्रेन्चकट दाढ़ी वाले अधेड़ के साथ स्टूडियो में बैठी दिखलाई पड़ी। जल्दी-जल्दी नन्दपुरी और फूलपुर में घटी घटनाओं के बारे में बतलाया और फिर वैज्ञानिक ए०के०साहनी से सम्बोधित होकर बोली–"साहनी साहब! अभी हमारे पास नन्दपुरी और फूलपुर में घटी घटनाओं की वीडियो तो नहीं है लेकिन वहां कैसे और क्या हुआ, ये बतलाया ही गया है। एक काले रंग के मच्छर ने जिस किसी को भी काटा...वो ही मोम की तरह पिघलकर बह गया। इन्सान हो चाहे जानवर...सभी के जिस्म पिघले हुये कोलतार के जैसे हो गये। क्या मलेरिया, चिकनगुनिया और डेंगू के बाद नई और खतरनाक बीमारी वाला मच्छर उत्पन्न हो गया है–?"

"आपके चैनल के माध्यम से मुझे जो चौंकाने वाली ये जानकारी मिली है...ऐसा कभी नहीं सुना। समूची दुनिया के खतरनाक कीड़ों और

कीटों के बारे में पढ़ा और सुना है मैंने—लेकिन ऐसे किसी मच्छर के बारे में कोई जानकारी नहीं है। इस दुनिया में बहुत खतरनाक किस्म के सांप, बिच्छू और मकड़ियां हैं, जोकि काटकर या डंक मारकर किसी की भी जान ले सकते हैं—लेकिन ऐसे खतरनाक मच्छर के बारे में पहली ही बार सुन रहा हूं। विश्वास ही नहीं होता कि कोई मच्छर ऐसा भी हो सकता है, जो किसी इन्सान या जानवर को काटकर उसके जिस्म को गलाकर कोलतार जैसा बना दे। दूसरे मच्छरों से खतरनाक किस्म की बीमारियां होती हैं लेकिन उनका इलाज उपलब्ध है।"

"तो क्या उस मच्छर का कोई इलाज नहीं हो सकेगा साहनी साहब? इस तरह के मच्छर तो तबाही मचा देंगे। ना जाने कितने लोगों की जान ले लेंगे वो। मच्छरों की संख्या जितनी ज्यादा होगी...उतने ही मनुष्य या जानवर मारे जायेंगे...।"

"वैज्ञानिक किसी तरीके से उस मच्छर को हासिल करेंगे और लैब में जांच करके पता लगायेंगे कि उसके भीतर ऐसी क्या खतरनाक चीज है, जो अपने शिकार को चन्द पलों में ही गलाकर रख देती है। मारे गये लोगों के अवशेष का भी नमूना लिया जायेगा और उसकी भी जांच की जायेगी। पहले बीमारी के बारे में जानकारी ली जायेगी—फिर उसका इलाज खोजा जायेगा। ये भी मालूम किया जायेगा कि अचानक ही ये मच्छर कहां से और कैसे पैदा हो गया?"

"उस काले और खतरनाक मच्छर का इलाज कितनी देर में ढूंढ लिया जायेगा साहनी साहब...?"

"इस बारे में कुछ नहीं कहा जा सकता। मलेरिया, चिकनगुनिया और डेंगू जैसी बीमारियों का इलाज ढूंढने में भी काफी वक्त लगा। हालांकि डेंगू को भी काफी खतरनाक बीमारी माना जाता है—क्योंकि उससे बहुत सी मौतें हो चुकी हैं। लेकिन ये नई बीमारी तो बहुत ही खतरनाक है। ये अगर फैल गई तो कयामत ही ला देगी। आपके कहे अनुसार वो मच्छर जिस किसी को भी काटता है—उसको कुछ ही देर में गलाकर काले द्रव्य में परिवर्तित कर देता है। अव्वल तो इसका कोई इलाज ही नहीं है। फिर भी उस मच्छर के शिकार को किसी डॉक्टर के पास या आधुनिक इलाज से परिपूर्ण किसी हॉस्पिटल में ले जाया भी जाये तो...तो भी कुछ नहीं हो पायेगा। डॉक्टर्स बेबस भाव से उस

मरीज को मरते हुये, काले द्रव्य में परिवर्तित होते देखने के सिवाय कुछ भी नहीं कर सकेंगे। अभी तो बस यही प्रार्थना की जा सकती है कि वो खतरनाक मच्छर खत्म हो चुके हों। उस तरह के और मच्छर पैदा ना हों। साथ ही ये प्रार्थना भी करता हूं कि हमारे देश के वैज्ञानिक जल्द-से-जल्द उस मच्छर के काटे का इलाज ढूंढ लें। कोई ऐसा इंजेक्शन तैयार कर लें। जिसे लगाकर पेशेंट की जान बचाई जा सके...।"

"तो ये थे मशहूर साइंटिस्ट ए०के० साहनी, जिनका कहना है कि उस मच्छर का इलाज खोजने में वक्त लगेगा। हम यही प्रार्थना करते हैं कि उस तरह के और मच्छर ना हों और निर्दोष लोगों की रोंगटे खड़े कर देने वाली मौत ना हो...। अब हमें इन्तजार है कि हमारे चैनल की टीम नन्दपुरी और फूलपुर में कब तक पहुंचेगी और वहां से क्या रिपोर्ट भेजती है...?"

❑❑❑
❑❑❑

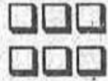
नन्दपुरी और फूलपुर में कई न्यूज चैनल की टीमें पहुंच गईं और उन काले रंग के पदार्थों को कैमरों के माध्यम से दिखलाने लगीं, जो कि कभी जीते-जागते इन्सान या जानवर थे। इसी के साथ उन लोगों के इन्टरव्यू भी लिये जाने लगे, जो कि उन हौलनाक दृश्यों के प्रत्यक्षदर्शी गवाह थे।

मीडिया वालों के साथ-साथ केन्द्र और राज्य सरकार के मन्त्री व प्रतिनिधि भी पहुंचे। वो भाषण देने के अलावा और कर भी क्या सकते थे—उन्होंने भाषण में मृतकों के प्रति दुःख प्रकट किया, उन्हें श्रद्धांजलि दी और उनके परिजनों के प्रति संवेदना व्यक्त की। मुआवजा देने और काले मच्छरों से जनित बीमारी का जल्द-से-जल्द उपचार खोजने का वायदा किया।

देश के छोटे-बड़े वैज्ञानिकों के कई दल भी पहुंचे। बहुत खोजने पर भी उन्हें कोई जिन्दा तो क्या मुर्दा मच्छर भी नहीं मिला। उन्होंने मृतकों के अवशेष के नमूने ले लिये और मीडिया वालों से कहा कि लैब में जांच करने पर ही कुछ बतला पायेंगे।

इससे पूर्व कि वो लोग लैबोरटी में पहुंचकर कोई जांच कर

पाते...सभी न्यूज चैनल्स के पास किसी ना किसी माध्यम से डी०वी०डी० के द्वारा सिंगही का मैसेज पहुंच गया।



मुलतानी मिट्टी के जैसा बे-नूर चेहरा।

यूं लगता था कि मानो हड्डी के नरमुण्ड पर खाल तो चिपका दी गई थी लेकिन ये गोश्त और खून नहीं भरा गया था।

गोल्डन कलर की जिस्म से चिपकी पोशाक और सिल्वर कलर के जूतों में पैक वो सिंहासननुमा कुर्सी पर विराजमान था।

"टी०वी० के माध्यम से हमने पहले भी अपनी बात रखी है, लेकिन इस तरीके से नहीं...।" अंटार्टिका की शीत लहर-सी सर्द, एनाकोन्डा की फुंफकार-सी जहरीली, नये ब्लेड की धार-सी पैनी और चाबुक की फटकार जैसी कर्कश आवाज में ही बोला वह, "...हमने अपने ट्रांसमिशन सिस्टम से दुनियाभर के ट्रांसमिशन, टेलीकास्ट और ब्रॉडकास्ट सिस्टम ठप्प कर दिये थे और अपने कन्ट्रोल रूम से दुनिया के तमाम रेडियो, ट्रांजिस्टर और टी०वी० पर अपना मैसेज प्रसारित किया था। हम चाहते तो आज भी ऐसा हो सकता था। लेकिन हमारा आज का मैसेज...सन्देश दुनियाभर के लिये नहीं, बल्कि भारत...भारत की सरकार के लिये ही है—इसलिये हमने डी०वी०डी० को ही अपना माध्यम बनाया है। कल नन्दपुरी गांव और फूलपुर कस्बे में जो कुछ हुआ, भारत की सरकार और भारत की समस्त जनता भी जान चुकी होगी। काले रंग के छोटे-छोटे मच्छर। उन मच्छरों ने मनुष्यों के साथ-साथ कई जानवरों को भी काटा। काटते ही वो मच्छर मर गये। लेकिन क्या वो अकेले ही मरे?

नहीं...वो अकेले ही नहीं मरे। उनके दम तोड़ने से पहले ही उनका डंक अपना कमाल दिखला चुका था। जिसे भी डंसा...उसका क्या हस्र हुआ? उसके जिस्म पर मकड़ी के जाल जैसी दरारें पड़नी शुरू हो गईं और उन दरारों से भाप उठने लगी। दरारें चौड़ी होने लगीं तो जिस्म से धुआं निकलने लगा। फिर जिस्म जलकर गलने लगा और जिस्म के सभी अंग, नसें, खून, गोश्त और हड्डियां कोलतार की तरह ही बहने लगीं। देखते-ही-देखते समूचा जिस्म गल-सड़ गया और बाकी रह

गया...काले रंग का गाढ़ा और काला द्रव्य। ये सब कैसे हुआ? वो काले मच्छर कहां से आये? उनके भीतर ऐसी खूबी किसने भरी कि जिसे भी डंसा, वो ही पिघलकर जमीन पर बह गया? भला इतना बड़ा कारनामा महामहीम और विश्व के भावी सम्राट महान सिंगही के सिवाय कोई और कर सकता है क्या?

हां, हमने ही एक खतरनाक किस्म का फार्मूला ईजाद किया है। एक खास किस्म का केमिकल। उसे दुनिया का सबसे घातक एसिड यानि तेजाब भी कहा जा सकता है। एक मच्छर अपने डंक के माध्यम से कितना केमिकल किसी के जिस्म में उतार सकता है। आधा सेन्टीमीटर साइज का मच्छर और उससे बहुत ही छोटा...उसके मुंह में समाया नन्हा-मुन्ना सा डंक...उसमें कितना केमिकल हो सकता है भला? एक मामूली बूंद का हजारवां हिस्सा। हमारे ईजाद लिये हुये उस केमिकल ने लम्बे-चौड़े आदमी...आदमी तो क्या...बैल या भैंसे को भी पिघलाकर रख दिया। ऐसा ही हस्र हाथी या ऊंट का होगा। अगर आज की तारीख में डायनासोर भी होते तो...उस केमिकल की चौथाई बूंद ही उसे पिघलाकर जमीन पर बहा देती।

अब प्रश्न ये है कि हमने उस केमिकल का अविष्कार क्यों किया? ये कोई प्रश्न ही नहीं हुआ। हमें जानने वालों को मालूम है कि हम थोड़ा सनकी किस्म के वैज्ञानिक हैं। हम अक्सर ऐसे फार्मूले ईजाद करते रहते हैं, जो तबाही मचा सकें—लोगों को...दुनिया को दिक्कत में डाल सकें। नहीं...अगर कोई सोच रहा है कि हमने ये फार्मूला विश्व-विजेता बनने के लिये तैयार किया है तो...वो मूर्ख है...नादान है। अगर हमने अपना नया फार्मूला पूरी दुनिया के लिये ईजाद किया होता तो वो काले-काले मच्छर सिर्फ नन्दपुरी और फूलपुर में ही तबाही नहीं मचाते। वो मच्छर समूची दुनिया में उत्पात मचाते और समूची दुनिया में हड़कम्प मचा हुआ होता। हमने तो सिर्फ एक छोटे से गांव और कस्बे को ही अपने निशाने पर लिया और अपने नन्हे-नन्हे यमदूतों के माध्यम से तबाही का छोटा-सा खेल खेला। प्रश्न ये है कि क्यों? हमने ऐसा क्यों किया—किसलिये किया...?"

इतना बोलकर सिंगही खामोश हो गया। उसके पतले-पतले होंठ यूं बन्द हुये कि मानो उन्हें कसकर भींच लिया गया हो। लेकिन उन

होठों पर ऐसी मुस्कान थिरक रही थी कि मानो वो टी०वी० देख रहे दर्शकों की व्यग्रता, उत्सुकता और कौतूहलता का जी भरके आनन्द उठा रहा हो।

फिर मुस्कान को बिना जादू के डन्डे से गायब करके बोला वह—"...ऐसा भी नहीं है कि हमें भारत को अपना गुलाम बनाना है—भारत का सम्राट बनना है। किसी एक देश या भारत को गुलाम बनाना होता तो कभी का बना लेते—ये हमारे लिये कोई बड़ा काम नहीं हैं। तो फिर हमने ये काले मच्छरों वाला खेल क्यों खेला? दरअसल हमारे दो खास लोगों को दिमाग के जादूगर कहे जाने वाले केशव पण्डित ने पकड़कर कानून के हवाले कर दिया था। ना सिर्फ हवाले कर दिया था, बल्कि अदालत के जरिये उन्हें फांसी की सजा भी सुनवा दी थी। ऊपर से सितम ये कि अपने लड़के आशीर्वाद पण्डित के जरिये उन दोनों को कोमा की हालत में पहुंचा दिया था। दोनों को जिन्दा लाश बनाकर छोड़ दिया था। केशव की बीवी सोफिया ने दोनों को देखा तो उसे तरस आ गया। उसने जिद करके आशीर्वाद के जरिये उन दोनों को नॉर्मल करा दिया। फिर केशव पण्डित की सलाह पर राज्य सरकार ने उन दोनों को गुप्त ठिकानों पर भिजवा दिया—ताकि उन दोनों को छुड़वाया नहीं जा सके।

लेकिन हमारा नाम भी सिंगही है...महान सिंगही। हम कोई काम करने की ठान लें तो उसे करके ही दम लेते हैं। इसीलिये हमने उस खतरनाक केमिकल का निर्माण किया और मच्छरों के माध्यम से उसका नमूना पेश किया। पहले तो हम ये बतला दें कि हमारे वो दोनों खास लोग हैं क्रान्ति और सोनू। क्रान्ति और सोनू को मुक्त कराने के लिये ही हमने उस घातक केमिकल का आविष्कार किया है। बहुत सारा केमिकल है अपने पास और करोड़ों की संख्या में काले-काले मच्छर भी हैं। भारत सरकार...सरकार के नुमाइन्दे कान खोलकर हमारी बात सुन लें। कल सुबह ही क्रान्ति और सोनू को जेल या गुप्त ठिकानों से बाहर निकालना है और एक प्लेन के जरिये उन्हें तिब्बत पहुंचाना है। तिब्बत में लिदूदर नाम की बहुत बड़ी नदी है। वो प्लेन लिदूदर नदी के ऊपर मंकी हिल की तरफ से टाइग्रेस हिल की तरफ उड़ान भरेगा।

क्रान्ति और सोनू को स्वीमिंग कास्ट्यूम, ऑक्सीजन मास्क और

सिलेन्डर, हवा भरी दो ट्यूब्स और दो पैराशूट दिये जायें। वो दोनों उड़ते प्लेन की खिड़की खोलकर लिदूदर नदी में छलांग लगा देंगे। उनके छलांग लगाते ही प्लेन वापिस मुड़ेगा और भारत लौट जायेगा। कोई चालाकी नहीं होनी चाहिये। क्रान्ति और सोनू को ना तो पकड़ने की चेष्टा की जाये और ना ही उनका पीछा ही किया जाये। हम अपनी चेतावनी को पुनः दोहरा रहे हैं। क्रान्ति और सोनू को पकड़ने या उनका पीछा करने की जुर्रत ना की जाये—वरना इसका बड़ा ही बुरा अन्जाम होगा। हम अपने विशेष यान के जरिये काले मच्छरों की विशाल सेना भारत में छोड़ देंगे। उन मच्छरों की संख्या करोड़ों में होगी, कल्पना की जा सकती है कि वो करोड़ों मच्छर कितनी बड़ी तबाही मचा देंगे?

हमें मालूम है कि भारत के वैज्ञानिक मारे गये लोगों और जानवरों के अवशेष उठाकर लैब में ले गये थे। लेकिन वो कुछ भी मालूम नहीं कर सके। वो पता नहीं लगा सके कि उन काले मच्छरों के डंक में ऐसा क्या था कि जिसे भी काटा, वो ही कोलतार की तरह पिघलकर बह गया। ये हमारा चैलेंज है कि भारत तो क्या...दुनियाभर के वैज्ञानिक भी उस केमिकल के बारे में ज़रा-सी भी जानकारी हासिल नहीं कर पायेंगे। जब जानकारी ही हासिल नहीं कर पायेंगे तो...उसका इलाज का क्या खाक खोज पायेंगे। ना ही दुनिया का कोई वैज्ञानिक ऐसी कोई दवा या केमिकल ही बना पायेगा...कि लोगों या जानवरों को काटने से पहले ही उन मच्छरों को खत्म किया जा सके। वो मच्छर किसी भी दवा, केमिकल, धुएं या गैस से मरने वाले नहीं। वो अपनी ही मौत मरेंगे। जैसे ही वो अपने शिकार को काटेंगे...उनकी मौत हो जायेगी। सो कोई भी माई का लाल उन मच्छरों का इलाज नहीं कर पायेगा, उन्हें लोगों के जिस्म में डंक मारने से नहीं रोक पायेगा। कोशिश करना भी बेकार है। कोई चेष्टा करनी चाहे तो कर सकता है...वो नाकाम ही होगा। वैसे भी हम किसी को...भारत सरकार को इतना वक्त भी नहीं दे रहे हैं कि कुछ किया जा सके। सो कल सुबह आठ बजे तक क्रान्ति और सोनू को प्लेन में बिठाकर ऑक्सीजन मास्क, गैस, स्वीमिंग कास्ट्यूम, ट्यूब्स और पैराशूट के साथ तिब्बत में लिदूदर नदी की ओर रवाना कर दिया जाये। हमारी बात ना मानने या किसी भी किस्म की चालाकी दिखलाने का बुरा परिणाम होगा। ना जाने कितने निर्दोष लोगों

को अपनी जान गंवानी पड़ेगी। जान ही क्या...अपने जिस्म भी गंवाने पड़ेंगे। वो इस हालत में रहेंगे ही नहीं कि उनका अन्तिम-संस्कार किया जा सके। हमारी भी अपनी सोर्सेज हैं। दुनियाभर के साथ भारत में ही हमारे ढेर सारे जासूस भरे पड़े हैं, जो कि हमें पल-पल की खबर देते रहेंगे। अगर कल सुबह क्रान्ति और सोनू को प्लेन में बिठाकर रवाना ना किया गया तो ठीक साढ़े आठ बजे हमारे काले मच्छरों की विशाल सेना राजधानी दिल्ली पर जोरदार हमला बोल देगी। नौ बजे मद्रास में, साढ़े नौ बजे कोलकाता में, दस बजे बैंगलोर में, साढ़े दस बजे चन्डीगढ़ में...कुल मिलाकर हर आधे घन्टे के बाद काले मच्छरों की सेना महानगरों को अपना निशाना बनाती रहेगी। जो भी तबाही होगी—उसके लिये भारत सरकार ही जिम्मेदार होगी। वैसे हम नहीं समझते कि दो प्राणियों क्रान्ति और सोनू के लिये भारत सरकार अपने लाखों, करोड़ों निर्दोष नागरिकों की जान दांव पर लगाना पसन्द करेगी। फिर भी देखना है कि भारत सरकार क्रान्ति और सोनू को कल सुबह आठ बजे मुक्त करती है कि नहीं—?"

बस, इसी के साथ टी०वी० स्क्रीन पर से सिंगही गायब हो गया। उसकी भेजी हुई डी०वी०डी० में इतना ही मैसेज था, जिसने समूचे देश में हड़कम्प मचा दिया।

□□□

□□□

केशव, सोफिया, आशीर्वाद, राजन, चांदनी, करतार सिंह और श्वेता गुप्ता नौकर मुंशी द्वारा तैयार किया गया सुबह का नाश्ता ले रहे थे कि न्यूज चैनल पर सिंगही का धमकी या चेतावनी भरा सन्देश प्रसारित हुआ।

"ओह...तो ये मामला है...।" करतार सिंह सिर पर बन्धी केसरिया रंग की पगड़ी को सहलाते हुये बोला, "नन्दपुरी गांव ते फूलपुर कस्बे विच जे तबाही दा खेल होया सी...ओहदे पीछे इस कुक्कड़ सिंगही दा हत्थ सी। उसने कोई ख़तरनाक किस्म दा केमिकल तैयार किया सी...ते काले मच्छरों दे जरिये सैकड़ों, हजारों निर्दोष लोगों दी जान ले ली है। किन्ना कमीना बन्दा है ये मुर्दे जा सिंगही। जे कदो साढे

हत्थ चढ़ गया ते ओहदा बूथा भन्न देवाऊंगा। चपड़े मार-मारके ओहदी हालत पतली कर देणी है...।"

"ये मामला तो काफी गम्भीर हैं डैडी जी...।" आशीर्वाद गम्भीर भाव से बोला, "...बाकी लोगों की तरह हम लोग भी यही समझ रहे थे कि मलेरिया, चिकनगुनिया और डेंगू वाले मच्छरों की तरह ही वो काले मच्छर भी अपने आप पैदा हो गये होंगे। लेकिन ये तो मामला ही कुछ और निकला है। ये तो खतरनाक साजिश थी और इस साजिश के पीछे सिंगही का दिमाग था।"

"अरे भाई...रेगिस्तान की तपती रेत से निकले गुलाब के फूलों...चेहरों पर साढ़े चौबीस क्यों बजे हुये हैं...?"

सभी ने दरवाजे पर खड़े डेनिम की नीली जींस और लाल टी-शर्ट वाले उस लम्बे और तन्दुरुस्त व्यक्ति को देखा, जो कि थोड़ा सांवला और बादामी आंखों वाला था।

"नमस्ते, अंकल जी...।" आशीर्वाद ने उसका अभिवादन किया।

"नमस्कार, अलफांसे जी...।"

सकपकाया इन्टरनेशनल क्रिमिनल अलफांसे और एक खाली कुर्सी पर कब्जा जमाकर श्वेता गुप्ता से बोला—"मुझ पर रहम खाओ देवी जी। बड़ी मुश्किल से इन्टरपोल और इन्डियन पुलिस से बचा हूं। पहले तो मैंने सिकन्दर के रूप में सिर्फ अपना परिचय ही बदला था। लेकिन उस रसीली मिर्ची क्रान्ति की मेहरबानी से मेरा टी०वी० चैनल्स पर भान्डा फूट गया था। कमीनी ने बड़ी ही शातिर चाल चली थी। मैंने तो करतार सिंह को सिर्फ मारने का ड्रामा ही किया था, लेकिन क्रान्ति ने उसकी डी०वी०डी० बनवाकर सभी न्यूज चैनल्स और पुलिस वालों तक पहुंचवा दी थी। और सभी जान गये थे कि सिकन्दर ही अलफांसे है। इस जंजाल से बचने के लिये मुझे ड्रामा करना पड़ा। अपनी कार में एक ऐसी लावारिश लाश रखी, जिसकी कद-काठी मुझ जैसी ही थी। उसे अपने कपड़े, जूते, अंगूठियां और चेन पहनाई और कार को आग लगाकर खाई में धकेल दिया। यही माना गया कि कार हादसे में अलफांसे महाराज फिनिश हो गये। सलमा और केशव ने भी ये कहकर पल्ला झाड़ लिया था कि ये मुझे सिकन्दर के रूप में जानते-पहचानते थे—इन्हें नहीं मालूम था कि मैं इन्टरनेशनल क्रिमिनल अलफांसे हूं।

प्लास्टिक और कॉस्मैटिक सर्जरी के जरिये अपना चेहरा बदलवाया है और कॉन्टेक्स लैंसेज के माध्यम से आंखों का कलर चेंज किया है। अब मैं अलफांसे या सिकन्दर नहीं, अमरकान्त हूं। अपनी डार्लिंग सलमा के साथ रहने के लिये ये किस्सा गढ़ा है कि पांच साल पहले अमरकान्त और सलमा प्रेमी-प्रेमिका थे—लेकिन गलतफहमी की वजह से दोनों में मनमुटाव हो गया था और दोनों अलग हो गये थे। सिकन्दर उर्फ अलफांसे की वास्तविकता जानने के बाद सलमा को अपनी गलती का अहसास हुआ। उसने फोन पर अमरकान्त से यानि मुझसे क्षमा मांगी और मैं लखनऊ से यहां मुम्बई चला आया। ध्यान रहे...अब मैं अमरकान्त हूं...।"

"गलती हो गई सिक...मेरा मतलब अमरकान्त भाईजी...।" श्वेता कान पकड़कर बोली, "...अब कभी आपको अलफांसे या सिकन्दर नहीं बोलूंगी—।"

"ठीक है...जाओ माफ किया। लेकिन सवा लाख टके का प्रश्न तो यूं ही बिना उत्तर के रह गया कि तुम लोगों के अमावस के चांद जैसे चेहरों पर साढ़े चौबीस क्यों बजे हैं—?"

"अभी...थोड़ी देर पहले न्यूज चैनल पर सिंगही का मैसेज प्रसारित हुआ है अलफांसे...।" उत्तर देने वाला था केशव।

"सिंगही का मैसेज...?" चौंककर बोला अलफांसे, "उस सत्तर-अस्सी साल के खूबसूरत राजकुमार का? क्या बोल रहा था वो बबूल का फूल—?"

केशव बतलाने लगा कि डी०वी०डी० के माध्यम से सिंगही क्या-क्या बोला था।

अलफांसे ने ट्रिपल फाइव की सिगरेट सुलगा ली और कश लगाने पर गम्भीर भाव से बोला—"...सिंगही को क्रान्ति के साथ तुमने सिगरेट की डिब्बी में बन्द करके पहाड़ी नदी में फेंक दिया था केशव। उम्मीद थी कि दोनों मर-खप जायेंगे—लेकिन दोनों बच गये थे। क्रान्ति ने सोनू के साथ मिलकर मुर्दे वाला गेम खेला था, जबकि सिंगही खामोश हो गया था। उसकी खामोशी का मतलब अब समझ में आ रहा है। वो गुपचुप तरीके से अपनी तैयारियां कर रहा था। कम्बख्त ने कितना खतरनाक केमिकल तैयार किया है। मच्छरों के जरिये उसने उस

केमिकल से कितने निर्दोष लोगों की जान ले ली। कितनी भयानक मौत बांटी उसने। जी तो चाहता है कि उसे अभी दबोच लूं और उसकी बोटी-बोटी करके भूखे कुत्तों को खिला दूं...।"

"ये काम तो तभी होगा अल...अमरकान्त भाई...जब सिंगही हाथ लगेगा...।" गम्भीर व चिन्तित भाव से बोला राजन, "...सम्भावना है कि उसने चीन में ही अपना ठिकाना बनाया हुआ होगा—क्योंकि वो चीन का रहने वाला है और भीतरखाने चीन की सरकार उसको सपोर्ट करती है। तभी सी०एस०ए० यानि चाइना सीक्रेट एजेंसी और सी०एस०ए० की ब्रांच आई०टी०ओ० यानि इन्डियन टेररिस्ट ऑर्गेनाइजेशन में सिंगही का पूरा इन्टरफेयर रहता है। सिंगही को चीन में ढूंढ निकालना आसान बात नहीं है। समस्या है सिंगही की डिमांड की। उसने क्रान्ति और सोनू को मुक्त करने की डिमांड की है। समय इतना कम दिया है कि कुछ किया नहीं जा सकता। मैं समझता हूं कि भारत सरकार के पास क्रान्ति और सोनू को छोड़ने के सिवाय दूसरा कोई विकल्प नहीं है।"

तभी कालबैल बज उठी।

"नमस्कार, श्रीमान जी...।" किचन से निकलकर आये सफेद जींस, काली टी-शर्ट और नीली हवाई चप्पलों वाले मुंशी ने हाथ जोड़कर अलफांसे को नमस्ते की और फिर बाहर चला गया। कुछ देर बाद ही वो वापिस लौटा और केशव से बोला, "सर जी...टी०वी० वाले और अखबार वाले आये हैं...क्या बोलते हैं उन्हें...हां, मीडिया वाले...।"

तभी इन्डिया टी०वी० के लोगो वाले माइक को लिये हुये खूबसूरत युवती वहां आ पहुंची, जिसने नीली जींस के साथ केसरिया रंग का कुर्ता पहना हुआ था।

"सभी को नमस्कार...जय सियाराम...।"

"नमस्कार...जय सियाराम...।"

सभी ने उसके अभिवादन का उत्तर दिया।

उसने पूरी आत्मीयता से सोफिया की कोहली भर ली और उसका गाल चूमने पर केशव से बोली, "...बाहर काफी मीडिया वाले हैं भाई—लेकिन पहले मुझे तुम्हारा इन्टरव्यू चाहिये...।"

"आज के इन्टरव्यू में कोई खास बात नहीं है मेरी बहना... ।" केशव सोफे से उठकर बोला, "...बाहर चलकर सभी से मिल लेते हैं... ।"

"जब कोई खास बात ही नहीं है तो मैं बाहर जाकर क्या करूंगी... ?" केशव और आशीर्वाद के गुरु एडवोकेट रमाकान्त की बेटी और केशव की धर्मबहन माधवी चोपड़ा सोफे पर सोफिया व चांदनी के मध्य बैठकर बोली, "...मैं यहीं बैठकर अपनी भाभियों के साथ गपशप मारते हुये चाय पीती हूं। तुमसे कुछ पूछना होगा तो बाद में पूछ लूंगी भाई— ।"

"चलो, सखी हातिमताई... ।" अलफांसे उठकर बोला, "हम भी बाहर चलते हैं। देखते हैं कि मीडिया वाले क्या पूछते हैं और तुम उन्हें कौन-सी पुड़िया देते हो—?"



"नन्दपुरी और फूलपुर में जो घटनायें हुई...वो रोंगटे खड़े कर देने वाली हैं पण्डित जी... ।" जी न्यूज का रिपोर्टर बोल रहा था, "...सारी अटकलें समाप्त हो गई। सिंगही ने डी०वी०डी० के जरिये स्वीकार कर लिया कि उन घटनाओं के पीछे उसी का हाथ है। अपने ईजाद किये हुये केमिकल का काले मच्छरों के द्वारा उसने निर्दोष लोगों और जानवरों पर प्रयोग किया और एक तरह से उनका नामोनिशान ही मिटा दिया। आपने भी सिंगही का मैसेज सुना होगा। इस बारे में आपका क्या कहना है? वैसे लोगों की सोच यही होगी कि आप कुछ-ना-कुछ करेंगे और सोनू, क्रान्ति को आजाद नहीं होने देंगे... ।"

बंगले के बाहर वाले लॉन में मीडिया वालों के सामने आशीर्वाद, अलफांसे, राजन, करतार सिंह और श्वेता गुप्ता के साथ बैठा केशव गम्भीर भाव से बोला, "बहुत-सी बार हम चाहकर भी कुछ नहीं कर पाते। सिंगही ने लगभग चौबीस घन्टे का समय दिया है। मालूम नहीं कि उसने अपना हैडक्वार्टर कहां पर बनाया हुआ होगा। लेकिन मेरे अनुमान से जिस इलाके में बनाया होगा—वहां तक पहुंचने में ही चौबीस या उससे अधिक घन्टे लग जायेंगे। जबकि सिंगही ने धमकी दी है कि अगर कल सुबह आठ बजे तक सोनू और क्रान्ति को प्लेन में बिठाकर

रवाना नहीं किया तो वो दिल्ली में काले मच्छर छोड़ देगा। इतना ही नहीं, उसने प्रत्येक आधे घन्टे के बाद दूसरे महानगरों में भी काले मच्छर छोड़कर तबाही मचाने की धमकी दी है... ।"

"लेकिन मच्छर छोड़ने के लिये तो सिंगही को दिल्ली या दूसरे महानगरों में आना ही होगा... ।" मुम्बई से प्रकाशित होने वाले एक अखबार का धोती-कुर्ता व चश्माधारी पत्रकार बोला, "...वो नन्दपुरी और फूलपुर में भी होगा यानि सिंगही को इस वक्त हिन्दुस्तान में ही होना चाहिये। आप तो दिमाग के जादूगर कहलाते हैं। अपने दिमाग का इस्तेमाल करके सिंगही को दबोच क्यों नहीं लेते—?"

"अबे ओये नीम के पकौड़े...उजड़ी रियासत के शहंशाह... ।" ताव खाकर बोला अलफांसे, "...अपनी बुद्धि को चूहों के बिल में छोड़कर आया है क्या या शिकारपुर वालों को दान में दे आया है? सिंगही को गली-मौहल्ले का गुन्डा-मवाली समझा है क्या कि वो सारे काम अपने आप ही करेगा? जो लघुशंका के लिये भी जाता है तो खास किस्म के प्लेन का इस्तेमाल करता है। उसके पास आदमियों की कमी नहीं। चीन की सी०एस०ए० और आई०टी०ओ० पर भी उसका होल्ड है। आई०टी०ओ० के हैडक्वार्टर और सभी आतंकियों का खात्मा तो केशव ने कर दिया था। लेकिन सी०एस०ए० के लोग तो हैं। सी०एस०ए० के ढेरों एजेन्ट दुनियाभर में फैले हुये हैं—हिन्दुस्तान में भी होंगे। सिंगही ने मच्छरों वाला खेल उन्हीं के जरिये कराया होगा और जरूरत पड़ने पर आगे भी करायेगा। वैसे भी सिंगही के पास एक खास किस्म का ब्रेसलेट है, जिसका एक बटन दबाकर वो गायब हो जाता है। उसके पास खास किस्म के जूते हैं, जो कि नन्हें-नन्हें हवाई जहाज ही हैं—उन्हें पहनकर सिंगही उड़ सकता है। उसके ब्रेसलेट से लाल रंग की ऐसी किरणें निकलती हैं कि पत्थर और धातु को भी काटकर रख दे—किसी इन्सान की तो औकात ही क्या है। कुल मिलाकर इतने कम समय में सिंगही को पकड़ना या रोक पाना मुमकिन नहीं है। केशव के पास आला दर्जे का दिमाग तो है लेकिन कोई जादू की छड़ी नहीं है कि उसे घुमाकर सिंगही को पिंजरे में कैद कर लेगा... ।"

पत्रकार ने अलफांसे को घूरा और केशव से बोला—"[illegible] जनाब कौन हैं—?"

"ये अमरकान्त है...मेरा मित्र। अगर अमरकान्त से कोई गुस्ताखी हो गई हो तो मैं इसकी तरफ से क्षमा चाहूंगा मुरली जी...।"

"काहे का मुरली...।" बड़बड़ाया अलफांसे, "आवाज तो फटे बांस से भी बुरी है...।"

"तो क्या इस समस्या का कोई समाधान नहीं है पण्डित जी...?" स्टार न्यूज की रिपोर्टर ने पूछा।

"फिलहाल तो कोई समाधान नहीं है राखी जी। क्योंकि लाखों-करोड़ों लोगों की जान का प्रश्न है। आठ बजे तक सोनू और क्रान्ति को प्लेन में बिठाकर तिब्बत की तरफ रवाना नहीं किया तो वो काले रंग वाले मच्छर दिल्ली में मौत का खेल शुरू कर देंगे।"

"क्या क्रान्ति और सोनू की बजाय उनके रूप वाले दूसरे लोगों को नहीं भेजा जा सकता पण्डित जी–?"

"उससे फायदा क्या होगा? सिंगही डुप्लीकेट क्रान्ति और सोनू को पहचान लेगा और उन्हें मार देगा। इसी के साथ वो कुपित हो जायेगा। वो काले मच्छरों के माध्यम से ढेर सारे निर्दोष लोगों को मार डालेगा। इसलिये भी मारेगा, ताकि उसके साथ अगली बार कोई चालाकी ना की जाये। कुल मिलाकर अभी कुछ नहीं किया जा सकता। अभी तो क्रान्ति और सोनू को छोड़ना ही पड़ेगा...।"

तभी बंगले के भीतर से माधवी आई और केशव के कान में फुसफुसाई–"...दिल्ली से प्राइम मिनिस्टर साहब का फोन है भाई...।"

❑❑❑

❑❑❑

मीडिया वालों को 'एक्सक्यूज मी' बोलकर केशव बंगले के भीतर पहुंचा–उसके साथ आशीर्वाद, अलफांसे, राजन, करतार सिंह व श्वेता भी थी। बेसिक फोन का रिसीवर कान से लगाये हुये सोफिया बात कर रही थी। केशव को देख वो बोली–"...केशव आ गये पी०एम० साहब। उनसे बात कीजिये...।"

केशव ने सोफिया से रिसीवर लिया और कान से लगाकर बोला–"जयहिन्द, सर...!"

"जयहिन्द, पण्डित जी! कैसे हैं आप...?"

"बस...ईश्वर की और आपकी कृपा है सर। आशा करता हूं कि आप भी प्रसन्नचित होंगे...।"

"हां, प्रसन्नचित तो थे पण्डित जी। लेकिन नन्दपुरी और फूलपुर में घटी घटनाओं ने हमें चिन्ता में डाल दिया...हमें क्या...सभी को चिन्ता में डाल दिया है। ऊपर से सिंगही का मैसेज। क्या आपने सिंगही का मैसेज सुना है पण्डित जी–?"

"हां, सुना है सर–।"

"सिंगही ने क्रान्ति और सोनू को छोड़ने की शर्त लगाई है। सुना है कि वो दोनों बहुत ही खतरनाक हैं...।"

"हां खतरनाक तो हैं सर...।"

"फिर तो उन्हें मुक्त करना गलत होगा–। हमने किसी और से बात ना करके सबसे पहले आपको ही फोन किया है पण्डित जी। क्योंकि आपसे बेहतर सलाह कोई और नहीं दे सकता। बल्कि सलाह क्या...इस बारे में निर्णय आपको ही लेना है पण्डित जी। आपका निर्णय हमें भी और सरकार को भी स्वीकार होगा। पूरे अधिकार हैं आपको। जो भी करना है, आपको करना है। आपकी हर बात मान्य होगी। आपकी हर बात मानी जायेगी। प्लीज, इस काम की जिम्मेदारी आप ले लीजिये पण्डित जी...।"

"वैसे तो अभी इस मामले में करने के लिये कुछ खास नहीं है सर, लेकिन आप कह रहे हैं तो मैं देख लेता हूं कि क्या किया जा सकता है। कह नहीं सकता कि कुछ कर पाऊंगा कि नहीं और कुछ किया भी तो उसमें सफलता मिल पायेगी कि नहीं।"

"फिर भी आप चेष्टा तो कीजिये पण्डित जी। वैसे हमारा फोन पर सम्पर्क बना रहेगा। अच्छा, अभी इजाजत दीजिये...।"

"जयहिन्द, सर...।" कहने पर केशव ने रिसीवर को इन्स्ट्रूमेंट पर रख दिया।

"क्यों बीन वाले मुरली मनोहर जी...!" ट्रिपल फाइव की सिगरेट में कश मारकर पूछा अलफांसे ने, "...प्राइम मिनिस्टर साहब का फोन था ना? क्या बोल रहे थे–?"

केशव ने सारी बातें बतलाईं।

"ये मुंह और मसूर की दाल...।" अलफांसे बुरा-सा मुंह बनाकर बोला, "...इस बार कुछ नहीं कर पाओगे प्यारे लाल। तुम्हारे दिमाग की बीन सिंगही नाम के उस नाग को नहीं नचा पायेगी। तुम्हें उस फीकी

शक्कर क्रान्ति और गोबर के हलवे सोनू को छोड़ना ही पड़ेगा। हथौड़े से भी हारमोनियम बजाओगे तो कोई आवाज ना निकलेगी–।"

"जाओ भी मियां...।" केशव भी अलफांसे वाली टोन में बोला, "...अगर हमने जोर की सांस भी छोड़ी तो हारमोनियम से एक साथ सारे सुर निकलेंगे, अगर थोड़ा वक्त होता तो उंगलियों के इशारे पर हारमोनियम को संगीत की धुन पर डिस्को डांस करा देता...।"

"क्या करा देते...उसे छोड़ो, गरीबों के कुबेर महोदय। देखना तो ये है कि तुम अब क्या करते हो? इमली के पत्ते पर चढ़कर हनुमान जी की गदा घुमाते हो, या कागज की किश्ती में बैठकर सात समन्दर पार करते हो?"

□□□

□□□

घने जंगल में बनी काफी बड़ी इमारत थी वो, जो कि चालीस फुट ऊंची, मोटी और मजबूत चार दीवारी से घिरी हुई थी। चार दीवारी के ऊपर लोहे के पांच-पांच फुट ऊंचे-ऊंचे खम्भे लगे थे, जिनके बीच से लोहे की कांटेदार तारें पिरोई गई थीं। उन खम्भों और तारों में चौबीसों घन्टे तेज करंट दौड़ती थी। अव्वल तो लाइट नहीं भागती थी–अगर भागती भी थी तो फौरन ही जेनरेटर स्टार्ट हो जाता था।

इमारत में पूरी दो दर्जन मजबूत छत व दीवारों वाली बैरक थीं। सिर्फ तीन तरफ दीवारें–चौथी तरफ लोहे के मजबूत सींखचों वाले लम्बे-चौड़े दरवाजे बने हुये थे। उन बैरकों के भीतर बाथरूम भी बने हुये थे, पानी इत्यादि की भी सुविधा थी–लेकिन छत पर कई-कई सी०सी० कैमरे फिट थे और उन कैमरों का सम्बन्ध कन्ट्रोल रूम में लगे टी०वी० सैटों से था। अर्थात् बैरकों में होने वाली हरेक गतिविधियों को वाच किया जाता था।

कन्ट्रोल रूम में ही ऐसा सिस्टम था कि किसी बैरक या इमारत के किसी भी हिस्से में भी गड़बड़ी होने पर जहरीली गैस छोड़ी जा सकती थी और आटोमैटिक हथियारों से फायरिंग भी की जा सकती थी।

वो महिला जेल थी। वहां पर खूंखार किस्म की उन महिलाओं को रखा जाता था, जिनका सम्बन्ध आतंकी संगठनों या नक्सली संगठनों

से था या वो खतरनाक किस्म की मुजरिम या देशद्रोही थीं। उन्हीं खतरनाक महिलाओं में से एक थी क्रान्ति।

क्रान्ति को एक बैरक में अकेले ही रखा गया था और उसे बाहर नहीं निकाला जाता था। दरवाजों के सींखचों के बीच से ही खाना, कपड़े इत्यादि दिये जाते थे। चार ए०के० छप्पनधारी महिला कमान्डोज चौबीसों घन्टों बैरक के बाहर तैनात रहती थीं। वैसे उस इमारत या जेल के चप्पे-चप्पे पर महिला कमान्डोज तैनात रहती थीं और सारे सिस्टम को कन्ट्रोल रूम से नियन्त्रित किया जाता था।

यूं तो क्रान्ति को वक्त पर खाना, चाय और नाश्ता दिया जा रहा था, लेकिन वो तीन चीजों के लिये परेशान थी–सिगरेट, शराब और मर्द।

तीनों के ना मिलने पर वो हरदम झुंझलाई रहती थी और महिला कमान्डोज से तीनों की डिमांड करती थी–डिमांड पूरी ना होने पर गन्दी-गन्दी गालियां बकती थी। लेकिन कमान्डोज सुनकर भी अनसुना कर देतीं।

क्रान्ति ने खाना-पीना छोड़ दिया था–लेकिन अड़तालीस घन्टों में ही भूख-प्यास से बेहाल होने पर अनशन तोड़ दिया था–लेकिन तीनों डिमांड कर रही थी और डिमांड पूरी ना होने पर गालियां भी बक देती थीं।

उस जेल से करीब पचास किलोमीटर की दूरी पर एक ऐसी ही जेल और थी। बस फर्क ये था कि वहां पर सभी कैदी मर्द थे और सिक्योरिटी की जिम्मेदारी जेन्ट्स कमान्डोज के हाथों में थी, जिनका ताल्लुक मिलिट्री से था।

उसी जेल में सोनू को बन्दी बनाकर रखा गया था। सोनू की सिर्फ एक ही डिमांड थी...सिगरेट, जिसे पूरा नहीं किया जा रहा था।

ऐसा नहीं था कि सोनू को शराब और शबाब की आवश्यकता महसूस नहीं होती थी–लेकिन इस मामले में वो सब्र और धीरज से काम ले रहा था।

इसी के साथ उसने उस जेल से फरार होने के लिये भी दिमाग भिड़ाया था, लेकिन कामयाब नहीं हो पा रहा था। उसने एक बार दिल का दौरा पड़ने का ड्रामा किया था, लेकिन बैरक में ही आकर डॉक्टरों

ने उसका चैकअप किया था और बोल दिया कि उसे कोई दिल का दौरा नहीं पड़ा था।

जेल के कमान्डर ने उसकी अच्छी-खासी धुनाई कर डाली थी और सख्त लहजे में बोल दिया था कि अगर सचमुच भी उसे कोई भयानक किस्म की बीमारी हो गई तो उसे भी दूसरे कैदियों की तरह जेल से बाहर निकालकर किसी हॉस्पिटल में नहीं ले जाया जायेगा। सिर्फ जेल के भीतर ही उसका इलाज किया जायेगा—चाहे वो बचे, या मर जाये। कुल मिलाकर वो उस जेल से बाहर नहीं निकल पायेगा। डैथ वारंट जारी होने पर उसे कड़ी सुरक्षा में दूसरी जेल में ले जाया जायेगा और फांसी के फन्दे पर लटका दिया जायेगा।

❑❑❑
❑❑❑

सीमेन्ट की चौकी पर बिछे काले कम्बल पर आंखें मूंदे हुये लेटी थी क्रान्ति कि ताले की खड़खड़ाहट सुनकर आंखें खुल गईं।

चार लेडी कमान्डोज के साथ हरी शर्ट व काली पैन्ट वाली काली-कलूटी युवती खड़ी थी—जोकि तन्दुरुस्त भी थी और छह फुट के करीब लम्बी भी थी। उसके मर्दों के जैसे छोटे-छोटे बाल थे।

शक्ल-सूरत और हाव-भाव से ही खतरनाक किस्म की मालूम पड़ रही थी।

एक कमान्डो ने ताला खोलकर गेट में लगा छोटा गेट खोल दिया तो दूसरी कमान्डो बैरक में प्रविष्ट होकर क्रान्ति से बोली—"ये कालिका है। एक नक्सली संगठन की कमान्डर थी। यूं तो इसने कई निर्दोष लोगों को मारा—लेकिन महीना भर पहले इसने दो दर्जन पुलिस वालों का किडनेप कर लिया था और जेल में बन्द अपने नक्सली साथियों को छोड़ने की शर्त रखी थी। सरकार ने इसके सभी साथियों को छोड़ भी दिया था—लेकिन इसने सभी किडनेप किये पुलिस वालों को बेरहमी के साथ मारकर उनकी लाशों के टुकड़े शहर की सड़कों पर फिंकवा दिये थे। एक मुठभेड़ में इसके साथी मारे गये और ये जिन्दा पकड़ ली गई। इसे फांसी की सजा होना लाजमी है। इसके संगठन के लोग जेल पर हमला बोलकर छुड़ा ना ले जायें—इसीलिये इसे यहां पर लाया गया है। ये तेरी बैरक में तेरे साथ रहेगी...।"

दो कमान्डोज ने कालिका को पकड़कर छोटे गेट से भीतर किया तो वह मोटे-मोटे सींखचों को पकड़कर गुर्रा उठी, "मुझे धोखे से पकड़ लिया तो समझ रहे हो कि बहुत बड़ा तीर मार लिया हरामजादियों। मेरे साथी हमला बोलकर इस जेल को बमों से तहस-नहस कर देंगे और मुझे छुड़ा ले जायेंगे। हिन्दुस्तान की कोई जेल मुझे ज्यादा देर तक बन्दी बनाकर नहीं रख सकती। दुनिया में ऐसा कोई फन्दा बना ही नहीं, जो मुझे फांसी की सजा दे सके...आक...थू...।"

❑❑❑
❑❑❑

"हमारा परिचय तो जान ही चुकी है तू...।" क्रान्ति की परिक्रमा करते हुये अकड़कर ही बोली कालिका, "...नक्सली सेना की कमान्डर हूं मैं। नक्सलवाद का विरोध करने वाले लोगों को तो लुढ़काया ही मैंने—पुलिस और मिलिट्री वालों को भी बेरहमी के साथ मारा मैंने। लेकिन इस गुप्त जेल में तो खतरनाक किस्म की महिलाओं को ही रखा जाता है जबकि तू खूबसूरत हसीना है...फिल्मी हीरोइन की माफिक। क्या हसीन चेहरा...ला-जवाब हुस्न। कोई मर्द देखे तो उसके मुंह में पानी भर आये और तुझे रसगुल्ले की तरह ही गड़प कर जाने को बावला हो उठे। तुझे यहां क्यों रखा गया है जालिम—?"

"देखने में नागिन भी खूबसूरत लगती है, लेकिन जब वो डंसती है तो शिकार तड़प-तड़पकर मरता है और पानी भी नहीं मांगता। नई कटार भी खूबसूरत लगती है, लेकिन किसी के जिस्म में पेवस्त होकर घूमती है तो मारे पीड़ा के वो बिलबिला उठता है। इस खूबसूरत चेहरे और जिस्म को मत देख—मेरे सिर के पिटारे में जो दिमाग फुंफकार रहा है, उसको देखने की चेष्टा कर—बहुत ही खतरनाक है वो—किसी भी हथियार और बारूद से ज्यादा खतरनाक और घातक।"

"तुझे देखकर ऐसा लगता तो नहीं—।"

"दूर से देखने पर आग भी खूबसूरत लगती है। फुंफकार-सी रही थी क्रान्ति, "...लेकिन जब उसे स्पर्श किया जाता है तो उसकी तपिश...जलन मुख से चींख निकाल देती है। रत्न जड़ित सोने के नये बर्तन में तेजाब भर दिया जाये तो वो भी मन को भाने लगता है—लेकिन उसमें हाथ डाल दें तो...तो पीड़ा का डंक हड्डियों तक पहुंचता है।"

"ओहो...ये तेवर...।" स्याह होठों को बिचकाकर बोली कालिका, "...नखरे तो देखो बन्नों के...फिल्मी डायलॉग मार रही है। जरा मैं भी तो जानूं कि तू कौन है? तेरा परिचय क्या है? नाम बतला अपना–।"

"क्रान्ति...।" गुलाबी होठों पर स्याह किस्म की मुस्कान सजाकर बोली वह, "...क्रान्ति नाम है मेरा–। अब ये मत बोलना कि तूने कभी क्रान्ति का नाम सुना ही नहीं। सभी अखबारों में छप चुका है मेरे बारे में। न्यूज वाले सभी टी०वी० चैनल्स पर मेरे बारे में बतलाया जा चुका है। दिमाग के जादूगर केशव पण्डित से पंगा चल रहा है मेरा। अभी तक तो उसके नसीब ने उसे मेरे कहर से बचाया हुआ है–लेकिन बकरे की मां कब तक खैर मनायेगी? एक दिन उसका खात्मा करके दुनियाभर में अपना नाम रोशन कर दूंगी...।"

"मैं जब पन्द्रह साल की ही थी तो पुलिस वालों ने मेरे बापू को मार दिया था। तभी हथियार उठाकर जंगलों में चली गई थी। तब से अखबार नहीं पढ़े और ना ही टी०वी० देखा। कौन केशव पण्डित...कौन क्रान्ति...मैं किसी को नहीं जानती...।" कहने पर कालिका कम्बल बिछी चौकी पर जा लेटी और बोली, "...अब ये बिस्तर मेरा। तू फर्श पर सोयेगी। इसी के साथ मेरी सेवा भी करनी होगी तुझे। चल, मेरे हाथ-पैर दबा...।"

यूं ही मुस्कराई क्रान्ति कि मानो किसी हथिनी को चुहिया ने रोककर कुश्ती लड़ने का चैलेंज दे डाला हो–"काफी लम्बा-चौड़ा जिस्म लिये हुये है तू...।" कालिका के करीब पहुंचकर सर्द लहजे में बोली वह, "...इस जिस्म में जान भी होगी। वैसे भी नक्सली लड़ाकू और बेरहम होते हैं। लेकिन मैं मार्शल आर्ट की एक्सपर्ट हूं। एक फ्लाइंग किक में हथिनी को भी धूल चटा सकती हूं। निहत्थी ही शेरनी का भी कचूमर निकाल सकती हूं। चल, चौकी से उतरकर फर्श पर लेट–वरना उठाकर ऐसा पटकूंगी कि जिन्दगी भर उठने के काबिल नहीं रह जायेगी तू...आह...।"

आशा के विपरीत अप्रत्याशित रूप से कालिका ने लम्बे पैर को हवा में उठाकर क्रान्ति के माथे पर ऐसी किक जड़ी कि वो हवा में उड़ती हुई गेट के सींखचों से टकराने पर फर्श पर गिरी।

लेकिन अत्यधिक पीड़ा होने पर भी वो दबाकर छोड़े गये स्प्रिंग की मानिन्द उछलकर उठी और किसी शिकारी शेरनी की मानिन्द ही उसने कालिका पर छलांग लगा दी।

लेकिन बला की फुर्ती के साथ कालिका ने स्वयं को फर्श पर पीठ के बल गिरा लिया और ऊपर से गुजरती क्रान्ति के पेट पर ऐसी किक मारी कि वो हवा में गैस के गुब्बारे की मानिन्द ही उड़ी और तड़ाक...की आवाज के साथ छत से टकराई।

मुख से पीड़ा भरी चींख निकालते हुये क्रान्ति वापिस फर्श पर गिरी और तड़पने व कराहने लगी। उसे यूं ही लग रहा था कि मानो किसी हथौड़े से उसके जिस्म को बुरी तरह तोड़-फोड़ दिया गया हो।

उधर कालिका ने खाने के साथ आई थाली को बड़ी आसानी से बीच से फाड़कर दो टुकड़ों में विभक्त कर दिया। एक टुकड़े को फर्श पर फेंककर उसने दूसरे टुकड़े को मोड़कर दोहरा कर दिया और फिर क्रान्ति के पेट में पेवस्त कर दिया...खचाक...।

"अ...आहऽऽऽ!" चींखी क्रान्ति।

जब तक बाहर मौजूद कमान्डोज गेट खोलकर भीतर पहुंचीं...क्रान्ति बेहोश हो चुकी थी।

कालिका हाथों को झाड़ते हुये बाहर निकली तो, उस जेल की इन्चार्ज कमान्डर बोली, "क्रान्ति मर तो नहीं जायेगी पण्डित जी–?"

"नहीं...कतई नहीं...।" कालिका के मुंह से निकलने वाली आवाज केशव की ही थी, "...प्लान के मुताबिक इतनी चोटें देनी जरूरी थी। तुम यहां का काम पूरा कराओ। मैं दूसरी जेल पहुंचकर उस एक सौ पच्चीस साल के महापण्डित सोनू से भी मिल आता हूं–।"

❑❑❑

❑❑❑

सोनू वाली जेल में केशव सरदार के भेष में और-अमरीक सिंह के नाम से पहुंचा।

मेकअप ऐसा था कि सोनू तो क्या उसका बाप भी नहीं पहचान सकता था।

सोनू को बतलाया गया कि अमरीक सिंह बचपन से ही बिगड़ा हुआ था तो उसके बाप ने उसे जायदाद से बेदखल करके उसके हिस्से

की जमीन-जायदाद उसके तीनों भाइयों के नाम कर दी थी। इस पर कुपित होकर अमरीक सिंह ने पहले अपने बाप को मारा और फिर अपने तीनों भाइयों को उनके बीवी-बच्चों समेत मार दिया था। यहां तक कि उसने अपने मासूम भतीजों और भतीजियों को भी कुल्हाड़ी से काटकर टुकड़े-टुकड़े कर डाले थे और फिर घर से नगदी व लाखों के गहने चुराकर भाग निकला था। एक बार पुलिस वालों ने उसे पकड़ना चाहा तो उसने पांच पुलिसवालों को गोलियों से भून डाला था। बाद में वो कश्मीर गया और एक आतंकी संगठन में सम्मलित हो गया था। उसने पाकिस्तान में जाकर एक आतंकी ट्रेनिंग कैम्प में ट्रेनिंग ली थी और आतंकी बनकर कश्मीर लौटा था। वहां कई निर्दोष लोगों की जान लेने पर वो एक मुठभेड़ के बाद सेना के हाथों गिरफ्तार हुआ था।

अमरीक सिंह के रूप में केशव ने सोनू के साथ बदतमीजी की और उस पर रौब डालते हुये उसे हमला करने पर विवश कर दिया।

भला सोनू दिमाग के जादूगर के सामने क्या बेचता था? केशव ने उसे पहले जख्मी किया और फिर मार-मारकर बेहोश कर दिया।

बाकी का काम डॉक्टर का था।

जेल से मुम्बई पहुंचने पर केशव ने प्राइम मिनिस्टर को फोन किया और बोला—"नमस्कार, सर! मैं भेष बदलकर उन जेलों में गया था, जहां पर क्रान्ति और सोनू को रखा गया है! मैंने जानबूझकर उनसे पंगा लिया और जख्मी करके बेहोश भी कर दिया...।"

"लेकिन उन दोनों को जख्मी और बेहोश करने से क्या होगा पण्डित जी? ओहो...शायद आपका प्लान ये है कि उन दोनों को जख्मी बतलाकर उन्हें मुक्त करने के लिये कुछ दिनों का वक्त मांग लिया जायेगा। इस बीच आप सिंगही तक पहुंचने का कोई-ना-कोई रास्ता निकाल...।"

"नहीं, सर। उन दोनों के जख्मी होने से सिंगही पर कोई फर्क नहीं पड़ेगा। वो बोल देगा कि दोनों को जख्मी हालत में ही छोड़ दिया जाये...।"

"तो फिर...?"

"सोनू और क्रान्ति को मैंने एक-एक ऐसा गहरा जख्म दिया है कि उनकी सिलाई की जायेगी—यानि कि टांके लगाये जायेंगे। उन्हीं

जख्मों में बहुत छोटे साइज के लेकिन बहुत ही शक्तिशाली ट्रांसमीटर फिट कर दिये गये हैं। उन ट्रांसमीटर्स के कारण क्रान्ति और सोनू की लोकेशन मालूम होती रहेगी। ये मालूम पड़ जायेगा कि सिंगही ने उन्हें कहां रखा है? सम्भावना इस बात की है कि वो दोनों जहां होंगे, सिंगही भी वहां होगा। मैं उन तीनों तक पहुंचने की और पकड़ने की चेष्टा करूंगा—।"

"ओह...तो ये है आपका प्लान। वाह...मान गये आपको पण्डित जी। जवाब नहीं आपका।"

"मैंने कोई बड़ा तीर नहीं चलाया है सर। ये काफी पुरानी और घिसी-पिटी चाल है। लेकिन इसके सिवाय दूसरा कोई रास्ता नहीं था—क्योंकि अपने पास वक्त की कमी है। अगर चाल कामयाब हो गई तो...सिंगही पकड़ाई में आ जायेगा। उसके साथ क्रान्ति और सोनू भी फिर से कानून की गिरफ्त में होंगे। लेकिन हमें ज्यादा खुश या आश्वस्त होने की भी जरूरत नहीं है। क्योंकि सिंगही काफी पहुंची हुई चीज है। दिमाग के मामले में सोनू और क्रान्ति भी कम नहीं है। देर-सवेरे उन्हें ट्रांसमीटर्स वाली बात मालूम भी हो सकती है—तब वो ट्रांसमीटर्स से छुटकारा पा लेंगे और अपना काम कठिन हो जायेगा...।"

"आगे क्या होता है, ये तो मालूम नहीं पण्डित जी। लेकिन आप अपनी तरफ से चेष्टा तो कर रहे हैं। हम ईश्वर से प्रार्थना करेंगे कि आपका प्रयास सफल हो—। हमारी और देशवासियों की शुभकामनायें तो हमेशा ही आपके साथ रहती हैं पण्डित जी—।"

"देखते हैं सर...क्या होता है? अच्छा, अभी इंजाजत दीजिये। नमस्कार...जयहिन्द—।"

इसी के साथ केशव ने फोन काट दिया और सोचने लगा कि उसने जो चाल चली है, वो कामयाब होगी कि नहीं?

❑❑❑

❑❑❑

अलग-अलग जेलों के अलग-अलग हॉस्पिटल में क्रान्ति और सोनू को आधी रात को होश आया।

क्रान्ति के पेट पर और सोनू के कन्धे पर गहरा जख्म था। डॉक्टरों

ने बतलाया कि उनके जख्मों पर टांके लगाकर मरहम-पट्टी कर दी गई थी।

इसी के साथ उन्हें ये भी बतलाया गया कि कालिका और अमरीक सिंह की अच्छी-खासी धुनाई करके अन्धेरी कोठरियों में बन्द कर दिया गया है।

इसी के साथ जो नई जानकारी जेल के कमान्डरों ने दी, उसने दोनों को ना सिर्फ चौंका दिया, बल्कि उन्हें खुश भी कर दिया–

दोनों को बतलाया गया कि सिंगही ने बहुत ही खतरनाक मच्छरों के माध्यम से नन्दपुरी गांव और फूलपुर गांव में ऐसी तबाही मचाई कि हजारों निर्दोष लोग बुरी मौत मारे गये। सिंगही ने दिल्ली जैसे कई बड़े महानगरों में मच्छरों द्वारा तबाही का खेल खेलने की धमकी देकर उन दोनों को छोड़ देने की शर्त रखी थी और कोई रास्ता ना मिलने पर भारत सरकार ने उन्हें मुक्त करने का निर्णय ले लिया है। सो उन दोनों को मुम्बई ले जायेगा और स्पेशल विमान अथवा प्लेन में बिठाकर तिब्बत और चीन की सीमा में बहने वाली लिद्दर नदी पर छोड़ दिया जायेगा।

सोनू और क्रान्ति के मन-मयूर नृत्य कर उठे–क्योंकि उन्हें लगने लगा था कि इस बार मुक्ति सम्भव ना हो पायेगी और फांसी के फन्दों पर झूलना ही पड़ेगा। दोनों ने मन-ही-मन सिंगही का आभार व्यक्त किया। सूर्योदय से काफी पहले ही दोनों को अलग-अलग वैन में बिठाकर मुम्बई ले जाया गया और एयरपोर्ट पहुंचने पर उन्हें हथकड़ी व बेड़ियों से मुक्त कर दिया। एक प्लेन पहले से ही तैयार खड़ा था।

आमना-सामना होने पर दोनों बाहें फैलाकर दौड़े और एक-दूसरे की आगोश में समा गये।

दीवानावार एक-दूसरे का मुखड़ा चूमा।

"ये...ये तो चमत्कार ही हो गया है क्रान्ति...।" गदगद भाव से बोला सोनू, "...मैंने तो मुक्त होने की उम्मीद ही छोड़ दी थी। लग रहा था कि जल्द ही फांसी पर लटका दिया जाऊंगा–।"

"सोच तो मैं भी कुछ ऐसा ही रही थी सोनू प्यारे। लेकिन उस बूढ़े सिंगही का जवाब नहीं। मैं तुम्हें उसके बारे में पहले ही काफी कुछ बतला चुकी हूं। ये तो उसकी बदकिस्मती है कि वो विश्व-विजेता नहीं बन पाया है–वरना उसमें विश्व पर राज करने की खूबियां तो हैं।"

"हमें सिंगही के इस अहसान को उतारना तो चाहिये...।"

"अवश्य ही उतारेंगे सोनू। हम दोनों सिंगही को विश्व-विजेता बनने में पूरी मदद करेंगे। वो विश्व-विजेता बनकर दुनिया पर हुकूमत करेगा तो हमें भी कोई महत्वपूर्ण पद मिलेगा।"

"सारी दुनिया सिंगही की गुलाम होगी तो भारत भी तो दुनिया के भीतर ही आता है क्रान्ति। और भारत का सबसे बड़ा पुजारी केशव पण्डित है। अपने देश के गुलाम होने पर वो तड़प उठेगा। जीते-जी ही मर जायेगा वो...।"

सोनू की आगोश से निकली क्रान्ति। उसका खूबसूरत चेहरा मानो ज्वालामुखी का मुहाना ही बन गया। आंखों में उल्का-पिण्ड से गिरने लगे। उसकी मुठियां इस कदर भिंच चलीं कि अगर उनमें कंचे अर्थात् कांच की गोलियां होतीं तो उनका चूरन बन गया होगा।

जबड़ों की चक्की में शब्द रूपी गेहूंओं को पीसते हुये ही बोली वह–"खुशी के इस अवसर पर किस साले की याद दिला दी यार। वैसे देखा जाये तो हमें उस भूतनी वाले को भूलना भी नहीं चाहिये। इस दुनिया में हमारा उससे बड़ा कोई दुश्मन भी तो नहीं है। बार-बार मात दी है उसने और मेरे दिमाग के जहर को बढ़ाया है। इस बार नहीं छोड़ूंगी उसे। तुम देखना कि क्या हस्र करती हूं उसका मैं...।"

"तुम्हारे साथ-साथ वो मेरा भी तो दुश्मन है। हां, सिंगही का भी दुश्मन है। हम तीनों मिलकर उससे इन्तकाम लेंगे...।"

"एक्सक्यूज मी...।" तभी ब्लैक कमान्डोज के साथ केन्द्र सरकार का एक नुमाईन्दा उन दोनों के करीब आकर बोला–"पौने आठ बज रहे हैं और सिंगही की शर्त के मुताबिक तुम दोनों को आठ बजे रवाना कर देना है। प्लेन तैयार है। सिंगही की शर्त के मुताबिक बाकी का सामान भी प्लेन में रख दिया गया है। तुम दोनों प्लेन में सवार हो जाओ...।"

उस नुमाईन्दे को टेढ़ी नजरों से देखते हुये बोली क्रान्ति–"कोई गड़बड़ी तो नहीं की गई है? ऐसा कोई इन्तजाम तो नहीं किया गया है कि हमें छोड़ने के बाद फिर से दबोच लिया जाये?"

"नहीं...ऐसी कोई चालाकी नहीं की गई है। सिंगही ने उन काले मच्छरों से ऐसी तबाही मचाई है कि...भारत सरकार निर्दोष लोगों की

भयानक किस्म की मौत को बर्दाश्त नहीं कर सकती। तुम दोनों ऑक्सीजन मास्क, सिलेन्डर, पैराशूट, स्वीमिंग कास्ट्यूम और हवा भरी ट्यूब के साथ लिद्दर नदी के कूद जाओगे तो प्लेन वापिस यहीं मुम्बई लौट आयेगा... ।''

''फिर ठीक है... ।'' क्रान्ति सोनू की कलाई थामकर बोली, ''चलें, जानी। इस प्लेन के रूप में आजादी हमारा इन्तजार कर रही है... । क्या हुआ...तुम कराहे क्यों—?''

''कुछ नहीं, मेरी बैरक में अमरीक सिंह नाम के एक पागल सिख को छोड़ दिया गया था। उससे फाइट हो गई थी। कम्बख्त ने काफी धुलाई की...कन्धे पर तो इतना गहरा जख्म है कि डॉक्टर को टांके भरने पड़े— ।''

''कम...है! मेरी बैरक में भी कालिका नाम की एक नक्सली महिला आई थी। उसने भी फाइटिंग के दौरान मुझे जख्मी किया। मेरे पेट पर काफी गहरा जख्म है।''

''यानि हम दोनों ही जख्मी हैं... ।'' प्लेन की तरफ बढ़ते हुये बोला सोनू, ''लेकिन मुक्ति मिलने की खुशी में हम अपनी चोटों को भूल गये... ।''

''लेकिन मैं अपनी चोटों और जख्मों के प्रति इसलिये लापरवाह नहीं हूं कि मुझे मुक्ति मिल रही है... ।''

''तो फिर—?''

''उस हरामजादे केशव पण्डित के दिये जख्मों के सामने ये जख्म कुछ भी नहीं है सोनू। उसने पहले दिल के टुकड़े-टुकड़े किये थे—फिर दिमाग और आत्मा को भी जख्मी कर दिया। इन्तकाम के मल्हम से ही अपना इलाज होगा—भीतर वे हरे जख्म सूखेंगे। चलो, पहले सिंगही के पास चलते हैं। फिर सोचेंगे कि उस साले केशव पण्डित का क्या इलाज करना है—!''

❑❑❑

❑❑❑

क्रान्ति और सोनू ने प्लेन में सवार होने पर इस बात की तसल्ली की कि पायलट के सिवाय दूसरा कोई अन्य ... तो नहीं छिपा हुआ

है? उन्होंने 'को-पायलट' को भी प्लेन से नीचे उतार दिया—पायलट के रिक्वेस्ट करने पर भी दोनों उसके सहायक चालक को साथ ले जाने को कतई तैयार नहीं हुये।

खैर...आठ बजते ही विमान स्टार्ट होकर रन-वे पर दौड़ा और फिर टेक ऑफ कर गया।

घन्टों के सफर के पश्चात् प्लेन तिब्बत पहुंच गया।

तिब्बत से चीन की तरफ बहने वाली लिद्दर नदी के ऊपर उड़ान भरते हुये पायलट काकपिट में ही बैठे सोनू व क्रान्ति से बोला, ''नीचे लिद्दर नदी बह रही है। तुम दोनों के लिये स्वीमिंग कास्ट्यूम, ऑक्सीजन मास्क और सिलेन्डर, पैराशूट और हवा भरी ट्यूब रखी है। दोनों दरवाजा खोलकर कूद जाओ। आगे चीन की सीमा होने के कारण मैं प्लेन को ज्यादा आगे नहीं ले जा सकता। मुझे यहीं से वापिस लौटना पड़ेगा... ।''

सोनू व क्रान्ति की नजरें मिलीं। दोनों मुस्कराये और फिर काकपिट से निकल आये।

स्वीमिंग कास्ट्यूम पहनने पर दोनों ने पीठ पर ऑक्सीजन गैस के सिलेन्डर फिट किये और उनसे सम्बन्धित मास्क चेहरों पर फिट किये। पीठ और कमर पर पैराशूट की बैल्ट बान्धी।

हवा भरी ट्यूब को लेने से क्रान्ति ने इशारे से मना कर दिया।

क्रान्ति ने ही द्रुत गति से उड़ते प्लेन के गेट को खोला तो तेज हवा के थपेड़े हथौड़े की मानिन्द ही जिस्मों पर पड़ने लगे। लेकिन उनकी परवाह ना कर क्रान्ति बाहर कूद गई तो सोनू ने भी छलांग लगा दी।

प्लेन ने हवा में ही 'यू' टर्न लिया और वापिस हिन्दुस्तान की तरफ उड़ गया।

कटी पतंगों की मानिन्द ही हवा में चकराते हुये क्रान्ति और सोनू के जिस्म तेजी के साथ नीचे की तरफ गिरे जा रहे थे।

फिर अचानक ही पैराशूट खुल गये और दोनों गिरने की बजाय धीरे-धीरे नीचे उतरने लगे।

शिकार के पीछे लगे एनाकोन्डा की गति से बह रही नदी के पानी पर गिरने पर दोनों भीतर समा गये, लेकिन पैराशूट पानी के ऊपर ही रहे। पानी से ऊपर उबरने पर क्रान्ति और सोनू ने बैल्ट खोलकर पैराशूट

जिस्म से अलग किये और पानी की तेज धाराओं को काटते व चीरते हुये किनारे की तरफ बढ़ने लगे।

तभी स्टील की-सी धातु का उड़न तश्तरीनुमा एक यान ऊपर की तरफ से आया और जमीन पर टिका।

उसका एक गेट स्वयं ही खुला और सिंगही की आवाज उभरी "दोनों यान के भीतर आ जाओ–।"

❑❑❑

❑❑❑

यान का भीतरी हिस्सा देख सोनू के मुख से सिसकारी-सी छूट गई और विस्फारित नजरों से फाइव स्टार होटल जैसे उस कक्ष को, उसके खूबसूरत व कीमती फर्नीचर, टी०वी०, डी०वी०डी०, म्यूजिक सिस्टम, फ्रिज और छोटे-से बार को देखता रह गया।

जबकि उसकी दशा पर क्रान्ति मुस्कराई।

"वेलकम क्रान्ति...वेलकम सोनू! तुम दोनों को आजादी मुबारक हो...।"

सोनू ने हड़बड़ा कर इधर-उधर देखा–कोई बोला तो उसी कक्ष से था, लेकिन दिखलाई नहीं पड़ रहा था।

मानो कांच के बर्तन में चांदी के घुंघरू बजाये गये हों–कुछ ऐसी ही हंसी हंसकर बोली क्रान्ति–"प्रणाम सिंगही महाराज! कृपया करके प्रकट हो जाइये...।"

कक्ष के फर्श पर से लाल, नीली व पीली रंग की रोशनी उठी और पांच फुट की ऊंचाई तक पहुंचकर उसने मानव जैसी आकृति धारण कर ली–फिर मुर्दे के चेहरे जैसे वाले सिंगही के दर्शन हुये।

चांदी जैसे जूते और जिस्म से चिपकी गोल्डन कलर की स्पेशल पोशाक।

सोनू उसकी तरफ बढ़ा ही था कि उसका हाथ पकड़कर बोली क्रान्ति–"क्या करने जा रहे थे तुम...?"

"दुनिया की इतनी महान हस्ती मेरे सामने है क्रान्ति। इनके पैर छूने जा रहा था...।"

"मैंने तुम्हें सिंगही जी के बारे में लगभग सबकुछ बतला दिया था, लेकिन जोश में होश खोने जा रहे थे तुम। सिंगही जी की ये पोशाक

बहुत ही खास है। तुम इन्हें स्पर्श करते तो बहुत तेज करंट लगता और तुम बहुत दूर जाकर गिरते...बेहोश हो जाते...।"

"ओह...!" सोनू को अपनी गलती का आभास हुआ।

सिंगही ने अपने बायें हाथ की बगल में लगे एक बटन को दबाया और बोला, "हमने स्वयं को करंट से मुक्त कर दिया है सोनू...।"

सोनू ने आगे बढ़कर और झुककर बारी-बारी से सिंगही के पैरों व जूतों को स्पर्श किया और फिर सीधे खड़े होकर बोला–"क्रान्ति से पहले भी अखबारों, टी०वी०, पत्रिकाओं और उपन्यासों के माध्यम से आपके बारे में काफी जानकारी मिली मुझे महामहीम जी। आप मेरे आइडियल हैं। आपको गुरु का दर्जा देता हूं। दुनिया में आपकी टक्कर का कोई वैज्ञानिक और दुनिया को अपने कदमों में झुकाने की इच्छा रखने वाला दूसरा कोई नहीं है–ना ही आपकी टक्कर का कोई महारथी पैदा हो सकेगा...।"

"प्रशंसा के लिये शुक्रिया...सोनू...।" सिंगही पीली तथा सूखी लकड़ियों जैसी हथेलियां सोनू के कन्धों पर रखकर बोला, "क्रान्ति ने हमें तुम्हारे बारे में सबकुछ बतलाया था। तुम भी कुछ कम नहीं हो। तुम्हारा जुर्म करने का तरीका अनोखा और निराला है। तुम्हारे पास आला दर्जे का दिमाग है। बैठो। सिगरेट, शराब पीओ। मछली, मुर्गा पनीर, जो भी इच्छा हो खाओ–।"

चार सोफा चेयर्स के बीच रखी मेज पर ड्रिंक और खाने का काफी सामान सजा हुआ था–सिगरेट के साथ सिगार की डिब्बी भी रखी हुई थी।

"क्रान्ति...माई डार्लिंग...!" किसी वृक्ष की सूखी टहनियों जैसी बाहें फैलाकर बोला सिंगही, "इतनी दूर क्यों हो जानेमन? तुम्हारे खूबसूरत जिस्म से फूटती कस्तूरी जैसी सुगन्ध, नथुनों से फूटती पत्थर को भी पिघला देने वाली केसर जैसी सुगन्ध वाली सांसों, तुम्हारे होठों की नमक, गुलाबजल, केवड़ा मिली शहद जैसी मिठास को याद करके हम बहुत तड़पे हैं। तुम्हारे साथ गुजारे स्वर्ग जैसे मनमोहक लम्हों की यादों ने हमें बहुत परेशान किया। करीब आओ ना जानेमन...।"

डायरेक्ट बोतल से व्हिस्की गटक रही क्रान्ति उठी और सिंगही

की बांहों में जा समाई और अपने रसीले व गुलाबी होंठ सिंगही के होठों से चिपका दिये।

जबकि सोनू ने सोफा चेयर पर बैठकर पहले एक सिगरेट सुलगाई और फिर व्हिस्की की बोतल उठाकर पैग बनाने लगा।

"ये.. तुम्हारे चेहरे पर चोट के निशान कैसे डार्लिंग...?" क्रान्ति के होठों से होंठ हटाकर बोला सिंगही, "सोनू भी जख्मी दिखलाई पड़ रहा है। क्या उन गुप्त जेलों में तुम्हें टॉर्चर किया जाता था...?"

"नहीं, टॉर्चर तो नहीं किया जाता था। कल कालिका नाम की एक नक्सली महिला को जेल में लाया गया था और उसे मेरी ही बैरक में भेजा गया था...।"

क्रान्ति ने बतलाया कि कैसे कालिका ने उसके साथ जानबूझकर पंगा किया था और फिर उसे जख्मी करने के साथ बेहोश भी कर दिया। फिर उसने ये भी बतलाया कि अमरीक सिंह नाम के खूंखार मुजरिम और आतंकी को सोनू वाली बैरक में लाया गया था और अमरीक सिंह ने सोनू को जख्मी और बेहोश कर दिया था।

सिंगही की पहले से ही छोटी आंखें सिकुड़ कर बन्द-सी हो गईं। उसने पहले एक सिगार सुलगाया और फिर कश मारकर धुएं के साथ शब्द भी मुंह से बाहर निकाले—"कुछ अजीब-सा नहीं लग रहा तुम दोनों को? हमारे द्वारा मजबूर किये जाने पर सरकार ने तुम दोनों को बरी करने का फैसला कर लिया। उसी दिन लगभग एक ही वक्त पर कालिका और अमरीक सिंह जेल में आते हैं। बेमतलब में ही तुम दोनों से भिड़ते हैं। तुम्हें जख्मी भी करते हैं और बेहोश भी कर देते हैं। तुम दोनों ही बहादुर हो, खास करके तुम क्रान्ति। हम जानते हैं कि तुम गजब की लड़ाका, कमाल की फाइटर हो। कोई कितना भी बड़ा योद्धा क्यों ना हो...तुम पर इतनी आसानी से काबू नहीं पा सकता। जेल की बैरक में तुम्हारा कालिका के साथ मुकाबला हुआ ही नहीं। एक भी हाथ नहीं मार पाई तुम कालिका को—तुम्हें मौका ही नहीं दिया गया। बस, तुम पर हमला बोला गया और जख्मी करके बेहोश कर दिया गया। ऐसा ही सोनू के साथ भी हुआ। क्या ये इत्तफाक है...?"

व्हिस्की पी रहे क्रान्ति और सोनू के दिमागों को झटका लगा और दोनों ने एक-दूसरे को प्रश्न-सूचक दृष्टि से देखा।

"नहीं...।" इन्कार की मुद्रा में सिर को हिलाकर बोला सोनू, "ये कोई इत्तफाक नहीं था। ये सब प्रि-प्लान था। जानबूझकर ही कालिका और अमरीक सिंह ने हम पर हमले किये और हमें जख्मी किया। लेकिन प्रश्न ये है कि हमारे साथ ऐसा क्यों किया गया—?"

अंगूठे व तर्जनी उंगली से 'चुट' की आवाज के साथ चुटकी बजाकर बोली क्रान्ति—"अगर मेरा दिमाग ठीक से काम कर रहा है तो...हमारे जिस्मों में ट्रांसमीटर फिट किये गये हैं...।"

"यस, ट्रांसमीटर...।" हथेली पर घूंसा मारकर बोला सोनू, "ताकि हमारी लोकेशन मिलती रहे। ये मालूम पड़ सके कि हम दोनों कहां पर हैं। लेकिन ऐसी चालाकी कौन करेगा?

"इतना दिमाग तो उसी साले केशव पण्डित का ही चलता है...।" चोटिल नागिन-सी फुंफकार उठी क्रान्ति, "ऐसे लटके-झटके वो ही इस्तेमाल करता है। जब इस तरह की कोई प्रॉब्लम क्रियेट होती है तो सरकार केशव से ही मदद मांगती है। इस बार भी ऐसा ही हुआ होगा। सरकार ने केशव की मदद ली होगी। केशव को मालूम था कि वो सिंगही जी को नहीं पकड़ सकता और हम दोनों को छोड़ने के सिवा भी दूसरा कोई रास्ता नहीं है। उफ्फ...मैं तब से पहचान क्यों नहीं सकी... वो केशव ही था। कालिका के भेष में वो हरामी ही आया था। वो ही कद-काठी और चुस्ती-स्फूर्ति। तभी तो मैं सोचूं कि मुझे क्या हुआ था कि मैं कालिका के सामने टिक ही नहीं सकी थी— हमला करने की बात तो दूर रही...अपना बचाव भी नहीं कर पाई थी। मुश्किल से एक मिनट ही लगी और उसने मुझे जख्मी करके बेहोश कर दिया।"

"वो अमरीक सिंह भी केशव पण्डित ही होना चाहिये...।" जख्मी कन्धे को सहलाते हुये बोला सोनू, "ऐसी फुर्ती और कमाल के दांव-पेंच किसी ट्रेन्ड कमान्डो में भी नहीं हो सकते। उसके सामने मेरी कन्डीशन ऐसी ही थी, जैसे किंग कोबरा के सामने केंचुए की। कब उसके हाथ-पैर चले, कब मैं जख्मी होकर बेहोश हो गया था—पता ही नहीं चला था। चूंकि तब ये मालूम नहीं था कि हमें मुक्त किया जा रहा है, इसलिये तब सूझा ही नहीं था कि अपने साथ कोई खेल खेला जा रहा है। लेकिन मुक्त होने की बात पता चलने पर भी तो हमारे दिमाग में ये बात नहीं आई कि हमारे साथ खेल खेला गया है...।"

"जो होना था, हो गया...।" बोतल उठाकर और व्हिस्की की तगड़ी घूंट भरकर बोली क्रान्ति, "अब पहले ये तो मालूम होना चाहिये कि हमारे जिस्म में ट्रांसमीटर है कि नहीं?"

सिंगही ने अपनी गोल्डन कलर की ड्रेस की एक जेब से एक पारदर्शी-सा पेन निकाला और उसे क्रान्ति के सामने लहराने लगा। पेन में पहले हरी लाइट जल रही थी, लेकिन क्रान्ति के पेट की सीध में पहुंचते ही हरी लाइट लाल लाइट में परिवर्तित हो गई।

"ट्रांसमीटर ही है क्रान्ति—तुम्हारे पेट में है...।"

"ओह...साला पण्डित...!" राजहंस से सफेद व बेदाग दांतों को पीसकर फुंफकारी-सी क्रान्ति, "अपनी चाल चल ही गया और हवा भी ना आने दी भूतनी के ने...।"

इतने में सिंगही ने सोनू को भी चैक किया और पेननुमा डिटेक्टर को पोशाक की जेब में रखकर बोला, "तुम्हारे कन्धे में ट्रांसमीटर फिट किया गया है सोनू...।"

"तो हमें तुरन्त ही इन ट्रांसमीटर्स से छुटकारा पाना होगा महामहीम जी...।"

"डोन्ट वरी। हमारा ये यान स्पेशल है। इसके भीतर मौजूद ट्रांसमीटर वगैरा को दुनिया का कोई भी डिटेक्टर कैच नहीं कर सकता। दुनिया का शक्तिशाली रडार भी इस यान को नहीं पकड़ सकता। यही विशेषता हमारे हैडक्वार्टर में भी है। सो तुम दोनों निश्चिन्त रहो। हैडक्वार्टर पहुंचकर आराम से ऑपरेशन करके ट्रांसमीटर निकाल दिये जायेंगे—। केशव पण्डित भी ढूंढता रह जायेगा कि तुम दोनों कहां चले गये—।"

❑❑❑

❑❑❑

सिंगही के हैडक्वार्टर पर पहुंचकर क्रान्ति चांगली को छोड़ फांग और बाकी सभी लोगों से आत्मीयता से मिली—क्योंकि वो सभी उसके पूर्व परिचित थे।

सिंगही के महल में सोनू और क्रान्ति की खातिरदारी की गई और फिर दोनों को ऑपरेशन रूम में ले जाया गया।

डॉक्टर ने दोनों को ना जाने कैसा इंजेक्शन लगाया कि सर्जरी करके ट्रांसमीटर निकालने में दोनों को इतना भी दर्द नहीं हुआ, जितना कि चींटी के काटने से होता है।

सिंगही ने प्लेट में रखे, खून से सने दोनों ट्रांसमीटर्स फांग को दिये और बोला—"इन्हें नष्ट कर दो—।"

"ठहरिये, महामहीम जी! इन ट्रांसमीटर्स को नष्ट मत कराइये...।"

सिंगही ने सोनू को प्रश्न-सूचक दृष्टि से देखा—क्रान्ति ने भी देखा।

डॉक्टर से जख्मी कन्धे पर पट्टी बन्धवाते हुये बोला सोनू—"ट्रांसमीटर्स के नष्ट होने पर केशव पण्डित को मालूम पड़ जायेगा—।"

"तो क्या फर्क पड़ता है? मालूम हो जाने दो—।"

"अगर केशव पण्डित भ्रम में रहे तो...?" कहने के साथ ही सोनू के होठों पर अर्थपूर्ण किस्म की मुस्कान थिरक उठी।

"शायद तुम केशव के साथ कोई गेम खेलना चाहते हो सोनू...?"

"जब केशव हमारे साथ गेम खेल सकता है तो क्या हम उसके साथ गेम नहीं खेल सकते क्रान्ति...?"

क्रान्ति मेज पर उठ बैठी और डॉक्टर को परे हो जाने का इशारा करके स्वयं ही पेट पर लिपटी पट्टी की गांठ बान्धते हुये बोली—"तुम्हारा मतलब कुछ-कुछ समझ में आ तो रहा है सोनू प्यारे। ट्रांसमीटर के नष्ट होते ही वो साला पण्डित जान जायेगा कि हमें इन ट्रांसमीटर्स की जानकारी हो गई और हमने इन्हें नष्ट कर दिया है। तुम ये चाहते हो कि केशव इस भ्रम में रहे कि हमें इन ट्रांसमीटर्स की भनक भी नहीं लगी है और उसका प्लान सफल हो गया—?"

"हां, ठीक समझ रही हो तुम क्रान्ति।"

"लेकिन हम इन ट्रांसमीटर को अपने पास तो नहीं रख सकते हैं ना। वरना केशव हम तक पहुंच जायेगा। इस हैडक्वार्टर पर इनके रहने पर केशव किसी भी डिटेक्टर से इन्हें पकड़ नहीं सकेगा। हैडक्वार्टर से बाहर पहुँचने पर केशव इन तक पहुंचेगा और समझ जायेगा कि हम उसके साथ खेल रहे थे। यानि कुछ समय के लिये ही उसे बेवकूफ बना सकते हैं...।"

"मेरे दिमाग के प्रेशर-कुकर में एक प्लान की खिचड़ी तो पक रही है क्रान्ति। हम केशव को ना सिर्फ अधिक समय तक बेवकूफ बना सकते हैं, बल्कि उसके साथ कोई गेम भी खेल सकते हैं। वो गेम क्या होगा, ये तो अभी सोचा नहीं—लेकिन सोच लिया जायेगा। केशव ने हमें बहुत परेशान किया है। महामहीम जी की कृपा से हम मुक्त हो ही गये हैं तो केशव पण्डित को सबक तो सिखलायेंगे-ही-सिखलायेंगे।"

"मुक्त होते ही तुम दोनों के दिमाग इन्तकाम के लिये छटपटाने लगे हैं...।" गम्भीर भाव से बोला सिंगही, "ये उसूल तो हमारा भी है कि दुश्मन को कभी माफ मत करो। आमतौर पर तो हम अपने दुश्मन को कोई मौका दिये बिना ही खत्म कर देते हैं। लेकिन केशव उस टाइप का दुश्मन नहीं है। दुनिया की इकलौती ऐसी हस्ती है वो, जिसने हमें एक बार नहीं, कई बार परेशान किया। हमें शिकस्त की धूल चटाई। इतना ही नहीं, हमें पकड़कर फांसी की सजा सुनवाई थी और जेल में ठुंसवा दिया था। सारी दुनिया की नजरों में गिरा दिया और हमें अपमानित किया। लोगों की, दुनिया की समझ में हम अपराजित थे—लेकिन केशव ने उस भ्रम को तोड़ दिया। लोग ये कहने लगे कि महामहीम सिंगही भी किसी से शिकस्त खा सकता है। कुल मिलाकर हमें केशव पण्डित की वजह से जीते-जी मर जाना पड़ा। केशव की याद आते ही हमारा खून तेजाब की तरह खौलने लगता है। दिमाग ज्वालामुखी का मुहाना बन जाता है। दिल में तीर-भाले से चुभने लगते हैं। लेकिन फिर भी हमने धैर्य से काम लिया है। केशव का कीमा बनाने की इच्छा का गलता घोटा हुआ है हमने। जानते हो कि क्यों—?"

सोनू और क्रान्ति ने जुबान की बजाय आंखों से ही पूछ लिया कि...क्यों?

"क्योंकि केशव कोई कीड़ा-मकौड़ा नहीं है कि उसे पकड़कर मसल दिया जाये...।" सिंगही हथेली पर घूंसा मारकर बोला, "बहुत ही खतरनाक और शक्तिशाली है उसका दिमाग, जिसके दम पर वो भारी उलट-फेर कर सकता है। अकेला ही मिलिट्री फोर्स के बराबर है वो कम्बख्त। इसी के साथ उसकी दो कमजोरियां भी हैं जो कि उसको शक्तिशाली भी बनाती हैं। वो इन्सानियत और अपने देश को पागलपन की हद तक प्यार करता है। कानून, इन्सानियत और अपने वतन

हिन्दुस्तान के लिये कुछ भी कर सकता है। किसी की जान ले सकता है और अपनी जान भी दे सकता है। इन्हीं दोनों कमजोरियों की वजह से ही वो अभी तक हमारे कोप...,हमारे कहर से बचा हुआ है। बहुत पहले हमने तय कर लिया था कि उसे जान से नहीं मारेंगे। पहले हम विश्व-विजेता बनेंगे। सारी दुनिया के साथ-साथ उसके वतन हिन्दुस्तान को भी अपना गुलाम बनायेंगे। हिन्दुस्तानियों पर तरह-तरह के अत्याचार करेंगे तो वो तड़प उठेगा, जीते-जी मर जायेगा। उसकी उस तड़प को देखने के लिये हमने उसे अभी तक जिन्दा छोड़ा हुआ है। हमारी सलाह तो यही है कि तुम दोनों भी धैर्य से काम लो। कुछ दिन हमारे साथ रहो। हम विश्व-विजेता बनने के लिये जो तैयारियां कर रहे हैं, तुम भी उनमें हमारा साथ दो। तैयारियां पूरी होते ही हम हमला बोल देंगे। अपने आविष्कारों के दम पर दुनिया के तमाम देशों, सरकारों और नागरिकों को मजबूर कर देंगे कि हमारी गुलामी स्वीकार कर लें और हमें अपना भगवान मान लें। तब केशव पण्डित भी हमारा गुलाम होगा। तब हम उनसे गिन-गिनकर बदले लेंगे—। तब उससे बदला लेने का मजा ही कुछ और होगा। उसकी बेबसी और लाचारी देखने लायक होगी। बस, चन्द महीनों का इन्तजार करना होगा—।"

क्रान्ति ने सोनू को, सोनू ने क्रान्ति को देखा।

संकेतों का आदान-प्रदान हुआ।

फिर आंखों की जुबान से सोनू ने क्रान्ति से कहा कि वो ही सिंगही को उत्तर दे।

व्हिस्की की घूंट भरकर बोतल मेज पर रखी क्रान्ति ने और फिर सिंगही के करीब पहुंची। उसके कन्धों पर गोरी व गुदाज हथेलियां रखकर नशीली-सी आवाज में बोली—"आप महीनों की बात कर रहे हैं सिंगही जी जबकि मुझसे और सोनू से एक मिनट का भी सब्र नहीं हो रहा है—। हम केशव से इन्तकाम लेने के लिये तड़प रहे हैं, छटपटा रहे हैं। सो हमें तुरन्त ही जाना है और उस पण्डित के बच्चे से इन्तकाम लेना है...।"

"लेकिन तुम दोनों ने केशव को मार दिया तो हम फिर किससे इन्तकाम लेंगे—?"

"नहीं...हम केशव को मारेंगे नहीं। केशव की जान लेने का विचार

भी मन में नहीं आ सकता। मेरी तो थिंकिंग ही यही है कि केशव पण्डित जैसे जानी दुश्मन को कभी भी मारकर दुश्मनी को खत्म नहीं कर देना चाहिये...।" क्रान्ति के मुख से मानो शब्द नहीं, जहर बुझे तीर ही निकल रहे थे, "केशव को तो जिन्दा रखना है मुझे। अगर मरे भी तो वो लोग मरेंगे, जिन्हें वो अपनी जान से बढ़कर चाहता है। ताकि वो उनकी लाशों पर बिलख-बिलख कर रोते हुये विलाप कर सके। खून के नहीं...मवाद के आंसू रोयेगा वो। अपनी छलनी-छलनी हुई आत्मा की झोली फैला-कर मौत की भीख मांगेगा। मैं तो उसे जिन्दा ही रखना चाहूंगी। अगर वो अपनी सड़ी हुई ज़िन्दगी से घबराकर खुदकुशी कर ले तो बात दूसरी है...।"

"ठीक है...जैसी तुम दोनों की इच्छा...।" सिंगही कन्धे उचका कर बोला, "तुम दोनों केशव पण्डित से इन्तकाम लेने को इतना ही छटपटा रहे हो तो, हम नहीं रोकेंगे। लेकिन होशियारी से...सावधानी से। हमें तुम दोनों को ये बतलाने की आवश्यकता नहीं है कि केशव कितना खतरनाक है। अगर सोफिया ने तुम दोनों को ठीक नहीं कराया होता तो जिन्दा लाश बने हॉस्पिटल के बेड पर पड़े रहते। इस बार केशव के हत्थे चढ़ गये तो...ना जाने क्या हाल करेगा वो तुम दोनों का...।"

"क्या ऊपरवाले ने फतह के सारे सिक्के उस हरामजादे केशव की झोली में ही डाल दिये हैं महामहीम जी...?" सोनू मानो चिता के दहकते अंगारों पर लोटते हुये बोला, "क्या मेरे और क्रान्ति के हिस्से में सिर्फ शिकस्त के कांटे ही हैं, जो हमारी ख्वाहिशों को जख्मी करते रहेंगे। अगर ऐसा हैं भी तो केशव पण्डित के साथ-साथ एक जंग उस ऊपरवाले के साथ भी सही, जिसे लोग ईश्वर कहते हैं। वो सर्वशक्तिमान हो सकता है—लेकिन भाग्य उसके भी अधीन नहीं है। अगर ऐसा होता तो राम को चौदह साल का बनवास नहीं होता, सीता के साथ जंगलों की खाक नहीं छाननी पड़ती। शंकर की पत्नी सती अग्निकुण्ड में कूद कर आत्महत्या नहीं करती और शंकर उसकी लाश को उठाकर रोता-बिलखता नहीं फिरता। जितने भी भगवान हुये हैं, उन सभी को कभी-ना-कभी कष्ट उठाने पड़े। इसका मतलब ये हुआ कि भाग्य भगवान के हाथों में भी नहीं है। मैंने किसी से सुना था कि कर्म के बल पर भाग्य को बदला भी जा सकता है और अपने फेवर में भी किया

जा सकता है। बचपन में सिकन्दर का हाथ देखकर एक ज्योतिषी ने बतलाया था कि उसके हाथ में राजयोग वाली रेखा ही नहीं है। सिकन्दर ने पूछा था कि हथेली में राजयोग वाली रेखा कहां होती है? ज्योतिषी ने बता दिया था तो सिकन्दर ने चाकू की नोक से हथेली पर लकीर बना दी थी। वो अपने देश का राजा बना भी था और फिर विश्व-विजेता बनने निकल पड़ा था। अब हम भी अपने कर्मों से...अपने दिमाग की पॉवर से अपना भाग्य लिखेंगे और उस साले केशव पण्डित को शिकस्त देंगे। क्या बोलती हो...क्रान्ति...?"

"मैं तुम्हारी बात से सहमत हूं सोनू। हम केशव पण्डित के साथ-साथ ईश्वर से भी टक्कर लेंगे। अपनी काबिलियत के दम पर भाग्य को भी अपना गुलाम बनायेंगे।"

"तुम दोनों को जोश में आकर होश नहीं खोना है...।" सिगार में कश मारकर और सुगन्धमयी धुएं को उगलकर बोला सिंगही, "शायद हम तीनों ही केशव पण्डित से इसीलिये हारे कि हमनें जोश में आकर होश खो दिया, धैर्य से काम नहीं लिया। अगर कोई अपने दुश्मन को जलाने के लिये दहकते अंगारों को अपनी हथेलियों से उठायेगा तो पहले उसकी हथेलियां ही जलेंगी। जबकि समझदार आदमी चिमटे से अंगारे उठा-उठा कर फेंकेगा तो उसका दुश्मन ही जलेगा। सो किसी से इन्तकाम लेने के लिये और आग से खेलने के लिये धैर्य नाम का चिमटा पास में होना जरूरी है। हमारी बात समझ रहे हो ना—?"

सोनू और क्रान्ति ने हौले-से सिरों को जुम्बिश देकर सहमति प्रदान की।

"शायद तुम कुछ कहना चाहते हो सोनू?"

□□□

□□□

"मुझे आपकी हेल्प चाहिये महामहीम जी...मेरा मतलब है कि हम दोनों को—।"

"क्रान्ति तो पहले से ही हमारी खासमखास है, तुम भी हमारे खास हो गये हो। कुल मिलाकर तुम दोनों हमारे खास आदमी हो—। इसलिये नहीं कि हम तीनों का दुश्मन एक ही है...केशव पण्डित। इसलिये भी कि हम तीनों के ख्याल एक-जैसे हैं। हम तीनों ही दिमाग के दम पर

बहुत कुछ हासिल करना चाहते हैं...हासिल करके रहेंगे भी। जब हम विश्व-सम्राट बनेंगे तो तुम दोनों हमारे दायें-बायें हाथ होंगे, हमारे मुख्य सलाहकार रहोगे। हमारे साथ-साथ तुम भी विश्व की सत्ता का स्वाद लोगे। हमसे जो भी मदद चाहिये, तुम दोनों निःसंकोच कह सकते हो–। तुम दोनों की ड्रेसिंग हो चुकी है, चलो, हमारे निजी निवास में चलकर बात करते हैं।"

कहने पर सिंगही ने बायीं कलाई पर फिट ब्रेसलेट का हरे रंग का बटन दबा दिया और विलुप्त हो गया।

क्रान्ति और सोनू सिंगही के पर्सनल हॉल रूम में पहुंचे तो पाया कि सिंगही सिंहासननुमा कुर्सी पर बैठा लाल रंग की स्पेशल शराब की चुसकियां ले रहा था।

क्रान्ति ने हमेशा की तरह व्हिस्की की बोतल उठा ली और मुंह से गट-गट की आवाज के साथ कई घूंट पी गई और फिर एक सिगरेट सुलगा ली।

सोनू ने पहले ही सिगरेट सुलगा ली थी और फिर अपने लिये पेग तैयार कर रहा था।

"हां, अब बोलो सोनू। क्या कहना चाहते थे तुम–?" पूछने पर सिंगही सिगार सुलगाने लगा।

"मैं यह चाहता हूं महामहीम जी कि उन ट्रांसमीटर्स को नष्ट नहीं किया जाये, जिन्हें केशव पण्डित ने हम दोनों के जिस्मों में फिट किया था...।"

"ठीक है। तुम कहते हो तो उन ट्रांसमीटर्स को नष्ट नहीं किया जायेगा। लेकिन उन्हें नष्ट करने...न करने से भला फर्क क्या पड़ेगा? हमारे यान में आते ही उन्होंने सिग्नल भेजने बन्द कर दिये थे। हमारे इस हैडक्वार्टर में भी ट्रांसमीटर काम नहीं करेगा। केशव यही समझ रहा होगा कि दोनों ट्रांसमीटर्स नष्ट कर दिये गये हैं...।"

"जबकि मैं उन ट्रांसमीटर्स के जरिये उस साले केशव पण्डित के साथ खेल खेलना चाहता हूं महामहीम जी–।"

"ऐसा लगता है कि तुम्हारे दिमाग में कोई खिचड़ी पक रही है सोनू। क्या करना चाहते हो तुम–?"

"महामहीम जी की मदद मिले तो...।"

"हमारी मदद मिलेगी। तुम अपना प्लान तो बताओ सोनू–।"

"आपके दो आदमी चाहियें महामहीम जी। केशव वाले ट्रांसमीटर्स उनके जिस्मों में फिट किये जायेंगे। वो आदमी एक जगह पर नहीं टिकेंगे। वो जल्दी-जल्दी एक शहर से दूसरे शहर, एक प्रदेश से दूसरे प्रदेश...हो सके तो देश भी बदलते रहेंगे। जब वो इस हैडक्वार्टर से बाहर निकलेंगे तो ट्रांसमीटर केशव पण्डित के रिसीविंग सिस्टम को सिग्नल देने लगेंगे। केशव को ये मालूम नहीं होगा कि आदमी बदल चुके हैं। वो यही अनुमान लगायेगा कि मैं और क्रान्ति ऐसे किसी स्थान पर थे कि ट्रांसमीटर्स सिग्नल नहीं भेज पा रहे थे। लेकिन फिर उस स्थान से निकल गये तो ट्रांसमीटर्स सिग्नल देने लगे। केशव हमें पकड़ने के लिये आपके उन दोनों आदमियों का पीछा करेगा। लेकिन वो एक स्थान पर टिकेंगे ही नहीं। यहां से वहां, इधर से उधर जाते रहेंगे। इस तरकीब से हम केशव को बेवकूफ बना देंगे। उसे उसके घर से दूर भी भेज देंगे। मैं मानता हूं कि केशव दिमाग का जादूगर है। वो उस शेर की तरह है, जो किसी भी इलाके में पहुंच जाये, लेकिन शेर ही रहता है। लेकिन शेर को भी जाल में फांस कर बन्दी बनाया जा सकता है। उसे सर्कस में पहुंचाकर चाबुक की फटकार पर करतब करने को विवश किया जा सकता है...।"

"तुम कहना क्या चाहते हो सोनू...?" क्रान्ति उसके करीब पहुंच कर उतावली-सी होकर बोली, "पहले तो तुम बोले कि सिंगही जी के आदमी इधर-उधर भागते रहेंगे और केशव उनके पीछे लगा रहेगा। फिर बोल रहे हो कि उसे जाल में फांसकर सर्कस में पहुंचा दिया जायेगा। तुम्हारा प्लान क्या है आखिर?"

"अभी मैंने कोई प्लान नहीं बनाया है क्रान्ति। बस, ऐसे ही दिमाग में हल्का-सा खाका बना है। केशव के साथ कोई-ना-कोई गेम खेलना है। पहले उसे महामहीम जी के आदमियों के पीछे दौड़ने दो। इतने में कोई बढ़िया प्लान भी बन जायेगा और उस पर अमल भी करेंगे...।"

"ऐसा लगता है कि तुम दोनों मिलकर इस बार कुछ-ना-कुछ करोगे...।" सिंगही मुस्कराकर बोला, "कोई गेम खेलकर केशव को परेशानी में डालोगे। लेकिन जरूरी तो नहीं कि हमारे आदमियों के पीछे केशव ही लगे। वो अपने बेटे या चेलों राजन, करतार सिंह पर भी ये जिम्मेदारी डाल सकता है–।"

"तो भी कोई फर्क नहीं पड़ेगा महामहीम जी। केशव आपके आदमियों को हमें समझता रहेगा। अगर आपके आदमी अमेरिका में हैं तो केशव यही समझेगा कि क्रान्ति और मैं अमेरिका में हैं। इसी बात का फायदा उठायेंगे हम। उसे भ्रम में रखकर हम कोई भी खेल, खेल सकते हैं—या कोई हमला कर सकते हैं। अगर केशव ने ही आपके आदमियों का पीछा किया तो हम उसकी गैर मौजूदगी में उसके घरवालों के खिलाफ कोई साजिश रच डालेंगे। अभी कोई प्लान तो बना नहीं, लेकिन ये खेल खेलकर हम केशव या उसके घरवालों को अपने किसी जाल या साजिश में फंसा देंगे। ऐसा कुछ कर डालेंगे कि केशव को दिन में ही तारे दिखलाई देने लगें...।"

"गुड...वैरी गुड...!" सिंगही सोनू की पीठ थपथपाकर गदगद भाव से बोला, "ना जाने क्यों हमें विश्वास होने लगा है कि इस बार तुम दोनों कुछ-ना-कुछ करोगे और केशव को शिकस्त की धूल चटाओगे। ठीक है। हमारे दो आदमी हैं चांगू और सांगू। वो दोनों गजब के फाइटर भी हैं और माइन्डेड भी हैं। हम उनके जिस्मों में वो ट्रांसमीटर फिट करा देते हैं और उन्हें अमेरिका भेज देते हैं। अमेरिका में वो एक जगह पर ज्यादा देर तक नहीं रुकेंगे। इधर-उधर भागते रहेंगे वो। ट्रांसमीटर के जरिये उन दोनों से तुम दोनों का सम्पर्क बना रहेगा। तुम दोनों को उनकी लोकेशन मालूम होती रहेगी। तुम दोनों यहां से मुम्बई ही जाओगे—?"

सोनू और क्रान्ति ने मुस्करा कर सहमति प्रदान की।

"फिलहाल केशव की वजह से सी०एस०ए० यानि चाइना सीक्रेट एजेन्सी हिन्दुस्तान में निष्क्रिय-सी है। हालांकि सी०एस०ए० के कुछ ओहदेदार हिन्दुस्तान में हैं—लेकिन वो कुछ खास नहीं कर पा रहे हैं। उन्होंने आई०टी०ओ० यानि इन्डियन टेररिस्ट ऑर्गेनाइजेशन का भी गठन नहीं किया है—।"

"तुम दोनों चाहो तो सी०एस०ए० की कमान सम्भाल सकते हो। चाहो तो आई०टी०ओ० को भी जिन्दा कर सकते हो। इससे तुम्हारी पावर बढ़ जायेगी। चीन सरकार तुम्हें मोटी रकम के साथ अन्य सभी सुविधायें भी देगी। तुम्हारी हरेक जरूरत को पूरा करेगी...।"

क्रान्ति और सोनू की नजरों के पेंच लड़े सोनू तो झिझका, लेकिन

क्रान्ति बे-झिझक बोली—"नहीं, सिंगही जी...अभी तो नहीं। अभी हम दोनों अपना सारा ध्यान सिर्फ केशव पर ही केन्द्रित करना चाहते हैं। अगर सी०एस०ए० या आई०टी०ओ० के झमेले में पड़ गये तो ध्यान बंट जायेगा हमारा। आपको ये तो बतलाने की जरूरत नहीं है कि केशव पण्डित से पार पाना या उसके खिलाफ कोई साजिश रचना इतना आसान काम नहीं है। हम दोनों को उसके खिलाफ कमर कसनी होगी।"

"हां, ये बात तो है। ठीक है...जैसी तुम्हारी मर्जी। फिर भी जरूरत पड़ने पर तुम दोनों सी०एस०ए० के ओहदेदारों से मदद ले सकते हो। हम तो तुम दोनों की किसी भी किस्म की मदद करने को तैयार हैं ही। जितना भी रुपया-पैसा चाहिये...मिल जायेगा। हथियार, आदमी...या कुछ और भी चाहिये तो मिल जायेगा। तुम दोनों फेसमास्क, विग और कॉन्टेक्ट लैंसेज से अपने हुलिये अवश्य बदल लेना। आवाज तो बदल सकते ही हो तुम दोनों। केशव बहुत चालाक है। उसे तुम दोनों की भनक भी नहीं लगनी चाहिये। वरना वो हाथ धोकर तुम्हारे पीछे पड़ जायेगा। सो भेष बदलकर रहना और होशियारी के साथ रहना। जो भी काम करो, समझदारी, होशियारी और चालाकी से करना। हमारा आशीर्वाद तो तुम्हारे साथ रहेगा ही—साथ ही जरूरत पड़ने पर तुम्हारी मदद भी करेंगे हम। तुम्हें हिन्दुस्तान पहुंचाने की व्यवस्था करा देंगे। लेकिन अभी तुम जख्मी हो। कुछ दिन यहीं रुककर आराम करो...।"

"आराम तो उस साले केशव से इन्तकाम लेने पर ही किया जायेगा सिंगही जी...।" फुंफकार-सी उठी क्रान्ति, "अव्वल तो नींद आती नहीं। अगर आ भी जाये तो ख्वाब में वो ससुरा ही दिखलाई पड़ता है। उसके दिये ये जख्म तो बहुत मामूली हैं—। उससे तो उन जख्मों का हिसाब लेना है, जिनकी अमिट छाप दिल और दिमाग में है। साले ने आत्मा को भी आटा छानने वाली छलनी बनाकर रख दिया है। उसकी जिन्दगी को जब तक छलनी-छलनी नहीं कर दिया जायेगा, तब तक चैन की एक सांस लेना भी हराम है। कृपया हमें भेजने की व्यवस्था करा दीजिये...।"

"जी, महामहीम जी। हम जल्द-से-जल्द मुम्बई पहुंच जाना चाहते हैं। वहां पहुंचकर कोई सेफ ठिकाना भी ढूंढना...।"

"ठिकाने की चिन्ता मत करो तुम दोनों। मुम्बई का गैंगस्टर

महावीरा सी०एस०ए० का ओहदेदार है और हमारा चेला भी है। चीन में निर्मित हथियार उसे सप्लाई किये जाते हैं, जिन्हें बेचकर वो मोटी कमाई करता है। तुम दोनों के मुम्बई पहुंचने से पहले हमारा हुक्म उस तक पहुंच जायेगा। वो तुम दोनों के लिये रहने, खाने-पीने की व्यवस्था कर देगा। जरूरत पड़ने पर तुम उसके आदमियों का भी इस्तेमाल कर सकते हो। तुम दोनों जैसा भी कहोगे महावीरा वैसा ही करेगा—।"

"चलने की तैयारी करो प्यारे...।" क्रान्ति सोनू से बोली, "मुम्बई पहुंचकर सोचेंगे कि केशव के खिलाफ क्या करना है और कैसे करना है...?"

❑❑❑
❑❑❑

"मैंने पिछले दस वर्षों में पूरी ईमानदारी के साथ आपकी सेवा की है। कम्पनी के लिये पूरी मेहनत से काम किया। कई बार अपनी जान को खतरे में डाला है। एक बार पुलिस के हत्थे भी चढ़ गया था। खाकी वर्दी वालों ने जमकर टार्चर किया था मुझे—लेकिन मैंने उन्हें आपके या कम्पनी के बारे में कुछ भी नहीं बतलाया था। हमेशा आपका और कम्पनी का वफादार सेवक रहा मैं। बदले में अपनी और दीपिका की जान की भीख मांगता हूं। हम पर दया कीजिये बॉस—।"

सिंहासन पर विराजमान वो जंगली भैंसे जैसा काला-कलूटा और तगड़ा और गंजा अधेड़ लाल रंग की पैन्ट व शर्ट में यूं ही लग रहा था कि मानो जलता-बुझता कोई कोयले का बड़ा टुकड़ा ही हो।

मोटे व स्याह होठों पर भद्दी-सी मुस्कान सजाये हुये उसने डरी-सहमी सी, सांवली लेकिन मुंह में पानी ला देने वाले नैन-नक्श व जिस्म वाली पच्चीस वर्षीय युवती को घोलकर पी जाने वाली नजरों से देखा।

उस युवती को हॉल में मौजूद दो दर्जन काली पोशाक वाले और हथियारों से लैस कमान्डोज रूपी गुन्डों में से दो ने पकड़ा हुआ था। उसी की बगल में खड़े पैंतीस वर्षीय गोरे-चिट्टे, लम्बे कद के तन्दुरुस्त युवक को चार कमाण्डोज ने दबोचा हुआ था और उनमें से दो ने युवक की कनपटियों पर रिवॉल्वरें लगाई हुई थीं।

"सतीश...।" युवती से नजरें हटाकर मुम्बई के गैंगस्टर और

सी०एस०ए० के मेम्बर महावीरा ने उस युवती की आखों से आंखों के पेंच लड़ाते हुये कहा, "इसमें सुईं की नोक बराबर भी संदेह नहीं है कि तू हमारा और कम्पनी का वफादार बन्दा रहा है। हमारा सबसे मेहनती, जांबाज और खतरनाक मेम्बर था। लेकिन एक बात तो बतला प्यारे। किसी ने पूरी मेहनत के साथ मेवे वगैरा डालकर दूध-चावलों की खीर बनाई लेकिन उसमें मुट्ठी भर राख डाल दी...तो क्या वो खीर स्वादिष्ट रहेगी? क्या कोई उसे चखना पसन्द करेगा? तूने कम्पनी के लिये जो किया, वो स्वादिष्ट खीर की तरह ही था—लेकिन तीन दिन पहले तू कम्पनी की पेमेन्ट मारकर इस हसीना के साथ भाग निकला था—वो खीर में मिट्टी डालने जैसा ही था। तूने सोचा होगा कि इस लड़की के साथ शादी करके कम्पनी की दौलत पर ऐश करेगा। लेकिन भूल गया था कि कम्पनी के हाथ कानून से भी लम्बे हैं। तुम दोनों को पकड़ लिया गया। तू तो जानता ही है कि हम एक बार को अपने जानी दुश्मन को माफ कर सकते हैं—लेकिन कम्पनी के साथ गद्दारी करने वाले को किसी भी कीमत पर माफ नहीं करते। लेकिन...।" महावीरा तरबूज जैसे बड़े और चिकने सिर पर शाकाल स्टाइल में हथेली फिराते हुये बोला, "तेरी सेवाओं और वफादारी को ध्यान में रखते हुये हमें तेरे बारे में कुछ तो सोचना होगा ही...।"

"शुक्रिया...बॉस...।" सतीश कमान्डोज से हाथ छुड़ाकर और जोड़कर बोला, "मैं जिन्दगीभर आपका अहसानमन्द रहूंगा।"

"नहीं...हम तुझ पर कोई अहसान नहीं करने जा रहे हैं सतीश। तुझे हमारी एक शर्त पूरी करनी होगी...।"

"शर्त? कैसी शर्त—?"

"तुझे हमारे साथ मुकाबला करना होगा...।"

"मुकाबला...वो भी आपके साथ? नहीं, मैं ऐसी गुस्ताखी भला कैसे कर सकता...?"

"मुकाबला तो गुरु-चेले के बीच हो सकता है। बाप-बेटे के बीच हो सकता है। ये तो कम्पीटीशन है। तू जीता तो तेरी सारी खतायें माफ। लेकिन हार गया तो फिर तुझे सजा भुगतनी ही होगी। बिना मुकाबला किये तो तेरी बख्शीश होने वाली नहीं प्यारे। मुकाबला तलवार, लाठी और रिवॉल्वर से हो सकता है। गायन और नृत्य के रूप में हो सकता

है। किसी गेम के रूप में भी हो सकता है। तेरी छूट करते हैं हम—किसी भी तरह का मुकाबला कर सकता है तू। एक मिनट के भीतर-भीतर बोल कि किस तरह का मुकाबला करना चाहेगा? एक मिनट पूरी हो गई तो...हमारा इशारा हुये बिना ही कमान्डोज तुझ पर फायरिंग कर देंगे। बोल किस तरह का मुकाबला करना चाहेगा हमसे तू—?"

"स...सतीश...चेस—।" दीपका बन्धन मुक्त होने की चेष्टा करते हुये बोली, "शतरंज के माहिर खिलाड़ी हो तुम। चेस के कई कम्पीटीशन भी जीत चुके हो। तुम चेस में मुकाबला करो। मुझे पूरा विश्वास है कि तुम मुकाबला जीत जाओगे। सोचो मत...तुम चेस का मुकाबला ही चुनो—।"

"चेस...।" सतीश महावीरा से बोला, "मैं शतरंज खेलना चाहूंगा बॉस—।"

"इसे कहते हैं मुहब्बत। लैला ने शतरंज के लिये कहा और मजनूं फौरन राजी हो गया। ठीक है...शतरंज ही सही। देख लेते हैं कि तू हमें हराकर जिन्दगी हासिल करता है कि...हमसे हारकर जिन्दगी भी हारता है?"

❑❑❑
❑❑❑

उस हॉल के बीचो-बीच गोल मेज पर बड़े आकार की शतरंज रखी हुई थी। महावीरा और सतीश कुर्सियों पर आमने-सामने बैठे हुये थे।

सभी लोग करीब खिसक आये थे और पूरी उत्सुकता के साथ महावीरा और सतीश के बीच चल रही चालों को देख रहे थे।

सतीश की प्रेमिका दीपिका भी करीब ही खड़ी थी और मन-ही-मन ईश्वर से सतीश के जीत जाने की प्रार्थना किये जा रही थी। उसे दो कमान्डोज ने पकड़ा हुआ था।

मुकाबला काफी कड़ा चल रहा था।

महावीरा रिलेक्स मूड के साथ मुस्कराये जा रहा था, जबकि सतीश जबरदस्त टेंशन में था और पसीने से तर-ब-तर था।

ऐसा होना स्वाभाविक भी था, क्योंकि प्रश्न जिन्दगी और मौत का था।

अचानक ही महावीरा से एक चूक हो गई और उस चूक का फायदा उठाते हुये सतीश उसके राजा के सामने वजीर रखकर बोला—"ये शह और मात। आपका बादशाह किसी भी सूरत में नहीं बच सकता।"

महावीर ने टकले सिर पर हथेली फिराते हुये दिमाग लड़ाया और पाया कि उसके बादशाह के बचने की कहीं कोई गुंजाईश नहीं थी।

मारे खुशी के दीपका रो ही तो पड़ी और छत की तरफ देखते हुये ईश्वर का धन्यवाद करने लगी।

"वेलडन...शाबास...!" सतीश के कन्धे पर सीधे हाथ की हथेली रखकर बोला महावीरा, "गलत नहीं कहा था तेरी लैला ने। तू वाकई में शतरंज का चैम्पियन है। जीत मुबारक हो। तुमने अपनी सूझ-बूझ से ना सिर्फ बाजी जीती है, बल्कि अपनी मौत को भी टाल दिया है। नई जिन्दगी मुबारक हो। जाओ...चले जाओ। कहीं भी जाकर रहो और मौज मारो। लेकिन मुम्बई में नहीं। मुम्बई को छोड़कर तुम कहीं भी रह सकते हो और मर्जी की जिन्दगी जी सकते हो—।"

"शुक्रिया, बॉस! मैं आपका ये अहसान जिन्दगीभर याद रखूंगा...।" कहने पर उठा सतीश और दीपका का हाथ पकड़कर बोला, "चलो, दीपिका...।"

"दीपिका को कहां ले रहा है तू सतीश...?"

महावीरा की आवाज ने सतीश और दीपिका के खिले हुये चेहरे बुझा दिये।

कुर्सी छोड़कर झटके के साथ उठा महावीरा और पोटेशियम सायनाइड जैसी घातक मुस्कान के साथ बोला—"शतरंज तू खेला था सतीश और बाजी जीतकर तूने अपनी मुक्ति हासिल की है—इस लैला की नहीं...।"

"ये...ये आप क्या कह रहे हैं बॉस? दीपिका मेरी जान है। भला मैं इसके बिना कैसे जी सकता हूं? मैं बाकी की जिन्दगी किसके लिये जीऊंगा...?"

"ये हम नहीं जानते। हम दोनों के बीच मुकाबला हुआ था और तूने मुकाबला जीत लिया। तू हमारा वफादार था। लेकिन इस खूबसूरत बला के लिये तूने हमारे साथ दगाबाजी की। कम्पनी के उसूल तोड़े और कम्पनी की रकम लेकर भागने की चेष्टा की। तू सोचता है कि

जिस बला ने हमसे हमारे खास आदमी को छीन लिया, हम उसे माफ कर देंगे...?"

दीपिका का चेहरा मुरझाकर स्याह पड़ने लगा और आंखों में मौत की स्याही-सी उतर आई।

सतीश के भी हाथ-पैर फूल गये। वो हाथ जोड़कर गिड़गिड़ाया—"'भगवान के लिये मेरी दीपिका को छोड़ दीजिये बॉस। मैंने ही अपनी मर्जी से कम्पनी का पैसा मारकर भागने का प्लान बनाया था—दीपिका ने तो मुझे मना ही किया था। ये बोली थी कि मैं हम दोनों की शादी की इजाजत ले लूं। लेकिन आपने नियम बनाया हुआ है कि कम्पनी का कोई भी आदमी शादी नहीं करेगा। किसी भी औरत के साथ मौज-मस्ती तो कर सकता है, लेकिन उसकी मुहब्बत के चक्कर में नहीं पड़ेगा। इसीलिये मैंने दीपिका के साथ भागने का निर्णय लिया था। ठीक है...दीपिका के लिये मैं आपसे एक और मुकाबला करने के लिये तैयार हूं। मुकाबला भी आपकी पसन्द का होगा। आप जिस तरह का चाहे...मुकाबला कर सकते हैं...।"

महावीरा ने इन्कार की मुद्रा में सिर हिलाकर कहा—"जिसको मुक्ति चाहिये...मुकाबला भी उसी को करना होगा। दीपिका को हमारे कहर से बचने के लिये हमसे मुकाबला करना होगा। चूंकि ये औरत जात है, इसलिये मुकाबला इसकी पसन्द का। इसे एक मिनट के भीतर बतलाना होगा कि ये हमसे किस तरह का मुकाबला करना चाहती है...?"

"तुम डांस में माहिर हो...।" सोचने के लिये दीपिका की आंखें सिकुड़ी ही थी कि सतीश झट बोल पड़ा, "तुम्हें बॉस से डांस में ही कम्पीटीशन करना चाहिये।"

"क्यों...क्या कहती है तू हसीना...?" महावीरा ने पीछे से दीपिका के कन्धे पर हथेली रखकर कहा, "डांस में मुकाबला करना चाहेगी हमसे? बोल, जवाब दे। एक मिनट पूरी होने वाली है...।"

"हां। मैं डांस में मुकाबला करना चाहूंगी—।"

"कौन-सा डांस? रॉक-एन-रोल, ब्रेक डांस, भांगड़ा, गरबा, गिद्धा, कुमायूंनी, कत्थक, भरत नाट्यम, कुचीपुड़ी, चा-चा-चा, साम्बा, अरेबियन, ओड़िसी...या कोई और...?"

महावीरा के मुंह से इतने नृत्यों के नाम सुनकर सतीश और दीपिका हैरानी में पड़ गये—क्योंकि उनकी समझ में तो महावीरा को नृत्य या डांस की ए०बी०सी० भी मालूम नहीं होनी चाहिये थी।

"बोल री...।" महावीरा की कौड़े की फटकार-सी आवाज गूंजी, "कौन से डांस में हमसे मुकाबला करेगी—?"

"मैं...मैंने तो हिन्दी फिल्मों के गीतों या धार्मिक भजनों पर धुन के आधार पर नाचने की ट्रेनिंग ली थी—जैसा कि फिल्मों की हीरोइनें करती हैं। मु...मुझे क्लासिक डांस की कोई खास जानकारी नहीं है...।"

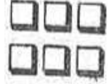
"कोई बात नहीं...ऐसा ही सही। हॉल में ही डी०जे० सिस्टम लगवा देते हैं। हमारा आदमी ऐसे फिल्मी गाने चलायेगा, जिन पर वो भी ठुमके लगाने लगे, जिसे नाचना आता ही नहीं। लेकिन हार-जीत का फैसला कैसे होगा? हुम्म...ठीक है...ऐसा करते हैं कि हम दोनों लगातार नाचेंगे। हमारे पैर लगातार हरकत करते रहेंगे। जो भी थक कर बैठ जायेगा, गिर पड़ेगा या तीस सेकेन्ड के लिये भी डांस बन्द कर देगा, उसको ही हारा हुआ माना जायेगा। तेरा यार तो जीत चुका है। तू भी जीत गई तो दोनों को यहां से जाने की इजाजत होगी। मुम्बई छोड़कर तुम दोनों दुनिया के किसी भी हिस्से में रह सकते हो और अपनी पसन्द की जिन्दगी जी सकते हो। लेकिन तू हार गई तो...फिर तू अपनी जिन्दगी के साथ-साथ और भी ना जाने क्या खोयेगी। हम सु-सु ना करके सुसरी ही बोल देते हैं। तेरे साथ रेप होगा...बलात्कार। ये बलात्कार तब तक चलता रहेगा, जब तक कि तू दम नहीं तोड़ देगी।"

"ये...ये आप क्या कह रहे हैं बॉस...?"

महावीरा ने हथेली का पंजा सतीश के चेहरे के सामने किसी हथियार की मानिन्द ही तानकर और चेहरे पर भयानक किस्म के भाव समेटकर उसे जहां का तहां ठिठका दिया और फिर सुलगती-सी आवाज में बोला—

"इसे हमारा अहसान मान कि तेरी लैला को मुकाबले का...यहां से सही-सलामत निकल जाने का मौका दे रहे हैं—वरना इस पर तो यहां पहुंचते ही कयामत टूट जानी चाहिये थी। इसने हमारी कम्पनी के एक काबिल बन्दे को बरगला कर उसे बागी और गद्दार बनाने का गुनाह किया है। अपनी इज्जत और जान बचाने के लिये इसे मुकाबला करना

होगा और जीतना भी होगा। ये जीती तो पांचों उंगलियां घी और सिर कड़ाही में। अगर हारी तो...तो फिर ये गई। कोई माफी नहीं...कोई रहम नहीं। इसे हमारे क्रोध की तलवार से कटना ही होगा। अब हम डी०जे० सिस्टम की व्यवस्था कराते हैं। फिर हम दोनों के दरमियान मुकाबला होगा। देखना है कि ये अपनी इज्जत और जान बचा पाती है...कि नहीं—?"



सिंगही के विशेष यान में सोनू और क्रान्ति को भारत की सीमा के भीतर छोड़ दिया गया था। फिर दोनों ने ट्रेन, बस या टैक्सी के माध्यम से सफर किया।

चूंकि दोनों भारत में पॉपुलर हो चुके थे, इसलिये उन्होंने सिंगही के हैडक्वार्टर पर ही सिर पर विग और चेहरे पर मास्क फिट कर लिया था, ताकि उन्हें भारत में कोई दिक्कत या परेशानी ना हो।

अभी वो दोनों दिल्ली से चली राजधानी एक्सप्रेस में सवार होकर मुम्बई पहुंचे थे और बाकी का सफर एक टैक्सी में कर रहे थे।

क्रान्ति को गुमसुम-सी पाकर सोनू ने उसका कन्धा दबाया और बोला—"क्या बात है...तुम चुपचाप क्यों हो—?"

"ऐसे ही... ।" एक ठन्डी-सी आह भरकर बोली क्रान्ति, "उस साले पण्डित की तरफ ध्यान चला गया था। बहुत परेशान किया उसने मुझे...तुम्हें भी। अगर सिंगही हम पर कृपालु नहीं हुआ होता तो हम उन गुप्त जेलों में सड़ रहे होते और जल्दी ही फांसी पर लटका दिये जाते। छोडूंगी नहीं उस साले पण्डित को...नहीं, मार तो सकती नहीं। ऐसे दुश्मन को खत्म करके दुश्मनी का मजा किरकिरा करना भी नहीं चाहिये। उसे खूब परेशान करेंगे हम। ऐसा कुछ करेंगे कि वो खून नहीं...मवाद के आंसू रोने पर विवश हो जाये। मेरे सीने में इन्तकाम की जो चिता दहक रही है, उसकी तपिश में केशव की खुशियों को फूंक कर राख कर दूंगी। हम उस ससुरे का अन्तिम-संस्कार करेंगे और फिर भी उसे जिन्दा रखेंगे। जिन्दा लाश बनाकर रख देंगे हरामी को। उसके जिस्म पर प्रहार नहीं करंगे। चोट तो क्या...सुईं की नोक बराबर खरोंच भी नहीं देंगे।

लेकिन ऐसा कोई तीर चलायेंगे कि साले की आत्मा छलनी-छलनी हो जाये। उसे भीतर से इतना तोड़ देंगे कि अगर जरा-सी तेज हवा भी चलेगी तो उसके मुंह से पीड़ाभरी चीखें निकलने लगें।"

"एक बात कहूं क्रान्ति? मेरी बात मानोगी तुम—?"

क्रान्ति ने पहले उसे प्रश्न-सूचक दृष्टि से देखा, फिर पूछ ही लिया—"हां, बोलो क्या कहना चाहे हो तुम—?"

दोनों को टैक्सी चला रहे ड्राइवर की उपस्थिति का आभास था, इसलिये उनके मध्य जो वार्तालाप चल रहा था, उसका वॉल्यूम फुसफुसाहट जैसा ही था।

वैसे भी ड्राइवर ने म्यूजिक सिस्टम पर राजकपूर की फिल्मों के गीत चला रखे थे और ड्राइविंग करते हुये उन गीतों को गुनगुना भी रहा था। कुल मिलाकर उसका ध्यान विन्ड स्क्रीन के पार सड़क पर था, या फिर फिल्मी गीतों में।

सोनू ने एक सिगरेट सुलगा ली और तीन कश मारने पर क्रान्ति की खूब बड़ी, काली-कजरारी और गुलाबी डोरों वाली नशीली-सी आंखों में झांकते हुये फुसफुसाने जैसी आवाज में बोला—"पिछले वाले मिशन की कमान तुम्हारे हाथ में थी। तुम्हीं ने प्लान बनाया था। मैंने तो उस प्लान पर अमल किया था—मुर्दे वाला रोल निभाया था। तुम जो भी कहती रही...मैं करता चला गया। क्यों ना इस बार मिशन की कमान मेरे हाथ में हो? मैं कोई प्लान तैयार करूं और उस पर अमल करने में तुम मेरा साथ दो—?"

क्रान्ति की आंखों के साथ-साथ पूरे चेहरे ने भी चुगली खाई कि उसे बहुत बुरा लगा था। वो क्रोध का प्याला गटक कर उखड़े-से लहजे में बोली—"मानती हूं कि तुम जीनियस हो। ब्रिलियंट माइंड वाले हो। एक सौ पच्चीस साल के महापण्डित वाले रोल में जो कुछ भी किया, वो अद्भुत और निराला था। अगर वो साला केशव तुम्हारे पीछे नहीं पड़ता तो तुम जुर्म की दुनिया में कहीं के कहीं पहुंच जाते। दुनिया के शातिर मुजरिमों में तुम्हारा शुमार होता। लेकिन... ।"

"लेकिन? लेकिन क्या—?"

"तुम ये तो नहीं कहना चाहते कि दिमाग के मामले में मैं ठप्प हूं? मेरा प्लान बेकार था, इसलिये हम नाकाम हो गये थे?"

सोनू ने क्रान्ति की गोरी-चिट्टी, गोल-मटोल व गुदाज कलाई को दोनों हथेलियों से पकड़कर ऊपर उठाया और उसकी हथेली के पृष्ठ भाग को चूमकर बड़े ही स्नेह के साथ बोला—"तुमने तो नाहक ही मेरी बात का गलत मतलब निकाल दिया डार्लिंग। क्या तुम्हारे बारे में जानता नहीं हूं मैं? केशव ने तुम्हें तेजाब से नहला दिया था। तुम्हारे हाथ-पैर कट गये थे। तुम्हारी जगह दुनिया की कोई भी दिलेर महिला होती...वो सदमे और गम से मर जाती या पागल हो जाती। उसे अपाहिजों वाली जिन्दगी बोझ लगने लगती और वो खुदकुशी कर लेती। लेकिन तुम्हारे जिस्म में शेर का खून और शेरनी का दूध गर्दिश कर रहा है। सिर में लोमड़ी का दिमाग और सीने में फौलाद का दिल फिट है। हिम्मत नहीं हारी। अपने अन्जाम की परवाह नहीं की और कूद पड़ी थी जंग के मैदान में। दुर्भाग्य से हर बार भाग्य ने तुम्हें धोखा दिया। लेकिन केशव से मिली शिकस्त ने तुम्हारा मनोबल नहीं गिरने दिया—हिम्मत टूटने नहीं दी। तुम उठी और केशव से लड़ी। केशव से क्या...मुकद्दर से ही लड़ी। मौत की आंखों में आंखें डालकर तुमने मैदान में डटकर जंग लड़ी। ये तुम्हारी खुशनसीबी नहीं, बल्कि तुम्हारी जांबाजी और कुछ कर गुजरने का जज्बा था।"

"फिर भी तुम...।"

"मेरी बात पूरी हो जाने दो प्लीज। ये बात तो माननी ही पड़ेगी कि नसीब, भाग्य, मुकद्दर या लक नाम की कोई चीज तो होती है। ये भी मानना पड़ेगा कि जब ग्रह खराब चल रहे हों, या कुन्डली में शनिचर बैठा हुआ हो तो रेस का घोड़ा भी केंचुएं से हार जाता है। मुट्ठी में बन्द सोना मिट्टी हो जाता है। गांव की एक कहावत के मुताबिक बुरा वक्त हो तो हाथी पर बैठे आदमी को भी कुत्ता काट लेता है। बुरे ग्रहों की चाल किनारे पर पहुंची किश्ती को भी डुबो देती है। हवा में ही तीर अपना रुख बदल लेता है और चलाने वाले के सीने में ही जा धंसता है। हालांकि मैं भी केशव के हाथों शिकस्त खा चुका हूं। लेकिन हो सकता है कि अब आकर मेरे ग्रह अच्छे चल रहे हों और केशव का बुरा वक्त चल रहा हो। एक चांस तुमने लिया था। एक चांस मुझे लेने दो। मैं नाकाम हो गया...तो फिर तुम चाहे जो करना। जब तुम्हारी बारी आयेगी तो मैं वो ही करूंगा...जो तुम कहोगी। लेकिन अभी मुझे

ट्राई करने दो। मुझे मेरा दिमाग इस्तेमाल करने दो। मुझे प्लान बनाने दो। अगर तुम्हें प्लान पसन्द नहीं आया तो...फिर तुम प्लान बना लेना।"

क्रान्ति सोनू के करीब खिसकी उसकी कमर में मखमली बांह डालकर और उसका गाल चूमकर बोली—"मैंने तुम्हारी बात का बुरा माना था...उसके लिये सॉरी बोलती हूं। हम दोनों एक ही सफर के हमराही हैं। हम दोनों की मन्जिल एक ही है...दुश्मन एक है, मकसद एक है। मन्जिल पर पहुंचने के लिये गाड़ी की ड्राइविंग मैं करूं, या तुम करो...क्या फर्क पड़ता है? वैसे भी तुम आला दर्जे का दिमाग रखते हो। तुम्हारी सूझ-बूझ की कायल हूं मैं जानी। अपने दिमाग के दम पर तुम कोई भी बड़ा कारनामा कर सकते हो। नसीब की ही बात है कि तुमने शिकस्त की धूल चाटी—वरना दिमाग के मामले में तुम केशव पण्डित से उन्नीस नहीं, इक्कीस ही हो। ठीक है...इस मिशन की कमान तुम्हारे हाथों में। कोई बढ़िया-सा प्लान तैयार करो। कोई कमी लगेगी तो मैं बोल दूंगी।

मिल-जुल कर उस कमी को दूर कर लेंगे यार। अपने प्लान की स्क्रिप्ट में मेरा जितना रोल लिखोगे, मैं उसे पूरी ईमानदारी और मेहनत से निभाऊंगी। दिमाग के अस्तबल के तमाम दरवाजों को खोल दो और सोचों के घोड़ों को चारों दिशाओं में दौड़ा दो। इस बार केशव पण्डित से इन्तकाम लेना ही लेना है। मैं ये जानने के लिये उतावली रहूंगी कि तुम कैसा प्लान बनाते हो...?"



यदि आप 'केशव पण्डित के नियमित पाठक नहीं हैं तो आप क्रान्ति और सोनू के बारे में जानने के लिये उतावले होंगे—क्योंकि दोनों को आप ठीक से समझ नहीं पा रहे होंगे। तो आइये, संक्षिप्त में आपको क्रान्ति और सोनू के बारे में जानकारी दिये देते हैं—

सुरेन्द्रनगर के सफेदपोश मुजरिम बलदेव ठाकुर की छोटी बहन थी क्रान्ति। बलदेव ठाकुर की इलाके में तूती बोलती थी और वो भगवान की तरह ही पुजता था। वहां के लोग उसके लिये मरने-मारने को तैयार रहते थे। क्रान्ति भी शहजादी वाली जिन्दगी जीती थी। बचपन से ही

उसकी प्रत्येक फरमाईश और जिद पूरी होती थी, इसलिये वो जिद्दी, मगरूर और गुस्सैल हो गई थी—दिमाग की काफी तेज थी वो और बहादुर व जांबाज भी थी। क्रान्ति का दिल दिमाग के जादूगर 'केशव पण्डित' पर आ गया, जो कि पहले से ही शादीशुदा था। वो अपनी बला की खूबसूरत धर्मपत्नी सोफिया और चौदह वर्षीय बेटे आशीर्वाद पण्डित को अपनी जान से भी बढ़कर चाहता था।

क्रान्ति जानती थी कि केशव आसानी से उसकी मुहब्बत को स्वीकार नहीं करेगा—सो उसने शातिर दिमाग का इस्तेमाल किया और भयानक किस्म की प्लानिंग कर डाली—लेकिन प्लान के कम्पलीट होने से पहले ही उसका भान्डा फूट गया था तो केशव से खुलकर जंग लड़ने लगी थी। उसका भाई बलदेव सिंह भी उसका साथ देने लगा था। लेकिन दिमाग के जादूगर ने उसके भाई बलदेव सिंह को बहुत ही चालाकी से खत्म कर दिया था। क्रान्ति ने केशव पण्डित से इन्तकाम लेने की भरसक चेष्टा की थी, लेकिन फतह का सेहरा केशव के सिर पर बन्धा था और क्रान्ति के हाथ आई थी शिकस्त। तेजाब से पूरी तरह नहाई क्रान्ति को केशव ने मरने के लिये रेगिस्तान में छोड़ दिया था।

लेकिन क्रान्ति को एक बूढ़े वैद्य ने बचा लिया था और उसे उठा कर अपने कबीले में ले गया था—वहां उसने क्रान्ति का उपचार करके उसे नई जिन्दगी दी थी। क्रान्ति ने उस वैद्य और कबीले के सरदार का अहसान उतारने के लिये उनके दुश्मन कबीले का खात्मा किया था—साथ ही खूंखार डकैतों के गैंग का भी सफाया किया। इस काम के लिये उसने हथियारों और आदमियों की बजाये अपने दिमाग का इस्तेमाल किया था। उसी कबीले में क्रान्ति पाकिस्तान की गुप्तचर संस्था के एक ओहदेदार के सम्पर्क में आई थी और कश्मीर पहुंच गई थी। वहां आई०एस०आई० की ओहदेदार बनकर उसने आतंकियों के दम पर खूनी खेल खेला। लेकिन अपने परम मित्र इन्टर नेशनल क्रिमिनल अलफांसे के साथ वहां पहुंचकर केशव पण्डित ने आतंकियों और उनके ठिकाने को नष्ट कर दिया था और इसी के साथ अलफांसे ने तलवार से क्रान्ति के दोनों हाथ भी काट दिये थे। केशव ने क्रान्ति को कानून के हवाले करने की बजाय उसे उसके हाल पर छोड़ दिया था।

दोनों हाथ गंवाने पर भी क्रान्ति ने हिम्मत नहीं हारी। वो केशव

पण्डित से इन्तकाम लेने के लिये कुछ भी करने को तैयार थी। सो उसने बच्चों की बहुत ही खतरनाक बटालियन तैयार की—जो कि मिलिट्री फोर्स जैसी ही शक्तिशाली और आतंकी संगठन की तरह ही बहुत खतरनाक थी। लेकिन जब केशव पण्डित से आमना-सामना हुआ था तो बच्चों की खतरनाक बटालियन रेत की दीवार की तरह ही ढह गई थी और इस जंग में क्रान्ति ने अपने दोनों पैर भी खो दिये थे।

हाथों-पैरों से अपाहिज क्रान्ति जेल में बन्द थी। तेजाब से झुलस कर वो बदसूरत तो पहले ही थी। फिर भी क्रान्ति पर केशव पण्डित से इन्तकाम लेने का जुनून सवार था। दुनिया की सबसे बड़ी क्राइम ऑर्गेनाइजेशन 'माफिया' के चीफ नागराज सिंह उर्फ यमराज ने टी०वी० के माध्यम से एक इन्टरव्यू में घोषणा की कि जो कोई भी महिला केशव पण्डित को अदालत में कातिल साबित कर देगी, वो उसी के साथ शादी कर लेगा। दुनिया के सबसे शक्तिशाली और अमीर मुजरिम ने ये घोषणा इसलिये कि थी कि केशव ने कभी उसे शिकस्त के गहरे जख्म दिये थे और वो भी केशव से इन्तकाम लेने को मरा जा रहा था। क्रान्ति ने यमराज तक सन्देश भिजवा दिया कि वो उसकी शर्त पूरी कर सकती है—अर्थात् वो केशव पण्डित को कत्ल के इल्जाम में फंसा देगी और उसे अदालत में कातिल साबित कर देगी। यमराज को क्रान्ति पर विश्वास था कि वो अपने दावे को पूरा कर देगी। सो उसने क्रान्ति को जेल से फरार कराया और अमेरिका बुलवा कर उसे असली जैसे दिखलाई पड़ने वाले और काम करने वाले कृत्रिम हाथ-पैर लगवा दिये तो हिन्दुस्तान में लौटकर क्रान्ति ने प्लास्टिक सर्जरी करवाकर बदसूरती से निजात पा ली। फिर क्रान्ति ने केशव को अदालत में कातिल साबित किया था। अर्थात् उसने यमराज की शर्त पूरी कर दी थी—लेकिन दिमाग के जादूगर केशव पण्डित के होते क्रान्ति को उसकी मंजिल कैसे मिल पानी थी भला? केशव पण्डित ने यमराज का खात्मा कर दिया और क्रान्ति को कानून के हवाले कर दिया था।

परसराम परदेशी मुम्बई का डॉन था, लेकिन रहस्यमयी मुजरिम बिच्छूराज ने उसे मजबूर किया और उसकी कुर्सी पर अपने आदमी को बिठा दिया। बिच्छूराज ने जेल में बन्द क्रान्ति को आजाद करवाया और उसके साथ मिलकर जुर्म करने लगा और केशव पण्डित से भी पंगा

ले लिया। बिच्छूराज ने टीना नाम की एक औरत को बर्बाद कर दिया था और केशव ने टीना को वचन दे दिया था कि वो उसे बिच्छूराज से इन्तकाम लेने का अवसर देगा। केशव ने पहले बिच्छूराज को पकड़कर उसके चेहरे पर चढ़ी नकाब उतारकर उसका वास्तविक रूप दुनिया के सामने लाया और फिर टीना को बिच्छूराज से इन्तकाम लेने का मौका भी दिया। टीना ने बिच्छूराज को मार दिया और स्वयं भी मर गई। केशव ने क्रान्ति को पकड़ने की चेष्टा की थी लेकिन क्रान्ति जिस ट्रक में सवार थी, वो एक नदी में जा गिरा था और ढूंढने पर भी क्रान्ति नहीं मिल पाई थी।

क्रान्ति जिन्दा थी और इस बार उसका सम्पर्क हुआ दुनिया के सबसे बड़े वैज्ञानिक और मुजरिम सिंगही से, जो कि केशव पण्डित से काफी पुरानी दुश्मनी का इन्तकाम लेने का ख्वाहिशमन्द था। सिंगही ने क्रान्ति को खास किस्म के हाथ-पैर प्रदान किये, जो कि देखने में ही असली नहीं लगते थे, बल्कि वो काम भी असली हाथ-पैरों जैसा ही करते थे। क्रान्ति के साथ मिलकर सिंगही ने केशव पण्डित के खिलाफ एक साजिश रची और उसे कानून के शिकंजे में फंसा दिया—लेकिन दोनों ही गलतफहमी के शिकार थे। नहीं जानते थे कि केशव पण्डित का दिमाग सुदर्शन चक्र है, जो दुश्मनों और उनकी चालों को गाजर-मूली की तरह ही काटकर रख देने में सक्षम है। केशव ने सिंगही के हैडक्वार्टर को तहस-नहस कर दिया और स्वयं को निर्दोष साबित करने के साथ सिंगही को मुजरिम साबित करके फांसी की सजा सुनवा दी। लेकिन केशव ने क्रान्ति को कानून के हवाले नहीं किया था, बल्कि उसे अटांग नाम के खतरनाक जंगल में फिंकवा दिया था।

अटांग के जंगल में क्रान्ति को एक सांप ने डस लिया था और वो मौत के करीब पहुंच चुकी थी लेकिन अपने बेटों के साथ जड़ी-बूटियों की तलाश में आये एक वैद्य ने क्रान्ति को उठाया और अपने कबीले में ले जाकर उसका इलाज किया और उसकी जान बचा ली। उस कबीले का राजा सुजान सिंह ही नहीं, बल्कि उसके भाई और सैनिक भी शक्तिशाली, जांबाज और लड़ाकू थे। क्रान्ति की खूबसूरती पर राजा सुजान सिंह ही नहीं, उसके भाई भी मर-मिटे। लेकिन कबीले के कानून के अनुसार शादी करने के बाद ही क्रान्ति को हासिल किया जा सकता

था और शादी के लिये कबीले का कोई भी आदमी दावा कर सकता था। आश्चर्यजनक बात तो तब हुई, जब क्रान्ति के साथ शादी करने के लिये पूरे दस हजार लोग दावेदार बन गये। केशव पण्डित से इन्तकाम लेने के लिये क्रान्ति ने राजा सुज़ान सिंह समेत सभी दस हजार दावेदारों के साथ शादी कर ली। फिर जेल से फरार हुआ सिंगही भी आ पहुंचा। सिंगही ने पहले ही अपना हैडक्वार्टर तैयार कर लिया था, बल्कि एक ऐसी मशीन का भी आविष्कार कर लिया था, जिससे किसी भी जीव को कई गुणा बड़ा या छोटा किया जा सकता था। क्रान्ति को लगा कि वो सिंगही और अपने दस हजार पतियों के दम पर बहुत आसानी से केशव पण्डित से इन्तकाम ले लेगी। लेकिन वो क्या जानती थी कि केशव पण्डित किस बला का नाम है। केशव पण्डित ने बला की चालाकी के साथ क्रान्ति के सभी दस हजार पतियों का खात्मा कर दिया और सिंगही की ईजाद की हुई मशीन से ही सिंगही और क्रान्ति को चींटी के साइज का बनाकर और दोनों को सिगरेट की डिब्बी में बन्द करके एक नदी में फेंक दिया था।

उधर एक कस्बे में सोनू नाम का लड़का रहता था, जो कि चतुर दिमाग वाला सीधा-सादा लड़का था। लेकिन शहर के चेयरमैन ने उस पर ऐसा जुल्म ढाया कि वो खून के आंसू रोते हुये इन्तकाम की राह पर निकल पड़ा था। उसने चेयरमैन के हाथों उसके लाड़ले और इकलौते बेटे को मरवा दिया, लेकिन साबित ये हुआ कि चैयरमैन ने सोनू को कत्ल कर दिया था। सो चेयरमैन को सोनू को कत्ल करने के इल्जाम में फांसी की फन्दे पर लटका दिया गया—जबकि सोनू जीवित था। तब सोनू पन्द्रह वर्ष का था। दस वर्ष पश्चात् वो जब पच्चीस वर्ष का हुआ, लेकिन वो स्वयं को एक सौ पच्चीस साल का महापण्डित कहता था, क्योंकि उसका दावा था कि वो प्रत्येक सांस के साथ चालाकी, धूर्तता, कपट, विनाश और निर्दयता के विषैले कीटाणु छोड़ता है—अर्थात् वो अपनी उम्र से पांच गुणा बड़ा है। सोनू ने ऐसे-ऐसे जुर्म किये थे कि देखने और सुनने वाले दंग रह गये थे। वह जुर्म की दुनिया में दिन दूनी रात चौगुनी तरक्की किये जा रहा था, लेकिन एक कहावत है कि विनाश काले विपरीत बुद्धि। उसकी बुद्धि में शनिचर ही आ बैठा था, तभी तो ओवर कॉफिडेंस का शिकार होकर उसने दिमाग के जादूगर से पंगा ले

लिया था। फिर वो ही हुआ, जो केशव पण्डित से टकराने वाले जुर्म के दूसरे महारथियों का हो चुका था। केशव पण्डित पहाड़ तो सोनू ऊंट साबित हुआ था। केशव पण्डित ने उसे अर्श से फर्श पर पटका और कानून के हवाले कर दिया था और अदालत ने उसे फांसी की सजा सुना दी थी।

केशव ने क्रान्ति और सिंगही को छोटे साइज का करके और सिगरेट की डिब्बी में बंद करके नदी में फेंक दिया था—लेकिन दोनों बच गये थे। किसी तरह वो दोनों सिंगही के नवनिर्मित हैडक्वार्टर पर पहुंचे थे, जिसे सिंगही के हुक्म पर उसका शिष्य फांगचू पहले से ही तैयार करा रहा था। सिंगही ने दूसरी मशीन तैयार कराके अपना और क्रान्ति का साइज सामान्य किया। सिंगही पूरी तैयारियों के बाद ही केशव से इन्तकाम लेना चाहता था, जबकि क्रान्ति केशव से इन्तकाम लेने को मरी जा रही थी—सो वह सिंगही से विदा लेकर भारत आ गई थी। वहां उसने अपने बारे में झूठ बोलकर एक पहुंचे हुये तान्त्रिक असीमानन्द को अपना गुरु बनाया। उधर सोनू डेंगू बुखार से पीड़ित होकर हॉस्पिटल में एडमिट था—लेकिन वो होममिनिस्टर के धेवते को अपने कब्जे में करके हैलीकॉप्टर से भागा और वहां पहुंचा, जहां केशव पण्डित सपरिवार पिकनिक मना रहा था। वहां वो इन्तकाम लेने के चक्कर में अलफांसे के हाथों मारा गया—लेकिन फिर मोर्चरी से उसका मुर्दा भाग निकला था। क्रान्ति ने फोन के माध्यम से केशव से बात की और दावा किया कि वो तान्त्रिक बन चुकी है और उसी ने सोनू के मुर्दे में जान डालकर उसे अपना गुलाम बना लिया है। और वो सोनू के माध्यम से इन्तकाम लेगी।

उधर फूलपुर गांव में नवीन और रेखा नाम के दम्पति के तीन वर्षीय बेटे मोन्टी ने दावा किया कि वो पूर्व जन्म में रवि गोयल था और उसकी मंगेतर श्वेता गुप्ता के पिता सेठ ताराचन्द ने उसका कत्ल कर दिया था। खबर लगने पर केशव पण्डित और उसकी शिष्या श्वेता गुप्ता फूलपुर गये थे। वहां मोन्टी ने केशव पण्डित और श्वेता गुप्ता के सभी प्रश्नों के ठीक-ठीक उत्तर दिये। केशव मोन्टी को दिल्ली भी ले गया था। उसने हर तरह से मोन्टी की परीक्षा ली, लेकिन यही साबित हुआ था कि मोन्टी पूर्व जन्म का रवि गोयल ही है। केशव ने मोन्टी

को मुम्बई में ही रखा और उसके मां-बाप को रोजगार दिलवा दिया था। फिर किसी ने अलफांसे की मंगेतर सलमा को रेप करके मार डाला था। उस घटना की चश्मदीद गवाह श्वेता थी और श्वेता के मुताबिक सलमा को मारने वाला केशव पण्डित का शिष्य करतार सिंह था। तब अलफांसे करतार सिंह से इन्तकाम लेने पर उतारू हो गया था। इस चक्कर में उसके और केशव के बीच तनातनी भी हुई। फिर अलफांसे की मदद को क्रान्ति आई और अलफांसे ने करतार सिंह को जिन्दा ही कब्र में दफना दिया था। लेकिन क्रान्ति ने करतार सिंह के कत्ल की वीडियो फिल्म बनवाकर टी०वी० पर चलवा दी थी—जिससे अलफांसे करतार सिंह का कातिल साबित हो रहा था और इसी के साथ ये राज भी खुल गया कि सिकन्दर के नाम से रहने वाला वो इन्टरनेशनल क्रिमिनल अलफांसे है। क्रान्ति अपनी चाल चलकर खुश थी लेकिन वो क्या जानती थी कि केशव पण्डित उसका भी उस्ताद था। केशव ने भी खेल खेला था। करतार सिंह जीवित था। उधर सोनू भी जिन्दा था और क्रान्ति के प्लान के मुताबिक मुर्दे का रोल कर रहा था। केशव ने अपने वायदे के मुताबिक सोनू के पैरों में घुंघरू बांधकर उसे नाचने पर विवश किया और फिर उसके कहने पर उसके बेटे आशीर्वाद ने क्रान्ति और सोनू की कनपटियों के खास हिस्से दबाकर उन्हें कोमा की हालत में पहुंचा दिया था।

उपरोक्त संक्षिप्त विवरण का सविस्तार वर्णन पढ़ना चाहते हैं तो कृपया केशव पण्डित द्वारा लिखित उपन्यास ही पढ़िये, जिनके नाम इस प्रकार हैं—

शेर बोलेगा म्याऊं-म्याऊं (तुलसी साहित्य पब्लिकेशन्स)
कश्मीर नहीं कटोरा मिलेगा (धीरज पॉकेट बुक्स)
बच्चों की बनेगी बटालियन (तुलसी साहित्य पब्लिकेशन्स)
शादी करूंगी यमराज से (धीरज पॉकेट बुक्स)
चिड़िया लड़ाऊंगा बाज से (तुलसी साहित्य पब्लिकेशन्स)
सुदर्शन चक्र है दिमाग मेरा (धीरज पॉकेट बुक्स)
125 साल का महापण्डित (धीरज पॉकेट बुक्स)
घुंघरू बान्ध नाचेगा मुर्दा (तुलसी साहित्य पब्लिकेशन्स)

जी नहीं, यदि आप सोच रहे हैं कि ये उपन्यास एक-दूसरे के पार्ट

हैं तो गलत है। प्रत्येक उपन्यास अपने आपमें कम्पलीट है—प्रत्येक का कथानक सम्पूर्ण है। किसी भी उपन्यास का दूसरा भाग नहीं है। हां, इन उपन्यासों में क्रान्ति और सोनू का वर्णन हुआ है, इसलिये इन्हें क्रान्ति और सोनू सीरिज के उपन्यास कहा जा सकता है। जैसे कि प्रस्तुत उपन्यास 'शमशान में लूंगी 7 फेरे' भी सम्पूर्ण कथानक वाला है—ये पूर्व प्रकाशित उपन्यास का भाग नहीं है और ना ही आगामी उपन्यास इस उपन्यास का पार्ट होगा। सिर्फ आपको क्रान्ति या सोनू के अतीत से परिचित कराने के लिये ही पूर्व प्रकाशित उपन्यासों का उल्लेख किया गया है।



"भले ही क्रान्ति और सोनू का कोई पता नहीं चला हो पण्डित जी—लेकिन हमें इस बात की तसल्ली है कि वो काले मच्छरों वाला उत्पात खत्म हो गया। सिंगही ने तो उन मच्छरों के जरिये तहलका ही मचा दिया था। उन हौलनाक नजारों को देखने वाले कई लोग मारे खौफ और सदमे के मर गये—सैकड़ों की तादाद में पागल हो चुके हैं। वैसे...सोनू और क्रान्ति के जिस्मों में लगाये गये ट्रांसमीटर सिग्नल क्यों नहीं दे रहे हैं पण्डित जी—?"

"या तो क्रान्ति और सोनू किसी हादसे के शिकार हो गये सर और उनके साथ ट्रांस्मीटर्स भी नष्ट हो गये। या फिर उन दोनों को या सिंगही को किसी तरह उन ट्रांसमीटर्स की जानकारी हो गई और उन्हें निकालकर नष्ट कर दिया गया है।"

"अगर सोनू और क्रान्ति जिन्दा हैं तो सिंगही के पास ही होंगे—?" फोन के माध्यम से प्रधानमन्त्री की आवाज केशव के कान के पर्दे से टकराई।

"यस सर। सम्भावना तो यही है। सम्भावना ये भी है कि सिंगही ने अपना अड्डा चीन में ही कहीं बनाया हुआ होगा। क्योंकि चीन की सरकार उस पर मेहरबान है। पहले भी उसने चीन में ही अपना ठिकाना बनाया हुआ था। वैसे भी सिंगही के कहने पर प्लेन ने सोनू और क्रान्ति को लिद्दर नदी के ऊपर छोड़ा था। लिद्दर नदी तिब्बत से चीन की ओर ही बहती है। इस वक्त मेरे हाथ में कत्ल के चार केस हैं। दो की

सुनवाई होनी है और दो का निर्णय सुनाया जाना है। सो कुछ दिनों के लिये मैं बिजी हूं। इन चारों मुकदमों से छुट्टी पा लूं फिर मैं सिंगही, सोनू और क्रान्ति की तलाश में निकलूंगा। ईश्वर की कृपा से उन तीनों को पकड़कर लाऊंगा और सजा दिलाऊंगा...।"

"लेकिन चीन की सरकार तो आपको सहयोग देगी नहीं पण्डित जी—बल्कि आपको परेशान ही किया जायेगा। वैसे भी चीन बहुत बड़ा देश है। सिंगही ने अपना अड्डा ना जाने कहां बनाया होगा। दुश्मनों से निबटने के लिये भी उसने तरह-तरह के उपाय किये होंगे। वो बहुत बड़ा वैज्ञानिक है। नहीं, आपको सिंगही के अड्डे पर जाने का रिस्क नहीं लेना चाहिये पण्डित जी—।"

"जो लोग अपने वतन, समाज, इन्सानियत और कानून के लिये सिर पर कफन बान्धकर जंग के मैदान में उतरते हैं...उन पर ईश्वर की कृपा बनी रहती है। रिस्क तो सड़क पार करने या गाड़ी चलाने में भी है सर। मैं अपने अन्जाम की परवाह नहीं करता। होना तो वही है, जो नियती को स्वीकार है, विधाता ने भाग्य के खाते में लिख दिया है। योद्धा के मन में भय का सुई की नोक बराबर भी स्थान नहीं होना चाहिये...।"

"तभी तो आप अपने हरेक मिशन में कामयाब होते हैं पण्डित जी और आपकी शौहरत बुलन्दियों तक पहुंची हुई है पण्डित जी। खैर, हम आपकी सफलता और कामयाबी के लिये ईश्वर से प्रार्थना करेंगे। ईश्वर आपको लम्बी उम्र दे और आप यूं ही शौहरत की बुलन्दियां छूते रहें...जय हिन्द।"

"जय हिन्द...सर...।"

"डैडी जी...।"

केशव ने मोबाइल बन्द करके राजन, करतार सिंह और श्वेता गुप्ता के साथ आये आशीर्वाद को देखा।

"सोनू और क्रान्ति वाले ट्रांसमीटर सिग्नल भेज रहे हैं डैडी जी...।"

"क्या...?" चौंका केशव।

"यस डैडी जी। मैंने रेडियो रिसीवर को कलाई पर बान्धा हुआ था। थोड़ी देर पहले ही रिसीवर में वाइब्रेशन हुआ तो मैंने स्क्रीन पर

देखा तो पाया कि ट्रांसमीटर्स वाले बिन्दु एक्टिव हैं और एक साथ ही हैं। दोनों फिलहाल चीन में हैं और उनकी रफ्तार से लगता है कि क्रान्ति और सोनू किसी प्लेन में सवार हैं। ये देखिये... ।'' कहने पर आशीर्वाद ने कलाई पर बन्धे रिस्टवाच रूपी रेडियो रिसीवर को केशव को दे दिया।

केशव ने घड़ीनुमा यन्त्र की स्क्रीन पर देखा कि लाल और हरे रंग के दो नन्हें-नन्हे बिन्दु बायीं से दायीं दिशा की तरफ बढ़ रहे थे और स्क्रीन पर एक नक्शा बना हुआ था, नीचे चीन, और फांगेस भी लिखा हुआ था। यानि ट्रांसमीटर्स चीन के फांगेस इलाके में थे।

''तुम्हारा अन्दाजा ठीक है आशीर्वाद... ।'' स्क्रीन पर नजरें चिपकाये हुये बोला केशव, ''...सोनू और क्रान्ति प्लेन में ही सवार हैं। लेकिन प्लेन का रुख इन्डिया की तरफ नहीं है। यानि दोनों इन्डिया नहीं आ रहे हैं।''

''लेकिन ऐसा कैसे हो सकता है गुरुजी? क्रान्ति और सोनू को या तो सिंगही के पास होना चाहिये था—या फिर आपसे बदला लेने के लिये यहां...हिन्दुस्तान आना चाहिये था... ।''

''सिंगही भी मुझसे इन्तकाम लेना चाहता है श्वेता—लेकिन उसका पहला मकसद विश्व-विजेता या विश्व-सम्राट बनने का है। वो ये ख्वाब देख रहा है कि सारी दुनिया के साथ हिन्दुस्तान को भी अपना गुलाम बना लेगा और तब मुझसे सारे हिसाब चुकता करेगा। वो तैयारियां कर रहा है। ऐसे अविष्कार करने में जुटा है, जिनके दम पर वो सारी दुनिया को अपना गुलाम बनाने पर मजबूर कर सके। उसने क्रान्ति और सोनू को बोल दिया होगा कि वो अभी उनका साथ नहीं दे सकता। जबकि सोनू और क्रान्ति पर मुझसे इन्तकाम लेने का जुनून सवार होगा—सो उन्होंने सिंगही से विदा ले ली। रहा प्रश्न ये कि वो यहां क्यों नहीं आ रहे। तो हो सकता है कि वो इस बार जल्दबाजी से काम नहीं लेना चाहते हों। उन्हें मालूम है कि मेरे साथ-साथ हिन्दुस्तान के कानून को भी उनकी तलाश है। सो उन्होंने सोचा होगा कि कुछ दिन विदेश में रह लिया जाये, ताकि मामला ठन्डा पड़ जाये—मेरा और कानून का ध्यान उन दोनों पर से हट जाये। हम उन दोनों की तरफ से लापरवाह हो जायें और वो हमारी लापरवाही का फायदा उठा लें। दोनों का चेहरा टी०वी० और अखबारों के माध्यम से हिन्दुस्तान के बच्चे-बच्चे तक पहुंच चुका है।

दोनों ने शायद विदेश जाकर प्लास्टिक सर्जरी के माध्यम से अपने चेहरे बदलवाने का भी प्रोग्राम बनाया हो।''

''प्राहवा जी ठीक बोल रहे हैं... ।'' केशव के चुप होते ही करतार सिंह तपाक से बोला, ''...क्रान्ति ते सोनू ने इन्नी छेती वापिस लौटने दा रिस्क नहीं लेना चाहा होगा—इसलिये ओ दोनों किसी दूजे मुल्क विच जा रहे हैं।''

''लेकिन उन दोनों को ढील देना ठीक नहीं होगा डैडी जी... ।'' गम्भीर भाव से बोला आशीर्वाद, ''...उनकी तरफ से लापरवाह हो जाना ठीक नहीं होगा। ये तो हमें मानना ही होगा कि दोनों शातिर और खतरनाक हैं। मौका मिलने पर दोनों कोई भी वारदात कर सकते हैं। मेरे ख्याल से उन्हें कोई मौका दिये बिना पकड़ लेना चाहिये। मम्मी जी ने जिद करके मुझे मजबूर ना किया होता तो वो दोनों कोमा की हालत में पड़े रहते। उन्हें ठीक कर देना भारी पड़ सकता है। भारी पड़ा भी है। दोनों के ठीक होते सिंगही ने उन्हें मुक्त कराने के लिये उन काले मच्छरों के जरिये हजारों निर्दोष लोगों की जान ले ली। इस बार गलती नहीं करूंगा मैं। उन दोनों के पकड़ाई में आते ही उन्हें जान से मार दूंगा—या फिर कोमा की हालत में तो पहुंचा ही दूंगा। लेकिन पहले उन दोनों को पकड़ना होगा। आपका क्या ख्याल है डैडी जी... ?''

''ख्याल मेरा भी यही है आशीर्वाद। क्रान्ति और सोनू को छूट या मोहलत देना ठीक नहीं होगा। दोनों को तब छोड़ना मजबूरी थी। लेकिन उन्हें कोई खुराफात करने देने का मौका नहीं मिलना चाहिये। उन्हें फौरन से पेश्तर पकड़ना ही होगा— ।''

''लेकिन वो दोनों विदेश की तरफ जा रहे हैं गुरुवर। जबकि आपके पास विदेश जाने का वक्त नहीं है। आपको कत्ल के चार केस निपटाने हैं। कल ही एक मुकदमे का निर्णय होना है। आप विदेश कैसे जा सकते हैं... ?''

''नहीं...मेरा जाना तो मुमकिन नहीं होगा राजन। कल दहेज वाले मुकदमे की हियरिंग है। एक अमीरजादे ने गरीब घर की लड़की की खूबसूरती पर रीझकर उससे शादी की थी। बाद में लड़की की खूबसूरती का नशा उतरा और दहेज का नशा चढ़ने लगा। अमीर घर की किसी लड़की से शादी करने के लिये उसने अपनी बीवी को मारकर उसके

कत्ल को दुर्घटना का रूप दे दिया था। कल मुझे साबित करना है कि उस अमीरजादे ने अपनी बीवी को कत्ल किया था। तुम एक काम करो आशीर्वाद... ।"

"आज्ञा दीजिये पिताश्री–।"

"तुम क्रान्ति और सोनू का पीछा करो। फिर मौका मिलते ही उन्हें पकड़कर यहां ले आओ–।"

"ये हुई ना कोई बात... ।" खुश होकर बोला केशव-पुत्र, "काफी दिनों बाद आपने मुझे तबियत खुश करने वाला काम दिया है। मैं क्रान्ति और सोनू की लाशों को ही लेकर लौटूंगा–।"

"नहीं, आशीर्वाद। तुम उन दोनों की जान नहीं लोगे। वो दोनों कानून के मुजरिम हैं। बेहतर होगा कि दोनों को कानून के हाथों ही सजा मिले। अगर कोई मजबूरी हो तो उन्हें कोमा में पहुंचा देना। फिर यहां पहुंचने पर उन्हें होश में ले आना। हम पूरी चेष्टा करेंगे कि उन दोनों के फांसी चढ़ने तक किसी को भनक भी ना लगे–वरना सिंगही उन्हें मुक्त कराने की चेष्टा करेगा। लेकिन तुम अकेले नहीं जाओगे–।"

"ये क्या बात हुई डैडी जी, क्या आपको मुझ पर भरोसा नहीं है? आप समझते हैं कि मैं क्रान्ति और सोनू को काबू में नहीं कर सकता–?"

"मुझे तुम पर पूरा भरोसा है लड़के। लेकिन तुम्हें एक साथी की जरूरत पड़ सकती है। माना कि अभी क्रान्ति और सोनू एक साथ हैं। लेकिन बाद में वो दोनों अलग-अलग हो सकते हैं। ऐसे में तुम उनमें से किसी एक पर ही नजर रख सकते हो या हमला बोल सकते हो। वैसे भी एक से भले दो होते हैं। तुम्हारे साथ दूसरा कोई होगा तो जरूरत पड़ने पर वो तुम्हारी मदद तो कर सकेगा... ।"

"फिर तो आशीर्वाद के साथ मैं चला जाता हूं गुरुवर–।"

"नहीं...तुम नहीं राजन। मुझे तुम्हारी अदालत में जरूरत पड़ेगी। हांलाकि श्वेता भी है–लेकिन अदालत से बाहर के जो काम होते हैं, इन्वेस्टीगेशन वगैरा...तुम्हें उनका काफी एक्सपीरियंस हैं। इसलिये तुम्हें यहीं रहना होगा।"

"तो फिर मेरे साथ कौन जायेगा...?"

"जाहिर है कि...तुम्हारे पटियाले वाले अंकल... ।"

"वाहे गुरुजी दा खालसा...वाहे गुरुजी दी फतह... ।"

करतार सिंह इतना खुश हुआ कि बाकायदा भांगड़ा डालते हुये बोला, "...तबियत खुश कर दीती प्राहवा जी। आप मैंनू निक्के पुत्तर जी दे नाल क्रान्ति ते सोनू नूं पकड़ने के लिये भेज रहे हो। वड्डी जिम्मेदारी दा काम है। देख लेना...मैं फुल जिम्मेदारी दे नाल ऐश काम नूं अन्जाम देवांगा। हम दोनों क्रान्ति ते सोनू नूं फड़के ऐत्थे ले आयेंगे। चलो, निक्के पुत्तर जी। हम दोनों हुणे ही निकल पड़ते हैं... ।"

"ऐसे ही कैसे निकल सकते हैं पटियाले वाले अकंल जी... ।" करतार सिंह की व्याकुलता पर मुस्कराकर बोला आशीर्वाद, "...हमें क्या मालूम कि वो दोनों कहां जा रहे हैं? माना कि हमें मालूम हो कि दोनों अमेरिका जा रहे हैं तो हम एयरपोर्ट पर पहुंचकर अमेरिका की फ्लाइट पकड़ लें। प्लेन टैक्सी तो होता नहीं कि हम पायलट को बोलेंगे कि क्रान्ति और सोनू अमेरिका की बजाय ब्रिटेन जा रहे हैं, इसलिये प्लेन को ब्रिटेन की तरफ मोड़ ले। इसलिये पहले हमें ये देखना होगा कि वो दोनों किस देश में जा रहे हैं। वो पहुंच जायें और हमें मालूम पड़ जाये–फिर हम भी वहां पहुंच जायेंगे और फिर उन दोनों को पकड़ लेंगे–।"

करतार सिंह खिसिया उठा और पगड़ी सहलाते हुये बोला–"आप ठीक बोल रहे हो निक्के पुत्तर जी। हुणे उन दोनों दे पीछे नी जाया जा सकदा। पहिला मालूम तो पड़े कि वो कित्थे जा रहे हैं? तदो असी रवाना हो सकदे हन। हुणे तो इन्तजार ही करना पड़ेगा। देखना पड़ेगा कि वो दोनों कित्थे जा रहे हैं–?"

❑❑❑
❑❑❑

"पग घुंघरू बान्ध मीरा नाची थी–और हम नाचे बिन घुंघरू के...पग घुंघरू...पग घुंघरू बान्ध मीरा नाची थी... ।"

डी०जे० सिस्टम पर फिल्म 'नमक हलाल' का गाना बज रहा था।

मुम्बई का डॉन महावीरा भी नाच रहा था और दीपिका भी नाच रही थी।

दोनों को इतना पसीना आ रहा था कि उनके कपड़े यूं तर-ब-तर

थे कि मानो अभी-अभी झील से गोते लगाकर बाहर निकले हों।

थके हुये भी थे और सांसें भी फूल रही थीं, लेकिन दोनों नाच रहे थे।

"अ...आह...!" अचानक ही दीपिका चक्कर खाकर गिरी। महावीरा ने नाचना बन्द नहीं किया और रिस्टवाच की तरफ देखते हुये सेकंड गिनने लगा—"...एक...दो...तीन।"

घबराया-बौखलाया सतीश लपककर दीपिका के पास पहुंचा और उसके कन्धों पर हथेलियां रखकर बोला—"...उ...उठो दीपिका। तुमने तीस सेकेण्ड के भीतर नाचना शुरू नहीं किया तो...तुम्हें हारी हुई मान लिया जायेगा। फिर तुम पर ना जाने कैसी कयामत टूटेगी। उठो और नाचो। अपनी इज्जत और जान के लिये तुम्हें ये कम्पीटीशन जीतना ही होगा...।"

"मु...मुझे चक्कर आ रहे हैं...।" कहा दीपिका ने, लेकिन फिर उठकर नाचने लगी।

चिन्तित सतीश को दो ब्लैक कमान्डोज रूपी गुन्डे पकड़कर पीछे ले गये।

म्यूजिक सिस्टम पर खड़े युवक ने रिमोट का इस्तेमाल करके गाना चेंज कर दिया—

"ढपली वाले...ढपली बजा...मेरे घुंघरू बुलाते हैं...आ—मैं नाचूं...तू नचा...।"

तभी बाहर से एक ब्लैक कमान्डो आया और गाने की तेज आवाज के कारण गला फाड़कर बोला—"कोई क्रान्ति और सोनू आये हैं बॉस। आपसे मिलना चाहते हैं—।"

"उन्हें पूरे आदर-सम्मान के साथ लेकर आओ...।" गाने की धुन पर नाचते हुये तेज आवाज में बोला महावीरा, "...वो हमारे बहुत ही खास मेहमान हैं। तुरन्त ही मेज पर ड्रिंक्स और खाने-पीने का सामान सजा दिया जाये। और हां, सिगरेट और सिगार की डिब्बी, माचिस वगैरा भी रख दी जायें...।"

खबर लेकर आया कमान्डो रूपी गुन्डा तो उल्टे पैर वापिस चला गया, जबकि एक साथ आठ गुन्डों ने एक मेज के आमने-सामने दो कुर्सियां रख दीं और हॉल में ही मौजूद 'बार' में से शराब की कई बोतलें,

सोडे की बोतलें, आइस क्यूब्स से भरा थर्माकोल का बॉक्स, खाली गिलास, पानी का जग इत्यादि रखे तो फ्रिज में से पनीर, सलाद की प्लेटें भी निकालकर रख दीं।

दो गुन्डे दौड़कर दरवाजे से दूसरे कमरे में गये और भुने हुये काजुओं व मसालेदार पनीर के टुकड़ों से भरी प्लेटें ले आये।

सिगरेट व सिगार की डिब्बियां भी रख दी गईं।

जब क्रान्ति और सोनू वहां पहुंचे तो मेज पर दावत का सारा सामान सज चुका था।

हॉल में प्रविष्ट होते ही क्रान्ति ने विग और फेस मास्क उतारकर जींस के ऊपर पहने कोट की जेबों में रख लिये। देखा-देखी सोनू ने भी ऐसा ही किया।

"वेलकम क्रान्ति जी...वेलकम सोनू जी...।" नाचते हुये महावीरा म्यूजिक की तेज आवाज के कारण चींख-चींखकर बोला, "महामहीम जी का मैसेज मिल गया था मुझे। आप दोनों को पहचान लिया मैंने। भला आप दोनों को कौन नहीं पहचानेगा? हिन्दुस्तान के मीडिया वाले आप दोनों की तस्वीरे दिखलाने में जरा-सी भी कंजूसी नहीं बरत रहे हैं। आप दोनों का ऐसे भीं दिल से स्वागत करता मैं। लेकिन आप दोनों तो महामहीम जी के खासम खास भी हो। तो मेरे लिये तो ऊंचा दर्जा रखते हो। आपकी खातिरदारी, मेहमाननवाजी में कोई कोर-कसर बाकी नहीं रखी जायेगी। आपकी प्रत्येक आज्ञा का पालन करना मेरा धर्म होगा। लेकिन आप दोनों मुझे इजाजत दें तो मैं ये प्रतियोगिता लड़ने की जुर्रत कर लूं? आप बोलेंगे तो मैं डांस बन्द करके हारने के लिये तैयार हूं...।"

सोनू के कदम-से-कदम मिलाते हुये क्रान्ति महावीरा और दीपिका के करीब आकर बोली, "क्या हो रहा है ये महावीरा—?"

नाचते हुये महावीरा ने सारी बातें बतलाईं।

"काफी दिलचस्प आदमी हो तुम महावीरा। तुम अलग टाइप के ही गैंगस्टर हो। क्या तरीका निकाला है तुमने प्रतियोगिता का...वाह! जंगली भैंसे जैसे तन्दुरुस्त होने पर भी क्या खूब नाच रहे हो...।"

"थैंक्यू, क्रान्ति जी। क्या मुझे नाचने की इजाजत है—?"

"हां, क्यों नहीं? ये तो मनोरंजन का खास साधन है।"

"तो कृपया आप दोनों उधर बैठ जाइये। मेज पर ड्रिंक्स और खाने-पीने का सामान मौजूद है। किसी और चीज की जरूरत हो तो किसी भी आदमी को हुक्म दे देना—वो आपकी फरमाईश पूरी कर देगा...।"

"तुम हमारी चिन्ता मत करो महावीरा...हम खाते-पीते रहेंगे। फिलहाल तो हमें ये जानने की दिलचस्पी है कि इस कम्पीटीशन का रिजल्ट क्या निकलता है? तुम दोनों में से कौन इस नृत्य प्रतियोगिता को जीतता है—?"

❑❑❑
❑❑❑

"आ...आह...!" चींखी दीपिका और फर्श पर बैठकर हथेलियों से बायें पैर के पंजे को दबाने लगी।

उसके चेहरे पर पीड़ा के भाव और आंखों में आंसू थे।

"क...क्या हुआ दीपिका...?" गुन्डों से हाथ छुड़कार सतीश उसके करीब पहुंचा और फर्श पर बैठकर बोला, "जल्दी से उठकर नाचना शुरू कर दो। बॉस गिनती गिन रहे हैं। गिनती के तीस पर पहुंचते ही तुम हार जाओगी...।"

"मे...मेरे पैरों में मोच आ गई है...आह...बहुत दर्द हो रहा है...मुझसे उठा भी नहीं जायेगा सतीश...।"

"तुम्हें अपनी इज्जत और जान बचाने के लिये नाचना ही होगा दीपिका। बॉस थक चुके हैं। तुम जैसे-तैसे करके नाचो तो सही...तुम जीत जाओगी। फिर हम दोनों को मुक्ति मिल जायेगी। हम दोनों किसी दूसरे शहर में जाकर शादी कर लेंगे और नई जिन्दगी की शुरूआत करेंगे...।"

सतीश का सहरा लेकर दीपिका उठी, लेकिन तुरन्त ही चींख मारकर फर्श पर गिर पड़ी और मारे पीड़ा के कराहने लगी।

डी०जे० को इशारा करके महावीरा ने म्यूजिक सिस्टम बन्द करा दिया और विजयी किस्म की मुस्कान स्याह व भद्दे होठों पर सजाकर बोला, "तू हार गई बुलबुल। तेरी लैला हार गई सतीश...।"

सतीश का चेहरा विवर्ण हो चला। फिर वो महावीरा के पैरों में जा गिरा और रोने-गिड़गिड़ाने लगा—"हम दोनों पर रहम करो बॉस।

हम दोनों एक-दूसरे से कोई ताल्लुक नहीं रखेंगे। दिल पर पत्थर रखकर एक-दूसरे से अलग हो जायेंगे। दीपिका अपने गांव चली जायेगी और मैं जिन्दगीभर आपकी खिदमत करूंगा...।"

महावीरा ने दीपिका के तेजी के साथ उठते-गिरते उन्नत वक्ष को भूखी नजरों से देखा और फिर बोला, "तू जीता था—तुझे यहां से जाने की इजाजत है। लेकिन ये हसीना नहीं जायेगी। इसे तो देखते ही मुंह में पानी आ गया था। लेकिन हमारे मेहमान सोनू जी भी यहां पर हैं। पहले वो दीपिका के साथ सुहागदिन मनायेंगे। फिर मैं इस हसीना के साथ मुंह काला करूंगा और फिर यहां मौजूद हमारे आदमी इसके साथ तब तक बलात्कार करेंगे, जब तक कि ये दम नहीं तोड़ देगी...।"

दो लार्ज पैग चढ़ा चुके सोनू ने बोतल से व्हिस्की गटक रही क्रान्ति की कमर में हाथ डाला और बोला, "नहीं, भई महावीरा। इस लड़की पर तुम्हारा ही अधिकार है। तुमने मेहनत करके इसको हराया है। वैसे भी अपने पास दुनिया की सबसे हॉट और सैक्सी गर्ल है। क्रान्ति के होते हुये दुनिया की कोई भी हसीना क्यों ना सामने आ जाये—मैं उसे नजर भरके देखना भी पसन्द नहीं करूंगा। मुहब्बत के मैदान में शेरनी से फाइट करना पसन्द है मुझे—ना कि किसी हिरणी का शिकार करना।"

"तो मैं इसे अपने बेडरूम में ले जाऊं...।" कहने पर महावीरा ने चींखती-चिल्लाती, दीपिका को बड़ी आसानी से उठाकर कन्धे पर लाद लिया।

"नहीं...महावीरा...।" मुहब्बत के मारे आशिक ने जोश में होश खोकर बायें हाथ से महावीरा का गिरेहबान पकड़ लिया और दायें हाथ से दीपिका को छुड़ाने की चेष्टा करते हुये बोला, "खबरदार! अगर मेरी दीपिका को कुछ भी कहा तो मैं तेरी जान ले...आ...आह...आह...!"

खाली हो चुकी बोतल को हवा में उछालकर क्रान्ति ने सतीश का गला पकड़कर उसकी पीठ पर घुटने का जबरदस्त प्रहार किया और उसे फर्श पर गिराकर और उसके गले पर जूते समेत दायां पैर रखकर फुंफकारी-सी—"सूअर के बच्चे! इस फुलझड़ी की खातिर अपने बॉस की शान में गुस्ताखी की तूने! अगर हिला भी तो गला दबाकर खत्म कर दूंगी साले...।"

सतीश ने दोनों हथेलियों से क्रान्ति के पैर को अपने गले से हटाने के लिये पूरे जोर लगा दिये, लेकिन वो पैर को हिला भी नहीं सका—जल्दी ही उसे आभास हो गया कि क्रान्ति नाम की बला से पार पाना उसके बस की बात नहीं है।

"ये क्या महावीरा...?" सतीश के गले को पैर से दबाये हुये बोली क्रान्ति, "...असली मनोरंजन की घड़ी आई तो लौंडिया को उठाकर बेडरूम की तरफ चल दिये। असली मर्द नहीं हो क्या—?"

"क्या मलतब? मैं...मैं कुछ समझा नहीं क्रान्ति जी—?"

"जिस तरह खुले में...सबके सामने कम्पीटीशन जीता है, नाचे हो—उसी तरह यहीं पर इस लौंडिया को नंगी करो और इसके साथ मुंह काला करो। सभी देखेंगे ना—इसका यार भी देखेगा। फिर तुम्हारे सभी आदमी भी इस हिरणी का शिकार करेंगे। जब तक ये दम नहीं तोड़ देती...बलात्कार होता रहेगा। पहले अपने कपड़े उतारो और फिर इस मुर्गी के। फिर हवस के अजगर बनो। इस मुर्गी के एक-एक पंख को नोचो-खसोटो और साली को साबुत ही निगल जाओ। मुझसे बोलो तो अभी सोनू के साथ शुरू हो सकती हूं...सबके सामने। फिर तुम मर्द होकर क्यों शरमा रहे हो? चलो, मनोरंजन चालू करो। बन्नो के हलक से निकलने वाली चींखों की आवाज डी०जे० पर बजने वाले गानों से भी तेज होनी चाहिये...।"

बस, फिर क्या था!

महावीरा ने फुर्ती के साथ स्वयं को निःवस्त्र किया और फिर दीपिका पर भूखा भेड़िया-सा टूट पड़ा। रोती—गिड़गिड़ाती दीपिका ने रहम की भीख मांगी—लेकिन हवस के भिखारी के पास रहम के सिक्के थे ही कहां? फिर थोड़ी देर पश्चात् दीपिका के हलक से निकलने वाली पीड़ा भरी चींखों से हॉल की दीवारें और छत भी कांप उठी—फर्श सहम उठा।

रोते हुये सतीश ने उठकर दीपिका की मदद करनी चाही, लेकिन बहुत प्रयास करने पर भी वो क्रान्ति के पैर को गले पर से हिला भी ना सका।

महावीरा के पश्चात् उसके गुन्डे बारी-बारी से दीपिका के साथ मुंह काला करने लगे।

बेचारी दीपिका...आखिर कब तक सितम बर्दाश्त करती? एक समय वो भी आया, जब बेहोशी की अवस्था में ही एक हिचकी-सी लेकर उसने दम तोड़ दिया।

उसी वक्त क्रान्ति ने भी पैर उठाकर और जोरदार प्रहार करके सतीश की गर्दन की हड्डी को एक ही वार में तोड़ दिया और सतीश ने भी छटपटाकर और एड़ियां रगड़ते हुये अन्तिम सांस ली।

❑❑❑

❑❑❑

तीस वर्षीय नवीन और उसकी अट्ठाईस वर्षीय धर्मपत्नी रेखा ने हाथ जोड़कर और धीमी आवाज में 'नमस्ते जी' बोलकर केशव, सोफिया, आशीर्वाद, राजन शुक्ला, चांदनी, करतार सिंह व श्वेता गुप्ता का अभिवादन किया—जबकि साढ़े तीन वर्षीय बेटे मोन्टी ने हाथ जोड़कर तेज स्वर में कहा—"सभी को नमस्कार, गुडमॉर्निंग, सत श्री अकाल...जय हिन्द...।"

श्वेता उठी और मोन्टी के करीब पहुंचकर, घुटनों के बल बैठकर उसे वारी हो जाने वाली नजरों से देखने लगी, फिर कंपकंपाती सी आवाज में बोली, "कै...कैसे हो तुम रवि? तुम्हारा बुखार उतरा कि नहीं—?"

"कल शाम जब तुम मुझे देखने आई थीं तो मैं एकदम भला-चंगा था—मेरा बुखार उतर चुका था श्वेता...।" थोड़ा गम्भीर लहजे में बोला मोन्टी, "...तुम मुझे रवि मत कहा करो श्वेता। माना कि मेरे जिस्म में स्वामी असीमानन्द जी की कृपा से रवि की आत्मा है और मुझे अपने पूर्व जन्म की तमाम बातें भी याद हैं—लेकिन ये शरीर मोन्टी का है। मैंने मोन्टी के रूप में जन्म लिया है। ये दोनों मेरे माता-पिता हैं। अपनी और मेरी उम्र के अन्तर को देखो। पहले भी बोल चुका हूं कि मुझे अपने मंगेतर या प्रेमी के रूप में कतई मत देखो। हम सिर्फ दोस्त हैं। तुम्हें कोई अच्छा लड़का देखकर उसके साथ शादी करनी है। जब मैं बड़ा हो जाऊंगा तो अपने मां-बाप की पसन्द की लड़की के साथ ही शादी करूंगा।"

"ले...लेकिन...।"

"बेमतलब में ही भावुक होने की जरूरत नहीं है श्वेता। इस सच्चाई

को स्वीकार कर लो कि तुम्हारे मंगेतर रवि गोयल का कत्ल हो गया था और उसके शरीर का अन्तिम संस्कार कर दिया गया था। रवि ने बी०टेक० किया था और विप्रो कम्पनी में कम्प्यूटर इंजीनियर की सर्विस कर रहा था। तमाम नॉलेज होने पर भी क्या वो कम्पनी मुझे रवि वाली सर्विस दे सकती है? रवि की मार्कशीट्स, डिग्री का मैं इस्तेमाल कर सकता हूं क्या? इस देश का कानून या संविधान मुझे रवि गोयल मान लेगा क्या? रवि अब एक ख्वाब है, जिसे तुम्हें भूलना होगा। मैं भी भूलने की चेष्टा कर रहा हूं—ताकि अपने माता-पिता की सेवा करके पुत्र-धर्म का दायित्व निभा सकूं। मेरे मां-बाप को मोन्टी चाहिये, रवि नहीं। रवि के नाम से इन्हें पीड़ा होती है। ये सच्चाई भी है कि मेरे जिस्म में इन्हीं का खून और दूध गर्दिश कर रहा है। प्यार का मतलब कुछ पाना ही नहीं, बल्कि त्यागना भी है।"

"रवि...आई मीन मोन्टी ठीक ही कह रहा है श्वेता...।" केशव दोनों के नजदीक आकर बोला, "...अब ये मोन्टी है—नवीन और रेखा का बेटा। सेन्टीमेंट्स से बाहर निकलो। मोन्टी जब युवा होगा, तब तुम अधेड़ उम्र की हो चुकी होगी। शायद तुममें तब मां बनने के गुण भी ना रहें। फिर...शादी के दस वर्ष पश्चात् मोन्टी तो युवक ही रहेगा, लेकिन तुम बूढ़ी हो चुकी होगी। लोगों की नजर में ही नहीं, तुम दोनों की नजर में भी तुम्हारी जोड़ी बेमेल होगी। वैसे भी मोन्टी का मन अपने माता-पिता की सेवा करते हुये नये सिरे से जिन्दगी जीने का है। तुम इसे मोन्टी या अपने अच्छे मित्र के रूप में ही देखो—इसी में समझदारी है। चलो, उठकर अपनी सीट पर बैठो—।"

श्वेता चुपचाप उठकर सोफा चेयर पर जा बैठी—लेकिन उसने कनखियों से मोन्टी को देखना बन्द नहीं किया।

(नोट—कृपया मोन्टी के बारे में सविस्तार जानने के लिये 'केशव पण्डित' द्वारा रचित और 'तुलसी साहित्य पब्लिकेशन्स' द्वारा प्रकाशित उपन्यास 'घुंघरू बान्ध नाचेगा मुर्दा' पढ़िये।)

मोन्टी के माता-पिता नवीन और रेखा सोफिया के कहने पर सोफा चेयर्स पर विराजमान हो चुके थे।

"पण्डित जी...।" मोन्टी केशव का हाथ पकड़कर बोला, "मैं एक जरूरी काम से आपके पास आया हूं...।"

"हां, बोलो...मोन्टी...।"

"नये सिरे से जिन्दगी जीनी है—सो पढ़ाई भी करनी होगी। भले ही सारी पढ़ाई याद है—लेकिन प्रि-नर्सरी से लेकर ग्रेजुएशन तक पढ़ना है। फिर सोचूंगा कि करियर बनाने के लिए कौन-सी लाइन पकड़नी है। मैं किसी अच्छे स्कूल मे एडमिशन लेना चाहता हूं। आप तो जानते ही हैं कि स्टैन्डर्ड वाले स्कूलों में सोर्स और डोनेशन के साथ-साथ पेरेन्ट्स का इन्टरव्यू भी लिया जाता है। मम्मी-पापा तो ज्यादा पढ़े-लिखे नहीं हैं। सो आप ही इस प्रॉब्लम को सोल्व कर सकते हैं—।"

"अवश्य...क्यों नहीं...?" केशव मोन्टी के सिर पर स्नेह से हथेली फिराते हुये बोला, "पहले चाय और नाश्ता ले लेते हैं। फिर किसी अच्छे स्कूल में चलकर तुम्हारा एडमिशन करा देते हैं। तुम्हारी फीस भी माफ हो जायेगी और सरकार की तरफ से आने वाली वजीफे की रकम भी मिलती रहेगी। तुममें इतनी काबिलियत है कि एक-एक वर्ष में कम-से-कम दो-दो क्लासेज पास करते रहोगे। बहुत कम उम्र में ही तुम अपनी एजुकेशन कम्पलीट कर लोगे।"

"देखते हैं...।" मुस्कराकर बोला मोन्टी, "क्या होता है...?"

❑❑❑

❑❑❑

कमरे में सिगरेट का धुआं भरा हुआ था।

शराब के दौर चल रहे थे।

महावीरा गिलास से...तो क्रान्ति सीधे-सीधे बोतल से व्हिस्की गटक रही थी।

महावीरा मौका मिलने पर चोर दृष्टि से क्रान्ति को, विशेषकर उसके उन्नत वक्ष को, देखकर ठन्डी आह-सी भर लेता—इतनी हिम्मत कहां कि खुलकर देख सके या क्रान्ति से बोल सके कि उसकी खूबसूरती और हाहाकारी रूप-यौवन पर इतना मर-मिटा है कि उसके इशारे पर कुत्ते की मानिन्द उसके पैरों के तलुएं चाटने में भी अपनी खुशकिस्मती समझेगा।

"व्हिस्की का मजा लिया जा रहा है...भई...।" कहते हुये सोनू कमरे में प्रविष्ट हुआ और खाली कुर्सी पर बैठने पर उसने महावीरा

को पैग बनाने का इशारा किया।

मुम्बई के डॉन की इतनी हिम्मत कहां कि वो इन्कार या ना-नकुर कर सके। अपना गिलास मेज पर रखकर सोनू के लिये पैग बनाने लगा।

"केशव के नौकर मुंशी होशियार चन्द से कोई काम की जानकारी मिली सोनू–?"

"मुंशी जैसे मामूली आदमी को शीशे में उतारना कोई बड़ी बात नहीं थी मेरे लिये...।" सोनू ने क्रान्ति के गुलाबी व रसीले होठों में फंसी सिगरेट निकालकर कश लगाया और धुआं महावीरा के चेहरे पर छोड़कर बोला–"महावीरा के आदमियों ने मवालियों के रूप में उसे परेशान किया–उसकी पिटाई भी की थी। मैंने वहां पहुंचकर गुन्डों की नकली पिटाई की और उन्हें इशारा करके भगा दिया था। मुंशी ने मेरा शुक्रिया अदा किया था–वो मेरा आभारी हो गया था। मैंने अपना परिचय प्रेस रिपोर्टर के रूप में दिया था और स्वयं को केशव पण्डित का बहुत बड़ा प्रशंसक भी बतलाया था। रेस्टोरेन्ट में ले जाकर मुंशी को पनीर के पकौड़े और रसगुल्ले खिलाये। फिर इस तरीके से केशव के बारे में पूछताछ की कि मुंशी को जरा-सा भी संदेह ना होने पाये। अपना और तुम्हारा जिक्र किया और ये भी बोला था कि केशव पण्डित सोनू-क्रान्ति को छोड़ेगा नहीं–वो कोई-ना-कोई जुगाड़ करके दोनों को पकड़ ही लेगा। तब मुंशी ने बताया कि केशव ने कालिका और अमरीक सिंह के रूप में क्रान्ति और सोनू को जख्मी करके उनके जिस्म में ट्रांसमीटर्स फिट करा दिये थे। पहले तो ट्रांसमीटर्स ने सिग्नल देना बन्द कर दिया था लेकिन फिर ट्रांसमीटर्स सिग्नल देने लगे और मालूम हुआ कि क्रान्ति और सोनू अमेरिका पहुंचे हैं और वहां के स्वेट नगर में हैं–यानि अपनी चाल कामयाब। चांगू-सांगू को क्रान्ति और सोनू समझा जा रहा है। खैर, केशव को चार मुकदमें लड़ने हैं–इसलिये उसने अपने बेटे आशीर्वाद और असिस्टेन्ट करतार सिंह को अमेरिका भेजने का प्लान बनाया। आशीर्वाद और करतार सिंह आज शाम की फ्लाइट से अमेरिका जा रहे हैं–अपनी समझ में हम दोनों को पकड़ने के लिये...।"

"गुड...वैरी गुड...!" बोलकर क्रान्ति ने बोतल से घूंट भरी और सोनू से सिगरेट लेकर कश मारने लगी।

सोनू ने महावीरा से पैग लिया और व्हिस्की सिप करके बोला–"अब तुम्हें अमेरिका जाना है क्रान्ति–।"

"मुझे...?" चौंककर क्रान्ति सोनू को प्रश्न-सूचक दृष्टि से देखने लगी।

"हां, तुम्हें...।" कहने पर सोनू मुस्कराया।

"ले...लेकिन...किसलिये सोनू? मुझे वहां जाकर करना क्या है–?"

❑❑❑
❑❑❑

केशव के गुरु रमाकान्त की बेटी माधवी मवाली युवक के भेष में थी।

काली जींस के साथ पीले रंग का जालीदार बनियान और ऊपर लाल रंग की शर्ट। उन्नत वक्ष को छिपाने के लिये उसने कपड़े की खास किस्म की पट्टी को सीने पर कसा हुआ था और ऊपर से काले रंग का ढीला-सा कोट भी पहना हुआ था, जो कि इतना छोटा था कि शर्ट बाहर निकली हुई थी। सिर पर जो विग थी, उसके बाल हल्के घुंघराले और दो-तीन इंच लम्बे ही थे।

नाक के नीचे और काली लिपस्टिक से काले किये गये होंठ के बीच मोटी मूंछ चिपकी हुई।

उसने मेज पर जो काला बैग रखा हुआ था, उसके भीतर हैन्डीकैम छिपा हुआ था, जिसका लैंस एक छोटे छिद्र से झांकते हुये उस क्लब के दृश्यों को देख रहा था, जिसमें शराब के साथ-साथ खुले आम स्मैक, कोकीन, अफीम, चरस, सुल्फा और नशे के इंजेक्शन बिक रहे थे–जबकि लाइसेंस सिर्फ बार का था, यानि वहां सिर्फ शराब ही बेची जा सकती थी।

मुम्बई में बार-बालाओं को प्रतिबन्धित किया जा चुका था, लेकिन फिर भी वहां गोल स्टेज पर दो अर्धनग्न युवतियां अश्लील इशारों के साथ अश्लील किस्म का डांस कर रही थीं और मनचलों से नोट भी खींच रही थीं।

माधवी का समय खराब ही चल रहा था–तभी उसकी नकली

मूंछ कोल्ड ड्रिंक के गिलास से टकराकर आधी उतर गई और क्लब में तैनात किये गये दो दर्जन गुण्डों में से एक ने इस बात को नोट कर लिया। उसने धीमे से अपने साथी को कोहनी मारी और माधवी की तरफ इशारा करके फुसफुसाया "उसे देखो। मूंछ उतर गयेली। अपुन कू कोई पुल्लिस वाला मालूम पड़ रेला है। इसकू चैक करने का बाप। मेज पे जो बैग रखेला है, उसमें कैमरा बी हो सकता है। फिल्मों में दिखलाते बी हैं। अगर ये क्लब के खिलाफ सबूत ले गयेला तो बहोत बड़ी गड़बड़ हो जायेगी।"

"तो क्या करने का है बीडू...?"

"पकड़ने का उसकू और अच्छन उस्ताद के हवाले करने का...अरे...वो उठके भाग रेला है। शायद उसकू मालूम पड़ गयेला कि वो अपुन की नजरों में आ गयेला है। जाने कू नेई देने का...पकड़ के अच्छन उस्ताद के पास लेके चलने का...।"

दोनों गुन्डे माधवी की तरफ झपटे।

वास्तविकता ये थी कि माधवी ने थम्स अप की बोतल के साथ एक व्हिस्की का क्वार्टर भी मंगवाया था, लेकिन बड़ी ही सफाई के साथ व्हिस्की को मेज के नीचे गिराकर और गिलास में खाली थम्स अप डालकर सिप कर रही थी। अचानक ही उसे आभास हुआ कि आधी मूंछ उतरकर लटक गई है। सकपकाकर मूंछ को दुरुस्त कर रही थी कि कल्लू और फत्तू नामक गुन्डों पर दृष्टि पहुंच गई और वह समझ गई कि उन दोनों को उस पर संदेह हो गया है—सो कैमरे वाला बैग उठाकर भागी।

"उस काले बैग वाले कू पकड़ने का ओये लल्लन।"

"वो अपुन के अड्डे की जासूसी कर रेला है बीडू...।"

कल्लू व फत्तू की आवाज पर मेन गेट पर खड़ा गुन्डा पहले तो बौखलाया, फिर उसने माधवी को पकड़ने की चेष्टा की।

झुकाई देकर माधवी ने स्वयं को बचा लिया और मेन गेट से बाहर भी निकल ली, लेकिन उसकी विग लल्लन नामक गुन्डे के हाथों में पहुंच गई और लल्लन चिल्लाकर बोला—"ये छोकरा नहीं, छोकरी है बाप। नकली और छोटे बाल लगा के आयेली थी। उसके असली बाल बड़े

हैं...छोकरियों की माफिक। अपुन कू अखबार या न्यूज चैनल की रिपोर्टर लग रेली है बाप। एक बार अखबार या टी०वी० पे अड्डे के बारे असलियत बतला दी गई तो फजीता होना इच होना है। जिन पुल्लिस वालों के साथ अच्छन उस्ताद ने सैटिंग की है, वो बी कुछ नीं करने कू सकते। सरकार का डन्डा होयेंगा और ये अड्डा सील हो जायेगा। उस्ताद समेत हम सब्बी लोग अन्दर होंगे। जमानत बी नेई होयेंगी बाप। पकड़ने का उसकू। बाइक पे बैठके भाग रेली है। जीप निकालने का और पीछा करके उसकू पकड़ने का...।"

अड्डे के बाहर ही लाल रंग की जीप खड़ी थी।

कल्लू, फत्तू और लल्लन समेत आठ गुन्डे उस खुली जीप में सवार हुये। कल्लू ने जीप स्टार्ट की और गियर चेंज करके और जबड़ों को कसकर बजाज पल्सर बाइक पर आंधी की मानिन्द जा रही माधवी के पीछे जीप को तूफान बनाकर दौड़ा दिया।

बाइक पर सवार माधवी ने बैक व्यू मिरर में लाल जीप को और उसमें सवार आठों गुन्डों को देखा तो बाइक की स्पीड साठ से सौ पर पहुंचाकर बुदबुदाई—"अच्छन के गुन्डे तेरे पीछे लग गये हैं माधवी। उनके हाथों में लोहे की रॉड, हॉकी, मोटर साइकिल की चेन दिखलाई पड़ रही है। चाकू और रिवॉल्वर भी हो सकते हैं। अगर तू पकड़ी गई तो ना जाने क्या हश्र होगा? रिस्क उठाकर मेहनत से तैयार की गई मूवी भी हाथ से निकल जायेगी। आगे रास्ता सुनसान है और करीब कोई पुलिस स्टेशन भी नहीं है। हेल्प के लिये किसी मोबाइल पर कॉन्टेक्ट भी नहीं कर सकती। आधा मिनट के लिये भी बाइक रोकना खतरनाक हो जायेगा। किसी-ना-किसी तरह पुलिस स्टेशन पहुंचना होगा या फिर गुन्डों को डॉज देकर चैनल के स्टूडियो पहुंचना है...।"

धांय...धांय...धांय...।

अचानक ही पीछा कर ही जीप से गोलियां चलने लगीं।

पहले बौखलाई माधवी, फिर स्वयं को सम्भाला और गोलियों से बचने के लिये बाइक को सड़क के दायीं तरफ तो कभी बायीं तरफ ले जाने लगी।

लेकिन बेड लक।

धांय के साथ ठांय की आवाज हुई और गोली ने पिछले वाले टायर को शहीद कर दिया।

तेज रफ्तार से दौड़ती बाइक बुरी तरह लहराई। बौखलाई माधवी चेष्टा करके भी सन्तुलन और नियन्त्रण ना रख पाई—परिणाम स्वरूप बाइक सड़क पर गिरी और कर्कश आवाज के साथ सड़क पर रगड़ खाने के कारण चिंगारियां सी छोड़ती चली गई।

माधवी के बायें कन्धे व बायीं पसलियों में चोट आई और इसी के साथ बाइक के नीचे दबे बायें पैर की जींस फट गई और पैर की त्वचा भी जगह-जगह से छिल गई।

बाइक के स्थिर होने पर उसने कराहते हुये किसी तरह स्वयं को बाइक के नीचे से निकाला—लेकिन तब तक देर हो चुकी थी।

लाल जीप वहां आकर रुकी और आठों गुन्डों ने धड़ाधड़ कूदने पर माधवी को घेर लिया।

❑❑❑

❑❑❑

रिस्टवाच रूपी ट्रांसमीटर का सुईनुमा नन्हा-सा एरियल बाहर खींचने पर क्रान्ति ने उसे ऑन किया, फिर कलाई समेत ट्रांसमीटर को होठों के करीब लाकर बोली—"हैलो...व्हाइट कैट कॉलिंग...व्हाइट कैट कॉलिंग...।"

"रेड चिकन दिस साइड...ओवर...।"

ट्रांसमीटर के नन्हें स्पीकर से निकलने वाली आवाज सिंगही के उन दोनों आदमियों चांगू-सांगू में से चांगू की थी, जिन के जिस्म में क्रान्ति और सोनू वाले ट्रांसमीटर फिट कर दिये गये थे।

"इस वक्त तुम दोनों अमेरिका में हो ना? ओवर—।"

"यस, मैडम। हम दोनों अमेरिका में हैं। हमारे लिये क्या हुक्म है मैडम? ओवर...।"

"ध्यान से मेरी बात सुनो...।" बोतल से व्हिस्की की घूंट भरकर बोली क्रान्ति, "...तुम दोनों को व्हाइट कैट और व्हाइट डियर समझकर केशव पण्डित अपने बेटे आशीर्वाद पण्डित और चेले करतार सिंह को अमेरिका भेज रहा है—।करतार सिंह भी कम नहीं है—लेकिन आशीर्वाद

पण्डित बहुत ही खतरनाक है। केशव पण्डित तो सिर्फ दिमाग से ही मारता है, लेकिन वो हाथ-पैरों से भी मारता है। उसने शाओलीन नाम के गुरु से मार्शल आर्ट के साथ-साथ बौद्ध लामाओं वाली कई प्राचीन विद्यायें भी सीखी हुई हैं। वो अंगूठा कम्पन विधि से करंट के तेज झटके दे सकता है। मुंह से भयानक आवाज निकालकर सामने खड़ी सेना को बेहोश तक कर सकता है। किसी को कोमा की हालत में पहुंचा देना तो उसके लिये आसान काम है...।"

"लेकिन...।"

"हां, बोलो...रेड चिकन। क्या कहना चाहते हो? ओवर—!"

"महामहीम जी ने तो कहा था कि केशव पण्डित हमारे पीछे लगेगा और पकड़ेगा। ओवर—।"

"केशव पण्डित को दूसरे काम निबटाने हैं—इसीलिये वो आशीर्वाद और करतार सिंह को भेज रहा है। लेकिन तुम दोनों को उनके हाथ नहीं लगना है। मैं भी अमेरिका आ रही हूं। ट्रांसमीटर के माध्यम से हमारे बीच सम्पर्क बना रहेगा। अभी तो तुम दोनों को आशीर्वाद और करतार सिंह को छकाना है। उनके हत्थे नहीं चढ़ना है। इसका तरीका ये है कि तुम्हें एक स्थान या एक शहर में ज्यादा देर तक नहीं टिकना है। तुम्हें एक शहर में चन्द घन्टे गुजारकर दूसरे शहर में पहुंच जाना है। ये काम तुम दोनों को बाई प्लेन करना है। इस बात का ध्यान रखना है कि तुम्हारी फ्लाइट के बाद अगले वाले शहर के लिये अगली फ्लाइट कई घन्टे बाद हो। मान लो कि तुमने ए सिटी से बी सिटी के लिये फ्लाइट पकड़ी तो बी सिटी के लिये अगली फ्लाइट कई घन्टे बाद हो। ये सम्भव ना हो तो तुम दूसरे शहर की बजाय दूसरे देश के लिये उड़ान भर सकते हो। अमेरिका महाद्वीप है। उसके भीतर कई छोटे-बड़े देश हैं। दूसरी फ्लाइट में कई घन्टे का अन्तराल होगा तो आशीर्वाद और करतार सिंह घन्टों बाद ही उस शहर या देश में पहुंच सकेंगे। तुम्हें मालूम होना चाहिये कि अगली फ्लाइट कितने बजे आयेगी। उससे आधा-पौना घन्टे पहले ही तुम्हें वहां से निकल लेना है। इस तरह तुम दोनों आशीर्वाद और करतार सिंह को अपने पीछे लगाये रखोगे और उनकी पकड़ाई में भी नहीं आओगे। मेरी बात समझ गये कि नहीं? ओवर—!"

"बिल्कुल समझ गया मैडम। जैसा आपने कहा है, हम वैसा ही

करेंगे। हम आशीर्वाद पण्डित और करतार सिंह को अपने पीछे लगाये रखेंगे और उनके हाथ भी नहीं लगेंगे...ओवर।"

"गुड...वैरी गुड...अमेरिका पहुंचने पर मैं तुम दोनों से कॉन्टेक्ट बनाये रखूंगी। ओवर...ओवर एण्ड ऑल...।" कहने पर क्रान्ति ने सुई जैसे एरियल को भीतर करके ट्रांसमीटर बन्द कर दिया और महावीरा की बगल में बैठकर व्हिस्की चुसक रहे सोनू को देखकर मुस्कराई।

"गुड...जानेमन...।" सोनू ने हाथ बढ़ाया और तर्जनी उंगली क्रान्ति के गुलाबी व रसीले होठों और बगुले के से सफेद दांतों पर फिराते हुये बोला, "...तुमने चांगू को ठीक से समझा दिया है। अब मेरे बतलाये प्लान के मुताबिक तुम्हें भी अमेरिका पहुंचना है और अपने काम को अंजाम देना है। मुझे तुम पर पूरा भरोसा है कि तुम कैसे भी करके उस काम को कर लोगी। बस, देखने वाली बात ये है कि तुम कामयाबी हासिल करने में कितना वक्त लेती हो—?"

❑❑❑
❑❑❑

खाली हो चुकी रिवॉल्वर को पैन्ट की जेब में ठूंसने पर कल्लू नामक गुन्डे ने माधवी की फटी जींस से झांकती गोरी, चिकनी टांग को यूं ही देखा, जैसे कोई कुत्ता हड्डी को देखकर लार टपकाता है।

"सिर्फ चेहरा इच खूबसूरत नेई है...जिस्म बी लाजवाब है। ताजमहल की माफिक गोरा, चिकना और झकास हुस्न है बीड़ू। देखके ही मुंह में पानी आ रेला है...।"

"पैले इसके बैग कू चैक करने का कल्लू भाई। मैं बैग कू खोल के देख लेता हूं...।"

"बैग कू बी खोल के देख लेने का रे सत्ते। साथ इच इसके कपड़े बी खोल के देखने का है कि इसने भीतर लूटने के लायक क्या-क्या माल छिपायेला है। पकड़ के उस पार्क में लेके चलने का बीड़ू। यूं तो अपुन रोजाना इच छोकरियों के साथ मुंह काला करते हैं—पन उनमें और इस फुलझड़ी में बहोत फर्क है। वो ससुरी गुड़ का पानी तो ये रसमलाई है। नसीब से इच ऐसा माल चखने कू मिलता है। पकड़ के उस पार्क में लेके चलने का...।"

"ऐ...ऐ...खबरदार...।" सातों गुन्डों को अपनी तरफ लपकते

देख बौखलाकर बोली माधवी, "मुझे कोई मामूली लड़की मत समझना। दिमाग के जादूगर केशव पण्डित का नाम सुना है ना? मैं उनकी धर्म-बहन हूं। मुझे हाथ भी लगाया तो केशव भाई तुम्हारे हाथ-पैर तोड़...अरे...अरे...छोड़ो मुझे...ये क्या करते हो? बचाओ...हेल्प प्लीज...ऊं...ऊं...ऊं—।"

तलवार और हॉकी वाले दो गुन्डों ने मजबूती से माधवी की बांहें पकड़ लीं, जबकि कल्लू उसके होठों पर हथेली का ढक्कन चिपकाकर सर्प-सा फुंफकारा—"अपुन अच्छन उस्ताद के चेले हैं और अच्छन उस्ताद दुबई वाले भाई का खासमखास हैं। किसी पण्डित-वण्डित से नेई डरते अपुन लोग। वइसे अपुन कू मालूम है कि केशव पण्डित बहोत खतरनाक बन्दा है—पन उसकू कुछ मालूम इच नेई पड़ेगा तो वो करेगा इच क्या? तेरे कू पार्क में ले जाके अपुन लोग बारी-बारी से तेरी इस गदगई जवानी से खेलेंगे—मुंह काला करेंगे तेरे साथ...क्या? फिर तेरे कू खल्लास करके उदर इच खड्डा खोद के जिन्दा इच दफन कर देने का...क्या—?"

माधवी की बड़ी-बड़ी आंखें मारे भय व खौफ के फैलकर और भी बड़ी-बड़ी हो गईं। चार गुन्डों ने उसे दबोचकर उठा लिया तो वह बन्धन-मुक्त होने को मचलने लगी और होठों पर कल्लू की हथेली चिपकी होने पर भी आवाज निकालने की चेष्टा करने लगी।

"ऐ...अगर अपनी हड्डी-पसलियां नहीं तुड़वाना चाहते हो तो माधवी को छोड़ दो...।"

सभी गुन्डे चौंके और बौखलाये—चारों तरफ निगाहें दौड़ाकर बोलने वाले को खोजने लगे—तो काले रंग की बाइक से एक खूबसूरत युवक उतरता दिखलाई दिया, जिसके लम्बे व तन्दुरुस्त जिस्म पर नीली डेनिम की जींस तथा लाल टी-शर्ट थी।

"प्लीज, हेल्प मी...।" कल्लू की हथेली को होठों से हटाकर माधवी ने आर्तनाद-सा किया, "...ये गुन्डे मेरी इज्जत से खेलकर मुझे जिन्दा ही दफन करने का इरादा रखते हैं...।"

"हमारे होते हुये कोई माई का लाल तुम्हारा बाल भी बांका नहीं कर सकता...माधवी...।" बाइक से उतरकर और उसे स्टैन्ड पर खड़ी करते हुये वो अजनबी विचित्र-से, सर्द से लहजे में बोला, "...तुम्हारे जिस्म पर बाल बराबर खरोंच पड़ने से पहले हमारे जिस्म के टुकड़े-टुकड़े

नहीं हो जायेंगे। तुम्हारे लिये जान भी चली जाये तो हम इसे अपनी खुशकिस्मती ही समझेंगे...।"

माधवी ने चौंककर उसे देखा और बड़बड़ाई, "ये तो मजनुओं वाली बोली बोल रहा है। शक्ल-सूरत से सिरफिरा भी मालूम नहीं पड़ता। आखिर है कौन ये–?"

□□□

□□□

रिस्टवाच से निकलकर नन्हीं-सी सुई जब बार-बार केशव की कलाई में चुभने लगी तो उसकी नींद टूटी और वह सोफिया की मखमली बांह को पीठ पर से हटाकर उठ बैठा।

सोफिया की भी नींद उचट गई। वह भी उठ बैठी। उसने ठोडी को केशव के कन्धे पर टिका दिया और उसकी पीठ पर उन्नत वक्ष का हल्का-सा दबाव डालकर पूछा–"क्या हुआ डियर...उठ क्यों गये–?"

"ट्रांसमीटर सिग्नल दे रहा है। शायद आशीर्वाद कॉन्टेक्ट करना चाहता है...।" कहने पर केशव ने रिस्टवाच-रूपी ट्रांसमीटर की साइड में लगे नन्हें-से गोल बटन को अंगूठे व तर्जनी के नाखूनों से पकड़कर खींचा तो एक इंच लम्बा सुई जैसा एरियल बाहर निकल आया। एक नन्हें से बटन को दबाकर और कलाई समेत ट्रांसमीटर को मुंह के पास लाकर बोला–"के०पी० स्पीकिंग...ओवर...।"

"सादर चरण स्पर्श...ए०पी० बोल रहा हूं...ओवर...।" ट्रांसमीटर के नन्हें-से स्पीकर से मक्खी की भिनभिनाहट जैसी आवाज उभरी, जोकि आशीर्वाद की थी।

"क्या रिपोर्ट है ए०पी०? ओवर...।"

"हम लोग दोनों शिकारों के ठिकाने मैक्सिको सिटी पहुंचे थे, लेकिन हमारे पहुंचने से घन्टाभर पहले ही वो फ्लाइट पकड़कर ओटावा पहुंच गये। मैं और पटियाला वाले अंकल घन्टाभर पहले ही ओटावा पहुंचे तो दोनों शिकार आधा घन्टे पहले ही फ्लाइट पकड़कर निकल गये। नक्शे के मुताबिक वो गॉड थाब की तरफ बढ़ रहे हैं। जबकि ओटावा से गॉड थाब के लिये अगली फ्लाइट पांच घन्टे बाद है। ऐसा लगता है कि दोनों शिकार जानबूझकर ऐसा कर रहे हैं। शायद उन्हें

मालूम हो गया है कि हम उनके पीछे लगे हुये हैं। ओवर...।"

"हां, हो सकता है कि दोनों को किसी तरीके से तुम दोनों के बारे में मालूम हो गया हो। ये भी हो सकता है कि उनका कोई आदमी तुम्हें और के०एस० (करतार सिंह) को वाच कर रहा हो और दोनों शिकारों को मैसेज पास कर रहा हो। सो तुम दोनों को चौकस हो जाना चाहिये। आसपास नजरें दौड़ाकर देखो कि कोई तुम्हारे पीछे तो नहीं लगा है। अगर लगा हो तो उससे छुटकारा पा लो। दोनों शिकार सावधानी या चालाकी के तौर पर ही एक जगह टिक ना पा रहे होंगे। वैसे तुम समझदार हो ए०पी०। तुम अपनी सूझ-बूझ से काम करो और शिकारों को दबोचने की चेष्टा करो। अगर कोई दिक्कत हो, या कोई सलाह-मशविरा करना हो तो मुझसे कॉन्टेक्ट कर लेना और कोई बात...ओवर–।"

"नहीं...और तो कोई बात नहीं है, पूजनीय के०पी० जी। सो मैं आज्ञा चाहूंगा...सादर चरण स्पर्श...।"

और इसी के साथ दूसरी तरफ से आशीर्वाद ने ट्रांसमीटर ऑफ कर दिया।

"आशीर्वाद से बात हो रही थी...?" प्रश्न के साथ ही सोफिया के यौवन-कपोत केशव की पीठ के साथ छेड़छाड़ करने लगे।

ट्रांसमीटर घड़ी को उतारकर केशव ने बेड की पुश्त पर रख दिया और रुख बदलकर सोफिया को बाहों में भर लिया। उसके नरम, गुदाज व रसीले होठों को चूमकर बोला–"...गाउन में कैद तुम्हारे कबूतरों ने मेरी पीठ पर दस्तक देते हुये ये चुगली खाई कि वो आजाद होकर इश्क की डाल पर पंख फड़फड़ाना चाहते हैं और मिलन के आसमान में उड़ान भरने को उतावले हैं...।"

कश्मीरी सेब जैसे कपोल से केशव के होठों को सहलाते हुये और सिसकारियां-सी लेते हुये फुसफुसाई धरती की अप्सरा–"...दिनभर तुम कोर्ट में रहे। उसके बाद मुकदमें के सम्बन्ध में भागा-दौड़ी करते रहे। बारह बजे लौटे तो थके हुये थे। डिनर के बाद बेड पर लेटते ही सो गये थे। मैंने तुम्हें डिस्टर्ब करना ठीक नहीं समझा। लेकिन तुम अब जाग गये हो और थके हुये भी नहीं लग रहे हो। फिर क्यों ना हम प्यार के समन्दर में उतरकर मिलन की गहराई तक तैरते चले जायें? क्या ख्याल है जनाब का...?"

"भूखे बिल्ले के सामने रत्न जड़ित सोने के चमचमाते कटोरे में मलाई भरी हो और कटोरा मलाई चट करने की ऑफर रखे...कोई नादान ही ऐसी शानदार ऑफर को ठुकरायेगा... ।" गुलाबी रंग की झीनी-सी नाइटी के बटन खोलते हुये फुसफुसाया केशव, "...आओ, हम रोमांस की किश्ती में सवार होकर धैर्य की लहरों को चीरते हुये जी भरके तैराकी करें। हमारा ये सुहाना सफर मिलन के दूसरे किनारे पर पहुंचकर ही सन्तुष्टि की सांस लेगा।"

एक-एक करके छोटे-बड़े वस्त्र हवा में उड़ते हुये फर्श पर इधर-उधर गिर रहे थे।

गर्म, भभकती सांसों से कमरे का टेम्प्रेचर निरन्तर बढ़ता जा रहा था और मीठी-मीठी सिसकारियों से वातावरण नशीला-सा हुआ जा रहा था।



"अबे ओये चिकने... ।" कल्लू नामक गुन्डा दूसरे गुन्डे से लोहे की रॉड लेकर खूंखार लहजे में बोला, "...खुद को दबंग का सलमान खान समझ रेला है क्या? ओह...समझा अपुन...इस सुन्दरी पे रौब जमाने के वास्ते फिल्मी डायलोग मार रेला है। पन अपुन के काम में टांग नेई अड़ाने का...नेई तो हीरो बनने के चक्कर में जीरो बनके रह जायेगा। तेरे कू इतनी मार पड़ेगी कि कोई बी हड्डी-पसली साबुत नेई बचेगी...क्या... ।"

"अच्छा...?" नीली जींस व लाल टी शर्ट वाला कल्लू के समक्ष पहुंचकर ठहरे हुये से लहजे में बोला, "...इतनी जान है तुझमें और तेरे इन बाकी आदमियों में? जरा मैं भी तो देखूं कि तुम लोगों में कितना दम है?" कहने पर उसने कल्लू के सीने पर हथेली रखकर उसे पीछे हटा दिया और माधवी से सम्बोधित होकर बोला—"...तुम जरा-सी भी चिन्ता मत करो माधवी। मेरे होते कोई भी माई का लाल तुम्हारा बाल बांका नहीं कर सकता। ऐसा करो कि तुम अभी चली जाओ यहां से। इन गुन्डों से मैं निपट लूंगा... ।"

"न...नहींऽऽऽ।" अचानक ही उसके पीछे की तरफ देखती हुई

माधवी की आंखें फैलकर दुगनी हो गईं और मुख से भय मिश्रित चींख उबल पड़ी।

तड़ाक...की आवाज के साथ लाल टी शर्ट वाले के सिर पर लोहे की रॉड का भरपूर प्रहार हुआ, जोकि कल्लू के हाथों में थमी हुई थी।

आशा के विपरीत उसने जख्मी सिर तक हाथ भी नहीं पहुंचाये। खून से सने चेहरे के साथ वो कल्लू की तरफ पलटा और तड़पने या कराहने की बजाय वो मुस्कराया, फिर हंसने लगा वो—वह भी इस अन्दाज में कि मानों कोई मजेदार चुटकुला सुन लिया हो।

सकपकाया कल्लू और हैरत में पड़कर आंखों को सिकोड़े हुये बोला, "ओये...तू पागल तो नेई है बीड़ू? या सिर पे डन्डा पड़ने से तो तेरा भेजा नेई फिर गयेला है? तेरे कू तो चींखना-चिल्लाना चाहिये था—पन तू तो हंस रेला है... ।अबे...ये क्या कर रेला है...छोड़...डन्डा छोड़ने का...आ...आह... ।"

लाल टी शर्ट वाले ने कल्लू से डन्डा छीना और उसके कन्धे पर ऐसा प्रहार किया कि कन्धे की हड्डी चकनाचूर हो गई।

सड़क पर गिरकर और हाथ से जख्मी कन्धे को दबोचकर मारे पीड़ा के कराहते हुये कल्लू सड़क पर बार-बार सिर पटकने के साथ ही एड़ियों को भी रगड़ने लगा।

"इसने अपुन के कल्लू भाई पे बार कियेला... ।" तलवार से लैस एक गुन्डा आग-बबूला होकर चींखा, "...छोड़ने का नेई इसकू। खल्लास देने का। उस फुलझड़ी पे बी नजरें रखने का...वो कल्टी नेई मारने पाये। उसकू छोड़ने का नेई। वो अपुन के अड्डे की जासूसी कर रेली थी। उसकू सबक सिखलाने का है। पैले उसकी इज्जत लूटने का...उसके साथ मुंह काला करने का। फिर खल्लास करके जिन्दा इच जमीन में गाड़ देने का। तुम लोग उस हसीना कू पकड़ो। इस हीरो से अपुन अकेला इच निपट लेगा... ।"

फिर दोनों हाथों से तलवार को हवा में लहराते हुये और मुंह से किलकारी-सी निकालते हुये लाल टी शर्ट वाले पर झपट पड़ा।

ना तो वह किंचित मात्र भी विचलित हुआ और ना ही अपने स्थान से हिला ही—मुस्कराते हुये उसने दायें हाथ को घुमाया।

झनाक...की आवाज के साथ रॉड ने तलवार को दो टुकड़ों में

विभक्त कर दिया। टूटा हुआ हिस्सा तो गिरना था ही—हाथ में तेज झनझनाहट होने के कारण गुन्डे के हाथ से टूटी तलवार की मूठ भी छूटकर नीचे जा गिरी।

तड़ाक...तड़ाक...।

लाल टी शर्ट वाले के तेवर अचानक ही परिवर्तित हुये और वह गुन्डे के जिस्म पर लोहे की रॉड से ताबड़तोड़ प्रहार करते हुये हिंसक भाव से बोला—"माधवी की इज्जत से खिलवाड़ करने की बकवास की तूने हराम के बच्चे। जिन्दा ही दफन करने को बोला तू—वो भी हमारी मौजूदगी में? हमारे होते हुये कोई माधवी का बुरा भी सोचे तो हम उसके सिर को फाड़कर उसका दिमाग निकालकर और पैरों से कुचलकर उसका कीमा बना दें। तू तो जुबान पर माधवी के खिलाफ बकवास लाया है। तेरी बोटी-बोटी करके कुत्तों को खिला देंगे हम...।"

गुन्डों की बाहों की हड्डियां तोड़ने पर उसने उसके सिर पर करारा प्रहार किया तो सिर तरबूज की मानिन्द ही फट गया और उससे खून का फौव्वारा-सा छूट गया।

माधवी को घेरे खड़े गुन्डे पहले तो बौखलाये, फिर हॉकी, रॉड, तलवार, चाकू व मोटर साइकिल की चेन जैसे हथियारों को हवा में लहराते हुये और क्रोध से चींखते-चिल्लाते हुये लाल टी शर्ट वाले पर झपट पड़े।

लेकिन वो कतई भी नहीं घबराया। बला की फुर्ती के साथ झुकाई देकर, घूमकर, सड़क पर गिरकर और हवा में उछाल भरकर उसने स्वयं का बचाव भी किया और गुन्डों पर लोहे की रॉड से शक्तिशाली प्रहार भी किये।

गुन्डों के हाथों से हथियार और मुखों से पीड़ा युक्त चीखें निकल पड़ीं—वो सभी सड़क पर गिरकर तड़पने, चींखने और कराहने लगे।

लाल टी शर्ट वाला शायद उनकी जान नहीं लेना चाहता था, बल्कि उन्हें अपाहिज कर देना चाहता था, या फिर उनको तड़पाने का इरादा रखता था—तभी वो उसके हाथों, पैरों, पीठ, कमर व पसलियों पर रॉड के प्रहार करते हुये चींख-चींख कर बोला—"...माधवी की जान लेना चाहते थे हरामियों। माधवी पर गन्दी नजरें डाली कुत्ते के पिल्लो। तुम लोगों को ऐसी सजा देंगे हम कि अगले जन्म में भी माधवी के बारे में गलत बात नहीं सोच सकोगे।"

"प्लीज, इन्हें और मत मारिये...।" उसके पीछे आकर बोली माधवी, "...ये लोग मर गये तो आप कानून के लफड़े में फंस जायेंगे। इन्हें अपने किये की जरूरत से ज्यादा ही सजा मिल चुकी है। मैं आपकी शुक्र गुजार हूं कि आपने मेरी मदद की...मेरी इज्जत और जान बचाई। मैं नहीं चाहूंगी कि मेरे कारण आप पर कत्ल का इल्जाम लगे और आपको जेल का मुंह देखना पड़े। मैं रिक्वेस्ट करती हूं। इन्हें छोड़ दीजिये। ये लोग जिन्दगीभर के लिये अपाहिज हो चुके हैं। शायद ही कभी अपने पैरों पर खड़े हो सकें और चल सकें। प्लीज, इन्हें छोड़ दीजिये...।"

अचानक ही उसके चेहरे के भाव परिवर्तित हुये। खून से सना चेहरा क्रोध की अग्नि में तपकर भयानक सा हो चला था, वो अचानक ही यूं दिखलाई पड़ने लगा, जैसे ज्वार भाटा के पश्चात् समुद्र एकदम शान्त पड़ जाता है।

आंखों की कटोरियों से भी ज्वालामुखी का लावा विलुप्त हो गया और उनमें झील-का पानी-सा दिखलाई पड़ने लगा।

रॉड को हवा में उछालकर दूर फेंक दिया उसने और माधवी की तरफ पलटकर मुस्कराया। सिर को को झुकाकर और दायीं हथेली सीने पर रखकर अभिवादन किया, फिर बहुत ही शान्त भाव से बोला—"जैसी तुम्हारी इच्छा, माधवी...।"

"आप मुझे कैसे जानते हैं—?"

"तुम इन्डिया न्यूज चैनल की रिपोर्टर हो। रोजाना ही टी०वी० पर दिखलाई पड़ती हो। भला तुम्हें कौन नहीं जानता—?"

"ओह...तो ये बात है। आपके सिर से काफी खून बह रहा है। प्लीज, आप किसी सर्जन के पास या नर्सिंग होम चलकर मलहम-पट्टी करा लीजिये। मेरी बाइक का पिछला टायर गोली से फट गया। आपकी बाइक से चलते हैं। मैं ड्राइविंग कर लूंगी।"

❑❑❑
❑❑❑

"आज तो कयामत ही ढा रही हो जानेमन...।" बसन्ती सूट-सलवार में कमरे से बाहर निकलकर आई अपनी मंगेतर सलमा को बांहों में भरकर बोला अलफांसे, "...किस पर बिजली गिराने का इरादा है भई...?"

"तुम्हारे सिवाय भला किस पर बिजली गिर सकती है जनाब... ?" सलमा उसकी बांहों से निकलकर तथा भीनी-भीनी मुस्कान के साथ बोली, "...रेडियो स्टेशन में आज मशहूर तबला वादक उस्ताद नसीर खान आ रहे हैं और वो मेरे गाने पर संगत देंगे। लेकिन प्रोग्राम से पहले हमें रिहर्सल भी करनी है—इसलिये मुझे जल्दी ही जाना होगा। मैं किचन में जाकर नाश्ता तैयार करती हूं। नौ बजे तक रेडियो स्टेशन पहुंचना है—।"

"नौ बजे...।" अलफांसे रिस्टवाच में टाइम देखकर बोला, "...ट्रेफिक जाम होने की वजह से कई बार रेडियो स्टेशन पहुंचने में घन्टाभर लग जाता है। नाश्ते के चक्कर में तुम लेट हो सकती हो। मैं ऐसा करता हूं कि सामने वाले हलवाई के यहां से आलू-पूड़ी और जलेबियां ले आता हूं। बस, तुम तब तक चाय बना लो...।"

कहने पर अलफांसे बंगले से बाहर निकलकर हलवाई की दुकान की तरफ बढ़ने लगा। वो चन्द कदम ही चला था कि जेब से गाना उभरने लगा—"मेरी बेरी के बेर मत तोड़ो...नहीं तो कोई कांटा चुभ जायेगा...।"

उसने जेब से मोबाइल निकाला और स्क्रीन पर उभरते नम्बर को देखा। फिर रिसीव वाला हरा बटन दबाकर तथा फोन कान से लगाकर बोला—"हैलो, टोनी...।"

"नमस्कार, उस्ताद जी...।"

"नमस्कार। सुबह-सुबह ही फोन कर रहे हो—सब ठीक तो हैं ना...?"

"आपकी मेहरबानी से सब ठीक है गुरुजी।"

"नागपुर में सब ठीक तो चल रहा है ना—?"

"हां, ठीक चल रहा है। आपकी मेहरबानी से अपना काम-धन्धा ठीक-ठाक ही चल रहा है। वैसे मैं मुम्बई में ही आया हुआ हूं और होटल गोल्डन स्टार में ठहरा हूं। आपने घर आने के लिये तो मना किया है। जबकि एक जरूरी काम से मिलना है। मैं आपके बंगले के आसपास किसी पार्क वगैरा में आ जाऊं—?"

"नहीं...मैं होटल में ही आ जाता हूं। सलमा को रेडियो स्टेशन

जाना है और वो लेट हो रही है। हलवाई के यहां नाश्ता लेने जा रहा था...।"

"आप नाश्ता करके आराम से आ जाना उस्ताद जी...इतनी जल्दी वाला काम भी नहीं है। मैं रातभर का जागा हुआ हूं। आपके आने तक एक छोटी-सी नींद ले लेता हूं—।"

"नाश्ता करने में तो ज्यादा वक्त नहीं लगेगा। लेकिन होटल यहां से काफी दूर है। मैं तीन घन्टे में पहुंच जाऊंगा। तब तक तुम एक नींद मारो। फिर बतलाना कि वो कौन-सा काम है, जिसके लिये तुम्हें नागपुर से चलकर मुम्बई आना पड़ा...?"

❑❑❑

❑❑❑

उस बन्दे का नाम अमित शाह था, जिसने माधवी की इज्जत और जान बचाई थी। उसने मोबाइल फोन पर किसी मैकेनिक से बात की थी और घटनास्थल का पता बतलाकर कहा था कि माधवी की बाइक में नये टायर-ट्यूब डालकर बाइक उसके बंगले पर पहुंचा दें। फिर उसकी बाइक को माधवी ने चलाया और वो उसके पीछे बैठा था।

डॉक्टर ने जख्म गहरा बतलाकर टांके लगाये और कहा कि अत्यधिक खून बह जाने के कारण उसे खून चढ़ाया जायेगा और उसे कम से कम सुबह तक तो नर्सिंग होम में एडमिट होना पड़ेगा।

अमित शाह ने खून चढ़वाने और नर्सिंग होम में एडमिट होने से मना कर दिया था, लेकिन जब माधवी ने कहा कि उसे डॉक्टर की बात मान लेनी चाहिये तो वो फौरन ही राजी हो गया। उसने माधवी से कहा कि वो टैक्सी पकड़कर घर चली जाये, वो उसकी बाइक उसके घर भिजवा देगा—लेकिन माधवी ने घर जाने से इन्कार कर दिया और फोन करके अपने पापा रमाकान्त को बोल दिया कि न्यूज चैनल के काम से उसे मुम्बई से बाहर जाना पड़ रहा है और वो सुबह ही वापिस लौटेगी।

जिद करके अमित शाह ने बिल बनवाकर पैमेंट किया और छुट्टी लेकर माधवी के साथ अपने शानदार बंगले पर पहुंचा।

बंगले के माथे पर 'माधवी पैलेस' लिखा हुआ था। ऐसा लगता था कि हाल-फिलहाल में ही किसी पेन्टर से लिखवाया गया था।

कालबेल बजाये जाने पर एक नेपाली अधेड़ ने मेन गेट खोला, जोकि माधवी को देखकर चौंका।

माधवी उसके चौंकने का कारण नहीं समझ सकी, लेकिन शानदार हॉल में प्रविष्ट होते ही बुरी तरह चौंकी भी और मुख से सिसकारी भी छूट गई। हाल में उसकी सौ से अधिक रंगीन और ब्लैक एंड व्हाइट, छोटी-बड़ी तस्वीरे लगी हुई थीं। एक तो खूबसूरत आयल पेन्टिंग भी लगी थी, जिसका साइज पांच गुणा दस फुट से कम नहीं था।

"ये क्या हुआ साब आपको?" माधवी से पहले नौकर अमित शाह से बोल उठा, "सिर पर चोट कैसे लगी? मैं रातभर जागकर आपका इन्तजार करता रहा। कई बार फोन भी किया, लेकिन आपका फोन बन्द था। ये माधवी जी हैं ना—?"

"हां, ये माधवी ही है बहादुर काका।" रात कुछ गुन्डों ने इन पर हमला कर दिया था। उनसे भिड़न्त हो गई थी—तभी सिर में मामूली चोट लग गई...।"

"अमित जी...ये सब क्या है...?" हैरान-परेशान सी माधवी कौतूहलता के झूले-से झूलते हुये बोली, "आपके घर में मेरी फोटो...वो भी इतनी सारी...।"

"बहादुर काका घर के सारे काम करते हैं माधवी। ये खाना और नाश्ता भी अच्छा बना लेते हैं—लेकिन चाय और आमलेट बनाने में मुझे महारथ हासिल है। जो कोई भी मेरे हाथों से बनी चाय और आमलेट को चख लेता है—तारीफों के पुल बान्धता रहता है। प्लीज, पांच मिनट बैठिये। मैं गरमा-गरम चाय के साथ आमलेट भी बनाकर लाता हूं। माधवी को पानी पिलवाओ बहादुर काका...।" कहने पर अमित शाह लपकते हुये किचन की तरफ चला गया।

ठगी-सी खड़ी रह गई माधवी नौकर की तरफ पलटी और बोली, "...ये...ये सब क्या है बहादुर काका...?"

"मैं...मैं क्या कह सकता हूं मैडम जी—?"

"कह क्यों नहीं सकते हो? यहां पर मेरी इतनी सारी फोटो लगी हैं। तुम मुझे देखकर चौंके थे और फिर मेरा नाम भी लिया था तुमने।"

"आप शाब के साथ आई हैं। उन्होंने आपके लिये सिर पर चोट खाई। क्या आपको मालूम नहीं कि वो आपसे मुहब्बत करते हैं—?"

"मु...मुहब्बत...?" माधवी यूं ही चिहुंकी कि मानो गलती से दहकते अंगारे पर पैर पड़ गया हो।

"हां...मुहब्बत...प्यार। शाब ने मेरे यहां आने शे पहले ही फैक्ट्री बेच दी थी। बैंक में काफी पैशा जमा है। वो अक्सर घर में ही रहते हैं। आपकी तश्वीरों से बात करते रहते है। म्यूजिक शिश्टम पर धीमी आवाज में प्यार-मुहब्बत के गाने चलते रहते हैं। वो रोजाना आपके पाश जाते हैं...।"

"मेरे पास—? नहीं तो...।"

"वो वापिस लौटते है तो आपके बारे में बतलाते हैं। शुबह को आप घर शे कितने बजे निकलीं और कौन-कौन शे कपड़े पहने हुये थे। शाम को आप टी०वी० श्टूडियो से कितने बजे निकलीं और कितने बजे घर पहुंचीं? दिन में कहां-कहां गईं और किश-किशशे मिलीं? मैं तो यही समझता था कि आप दोनों रोजाना मिलते हैं...।"

"इसका मतलब ये हुआ कि ये अमित शाह रोजाना मुझे फॉलो करता है। मेरे घर से निकलने और घर वापिस लौटने तक मुझे वाच करता है...।" बड़बड़ाई माधवी, फिर बहादुर से बोली, "क्या मिस्टर अमित मैरिड...आई मीन शादीशुदा नहीं हैं...?"

"थे तो...।"

"थे तो...से क्या मतलब है तुम्हारा काका...?"

"शाहब एक दिन शराब पीकर आये थे। तब उन्होंने बतलाया था...।" नौकर माधवी के करीब आकर और किचन की तरफ देखते हुये फुसफुसाया-सा, "उनकी बीवी बेवफा थी। उनके दोस्त के साथ ही चक्कर चलाया हुआ था। फिर वो दोनों भाग गये थे। मालकिन घर शे नकदी और गहने भी चुरा ले गई थी। पुलिश में उन दोनों के खिलाफ रिपोर्ट भी लिखवाई थी—लेकिन दोनों का कुछ पता नहीं चला। शाहब को शदमा लगा था। उन्होंने शल्फाश की गोलियां खाकर खुदकुशी करने की कोशिश की थी—लेकिन बचा लिया गया था। बच तो गये थे—लेकिन दिमाग पे शल्फास की गर्मी चढ़ गई थी और उन्हें कई दिनों तक मेंटल हॉशपीटल में रहना पड़ा था। वहां शे लौटे तो बीवी शे नफरत हो गई थी। बीवी क्या...औरत जात शे ही नफरत हो गई थी। लेकिन एक दिन आपको देखा तो...नफरत दूर हो गई। वो आपके दीवाने हो गये।

चोरी शे आपकी फोटो खींची थी और शारे बंगले में लगाई...।"

"सारे बंगले में...?" चिहुंकी सी माधवी।

"हां—शारे बंगले में...हर कमरे में। यहां तक कि शारे बाथरूम और किचन में भी आपके फोटो लगी है। अपने बेडरूम में तो खून से लिखते भी हैं...।"

"खू...खून से—?"

"हां, अपने खून शे। वो...शामने वाला गेट शाहब के बेडरूम का ही है। जाकर देखिये कि उन्होंने अपने खून शे क्या-क्या लिखा हुआ है? मैं तो अनपढ़ हूं। शमझ नहीं सकता कि क्या लिखा हुआ है—?"

माधवी बहादुर के बतलाये कमरे की तरफ बढ़ी।

मस्तिष्क में अंधड़ से चल रहे थे।

दरवाजा ठेलकर भीतर दाखिल हुई तो मुख से सिसकारी-सी छूट गई और फट पड़ने को तैयार आंखों से दीवारों को देखने लगी।

दीवारों पर उसकी विभिन्न पोज वाली ढेरों फोटो तो लगी ही थीं—इसी के साथ उंगली को खून से सान-सानकर उसका नाम लिखा हुआ था। सिर्फ नाम ही नहीं, कई वाक्य भी लिखे हुये थे—

"तुम मेरी जान हो माधवी चोपड़ा।"

"मेरे खून में घुल गई हो तुम माधवी चोपड़ा—।"

"ना जाने तुममें ऐसा क्या जादू है कि नारी जाति से नफरत करने वाला तुम पर मर मिटा।"

"ईश्वर मुझसे मेरा सब कुछ ले ले, लेकिन बदले में तुम्हें मेरी झोली में डाल दे...।"

"तुम मुझे ना मिली तो मैं मर जाऊंगा। अब मैं सिर्फ तुम्हारे लिये ही जी रहा हूं माधवी चोपड़ा...।"

"दुनिया की सबसे खूबसूरत लड़की माधवी चोपड़ा पर मेरी एक-एक सांस कुर्बान...।"

उन वाक्यों को पढ़ना छोड़ माधवी बेडरूम से बाहर यूं ही निकली कि मानो अचानक ही वहां की ऑक्सीजन समाप्त हो गई हो।

दरवाजा बन्द करके वो यूं हांफने लगी कि मानो दमा का दौरा पड़ गया हो।

फिर वो बाहर की तरफ दौड़ी।

"अरे...आप कहां जा रही हैं...?" बहादुर उसके पीछे दौड़ता हुआ चींख-चींखकर बोला, "शाहब जी आपके लिये चाय और आमलेट बना रहे हैं। वो आपके बारे में पूछेंगे तो मैं क्या बोलूंगा...?"

लेकिन माधवी नहीं रुकी।

बाहर पार्क में ही उसकी बाइक खड़ी थी। उस पर सवार होकर उसने सेल्फ स्टार्ट वाला बटन दबाया तो बाइक स्टार्ट हो गई।

बाइक धनुष से छुटे तीर की मानिन्द ही दौड़ी।

❑❑❑

❑❑❑

वाशिंगटन के बढ़िया, शानदार और मंहगे होटलो में शुमार 'रेड डायमंड' के शानदार हॉल में यूं तो फर्नीचर, दीवार पर बनी कलाकृतियां, छत से लटके लाइट वाले झूमर, स्टेज और स्टेज पर डांस करती अर्धनग्न युवतियां...सभी खूबसूरत थे, लेकिन आकर्षण का केन्द्र सिर्फ क्रान्ति ही बनी हुई थी। परियों जैसे खूबसूरत चेहरे और जिस्म वाली कोई हसीना अपने जलवे बिखेरने पर आ जाये तो कयामत को आने से भला कौन रोक सकता है?

गोरे-चिट्टे व संगमरमरी जिस्म पर उसने काले रंग की गाउन-नुमा रेशमी पोशाक पहनी हुई थी, जो कि छिपाने से अधिक प्रदर्शन कर रही थी। पोशाक का गला इतना खुला हुआ था कि सीने के गोल व पुष्ट उभार बाहर झांक रहे थे। जांघों की सीध से लेकर नीचे तक नाभि के सीध में पोशाक में लम्बवत् कट लगा हुआ था और क्रान्ति ने जानबूझकर दोनों पैरों की एड़ियां मेज पर टिकाई हुई थीं।

केले के तने जैसी ठोस, चिकनी और सुन्डाकार टांगें जिन्हें देख पत्थर भी मोम की मानिन्द पिघलने लगें। हॉल में मौजूद सभी ग्राहक और होटल के कर्मचारी क्रान्ति को ही भूखी व प्यासी नजरों से देख रहे थे और लार टपका रहे थे।

कुछ की जुबान पर...तो कुछ के दिमाग में बार-बार यही वाक्य उभर रहा था—"हाय...क्या चीज है, अगर मिल जाये तो फिर जन्नत की तमन्ना कौन करे—।"

ऐसा नहीं कि हर कोई क्रान्ति पर रीझ ही रहा था—डांसर्स समेत जितनी भी युवतियां थीं, वो क्रान्ति से ईर्ष्या कर रही थीं, उनके सी

पर सांप से लोट रहे थे। जबकि स्वयं को लापरवाह दर्शाती क्रान्ति डायरेक्ट बोतल से व्हिस्की की घूंट भरते हुये चोर दृष्टि से बार-बार दीवार पर लगे सी०सी०टी०वी० कैमरे को देख लेती। उसने सिगरेट सुलगा ली और स्टेज के ऊपर वाले उस हिस्से को देखने लगी, जो कि काले रंग के शीशे से बन्द किया गया था—उधर देखते हुये क्रान्ति ने यूं ही प्रदर्शित किया कि मानो वह 'यूं ही' देख रही हो, जबकि देखने के पीछे खास मकसद था।

"आ क्यों नहीं रहा है वो कम्बख्त...?" शीशे से दृष्टि हटाकर और बोतल से घूंट भरकर बुदबुदाई वह, "क्या उसने अभी तक मुझे देखा नहीं? देखा ही नहीं होगा—वरना वो मुझ तक आ पहुंचता। ये भी तो पक्का नहीं कि वो उस बालकनी में मौजूद है कि नहीं? होटल के किसी कर्मचारी से पूछती हूं तो वो मुझ पर शक करेगा। जानना चाहेगा कि मैं रार्बट के बारे में क्यों पूछ रही हूं? इन्तजार करना पड़ेगा। वो बालकनी में हुआ तो अवश्य ही आयेगा। वो अगर नहीं है तो नहीं आयेगा—फिर मुझे कल आना पड़ेगा। आधा घन्टा और बैठ लेती हूं। देख लेते हैं कि वो आता है कि नहीं—?"

□□□
□□□

साठ वर्षीय, अधगंजे टोनी ने अपने से बीस वर्ष छोटे अलफांसे के श्रद्धापूर्वक चरणस्पर्श किये और पूरे सम्मान के साथ होटल के भीतर ले गया।

शानदार कमरे में पहुंच उसने फोन पर कॉफी तथा शानदार नाश्ते का ऑर्डर दिया और अलफांसे को ट्रिपल फाइव सिगरेट की डिब्बी व लाइटर दिया।

सोफा चेयर पर पसरकर अलफांसे ने सिगरेट सुलगा ली और कश लगाने पर धुंए को सामने बैठे टोनी की तरफ छोड़कर बोला—"क्या मामला है टोनी—?"

टोनी ने शर्ट की जेब से एक लिफाफा निकालकर अलफांसे की तरफ बढ़ा दिया।

अलफांसे ने लिफाफा खोलकर उसमें से तीन कलर्ड फोटो निकाले और मेज के शीशे वाले टॉप पर अलग-अलग रख दिये।

एक फोटो लगभग सत्तर वर्षीय बूढ़े का था, जिसने केसरिया रंग का कुर्ता पहना हुआ था। उसके गले में मनकों की माला थी और माला के बीच में लॉकेट के भीतर हनुमान जी की तस्वीर लगी हुई थी।

दूसरी फोटो सात वर्षीय, गोरे-चिट्टे, हरी आंखों तथा सुनहरे रंग के लम्बे बालों वाले खूबसूरत लड़के की थी।

तीसरी फोटो लगभग बत्तीस वर्षीय, सांवली लेकिन तीखे व आकर्षक नैन-नक्श वाली खूबसूरत युवती की थी। उसने सफेद रंग की साड़ी पहनी हुई थी। सूनी मांग, सूना माथा, सूना गला। कोई मेकअप नहीं था, लेकिन फिर भी उसकी सुन्दरता का जवाब नहीं था।

"ये फोटो किनके हैं टोनी और तुम इन्हें मुझे क्यों दिखला रहे हो—?"

"ये जय भगवान है उस्ताद जी। कुछ साल पहले तक ये नागपुर का मशहूर उद्योगपति था। इसकी आटो-मोबाइल्स के पार्ट्स बनाने की बड़ी फैक्ट्री थी। लेकिन दामाद राहुल की हत्या से इस पर गमों की बिजलियां टूट पड़ी थीं। राहुल कहने को तो दामाद था, लेकिन जय भगवान उसे सगे बेटे की तरह ही चाहता था। वैसे भी राहुल उसके स्वर्गवासी दोस्त का बेटा था। राहुल भी जय भगवान को पिता का ही दर्जा देता था। फैक्ट्री को उसी ने सम्भाला हुआ था। राहुल बहुत बढ़िया आदत का था...किसी पर नाराज होना तो सीखा ही नहीं था। फैक्ट्री के किसी कर्मचारी से चाहे जितनी बड़ी गलती हो जाती—राहुल उसे प्यार से ही समझाता था। सभी के सुख-दुख में काम आता था। हर कोई उसे चाहता था, लेकिन सबसे ज्यादा जय भगवान उस पर जान छिड़कता था। राहुल एक दिन फैक्ट्री से घर जा रहा था। पीछे से ट्रक ने उसकी कार को टक्कर मारी थी और ड्राइवर ट्रक को छोड़कर भाग निकला था। गाड़ी बुरी तरह पिचक गई थी। पुलिस ने गाड़ी को काटकर राहुल की लाश को बाहर निकाला था। ट्रक के बारे में मालूम हुआ कि वो दो दिन पहले चोरी हो गया था और उसके मालिक ने पुलिस में चोरी की रिपोर्ट दर्ज करा दी थी। पुलिस ने खूब भागा-दौड़ी की थी लेकिन कातिल को नहीं ढूंढ सकी थी। राहुल के कत्ल ने जय भगवान को बुरी तरह तोड़ दिया था। उसने फैक्ट्री को बन्द कर दिया था। उसका ध्यान धर्म की तरफ बढ़ा। उसने राहुल की स्मृति में एक हॉस्पिटल और बढ़िया,

है। या अपने गुरु के आश्रम में चला जाता है। दान-धर्म करता है। गरीबों को कपड़े और नगदी बांटता है। गरीब लड़कियों की शादी करवाता है। गरीबों का इलाज। गरीब बच्चों को अपने खर्चे पर पढ़वा रहा है। फिर भी उसके पास इतनी नगदी और प्रोपर्टी है कि उसका अरबपतियों में शुमार होता है...।"

"और ये युवती...?"

"ये जय भगवान की इकलौती बेटी आरती है। फोटो तो देख ही लिया आपने। सांवली-सलोनी और बला की खूबसूरत है। राहुल के कत्ल के बाद इसने विधवा का रूप धारण कर लिया। कोई मेकअप नहीं, गहने भी नहीं पहनती। सफेद साड़ी पहनती है। ये लड़का सौभाग्य आरती का बेटा है। जय भगवान का धेवता। नागपुर के मैपल्स स्कूल में पढ़ता है। फर्स्ट क्लास पास करके सैकेन्ड क्लास में आया है। आरती की जान है ये बच्चा...सौभाग्य। यूं तो हरेक मां को अपना बेटा प्यारा होता है—लेकिन आरती तो बहुत ज्यादा चाहती है। अगर सौभाग्य को छींक भी आ जाये तो घबरा जाती है और फोन करके डॉक्टर को बुला लेती है। सौभाग्य को जुकाम हो जाये तो आरती को बुखार चढ़ जाता है। एक बार हल्के से एक्सीडेन्ट में सौभाग्य को मामूली खरोंचे आ गई थीं तो आरती मारे सदमें के बेहोश हो गई थी और तीन रोज तक हॉस्पिटल में एडमिट रही थी। वो...एक किस्से में था ना कि जादूगर की जान तोते में बसती थी। आरती की जान सौभाग्य में बसती है।"

"तीनों के बारे में तुमने काफी जानकारियां जुटाई हुई हैं टोनी...लेकिन क्यों...?" सिगरेट के अवशेष को ऐश-ट्रे में ठूंसकर पूछा अलफांसे ने, "...मुझे इन तीनों के बारे में क्यों बतला रहे हो? आखिर तुम्हारे दिमाग की पतीली में शेखचिल्ली की कौन-सी खिचड़ी पक रही है...मेरे कड़वे शर्बत—?"

□□□

□□□

पचास वर्षीय, सात फुटे और भीमकाय रॉबर्ट ने काले रंग का सूट पहना हुआ था और आंखों पर भी काले शीशे वाला चश्मा चढ़ाया हुआ

था। तरबूज जैसा गंजा सिर पीतल के नये लोटे की मानिन्द ही चमक मार रहा था।

दायें कान में सोने की बाली, गले में बीस तोले सोने की भारी चेन, जिसमें दिल के आकार का लॉकेट पड़ा था। हाथों की आठों उंगलियों में बेशकीमती नगीनों वाली सोने व प्लेटीनम की अंगूठियां चमचमा रही थीं। बायीं कलाई पर शानदार महंगी घड़ी थी तो दायीं कलाई पर नगीनों से जड़ा ब्रेसलेट चमक मार रहा था।

वो 'रेड डायमंड' होटल का मैनेजर रॉबर्ट था।

मैनेजर और इतने ठाठ-बाट!

इसके भी दो कारण हैं।

पहला कारण ये कि होटल 'रेड डायमंड' संसार की सबसे बड़ी, शक्तिशाली और धनी क्रिमिनल कम्पनी 'माफिया' की मिल्कियत है और माफिया का सबसे छोटा-प्यादा भी करोड़पति तो होता ही है।

दूसरा कारण ये कि शानदार सेलरी अर्थात् तनख्वाह के साथ-साथ रॉबर्ट की होटल की इनकम में पत्ती अर्थात् हिस्सा है। एक प्रतिशत का हिस्सा भी उसके वारे के न्यारे करने के लिये काफी है। ये हिस्सा या पत्ती क्यों है—ये आपको आगे चलकर मालूम हो जायेगा। शानदार व बेशकीमती फर्नीचर वाली बालकनी में बैठा रॉबर्ट रेड वाइन सिप करते हुये काले शीशे की दीवार से नीचे हॉल में बैठी और बोतल से व्हिस्की पी रही क्रान्ति को देखे जा रहा था—फिर वो उधर से नजरें हटाकर क्लोज सर्किट वाले टी०वी० को देखते हुये मेज पर रखे माइक्रोफोन पर बोला, "...हॉल में बैठी उस काली पोशाक वाली हसीना को देख रहे हो केविन—जो बोतल से व्हिस्की गटके जा रही है? उसे करीब से देखना है। कैमरा सिर्फ उसी पर फोकस करो और उसे करीब से दिखलाओ—।"

कन्ट्रोल रूम में मौजूद केविन नामक युवक ने कैमरे को सिर्फ क्रान्ति पर फोकस किया और उसके क्लोज-अप अपने बॉस रॉबर्ट को दिखलाने लगा।

कैमरा, टी०वी० के साथ-साथ टेलीकास्ट सिस्टम भी इतना बढ़िया था कि क्रान्ति के एक-बाल को गिना जा सकता था। मानो टी०वी० पर उसकी तस्वीर नहीं, वो ही साक्षात टी०वी० स्क्रीन पर मौजूद थी।

रॉबर्ट की जीभ मुंह से निकलकर होठों को तर करने लगी। उसकी ब्राउन कलर की आंखों में वासना के कीड़े-से गिजगिजाने लगे।

"वाह...क्या माल है...!" टी०वी० स्क्रीन पर क्रान्ति की ऊपरी पोशाक के गिरेहबान से झांकते गोल व पुष्ट उभारों पर नजरें को फेवीकोल के जोड़ के मानिन्द ही चिपकाते हुये बुदबुदाया वो, "...इन्डियन मालूम पड़ती है। आज मेरी गलतफहमी दूर हो गई कि अमेरिका की औरतें ही दुनिया में सबसे सुन्दर होती हैं। अमेरिका में शायद ही इस अप्सरा की टक्कर की कोई हसीना होगी। वाह...क्या जिस्म है...क्या उभार है। चेहरा भी कमाल का। आंखों में मानो दुनिया भर की शराब भरी हुई हो। होंठ कितने सेक्सी हैं...खजूर से भी ज्यादा मीठे होंगे। कुदरत का अनमोल तोहफा है ये। इसे हासिल करने के लिये अपना सब कुछ दांव पर लगा सकता हूं। इसकी गुलामी कर सकता हूं। इसके तलुवे चाट लूंगा। क्या ये सुन्दरी मुझ पर मेहरबान हो सकती है। बिस्तर पर इसके साथ जन्नत की सैर हो सकती है?"

❑❑❑

❑❑❑

"तुमने जवाब नहीं दिया टोनी...।" नई सिगरेट सुलगाकर पूछा अलफांसे ने, "...तुमने मुझे जय भगवान, आरती और सौभाग्य के बारे में क्यों बतलाया है–?"

"आपने कहा था उस्ताद जी कि आप शादी करने से पहले कोई बड़ा हाथ मारना चाहते हैं। फिर आप जुर्म की दुनिया को हमेशा-हमेशा के लिये अलविदा कह देंगे। इसलिये आप चाहते हैं कि कोई मोटा हाथ मार लें। एक ही झटके में इतनी कमाई कर लें कि फिर आपको कोई हाथ मारने की जरूरत ना पड़े...?"

"हां, कहा था। मैं ऐसा ही चाहता हूं। लेकिन मेरे इस मकसद का जय भगवान, आरती या सौभाग्य से भला क्या लेना-देना–?"

"मैंने आपको बतलाया ना उस्ताद जी कि जय भगवान के पास बहुत माल है। प्रोपर्टी भी और नगदी भी। सब मिलाकर अरबों रुपयों में हैं...।"

"प्रोपर्टी को तो वो ही बेच सकता है–प्रोपर्टी को चुराया नहीं जा सकता। नगदी भी वो बैंक में रखता होगा। वैसे भी मैंने कभी किसी के घर में चोरी नहीं की–डाका नहीं डाला–।"

"मैं चोरी या डाका डालने को बोल ही कहां रहा हूं उस्ताद जी...।"

"हां, ये भी ठीक है मेरे गूंगे गायक। तुमने चोरी या डाके की बात नहीं की। सौभाग्य के माध्यम से मोटी रकम वसूली जा सकती है। सात साल का बालक ही तो है। उसे किडनेप करके मोटी फिरौती वसूली जा...।"

टोनी ने इन्कार में सिर हिलाया, फिर बोला–"नहीं, उस्ताद जी! सौभाग्य को किडनेप करके मोटी रकम नहीं वसूली जा सकती..."

"क्यों...?" अलफांसे आंखें सिकोड़ कर बोला, "...क्यों नहीं वसूली जा सकती मोटी रकम...?"

"शादी से पहले आरती विशेष नाम के आदमी को चाहती थी... मुहब्बत करती थी, लेकिन जय भगवान को विशेष फूटी आंख नहीं सुहाता था।"

"विशेष पर अपनी नाबालिग नौकरानी को रेप करके उसका कत्ल करने का इल्जाम लगा था। मामला पुलिस और अदालत में पहुंचा था अदालत ने विशेष को निर्दोष मानकर बरी कर दिया था। लेकिन लोगों का और जय भगवान का मानना ये था कि विवेक ने दौलत के दम पर इन्साफ खरीद लिया था। सबूत मिटा दिये गये थे और गवाहों को खरीद लिया गया था। इसी के साथ विशेष को शराब और जुए का शौक भी था। लेकिन वो खूबसूरत, हैन्डसम और स्मार्ट था। उसने आरती को अपने जाल में फांस लिया था। आरती पर ऐसा जादू डाला था कि वो विशेष के शराब पीने और जुआ खेलने में कोई ऐब नहीं मानती थी। उसका कहना था कि शराब और जुआ तो फैशन हैं, अमीरों का शगल है। जय भगवान ने एक बार विशेष को एक कालगर्ल के साथ होटल के कमरे में जाते देखा था। दोनों नशे में टल्ली थे और उनकी बातों से साफ जाहिर हो रहा था कि वो दोनों अय्याशी करने जा रहे थे–विशेष ने उसके साथ दो घण्टे बिताने के लिये मोटी रकम दी थी। कुल मिलाकर जय भगवान विशेष को नापसन्द करता था। एक दिन उसने अपनी बेटी आरती को विशेष के साथ देख लिया था।"

"जय भगवान को ये बात पसन्द नहीं आई होगी...?"

"उसे जोर का झटका जोर से लगा था उस्ताद जी! उसे इतना तगड़ा सदमा पहुंचा था कि दिल का दौरा पड़ गया था। उसे कार चला रहा ड्राइवर तुरन्त ही हॉस्पिटल ले गया था। जय भगवान ने हास्पिटल में ही आरती को अल्टीमैटम दे दिया था कि वो विशेष से कोई मतलब-वास्ता नहीं रखेगी और उसे उसकी पसन्द के ही लड़के यानि राहुल के साथ शादी करनी होगी ! डॉक्टर ने भी आरती को अल्टीमेटम दे दिया था कि जय भगवान को अगर कोई सदमा लगा तो उसकी जान जा सकती है...!"

"तो बेटी ने बाप के लिये त्याग किया था और राहुल के साथ शादी कर ली थी—?"

"हां, आरती ने राहुल के साथ शादी कर ली थी उस्ताद जी और शादी के आठ महीने बाद ही उसने सौभाग्य को जन्म दे दिया था..."

"लेकिन...बच्चे का जन्म तो शादी के नौ महीने बाद होना चाहिये था..."

"कुछ बच्चे सातवे या आठवे महीने में भी जन्म ले लेते हैं। जन्म के समय सौभाग्य काफी कमजोर था और जन्म के बाद एक महीने तक हॉस्पिटल में ही रहा था वो—उसका इलाज चलता रहा था। लेकिन जय भगवान का ऐसा मानना नहीं था कि सौभाग्य का जन्म आठवें महीने में हो गया है। उसका मानना ये था कि सौभाग्य पूरे नौ महीने में ही जन्मा था..."

"ओह यानि जय भगवान ने ये माना था कि सौभाग्य राहुल नहीं, विशेष का बेटा है?"

"जी, उस्ताद जी ! जय भगवान को दिल का दौरा भी पड़ा था, लेकिन इलाज होने पर वो बच गया था। आरती ने सौभाग्य की सौगन्ध खाकर कहा था कि सौभाग्य राहुल का बेटा है। उसने ये तक कह दिया था कि सौभाग्य का डी०एन०ए० टेस्ट करा लिया जाये—अगर वो राहुल का बेटा साबित नहीं हुआ तो वो खुदकुशी कर लेगी।"

"तो क्या जय भगवान ने आरती की बात पर विश्वास कर लिया था मेरे रेंगने वाले खरगोश-?"

"किया था भी और नहीं भी किया था।"

"क्या मतलब-?"

"जय भगवान डबल माइन्ड हो गया था। वो फैसला नहीं कर पाया था कि हकीकत क्या है आरती सच बोल रही थी कि झूठ बोल रही थी? जैसे कोई नाना अपने धेवते से प्यार करता है, जय भगवान ने सौभाग्य को वो प्यार नहीं किया। उसने सौभाग्य की परवरिश में कोई कमी नहीं आने दी। सौभाग्य पर उसने खूब खर्चा किया— कोई कंजूसी नहीं की। लेकिन उसे सीने से लगाकर प्यार नहीं किया। गोद में लेकर खिलाया नहीं। उसे कभी अपने पास नहीं लगने दिया। हांलाकि उससे बातचीत करता है। सौभाग्य जो भी मांगे, उसे दिलवा देता है। कुल मिलाकर वो सौभाग्य के प्रति अपने तमाम फर्ज को निभा रहा है, लेकिन सौभाग्य उसका लाड़ला नहीं है। सौभाग्य बीमार पड़ जाये या उसे चोट लग जाये तो वो दुखी नहीं होता, लेकिन उसके इलाज में कोई कमी नहीं छोड़ता। सौभाग्य के फर्स्ट डिवीजन से पास होने पर उसे बांहो में भरकर प्यार नहीं किया, लेकिन मिठाई बांटी और पार्टी भी दी।

"कुल मिलाकर जय भगवान डबल माइन्ड है। वो ये निर्णय नहीं कर पाया कि सौभाग्य राहुल का बेटा है कि विशेष का।"

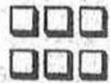
"जी, उस्तांद जी ! इसीलिये मेरा मानना ये है कि अगर सौभाग्य को किडनेप किया जाये तो जय भगवान उसे छुड़वाने के लिये छोटी-मोटी रकम तो दे देगा—लेकिन मुंह मांगी रकम नहीं! सौभाग्य के किडनेप होने पर जय भगवान तड़पेगा नहीं, उसकी जान नहीं निकल जायेगी। हां अगर उसे पक्का विश्वास होता कि सौभाग्य राहुल का बेटा है तो वो सौभाग्य के लिये अपना कलेजा भी निकालकर दे सकता था—।"

"यानि चोरी और डाका तो होना ही नहीं—सौभाग्य का किडनेप भी नहीं होना है। तो फिर जय भगवान की दौलत कैसे हासिल हो सकती है?"

"आपको आरती को पटाकर...अपने जाल में फांसकर उसके साथ शादी करनी होगी उस्ताद जी...।"

"टोनी ऽऽऽऽ।"

दहाड़ा अलफांसे और उसने पीठ व पैन्ट के बीच खोंसी गई रिवॉल्वर निकाल कर टोनी पर तान दी।



"हैलो, ब्यूटी क्वीन...!"

क्रान्ति ने नजरें उठाकर सात फुटे और दैत्याकार रॉबर्ट को देखा और बोतल से व्हिस्की की घूंट भरी।

"मेरा नाम रॉबर्ट है। इस होटल का मैनेजर। क्या मैं आपके साथ बैठ सकता हूं—?"

"होटल के मैनेजर हो... ।" मन-ही-मन अपनी सफलता पर रीझते हुये क्रान्ति थोड़ा शुष्क लहजे में बोली, "एक तरह से होटल के मालिक हो। कहीं भी बैठ सकते हो। मुझे तो एक कुर्सी पर बैठने का ही पेमेंट करना है... ।".

"थैंक्यू... ।" रॉबर्ट क्रान्ति के सामने वाली कुर्सी पर बैठा तो कुर्सी ने चरमराकर मानो उसके ज्यादा वजनी होने की शिकायत की।

बोतल मेज के बीचो-बीच रखकर क्रान्ति ने डिब्बी उठाकर एक सिगरेट निकाली और होठों के मध्य उसके फिल्टर वाले हिस्से को दबाकर लाइटर की नीली लौ से उसके अग्रिम सिरे को सुलगा लिया।

"तुम इस होटल की मेहमान हो... ।" खींसें निपोरकर बोला रॉबर्ट, "कोई बिल नहीं देना होगा। चाहे जो खाओ-पीओ। अपनी पसन्द के ए०सी० रूम में ठहर सकती हो, जब तक चाहो...रह सकती हो... ।"

क्रान्ति उसे घूरते हुये बोली "क्या इस मेहरबानी की वजह जान सकती हूं मैं?"

"पहले तो हिचकिचाया रॉबर्ट, लेकिन फिर साफगोई से काम लेते हुये बोला— "क्योंकि तुम दुनिया सबसे खूबसूरत और सेक्सी लड़की हो... ।"

"रियली...?" कहने पर क्रान्ति ने सिगरेट में कश मारकर कातिल किस्म के होठों को गोल किया और धुएं का गुबार रॉबर्ट के चेहरे पर छोड़ दिया।

हॉल में उपस्थित सिक्योरिटी गार्ड्स रूपी माफिया के गुन्डों की भृकुटियां तन गईं और हाथ वस्त्रों में छिपे हथियारों पर पहुंच गये— प्रतीक्षा थी रॉबर्ट के इशारे की।

बाकी जिन भी लोगों ने देखा, वो भी चकित हो उठे और ये मान

कि क्रान्ति की शामत आ चुकी है— लेकिन रॉबर्ट को मुस्कराते देख वो आश्चर्य में पड़ गये।

रॉबर्ट ने दायां हाथ ऊपर उठाकर और तर्जनी उंगली हिलाकर नजदीक चले आये गुन्डों को वापिस भेजा, फिर क्रान्ति की बड़ी-बड़ी व नशीली आंखों में झांकते हुये बोला— "इन्डियन मालूम पड़ती हो। क्या अपना परिचय देना पसन्द करोगी—?"

"हां, मैं इन्डियन ही हूं। नाम है सरिता ! मैं घूमने-फिरने के इरादे से अमेरिका आई हूं... । वाशिंगटन में इस होटल की बहुत तारीफें सुनी थी— सो यहां चली आई! जैसा सुना था... वैसा ही इस होटल को पाया...काफी खूबसूरत है। यहां पर खाने-पीने के साथ-साथ जुआ भी चलता है... ।"

"तुम खाली व्हिस्की पी रही हो। ये बोलो कि क्या खाओगी-?"

"कुछ नहीं..." बोतल से व्हिस्की की घूंट भरकर बोली वह, "ड्रिंक के साथ मैं कुछ खाती नहीं— शराब का मजा खराब हो जाता है। ड्रिंक के बाद ही कुछ खाती हूं।"

"ठीक है। ड्रिंक के बाद ही जो मर्जी हो...खा लेना बोतल तो खाली ही होने जा रही है... ।"

"अभी तो एक बोतल और लूंगी... ।"

हैरानी में पड़ गया रॉबर्ट, फिर मुस्कराकर बोला— "पक्की पियक्कड़ मालूम होती हो। आमतौर पर औरतें आधी बोतल पीकर ही लुढ़क जाती हैं। मैं एक बोतल और मंगा देता हूं। अपने लिये भी रेड वाइन मंगा लेता हूं— ।"

"अगली बोतल मैं कमरे में पीना पसन्द करूंगी। इसी होटल में मैंने रूम नम्बर फिफ्टी बुक करवाया है... ।"

"ओ... गुड! तुमने जो एडवांस जमा करवाया होगा, वो वापिस मिल जायेगा... ।"

"इस मेहरबानी की वजह—?"

"बतलाया तो था कि तुम बहुत खूबसूरत और सैक्सी हो।"

"तबियत आ गई है मुझ पर... ।" कहने पर क्रान्ति ने नजरों से नजरों के पेंच भिड़ा दिये। बुरी तरह सकपकाया रॉबर्ट— क्योंकि उसे क्रान्ति से ऐसी बात की कतई भी उम्मीद नहीं थी।

उसने टकले सिर पर हथेली फिराई और फिर खिसियानी सी हंसी हंसकर बोला– "...हकीकत तो यही है सरिता! ऊपर बालकनी से तुम्हें देखा था तो... देखता ही रह गया था। सच बोल रहा हूं कि मैंने अपनी जिन्दगी में तुम जैसी खूबसूरत लड़की नहीं देखी। देखते ही तुम्हारा दीवाना हो गया था। अगर तुम्हारी थोड़ी-सी भी मेहरबानी हो जाये तो अपनी तकदीर संवर जायेगी...।"

मन-ही-मन मुस्कराई क्रान्ति–

शिकार उसके जाल में फंसने को तड़प रहा था।

उठी और बोली, "चलो, कमरे में चलते हैं। वहीं पर ड्रिंक लेंगे। देखने में तो हट्टे-कट्टे हो, लेकिन ये तो बिस्तर पर ही मालूम पड़ेगा कि मर्द हो कि नहीं...।"

"मेरी मर्दानगी पर सवाल उठाती है...।" बुदबुदाया रॉबर्ट, "जब जल बिन मछली की तरह तड़पेगी और रहम की भीख मांगेगी तो...तब अपनी मर्दानगी के बारे में पूछूंगा। जैसे कोई पागल हाथी खेत को रौंद डालता है... तेरा भी वो हाल ना किया तो मेरा नाम भी रॉबर्ट नहीं। खुद को मर्दखोर समझने वाली औरतें भी हाथ-पैर जोड़कर रहम की भीख मांगने लगती हैं। हीरे जैसे कठोर जिस्म वाली भी रुला देता हूं। तू तो गुलाब के फूल की तरह मुलायम है... मसलकर रख दूंगा। कमरे में चल तो सही–फिर बतलाऊंगा कि मैं क्या बला हूं...?"

❑❑❑

❑❑❑

"न...नहीं...उस्ताद जी... गो...गोली मत चलाना...।" भयवश थरथर कांप रहा टोनी हाथ जोड़कर गिड़गिड़ाया, "...मु...मुझ पर नहीं तो मेरे बीवी-बच्चों पर रहम खाइये...।"

उठकर अलफांसे उसके करीब पहुंचा और उसके मुंह में रिवॉल्वर की नाल ठूंसकर हिंसक भाव से बोला– "क्या तुझे मालूम नहीं कि मैं सलमा को अपनी जान से भी बढ़कर चाहता हूं? भले ही शादी ना हुई हो, लेकिन हम एक-दूसरे को पति-पत्नी का ही दर्जा देते हैं। सलमा के सिवाय किसी दूसरी औरत का तसव्वुर में भी ख्याल नहीं कर सकता मैं और तू आरती के साथ शादी करने की बात बोल रहा है...?"

टोनी ने रिवॉल्वर की नाल अपने मुंह से निकाली और झुककर अलफांसे के पैर पकड़ लिये–

"सिर्फ शादी करने और पति बनने का नाटक ही तो करना है उस्ताद जी। शादी के बाद बीमार होने का नाटक कर लेना–ताकि आपको आरती के साथ सोना ना पड़े। प्लीज, गुस्से को थूक दीजिये और ठन्डे दिमाग से मेरी बात पर गौर कीजिये। जय भगवान आरती की दूसरी शादी करनी चाहता है। आप तो उस्ताद हैं। जय भगवान के दामाद बनने पर अपनी चालाकी से उसका ज्यादा-से-ज्यादा माल खींच सकते हैं।

पूरी नहीं तो आधी वसीयत अपने नाम लिखवा सकते हैं। काम होने पर वापस चले आना। या जैसी आपकी मर्जी हो, जैसे हालात हों... वैसा ही कर लेना! मोटी कमाई करने का गोल्डन चांस मिल रहा है। मेरी मानिये तो इस चांस को हाथ से जाने मत दीजिये। आप अपनी चालाकी से मोटी रकम हासिल कर सकते हैं और फिर उस्तादनी जी के साथ शादी कर सकते हैं।"

अलफांसे की आंखें सोचने वाली मुद्रा में सिकुड़ चलीं। उसके क्रोध को सर्फ के झागों की मानिन्द बैठते देख टोनी उसके पैर छोड़कर उठा और उत्साह से भरा हुआ बोला– "...ये सोचने का नहीं, कर गुजरने का वक्त है उस्ताद जी। ऐसे मौके बार-बार नहीं मिला करते। आप जय भगवान की दौलत से अपनी तिजौरी भर सकते हैं। थोड़ा-सा हिस्सा इस गरीब की झोली में भी डाल देना... मेरे बीवी-बच्चे आपको दुआ देंगे...।"

सोफा चेयर पर बैठ अलफांसे ने रिवॉल्वर मेज पर डालकर सिगरेट सुलगा ली और टोनी को भी सामने बैठ जाने का इशारा करके बोला– "मैं इन्टरनेशनल क्रिमिनल हूं। पहले सिकन्दर के नाम से रह रहा था और अब मुझे अमरकान्त का रूप धारण करना पड़ा है। लेकिन मैं जय भगवान को अपना क्या परिचय दूंगा? क्या बताऊंगा उसे कि मैं कहां का रहने वाला हूं? मेरे मां-बाप कौन हैं और मैं काम-धन्धा क्या करता हूं? मुम्बई में मेरा बढ़िया बंगला है, लेकिन वहां सलमा भी रहती है। मैं वहां का पता नहीं बतला सकता।"

"बातें बनाना तो आपके लिये हंसी-खेल है उस्ताद जी। जय

भगवान को अपने रंग में रंग लेना आपके लिये कोई मुश्किल काम नहीं है। मैंने आपको बतलाया कि राहुल की मौत के बाद जय भगवान ने अपनी फैक्ट्री को बेच दिया था और धर्म-कर्म करने लगा है। वो अपनी विधवा बेटी के लिये ऐसा दूसरा पति चाहता है, जो कि धार्मिक हो, धार्मिक ना भी हो, लेकिन संस्कारवान हो। कई लोग आरती के साथ शादी करने के लिये जय भगवान से मिले—लेकिन वो मॉर्डन विचारों वाले थे और जय भगवान ने उन्हें रिजेक्ट कर दिया। आपको ऐसा दर्शाना होगा कि अब आपमें कोई ऐब नहीं है। आप मीट तो क्या...प्याज, लहसुन भी नहीं खाते। शराब कभी सूंघी भी नहीं। उसके सामने सिगरेट से भी परहेज करना होगा। बहुत कुछ पाने के लिये थोड़ा-सा त्याग तो करना ही होगा उस्ताद जी...।''

''क्या आरती दूसरी शादी करने के लिये राजी हो गई है मेरे मीठे नीम के पकौड़े-?''

अलफांसे अपनी टोन में लौट आया।

''आरती पहले राजी नहीं थी। वो अपने बेटे सौभाग्य के सहारे ही बाकी की जिन्दगी जी लेना चाहती थी। उसे ये डर भी था कि उसका दूसरा पति उसके बेटे को सगे पिता जितना प्यार दे भी पायेगा कि नहीं? उसे ये भी डर था कि अपनी औलाद हो जाने पर उसका दूसरा पति अपने बच्चे को ही प्यार करेगा और सौभाग्य के हिस्से की जायदाद का बटवारा भी हो जायेगा। लेकिन जब जय भगवान ने धमकी दी कि वो अपनी सारी नगदी और प्रोपर्टी किसी धार्मिक संस्था को दान कर देगा तो आरती दूसरी शादी को राजी हो गई। लेकिन उसने अपनी नसबन्दी करा ली— ताकि उसकी कोख से दूसरी औलाद पैदा ना होने पाये। उसने जय भगवान को बाद में ये बात बतला भी दी। लेकिन जय भगवान ने थोड़ी नाराजगी के बाद उसे माफ कर दिया। जो कोई भी आरती से शादी करने की इच्छा लेकर आता है—जय भगवान उसे साफ बोल देता है कि आरती मां नहीं बन पायेगी। इसी के साथ उसने आरती को बोला हुआ है कि वो अपनी पसन्द के आदमी को भी उसके सामने पेश कर सकती है— लेकिन वो उस आदमी का टेस्ट लेगा। वो धार्मिक और सात्विक प्रवृत्ति का होना चाहिये...।''

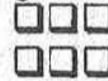
''और विशेष? वो आजकल कहां है और क्या करता है-?''

''विशेष दिल्ली चला गया था। सुना है कि उसने वहां किसी तलाक-शुदा और अमीर औरत के साथ शादी कर ली थी। वैसे आप चाहें तो जय भगवान की बजाय आरती को भी पटा सकते हैं उस्ताद जी।''

''क्या आरती पटेगी—?''

'आप तो हॉलीवुड की फिल्मों के हीरो जैसे हैं उस्ताद जी। देखते ही आप पर मोहित हो जायेगी वो। वैसे उसकी जान सौभाग्य में बसती है। वो कहावत है ना कि गाय को वश करना है तो उसके बछड़े को लाड़-प्यार करो। आपने सौभाग्य को पटा लिया तो उसकी मां भी पट जायेगी। जय भगवान के टेस्ट में आप पास हो ही जायेंगे...ये मेरा पक्का विश्वास है।''

''ठीक है मेरे करेले के हलुओ! तुम बोलते हो तो ये दांव भी आजमा लेते हैं। लेकिन मैं पक्की तैयारियों के साथ मैदान में उतरूंगा। मैं तुम्हारे साथ नागपुर चलूंगा और चोरी-छिपे जय भगवान, आरती और सौभाग्य को वाच करूंगा। उनकी गतिविधियों को नोट करूंगा। फिर सोचूंगा कि...मुझे क्या करना है और कैसे करना है—?''



केशव ने रिस्टवाच रूपी ट्रांसमीटर पर आशीर्वाद से कॉन्टेक्ट किया और 'दुआ-सलाम' के पश्चात् प्रश्न किया— ''क्या चल रहा है ए०पी०? दोनों शिकार हाथ लगे कि नहीं ओवर...?''

''अभी तक तो नहीं लगे पिताश्री। दोनों परेशान कर रहे हैं। वो एक जगह पर टिक ही नहीं रहे हैं। वो दोनों तो जिस शहर में होते हैं, वहां हमारे पहुंचाने से पहले से प्लेन पकड़कर उड़न छू हो जाते हैं। वो जिस भी शहर के लिये उड़ान भरते हैं, वहां के लिये तुरन्त ही दूसरी फ्लाइट नहीं मिल पाती। घन्टों बाद की फ्लाइट होती है। हम फ्लाइट पकड़कर जब तक मन्जिल तक पहुंचते हैं, वो वहां से उड़न छू हो लेते हैं...ओवर...।''

''मैंने तुमसे कहा था कि शायद कोई तुम दोनों को वाच कर रहा हो और वो ही के (क्रान्ति) और एस (सोनू) को तुम्हारी जानकारी दे रहा हो...।''

"ऐसा कुछ नहीं है के०पी० सर...।" दूसरी तरफ से आशीर्वाद केशव की बात काटकर बोला, "मैंने अच्छी तरह से चैक कर लिया है। कोई भी हमें वाच नहीं कर रहा है—हमारी जासूसी नहीं कर रहा है। लेकिन ये तय है कि शिकारों को मालूम है कि उनका पीछा किया जा रहा है, तभी वो हमसे आगे-आगे भाग रहे हैं। ओवर...।"

"ऐसा हो भी सकता है ए०पी०...।" एक ट्रे में दो कप चाय रखकर लाई सोफिया को चाय मेज पर रखने का इशारा करने पर कलाई पर कन्धे ट्रांसमीटर पर बोला केशव, "...लेकिन तुम्हें पक्का विश्वास है कि कोई तुम्हें वाच नहीं कर रहा है तो शिकारों को ये कैसे पता चल रहा है कि तुम दोनों उनके पीछे लगे हुये हो? दोनों बेहद चालाक भी हैं। उनके दिमाग में ये प्रश्न आ जाना चाहिये था कि तुम दोनों को ये कैसे पता चल पा रहा है कि वो दोनों कहां-कहां जा रहे हैं— तुम्हें इनका रूट कैसे मालूम पड़ रहा है? इनके दिमाग में ये बात आ जानी चाहिये थी कि उनके जिस्मों में ट्रांसमीटर्स फिट हो सकते हैं। उन दोनों को अब तक ट्रांसमीटर्स से छुटकारा पा लेना चाहिये था। कोई-ना-कोई गड़बड़ी है। ऐसा तो नहीं कि तुम्हारे साथ कोई गेम खेला जा रहा हो? ओवर...।"

"कैसा गेम...? ओवर...।"

"ये तो मैं भी नहीं बतला सकता। लेकिन तुम्हें और के०एस० (करतार सिंह) को होशियारी और सावधानी के साथ काम लेना होगा। इसी के साथ चेष्टा करो कि शिकारों को जल्दी से ही पकड़ लो। हो सकता है कि उन्हें तुम दोनों के बारे में कुछ भी मालूम ना हो और वो सावधानी के तौर पर ही ये भागा-दौड़ी कर रहे हों...।"

"लेकिन उन्हें पकड़ा कैसे जाये के०पी० साहब? हमारे मन्जिल पर पहुंचने से पहले ही वो दोनों वहां से उड़न छू हो लेते हैं। टैक्सी से पीछा नहीं किया जा सकता। वो कम से कम हजार किलोमीटर का सफर कर रहे हैं। वो ऐसे मुकाम को चुन रहे हैं, जहां के लिये हमें तुरन्त ही फ्लाइट नहीं मिल पा रही है। हमारी और उनकी फ्लाइट में घन्टों का अन्तराल होता है। हम प्लेन में ही होते हैं और वो दूसरी फ्लाइट पकड़ लेते हैं...ओवर...।"

"तुम दिमाग के चैम्पियन हो ए०पी०! ईश्वर ने तुम्हें बेस्ट क्वालिटी

का माइन्ड दिया है। उसका इस्तेमाल करो। दिमाग के घोड़े दौड़ाओगे तो वो तुम्हें मन्जिल पर पहुंचा ही देंगे। सिर्फ भागा-दौड़ी करने से ही फतह हासिल नहीं होगी प्यारे— दिमाग को भी दौड़ाना होगा। क्या विचार है? ओवर।"

"आपने ठीक ही कहा है के०पी० सर। यूं भागा-दौड़ी करने से ही बात नहीं बनेगी। दिमाग के घोड़े दौड़ाने ही पड़ेंगे। या फिर आप ही कोई आइडिया दे दीजिये। ओवर...।"

"कोशिश तो करो प्यारे! अगली बार हम बात करेंगे तो देखेंगे। चूंकि तुम फील्ड में हो— इसलिये बेहतर तरीके से सोच सकते हो और सोच पर अमल भी कर सकते हो। मेरी चाय ठन्डी हो रही है। इसलिये बातचीत को यहीं रोक देते हैं। दैट्स ऑल...ओवर एंड ऑल...।"

केशव ने ट्रांसमीटर ऑफ कर दिया और फिर सोफिया से कप लेकर चाय सिप करने लगा।

❑❑❑
❑❑❑

फटी-फटी सी और विस्फारित आंखों से रॉबर्ट डी०वी०डी० के माध्यम से टी०वी० पर चल रही मूवी को देखे जा रहा था— नहीं, उसे मूवी नहीं... बी०एफ० यानि ब्लू फिल्म कहा जाये तो ज्यादा ठीक होगा।

फिल्म का हीरो रॉबर्ट ही था और हीरोइन थी क्रान्ति। दोनों बन्द रूम के बेड पर थे...निःवस्त्र !

रॉबर्ट हांफ भी रहा था और थका हुआ भी था।

उसकी खता भी नहीं थी— 'मिलन' का चौथा राउन्ड चल रहा था।

लेकिन क्रान्ति जरा-सी भी थकी हुई मालूम नहीं पड़ रही थी। तरो-ताजगी के साथ उसमें जोश भी था और कुछ पाने की 'ललक' भी।

"क्या हुआ प्यारे..." वह व्यंगपूर्ण भाव से बोली, "कमरे में दाखिल होते ही तुमने बड़े-बड़े दावे किये थे। बोले थे कि आज तक कोई भी औरत तुम्हारे मुकाबले में टिक नहीं सकी— सभी ने तुमसे रहम की भीख मांगी। जबकि मुझे तो ऐसा... ही लग रहा है कि शेरनी और हिरण का ही मुकाबला हो रहा हो...।"

"तुमने मेरी गलत फहमी दूर कर दी है सरिता। मानता हूं कि

तुम मर्दखोर औरत हो। औरत के रूप में तुम ज्वालामुखी हो। तुम्हारे भीतर इतना लावा भरा है कि किसी को भी पिघला सकती हो।"

"यूं शर्मिन्दा होकर गेम को बीच में मत छोड़ो। हार हो चाहे जीत... लेकिन प्यार के गेम को बीच में नहीं छोड़ना चाहिये। इस गेम में हारने वाला भी बहुत कुछ पाता है...।"

"हां, ये बात तो हैं डार्लिंग। तुम तो वैसे भी वो बाग हो, जिसमें दुनियाभर के खुशबूदार फूल और स्वादिष्ट फलों का अम्बार लगा है। मैंने कहा भी था कि तुम दुनिया की सबसे हसीन और सैक्सी लड़की हो। तुम्हें इस युग की क्लियोपैट्रा कहूं तो इसमें कुछ गलत नहीं होगा। कोई आम आदमी तो तुम्हारे सामने टिक ही नहीं सकता– जैसे तेज आन्धी में तिनका उड़ जाया करता है। मुझे शर्मिन्दा नहीं, खुश होना चाहिये कि अप्सरा के साथ स्वर्ग की सैर कर रहा हूं...।"

"तुम्हारी बीवी? क्या वो खूबसूरत और सैक्सी नहीं है?"

"मेरे यार-दोस्त और जान-पहचान वाले जूलिया की प्रशंसा करते हैं और मुझसे कहते हैं कि मैं भाग्यशाली हूं कि ऐसी शानदार बीवी मिली।"

"यानि तुम्हारी बीवी खूबसूरत है। फिर भी तुम इधर-उधर मुंह मारते फिरते हो...?"

"तुम्हारे मुकाबले में तो जूलिया कुछ भी नहीं है जानेमन। वो मिट्टी तो तुम बेशकीमती हीरा...।"

"मैं अपनी बात नहीं कर रही। उन सैकड़ों औरतों की बात कर रही हूं, जिनके साथ मुंह काला कर चुके हो तुम। घर में खूबसूरत बीवी है तो फिर दूसरी औरतों के साथ वासना का खेल क्यों खेलते हो–?"

"आदमी एक ही सब्जी को बार-बार कब तक खायेगा सरिता डार्लिंग? मान लो कि मटर-पनीर की सब्जी है और स्वादिष्ट भी है, लेकिन रोजाना उसे खाते-खाते मन ऊब जायेगा ही ना? बटर चिकन, आलू, बैंगन, भिन्डी, मशरूम या मलाई-पनीर वगैरा की भी तो इच्छा होगी कि नहीं? वैसे भी मैं अय्याश प्रवृत्ति का रहा हूं। एक औरत या बीवी के साथ बन्धकर नहीं रह सकता लेकिन तुम्हारी बात ही कुछ और है। तुम तो वो 'मिक्स' सब्जी हो, जिससे जिन्दगी भर भी मन नहीं भर सकता...।"

"बना रहे हो मुझे–?"

"नहीं...सच बोल रहा हूं मेरी जान।"

"क्या...मेरे लिये अपनी बीवी को तलाक दे सकते हो–?"

"बिल्कुल...क्यों नहीं? तुम मुझसे शादी करने के लिये तैयार हो जाओ तो मारे खुशी के मैं पागल ही हो जाऊंगा। जूलिया को लात मार कर घर से निकाल दूंगा और तुम्हें रानी बनाकर रखूंगा। तुम्हारे कदमों में अपना सबकुछ न्योछावर कर दूंगा। तुम्हारी हर बात मानूंगा–हर फरमाईश पूरी करूंगा। क्या मुझसे शादी करोगी डार्लिंग...?"

"मैं इतनी जल्दी जवाब नहीं दे सकती...।"

"कोई बात नहीं, सोचने के लिये हफ्ते-दस दिन का टाइम ले लो–फिर जवाब दे देना...।"

राबर्ट ने पहले रिमोट से डी०वी०डी० और टी०वी० को ऑफ किया और फिर रिमोट को पूरी शक्ति के साथ दीवार पर खींच मारा।

दीवार से टकराने पर रिमोट फर्श पर गिरा तो उसकी 'हड्डी-पसलियां' इधर-उधर बिखर गईं।

मानो किसी जंगली जानवर को जबरदस्ती पकड़कर पिंजरे में बंद कर दिया हो–कुछ इसी अन्दाज में ही रॉबर्ट इधर से उधर और उधर से इधर तेज कदमों से चलकदमी करते हुये हथेली पर घूंसे मारने लगा और क्रोधवश थर-थर कांपते हुये फुंफकारा-सा–

"मेरे ही होटल के कमरे में ये सब हो गया...और मुझे हवा तक नहीं आई। मैं उसके साथ मौज-मस्ती में मस्त रहा और ये ध्यान ही नहीं किया कि मेरी करतूत की मूवी तैयार हो रही है। लेकिन सरिता ने ऐसा किया क्यों? मैं जब उससे मिला तो वो पहले ही रूम बुक करा चुकी थी और कमरे में कैमरा भी फिट कर चुकी थी। तो क्या उसे मालूम था कि मैं उसके साथ कमरे में जाऊंगा और सेक्स का गेम खेलूंगा? उसने ये मूवी तैयार क्यों की और डी०वी०डी मेरे पास क्यों भिजवाई? उसके इरादे क्या हैं? वो मुझसे चाहती क्या है आखिर...?"

"हैलो...रॉबर्ट...!"

वह चिहुंक कर आवाज की दिशा में पलटा तो दरवाजे पर खड़ी क्रान्ति को देख गहन आश्चर्य में पड़ गया।



"नम्बर तो अन्जान है...ना जाने किसका होगा? सुन लेते हैं कि किसका है... ।" फोन की स्क्रीन को देखते हुये माधवी बुदबुदाई, फिर फोन कान से लगा कर बोली—"हैलो, कौन—?"

"हैलो, माधवी। हम बोल रहे हैं... ।"

"हम? हम कौन—?"

"हम अमित शाह बोल रहे हैं... ।"

माधवी के दिमाग में झनाका-सा हुआ। ना जाने क्यों दिल जोर-जोर से धड़कने लगा।

"कई बार फोन किया हमने—लेकिन फोन का स्विच ऑफ था... ।"

"मेरा फोन चोरी हो गया था। चुराने वाले ने ही स्विच ऑफ कर दिया था। पुलिस में कम्पलेन्ट की थी। आज ही वो चोर पकड़ा गया और पुलिस ने मेरा मोबाइल लौटा दिया... ।"

"अच्छा, ये बात थी। लेकिन तुम हमारे घर से यूं क्यों चली आई थीं? हम तुम्हारे लिये चाय और आमलेट बनाने गये थे। बहादुर काका ने बतलाया कि तुम अचानक ही लगभग दौड़ते हुये चली गईं। हमसे मिलकर तो जातीं... ।"

माधवी ने हथेली की पुश्त से पेशानी पर उभर आये पसीने को पोंछा और अपने तनाव पर नियन्त्रण पाने की चेष्टा करते हुये बोली "बहुत जरूरी काम अचानक ही याद आ गया था। अच्छन के अड्डे पर जो मूवी बनाई थी, उसे भी चैनल के स्टूडियो में पहुंचाना था।"

"ओह...कोई बात नहीं। अब कहां हो तुम—?"

"अपने घर पर हूं। तबियत ठीक नहीं है... ।"

"हे भगवान! क्या हो गया? ह...हम ऐसा करते हैं कि किसी अच्छे डॉक्टर को ले आते है। एम्बूलेंस भी लेते आयेंगे। जरूरत पड़ी तो तुम्हें किसी अच्छे नर्सिंग होम में ले चलेंगे... ।"

"न...नहीं...मेरी तबियत इतनी खराब नहीं है... ।"

वह बौखलाकर बोली, "मामूली-सा सिरदर्द था। पेन किलर ले लिया है...थोड़ी देर में ठीक हो जाऊंगी... ।"

"सिरदर्द कोई बीमारी नहीं होती। डॉक्टर कहते हैं कि सिरदर्द किसी दूसरी बीमारी का लक्षण होता है। कोई खतरनाक बीमारी भी हो सकती है। ब्रेन ट्यूमर भी हो सकता है... ।"

"व्हाट ऽऽऽ?" वह चिहुंकी।

"हां, ब्रेन ट्यूमर...दिमाग का फोड़ा यानि कैंसर। ये जानलेवा बीमारी होती है माधवी लेकिन तुम जरा-सी भी चिन्ता मत करना। तुम्हारा सी०टी० स्केन, एक्स-रे, अल्ट्रासाउन्ड वगैरा करायेंगे। भगवान ना करे...लेकिन ब्रेन ट्यूमर ही हुआ तो तुम्हें विदेश के किसी बढ़िया कैंसर हॉस्पिटल में लेकर चलेंगे। दुनिया के सबसे बेस्ट सर्जन से ही तुम्हारा ऑपरेशन करायेंगे। खर्चे की कोई चिन्ता नहीं। लाखों तो क्या...करोड़ों रुपये भी खर्च कर देंगे—लेकिन तुम्हें कुछ नहीं होने देंगे... ।"

"मुझे कोई ब्रेन ट्यूमर नहीं है मिस्टर अमित शाह... ।" वह थोड़ी नाराजगी के साथ बोली, "थोड़ी गैस प्रॉब्लम थी। अक्सर गैस प्रॉब्लम होने पर सिर में दर्द हो जाता है... ।"

"फिर भी...वहम का काम क्यों छोड़ा जाये पगली? अभी सारी टेस्टिंग करा लेते हैं। भगवान करे कि सारी रिपोर्ट नॉर्मल आये। हमें बहुत खुशी होगी और हम एक शानदार पार्टी रखेंगे। हम एम्बूलेंस लेकर आ जाते... ।"

"नहीं...कोई जरूरत नहीं। घर पर पापा जी भी हैं... ।"

"तो क्या हुआ...?" दूसरी तरफ से अमित शाह माधवी की बात को काटकर बोला, "पापा जी से तो मिलना है मुझे... ।"

"वो किसलिये—?"

"तुमने हमारे घर में अपनी तस्वीरें देखी तो थीं। बहादुर काका बतला रहे थे कि तुम हमारे बेडरूम में भी गई थीं। वहां तुमने अपनी तस्वीरों के साथ खून से लिखे वाक्य भी पढ़े होंगे—वो सब हमने अपने खून से लिखे। इतना सब देखने पर भी क्या तुम समझी नहीं कि हम तुमसे मुहब्बत करते हैं? हम तुम्हें पागलपन की हद तक चाहते हैं। जब हमारी बीवी बेवफाई करके अपने यार के साथ भाग गई थी तो हमें औरत जात के नाम से भी नफरत हो गई थी। लेकिन तुम्हें देखा तो...सारी नफरत बर्फ की तरह ही पिघल गई। हम तुम पर अपना सब कुछ कुर्बान कर सकते हैं। तुम्हारी खुशी के लिये कुछ भी कर सकते हैं। दावा है

कि दुनिया का कोई भी मर्द हमारे बराबर तुम्हें नहीं चाह सकता। हम तुम्हें अपनी पलकों पर बिठाकर रखेंगे। शाहजहां ने तो मुमताज के मरने के बाद ताजमहल बनवाया था—लेकिन तुम्हारे लिये हम ताजमहल जैसी खूबसूरत और बेशकीमती इमारत बनवाकर तुम्हें गिफ्ट कर देंगे। हमें तुम्हारे पापा जी से मिलकर तुम्हारा हाथ मांगना है...।''

''मिस्टर शाह! मैं आपकी आभारी हूं। आपने मुझे गुन्डों से बचाया था। लेकिन मेरी शादी पापा जी की पसन्द के लड़के से ही होगी...।''

''हममें भला क्या कमी है? खूबसूरत हैं...हैन्डसम हैं। दौलत की भी कमी नहीं है। तुम्हारे पापा जी हाथ में चिराग लेकर भी ढूंढेंगे तो हमारी टक्कर का दामाद नहीं मिल सकेगा। वो हमें पसन्द कर लेंगे। बल्कि वो तो खुश होंगे कि बैठे-बिठाये ही इतना अच्छा जमाई मिला...।''

''हम लोग पंजाबी हैं। हमारे यहां इन्टरकास्ट मैरिज नहीं होती। मेरी शादी किसी पंजाबी लड़के के साथ ही होगी—'।''

''ऐसे ही...खामखाह ही। फिर हमारे प्यार, मेरी मुहब्बत और चाहत का क्या होगा? तुम्हें लेकर हमने जागती आंखों से जाने कितने ख्वाब देख डाले हैं—प्लान बनाये हुये हैं। काशी विश्वनाथ में एक सौ ब्राह्मण हमारी शादी करायेंगे। एक छोटे शहर जितना पण्डाल लगेगा। पण्डाल में सनील के पर्दे लगेंगे। ईरानी कालीन बिछेगा। हॉलीवुड से डेकोरेशन करने वाले आयेंगे। गोल्ड की प्लेटों पर इन्वीटीशन कार्ड छपेंगे। फिल्मों में संगीत देने वाले संगीतकार ऑर्केस्ट्रा बजायेंगे। फिल्मी हीरो और हीरोइन आकर आइटम पेश करेंगे। मल्लिका शेरावत, राखी सावंत और मलाइका अरोड़ा जैसी आइटम गर्ल डांस का प्रोग्राम देंगी। शादी में शामिल होने वाले सभी मेहमानों को सोने के सिक्के दिये जायेंगे। टी०वी० सीरियल की हीरोइनें मेहमानों को अपने हाथों से ड्रिंक सर्व करेंगी और खाना खिलायेंगी। शादी का पण्डाल किसी पहाड़ी पर बनेगा और मेहमानों को लाने-छोड़कर आने के लिये दर्जनों हेलीकॉप्टर लगेंगे। तुम्हारा मेकअप करने के लिये हॉलीवुड से ही कोई ब्यूटीशियन आयेगी। तुम्हारा शादी का जोड़ा सोने की तारों से बनेगा, जिस पर कीमती हीरे जड़े होंगे। तुम्हारी पसन्द की किसी फोरेन कन्ट्री में चलकर हनीमून मनायेंगे और वहां का सबसे महँगा होटल बुक करेंगे...।''

''आप पागल तो नहीं हैं...?'' माधवी खीझ उठी।

''हां, तुम्हारे लिये तो पागल ही हैं हम। पक्का इरादा कर लिया है कि तुम्हीं से शादी करेंगे...।''

''ऐसे ही...जबरदस्ती—?''

''नहीं...जबरदस्ती नहीं। हममें भला कौन-सी कमी है, जो तुम हमसे शादी करने से इन्कार...।''

''मैं आपके साथ शादी नहीं करूंगी। ना ही आपसे कोई मतलब-वास्ता ही रखना चाहती हूं। आईन्दा, मुझसे मिलने की कोशिश भी मत करना। ना ही फोन करना...।''

''यानि तुम्हें हमारा प्यार कबूल नहीं है...?'' दूसरी तरफ से बोल रहा अमित शाह गम्भीर हो चला।

''बिल्कुल नहीं...।''

''क...क्या हम वजह जान सकते हैं माधवी—?''

''वजह नहीं मालूम। लेकिन मैं आपके साथ प्यार नहीं कर सकती...शादी का तो मतलब ही नहीं—।''

''तु...तुम हमारा दिल तोड़ रही हो माधवी...।''

''......।'' माधवी कुछ ना बोली।

''हम तुम्हारी बेरुखी बर्दाश्त नहीं कर सकते। हम...हम आत्महत्या कर लेंगे और हमारी मौत की तुम ही जिम्मेदार होगी...।''

कोई जवाब देने की बजाय माधवी ने फोन बन्द कर दिया—फिर उसका स्विच ऑफ कर दिया। और बिस्तर पर पीछे की तरफ लुढ़क कर बुदबुदाई—

''हे भगवान! कैसे सनकी आदमी से पाला पड़ा है। हाथ धोकर जबरदस्ती पीछे पड़ गया। पागल मालूम पड़ता है। मेंटल हॉस्पिटल वालों ने इसका अधूरा इलाज किया होगा। इसका पागलपन दूर नहीं हुआ। क्या इससे छुटकारा मिल जायेगा? आगे परेशान तो नहीं करेगा? कहीं वो सचमुच ही तो आत्महत्या नहीं कर लेगा? उसने सुसाइड नोट में मेरा जिक्र कर दिया तो...तो क्या होगा—?''

❑❑❑

❑❑❑

रात के बारह बज रहे थे, लेकिन ग्यारह बजे तक सो जाने वाले राजन की आंखों से नींद कोसों दूर थी।

चांदनी अपनी बीमार मौसेरी बहन विभा के पास रहने गई हुई थी। उसके बिना राजन को यूं ही लग रहा था कि मानो फूल में से खुशबू निकलकर कहीं दूर चली गई हो।

हांलाकि उसने घन्टा भर पहले चांदनी से फोन पर बातें की थीं। लेकिन वो बात भी ऐसे ही थीं कि जैसे किसी भूखे को खाने की थाली की सिर्फ फोटो दिखला दी गई हो और उसकी भूख पहले से भी ज्यादा भड़क गई हो।

चूंकि अदालत में मर्डर केस चल रहा था और केशव को बतौर सहायक राजन की आवश्यकता थीं— वरना राजन चांदनी को अपने साथ लेकर जाता और विभा से कुशल क्षेम पूछकर वापिस आ जाता। चांदनी भी यही बोली थी कि वो शाम या रात तक वापिस लौट आयेगी— लेकिन फिर उसने फोन पर बतलाया था कि विभा के पति को मजबूरी में बिजनेस के सिलसिले में दिल्ली जाना पड़ा, विभा घर में अकेली थी— सो उसने जिद करके उसे रोक लिया, वो 'जीजू' के वापिस लौटते ही घर लौट आयेगी।

"यशोमती मइया से बोले नन्दलाला...राधा क्यों गोरी मैं क्यों काला...?"

फोन पर गाना बजने पर राजन ने समझा कि चांदनी की ही कॉल है—सो उसने बला की फुर्ती के साथ फोन उठाकर कान से लगाया और बोला— "हैलो, डार्लिंग...।"

"नहीं...डार्लिंग शब्द नहीं जमता मित्र... हां दोस्त, मित्र या फ्रेन्ड चलेगा...।"

स्वर को सुनकर वो सकपकाया और झेंपकर बोला— "आ...आयम सॉरी। मैं समझा था कि... किसी और का फोन है। वैसे मैंने आपको पहचाना नहीं। क्या आप अपना परिचय देंगे?"

"शुभ चिन्तक...।"

"ये नाम है आपका-?"

"नहीं। शुभचिन्तक का मतलब है...भला चाहने वला। वैसे तुम मुझे नारद कह सकते हो।"

"नारद? नारद नाम है आपका?"

"नाम तो नहीं है, लेकिन मुझे नारद कहा जा सकता है—क्यों कि

मैं नारद मुनि जैसे ही काम करते जा रहा हूं। नारद मुनि को तो जानते ही होंगे। उसे धार्मिक फिल्मों में देखा ही होगा? इधर की बात उधर और उधर की बात इधर...लगाई-बुझाई वाला काम। वैसे नारद को चुगलखोर या झूठा भी नहीं कहा जा सकता। वो हमेशा सच ही बोला। उसकी इन्फॉर्मेशन गलत नहीं होती थी। मैं भी सच्चा हूं और मेरी इन्फॉर्मेशन भी गलत नहीं होती। इस मामले में सत्यवादी राजा हरिश्चन्द्र का वंशज ही हूं मैं...।"

"तुम क्या कह रहे हो, या क्या कहना चाहते हो, मेरी समझ में कुछ भी नहीं आ रहा है। आधी रात का वक्त है। अपना परिचय दो और ये बोलो कि मुझे फोन क्यों किया?"

"ऑयम सॉरी मित्र! मैं अपना वास्तविक परिचय नहीं दे सकता तुम्हें नारद से ही काम चलाना होगा। वैसे भी एक बहुत बड़े लेखक ने कहा था कि नाम में क्या रखा है? मेरा नाम नारद मान लो ना। मेरा असली नाम जानकर भला क्या करोगे? बेहतर होगा कि वो बातें जान लो, जिन्हें उगलने के लिये मेरे पेट में मरोड़े उठ रहे हैं...।"

"ठीक है...बोलो, क्या बताना चाहते हो...?" थोड़ी नाराजगी के संग बोला राजन, "...उगलो वो बातें, जिनकी वजह से तुम्हारे पेट में मरोड़े उठ रहे हैं।"

"मुझे अपने मरोड़े खत्म करने हैं, सो बोलूंगा ही मेरे परम मित्र। लेकिन मुझे डर है कि तुम्हें मरोड़े ना लग जायें। वैसे तो तुम केशव पण्डित के परमशिष्य हो— तुम्हारा हार्ट मजबूत ही होगा लेकिन जब दिमाग के भावुकता वाले हिस्से पर कड़वी सच्चाई के हथौड़े पड़ते हैं तो अच्छे-भलों के पेट में तो क्या... दिमाग में भी मरोड़े उठने लगते हैं।"

"तुम्हारा भेजा हिला हुआ तो नहीं है? आधी रात को फोन करके ऊट-पटांग किस्म की बातें किये जा रहे हो। मुझे नींद आ रही है...।"

"मैं जो सच्चाई उगलने जा रहा हूं उसे सुन तुम्हारी मेरी नींद गधे के सींग की तरह ही गायब हो जायेगी। नींद की ढेर सारी गोलियां गटकने पर भी सो नहीं सकोगे। देखो, नाराज मत होना...तुम्हारा ही नुकसान होगा क्योंकि तुम्हारे साथ जो खेल खेला जा रहा है, उसके बारे में तुम्हें अभी जानकारी नहीं मिली तो बाद में मालूम होने पर ऐसा झटका लगेगा कि ब्रेन हेमरेज हो सकता है, या तुम पागल भी हो सकते हो। दिमाग

तो तुम्हारा अभी भी हिलेगा...लेकिन तुम स्वयं पर नियन्त्रण कर सकते हो... खुद को सम्भाल सकते हो...।"

"मेरे फोन पर तुम्हारे फोन का नम्बर आ चुका है। तुम्हारा नाम और पता मालूम हो ही जायेगा। तुम्हें पकड़ कर वो मार मारूंगा कि...।"

"चोरी के फोन से बात कर रहा हूं– इसलिये तुम मुझ तक नहीं पहुंच सकते। वैसे तुम इतना नाराज क्यों हो रहे हो? मैंने तो तुम्हारे विश्वास को नहीं छला है– तुम्हारे साथ कोई विश्वासघात नहीं किया है– तुम्हारी पीठ पर छुरा नहीं घोंपा है। जिसने ये काम किया है– उस पर ये गुस्सा उतारना मित्र।"

"कौन...किसकी बात कर रहे हो तुम? कौन मेरी पीठ पर छुरा घोंप रहा है, मेरे विश्वास को छल रहा है और मेरे साथ बेवफाई कर रहा है?"

"तुम्हारी बीवी...चांदनी।"

□□□

□□□

"ये क्या हिमाकत है सरिता...?" कसे हुये जबड़ों को ढीला छोड़कर और मुट्ठियों को कसकर फुंफकार उठा रॉबर्ट, "...उस वीडियो फिल्म का क्या मतलब हुआ? तुमने जानबूझकर और प्लान बनाकर ही हम दोनों की ब्लू फिल्म बनाई है। तुमने पहले ही रूम बुक करा कर वीडियो कैमरा सैट किया हुआ था। तुम जानती थी कि मैं तुम्हारी खूबसूरती पर रीझकर तुम्हारे पास आऊंगा और तुम्हें हासिल करने को व्याकुल हो जाऊंगा। ब्लैकमेल करने का इरादा था मुझे? क्या मुझे होटल का मामूली मैनेजर समझा है? तुम जानती नहीं कि मैं क्या चीज हूं...?"

क्रान्ति ने सिगरेट में कश मारकर होठों को गोल किया और धुएं का गोला-सा जल-भुन रहे रॉबर्ट की तरफ दागकर बोली, "जानती हूं मैं। ये होटल माफिया की मिल्कियत है–इसलिये तुम माफिया से जुड़े हुये बन्दे हो। मैं ये भी जानती हूं कि तुम माफिया के चीफ वाटसन के दामाद जैसे हो।

तुम्हारी बीवी जूलिया वाटसन के स्वर्गवासी मित्र जैकब की बेटी है। जैकी ने वाटसन पर बहुत-से अहसान किये थे। वाटसन के दुश्मनों ने उस पर जानलेवा हमला बोला था तो उसके हिस्से की गोलियां जैकब

ने अपने जिस्म पर झेली थीं। मरते वक्त उसने वाटसन से वचन लिया था कि वो उसकी बेटी जूलिया का ख्याल रखेगा। वाटसन ने भी वचन दिया था कि वो जूलिया को अपनी सगी बेटी के बराबर ही चाहेगा और उसको किसी भी किस्म की तकलीफ नहीं होने देगा, कोई कमी होने देगा...।"

आश्चर्य से क्रान्ति को देखा रॉबर्ट ने, फिर क्रोध से भरा हुआ बोला– "काफी जानकारी रखती हो तुम। इस पर भी तुमने बी०एफ० बनाने की जुर्रत की? लेकिन मुझे ब्लैकमेल नहीं कर सकोगी। एक फूटी कौड़ी नहीं मिलेगी तुम्हें। बल्कि इस जुर्रत के लिये सजा मिलेगी। मैं सोच रहा था कि तुम्हें पकड़ने के लिये अपने आदमियों को दौड़ाना पड़ेगा लेकिन तुमने तो बेवकूफी का परिचय दिया और स्वयं ही चल कर यहां आ गईं।"

"हां, आ तो गई हूं मैं...।" जहरीली किस्म की मुस्कान हसीन होठों पर चिपकाये हुये बोली वह, "...क्या करोगे? अपने आदमियों को बुलाकर हुक्म दोगे कि वो मार-मार कर मेरा कीमा बना दें...?"

"तुम जैसी चूहिया के लिये आदमियों को बुलाने की भला क्या जरूरत है? मैं ही तेरा तिया-पांचा कर डालूंगा हरामजादी...।"

कहने पर रॉबर्ट ने क्रान्ति पर ये सोचकर छलांग लगा दी कि उसे दबोचकर बढ़िया सबक सिखलायेगा...। लेकिन क्रान्ति के बला की फुर्ती से एक तरफ हट जाने पर वो फ़र्श पर गिरा और पसलियों पर जोरदार किक पड़ने पर चीख भी उठा।

"तू...तूने मुझ पर हमला किया कुतिया...तेरी इतनी हिम्मत... बहुत बुरा अन्जाम होना है तेरा...।"

"मेरे नहीं... अपने अन्जाम की परवाह कर रॉबर्ट...।" क्रान्ति ने उठने की चेष्टा कर रहे रॉबर्ट के सीने पर किक जड़कर उसे वापिस गिरा दिया और सिगरेट के कश मारकर बोली– "उस बी०एफ० का मास्टर-पीस मेरे खास आदमी के पास है। वो आदमी उस मास्टर-पीस के साथ तेरे घर के सामने खड़ा है। अगर तय किये गये टाइम तक मैंने उसे फोन नहीं किया तो वो तुम्हारी बीवी को ब्लू फिल्म दिखला देगा।"

"ये...ये क्या बक रही हो तुम...?" बौखला उठा रॉबर्ट !

उसकी पेशानी पर पसीना छलछला उठा।

"उस ब्लू फिल्म में सिर्फ हम दोनों की कुश्ती ही नहीं है– बल्कि तेरे कुछ खास संवाद भी हैं। जैसे कि जूलिया तुम्हारे सामने कुछ भी नहीं है जानेमन...वो मिट्टी तो तुम बेशकीमती हीरा...मैं अय्याश प्रवृत्ति का रहा हूं, एक औरत या बीवी के साथ बन्धकर नहीं रह सकता, जूलिया को लात मारकर घर से निकाल दूंगा और तुम्हें रानी बनाकर रखूंगा, तुम्हारे कदमों में अपना सब कुछ न्योछावर कर दूंगा... वगैरा-वगैरा...।"

"तो इससे क्या फर्क पड़ता है? जूलिया से डरता हूं क्या मैं? वो ही मुझसे डरती है– जैसे शेर के सामने कोई भीगी बिल्ली। उसे मेरी अय्याशियों के बारे में सब मालूम...।"

"नहीं, मालूम है उसे...।" क्रान्ति उसकी बात काटकर बोली, "...छह महीने पहले जूलिया ने तुझे एक लड़की के साथ मुंह काला करते हुये पकड़ा था और अपने अंकल वाटसन से शिकायत कर दी थी। वाटसन ने तेरी जमकर धुलाई की थी। वो तुझ पर पैट्रोल छिड़ककर आग लगाने जा रहा था तो तू जूलिया के पैरों में जा गिरा था और रहम की भीख मांगने लगा था। जूलिया को तुझ पर रहम आ गया था और उसने वाटसन से तुझे छोड़ देने के लिये कहा था। वाटसन ने तुझे इस शर्त पर छोड़ा था कि तू बाकी की जिन्दगी जूलिया की गुलामी करके ही बितायेगा। उसके साथ बेवफाई नहीं करेगा और किसी दूसरी औरत को नजरें उठाकर देखेगा भी नहीं। तूने भी वाटसन के पैर पकड़कर वचन दिया था कि तू जूलिया का वफादार बनकर रहेगा और किसी दूसरी औरत की तरफ देखेगा भी नहीं...।"

रॉबर्ट का मुंह खुला-का-खुला और आंखें फटी-फटी रह गईं–

"तु...तुम्हें यह सब कैसे मालूम...?"

"इस होटल के ही कुछ नौकरों की जेबें गरम करके तुम्हारे बारे में जानकारियां हासिल की थीं। तभी तुझे अपनी खूबसूरती के जाल में फांसा और बी०एफ० तैयार की। वो बी०एफ० नहीं, तेरी मौत का वारन्ट है। मेरा आदमी मास्टर-पीस तेरी बीवी जूलिया तक पहुंचायेगा। जूलिया उस बी०एफ० को वाटसन के पास पहुंचायेगी। वाटसन की क्या प्रतिक्रिया होगी...ये तू भी सोच सकता है। मारे क्रोध के पागल हो उठेगा वो। उसका कहर तुझ पर कयामत बनकर ही टूटेगा। शायद तुझे वो

इतनी बुरी मौत मारे कि लोग कुत्ते की मौत की बजाय तेरी मौत का ही उदाहरण देना शुरू कर दें...।"

रॉबर्ट का चेहरा फक्क!

ऐसी दशा हो चली उसकी कि मानो इंजेक्शन से उसके जिस्म से खून की एक-एक बूंद बाहर निकाल ली गई हो।

सारी हेकड़ी निकल गई पट्ठे की।

बीमार-सा हो उठा वो और कुर्सी पर ढेर-सा होकर हांफने-सा लगा।

शेर मानो गीदड़ बन चुका था, जबकि क्रान्ति अपनी कामयाबी पर मन-ही-मन फुदक रही थी। कुर्सी पर बैठकर उसने सिगरेट का टोंटा ऐश-ट्रे में ठूंसा और व्हिस्की की बोतल उठा ली। दांतों से उसके ढक्कन को तोड़कर कालीन पर थूका और बोतल मुंह से लगाकर घूंट भरने लगी।

"मु...मुझे बी०एफ० का मास्टर-पीस चाहिये...।" राबर्ट की आवाज बेहद थकी हुई और कमजोर-सी थी–"कितनी रकम चाहिये तुम्हें–?"

"रकम का क्या अचार डालना है मुझे? एक चवन्नी भी नहीं चाहिये...।"

"क...क्या मतलब–?" चौंका राबर्ट और कौतूहलता में फंसा हुआ बोला, "क्या तुमने रकम के लिये ये बी०एफ० नहीं बनाई है–?"

"नहीं...कतई नहीं–।"

"तो...तो फिर–?"

"मुझे वाटसन से मिलना है...।"

"न...नहीं...।"

"डरो मत। तुम्हारी शिकायत नहीं करूंगी...।"

"वाटसन हिन्दुस्तानियों से चिढ़ता है। कुछ दिनों पहले तक यमराज नाम का एक हिन्दुस्तानी माफिया चीफ था और तब वाटसन के पास सिर्फ अमेरिका का ही चार्ज था। वो यमराज को अपने रास्ते से हटाकर माफिया चीफ बनना चाहता था।

लेकिन यमराज को वाटसन के इरादे मालूम हो गये थे। उसने वाटसन की बीवी और चार जवान बेटों को बुरी मौत मार दिया था। तब वाटसन अपनी बेटी जेनी के साथ फ्रांस में था। अपनी बीवी और बेटों की हत्या की खबर सुनकर वो अन्डरग्राउन्ड हो गया था। बाद में

केशव पण्डित नाम के एक हिन्दुस्तानी ने यमराज का खात्मा कर दिया था। जुगाड़ भिड़ाकर वाटसन माफिया चीफ की कुर्सी तक पहुंच गया—लेकिन वो हिन्दुस्तानियों से चिढ़ता है। वो उनसे मिलना-जुलना कतई पसन्द नहीं करता। लेकिन तुम वाटसन से मिलना क्यों चाहती हो—?"

"मुझे वाटसन से कोई काम लेना है...।"

"नामुमकिन। वो किसी हिन्दुस्तानी का काम नहीं करेगा। हालांकि हिन्दुस्तान में माफिया की ब्रांच है, जिसे हिन्दुस्तानी ही चला रहे हैं—लेकिन उनमें से किसी को भी वाटसन से मिलने या बात करने की इजाजत नहीं है। जरूरत पड़ने पर वाटसन के आदमी ही उन लोगों से कॉन्टेक्ट करते हैं। वाटसन से कोई काम कराना तो क्या...उसे मुलाकात करने की बात भी भूल जाओ...।"

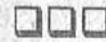
यूं ही मुस्कराई क्रान्ति कि मानो राबर्ट ने बोल दिया हो कि शेरनी हिरणी के बच्चे का शिकार नहीं कर सकती।

व्हिस्की की बोतल मेज पर पटक कर और फिर रॉबर्ट की आंखों में झांक कर सर्द लहजे में ही बोली "वाटसन मुझसे मिलेगा भी और मेरा काम भी करेगा। मुझे उसकी बेटी जेनी के बारे में ज्यादा-से-ज्यादा जानकारियां दो...।"

"जेनी में वाटसन की जान बसती है। तब जेनी पांच साल की ही थी, जब उसकी मां मर गई थी। लेकिन वाटसन ने दूसरी शादी नहीं की थी। वो जेनी को सौतेली मां के हवाले नहीं करना चाहता था। मां बनकर उसने ही जेनी की परवरिश की थी। जेनी की हर फरमाईश पूरी की उसने—उसकी हरेक खुशी को पूरा किया। अगर तुम्हारा इरादा जेनी को अपने कब्जे में लेकर वाटसन से अपना काम कराने का है तो...इस विचार को अपने दिमाग से तुरन्त ही निकाल दो। सुरक्षा के इतने इन्तजाम तो अमेरिका के राष्ट्रपति के भी नहीं होंगे, जितने कि वाटसन ने जेनी के लिये किये हैं। जेनी तक पहुंचने की चेष्टा करने वाले को मौत के सिवाय कुछ भी मिलने वाला नहीं।"

"फिर भी मुझे जेनी के बारे में बतला तू रॉबर्ट। उसकी दिनचर्या क्या है? वो क्या खाती-पीती है? कब सोती, कब जागती है? कहां-कहां जाती है? किस-किससे मिलती है? उसकी सहेलियों और दोस्तों के बारे

में बतला। खास करके उन लोगों के बारे में मुझे बतला, जिनसे जेनी अक्सर मिलती हो, या जिनकी पहुंच जेनी तक हो। अगर तुझे बी०एफ० का मास्टर-पीस चाहिये तो मुझे जेनी के बारे में ज्यादा-से-ज्यादा जानकारियां दे। फिर सोचूंगी कि जेनी मेरे काम की है कि नहीं? अगर काम की है तो उस तक कैसे पहुंच सकती हूं या उसका क्या और कैसे इस्तेमाल करना है...।"





"अगर तूने ये बात फोन की बजाय मेरे सामने आकर की होती तो तुझे इतना मारता कि अगला जन्म लेने से ही मना कर देता...।" क्रोधवश थर-थर कांपते हुये ही बोला राजन, "...इस गलतफहमी में भी मत रहना कि तू चोरी के फोन से बात कर रहा है तो मैं तुझ तक पहुंच नहीं सकूंगा। अगर तूने ज्यादा बकवास की तो कैसे भी...किसी तरीके से भी तुझ तक पहुंचकर ऐसा धोऊंगा कि दुनिया का सबसे बड़ा सर्जन भी तेरे कटे-फटे जिस्म की सिलाई करने से मना कर देगा...।"

"तुम्हारा क्रोधित होना स्वभाविक है राजन शुक्ला...।" दूसरी तरफ से कथित नारद बड़ी ही विनम्रता के साथ बोला, "...तुम ना सिर्फ चांदनी को बहुत प्यार करते हो, बल्कि उस पर अपने से भी ज्यादा विश्वास करते हो। तुम्हारे लिये वो सती-सावित्री से कम नहीं है। वो तुम्हारे साथ दगाबाजी कर सकती है, इसकी कल्पना भी नहीं कर सकते तुम। लेकिन जब तुम्हारा सच्चाई से सामना होगा तो...उसे झुठला नहीं सकोगे। ये औरत जात होती ही ऐसी है। पाताल की गहराई नापी जा सकती है लेकिन औरत जात की फितरत या उसके चरित्र की थाह कोई नहीं पा सकता है। किसी ने सच ही कहा है कि...त्रिया चरित्र जाने नहीं कोय...पति को मारकर सती होय।' चांदनी भी वैसी ही है। उसका वास्तविक रूप देखकर तुम्हारे दिमाग की चक्करघिन्नी बन जायेगी...।"

"चुपकर हरामजादे। अगर तूने मेरी चांदनी के बारे में जरा-सी भी बकवास की तो मुझसे बुरा कोई नहीं होगा...।"

"मैं तुम्हारे सामने पेश हो जाऊंगा। मेरी बोटी-बोटी करके चील-कौओं को खिला देना। मेरी हड्डी-पसलियों का चूरा करके किसी किसान के खेत में खाद की जगह डाल देना। बर्फ तोड़ने वाले सूजे से

मेरे जिस्म में इतने छेद कर देना कि कम्प्यूटर भी उनकी गिनती नहीं कर सके—लेकिन ये सब तभी करना, जब मैं झूठा और चांदनी वफादार निकले। गुस्सा थूककर मेरे एक प्रश्न का उत्तर दो कि क्या तुम रॉकी को जानते हो...चन्दन गढ़वाले को—?"

"हां, जानता हूं। वो चांदनी का मौसेरा भाई है। वो दिल्ली में रहता है...।"

"गलतफहमी के शिकार हो तुम। रॉकी का बिजनेस भले ही दिल्ली में हैं, लेकिन वो रहता मुम्बई में है...।"

"बकवास मत कर। अगर रॉकी मुम्बई में रहता तो वो मुझसे और चांदनी से मिलने आता। मुझे और चांदनी को अपने घर पर बुलाता—।"

"वो चांदनी से तो मिलता है—उसे अपने घर भी बुलाता है...।" अभी भी चांदनी उसी के घर में हैं और दोनों अय्याशी कर...।"

"शटअपऽऽऽ।"

"चींखने या गला फाड़ने से सच्चाई थोड़े ही मिट जायेगी शुक्ला। हकीकत यही है कि चांदनी रॉकी के घर पर मौजूद है। दोनों सोये नहीं होंगे तो बिस्तर पर एक-दूसरे के साथ...।"

"शटअप...अपनी जुबान को ब्रेक लगा तू हरामजादे। मार दूंगा तुझे। जान से मार दूंगा...।"

"मैं झूठा साबित हुआ तो मार देना...।"

"मेरी चांदनी गंगाजल की तरह ही पवित्र है ओये कुत्ते। इस गलतफहमी में मत रहना कि मैं तेरी बकवास पर विश्वास कर लूंगा।"

"जानता हूं कि बिना सबूत के...या अपनी आंखों से देखे बिना तुम विश्वास नहीं करोगे। तुम्हें सबूत भी मिलेगा और अपनी आंखों से भी देखोगे। जल्दी ही मान जाओगे कि चांदनी और रॉकी के बीच अवैध-सम्बन्ध...।"

"चांदनी और रॉकी मौसेरे भाई-बहन हैं।"

"सगे भाई-बहन तो नहीं हैं ना? दोनों चन्दनगढ़ के कॉलेज में पढ़ते थे। एग्जाम होने, या लेट हो जाने पर चांदनी चन्दनगढ़ में ही अपनी मौसी या रॉकी के घर पर ही रुक जाया करती थी। दोनों जवान और खूबसूरत थे। दोनों में कॉलेज टाइम में ही प्यार हो गया था। दोनों अपनी मर्यादा भी लांघ गये थे। लेकिन दोनों के सामने प्रॉब्लम ये थी कि वो

मौसेरे भाई-बहन थे और उनकी शादी नहीं हो सकती थी। सो दोनों ने इस सच को स्वीकार करके ही प्यार किया था, या अवैध सम्बन्ध बनाये थे कि उनकी शादी नहीं हो पायेगी। सो चांदनी की शादी तुम्हारे साथ हो गई थी—लेकिन चांदनी की दीवानगी में रॉकी ने शादी नहीं की थी और दिल्ली जाकर बिजनेस करने लगा था...।"

"तुझे ढूंढकर मैंने मार-मार कर अधमरा ना किया तो मेरा नाम भी राजन शुक्ला नहीं—।"

"अगर मैं साबित कर दूं कि चांदनी और रॉकी के बीच अवैध सम्बन्ध हैं तो...?"

"बकवास मत कर। तेरे झूठे सबूतों पर विश्वास करने वाला नहीं हूं मैं...।"

"झूठे नहीं...सच्चे सबूत। वो भी तुम्हारे ही घर में और तुम्हारे बेडरूम में ही मिल जायेंगे...।"

"क्या बकवास है ये...?"

"रॉकी का बंगला मोहनपुरी में है। अन्धेरी रोड पर होटल महताब के ठीक सामने से एक सड़क मोहन नगर के लिये गई है। मोहन नगर में रोड नम्बर दस पर पीपल के बड़े पेड़ के नीचे शिरडी वाले सांई बाबा का मन्दिर है। उसी के सामने हरे रंग का जो बंगला है, वो रॉकी का है। चांदनी भी वहीं पर है। लेकिन तेज बारिश हो रही है। सड़कों पर पानी भरा हुआ है। कई सड़कों पर लम्बा जाम लगा है। तुम्हें वहां पहुंचने में घन्टों लग जायेंगे। तुम्हारे वहां पहुंचने से पहले चांदनी वहां से निकल चुकी होगी। लेकिन तुम चांदनी के हाथ से लिखी डायरी पढ़कर मेरी बात पर विश्वास कर सकते हो...।"

"क्या बकवास कर रहे हो।" खीझकर ही बोला राजन, "चांदनी को डायरी लिखने का शौक नहीं है—।"

"बिल्कुल नहीं है। लेकिन वो रॉकी को और उसके साथ बिताये लम्हों को याद करके डायरी लिखती है। कुछ दिन पहले एक पार्क में चांदनी रॉकी की गोद में सिर रखे लेटी हुई थी और रॉकी उसे अंगूर खिला रहा था। तब चांदनी ने रॉकी को बतलाया था कि वो मौका मिलने पर भीतर से दरवाजा बन्द करके और उसे याद करके डायरी लिखा करती है। रॉकी ने कहा था कि उसे ऐसी गलती नहीं करनी चाहिये—वो डायरी

उसके पति राजन के हाथ पड़ गई तो भारी गड़बड़ी हो जायेगी। तब चांदनी ने कहा था कि वो डायरी राजन यानि तुम्हारे हाथ कभी नहीं लगेगी। क्योंकि वो उस डायरी को उसके पहनाये मंगलसूत्र और आभूषणों के साथ लाल रंग के एक सनील मढ़े डिब्बे में रखती है। वो डिब्बा स्टील की आलमारी के लॉकर में बन्द रहता है। उस लॉकर की चाबी को वह बेड के बॉक्स में सारे सामान के नीचे चांदी की एक चौकोर डिबिया में छिपाकर रखती है...।"

"बहुत बकवास कर चुके हो तुम...।"

"अब उखड़ने वाली भला क्या बात है भई? अब तो मैं सबूत की बात कर रहा हूं मित्र। अपने बेड के बॉक्स में चांदी की डिबिया ढूंढो। देखो कि उसमें स्टील की आलमारी के लॉकर की चाबी है कि नहीं। चाबी है तो लॉकर खोलो। फिर देखो कि लॉकर में लाल सनील का कोई डिब्बा है कि नहीं? डिब्बे में मंगल-सूत्र और आभूषणों के साथ कोई डायरी है कि नहीं? डायरी में चांदनी ने रॉकी के बारे में लिखा है कि नहीं? चांदनी की राइटिंग पहचानने में तो तुमसे कोई गलती नहीं होगी। अगर वो राइटिंग चांदनी की ही हुई तो फिर तुम्हें दूसरे किसी सबूत की जरूरत नहीं पड़ेगी। दूध-का-दूध और पानी-का-पानी हो जायेगा। बेहतर होगा कि तुम ये शुभ काम अभी कर डालो। मैं फोन बन्द कर रहा हूं। तुम देखो कि चांदनी की लिखी कोई डायरी है कि नहीं? अगर है... तो उसमें चांदनी ने क्या-क्या लिखा हुआ है...?"

❑❑❑

❑❑❑

रॉबर्ट काफी देर तक क्रान्ति को एकटक देखता रहा और फिर गम्भीर भाव से बोला—"तुम सिर्फ खूबसूरत और सेक्सी ही नहीं हो। तुम कुछ और भी हो। तुमने मेरे बारे में जानकारियां निकालीं और फिल्म बनाई। चूंकि तुमने पहले ही कमरा बुक कराकर वीडियो-कैमरा फिट कर दिया था—जाहिर है कि तुम्हें पक्का विश्वास था कि मैं तुम पर लट्टू हो जाऊंगा और तुम्हारे साथ कमरे में पहुंच जाऊंगा। मेरे पास बी०एफ० की डी०वी०डी० भेजने पर तुम बिना डरे यहां चली आई। मुझ पर हमला बोला। मेरी बीवी के बारे में तुम्हें सारी जानकारी थी। ये भी मालूम था कि डी०वी०डी० वाटसन के पास पहुंच गई या वाटसन को मेरी अय्याशी

की जानकारी हो गई तो वो मेरा बैन्ड बजा देगा। मुझे शेर से भीगी बिल्ली बना दिया। अब तुम वाटसन की बेटी के बारे में जानकारी चाहती हो। तुम्हारे दिमाग में क्या चल रहा है, मुझे नहीं मालूम। तुम अपने मकसद में कामयाब होगी कि नहीं, मुझे नहीं मालूम। लेकिन तुम्हारे इरादे खतरनाक हैं। पूरे अमेरिका में कोई भी माई का लाल वाटसन के खिलाफ कुछ करने की सोच भी नहीं सकता। लेकिन तुम उसके साथ कोई खेल खेलना चाहती हो। कौन हो तुम?"

"मेरा नाम क्रान्ति है...।"

"क...क्रान्ति?" चिहुंक कर बोला रॉबर्ट, "कहीं तुम वो वाली क्रान्ति तो नहीं हो, जिसने यमराज से शादी करने के लिये उसके चैलेंज को पूरा किया था...?"

प्रत्युत्तर में क्रान्ति सिर्फ मुस्कराई।

"ओह...तो तुम ही हो क्रान्ति। तुम्हें देखा तो नहीं था—लेकिन तुम्हारे बारे में सुना जरूर था कि तुम बहुत ही खतरनाक हो, शातिर दिमाग वाली हो। तुम्हारे बारे में जो सुना था, वैसा ही तुम्हें पाया है क्रान्ति।"

"मुझे जेनी के बारे में जानकारियां चाहिये...।"

"मैं मानता हूं कि तुम खतरनाक हो। लेकिन वाटसन भी माफिया किंग...।"

"मुझे जेनी के बारे में जानकारी दे ओये रॉबर्ट...।"

रॉबर्ट ने कन्धे उचकाये और फिर क्रान्ति को जेनी के बारे में बतलाने लगा।

इतनी देर में ही क्रान्ति व्हिस्की की पूरी बोतल गटक गई। खाली बोतल मेज पर पटककर उसने सिगरेट सुलगा ली और रॉबर्ट के चुप होते ही बोली—"हैरी ये बन्दा अपने काम का है। ये जेनी का ब्वाय-फ्रेन्ड...यार है। दोनों चोंच से चोंच मिलाकर 'गुटर...गूं...गुटर गूं...' करते हैं। वाटसन को भी हैरी पसन्द है और उसे दोनों की यारी से कोई दिक्कत नहीं। हैरी जेनी से मिलने उसके घर जाता रहता है तो जेनी भी हैरी के घर आता रहता है।"

"लेकिन तुम करना क्या चाहती हो—तुम्हारे इरादे क्या हैं क्रान्ति? मैं मानता हूं कि तुम बहुत शातिर हो—लेकिन वाटसन भी माफिया का

चीफ है...सुप्रीमो है। चूंकि तुम यमराज के सम्पर्क में रह चुकी हो—इसलिये तुम्हें बतलाने की आवश्यकता नहीं कि माफिया किंग की कितनी पॉवर और पहुंच होती है।"

"मुझे बतलाने की जरूरत नहीं... ।" बुरा-सा मुंह बनाकर बोली क्रान्ति, "...मुझे मालूम है कि वाटसन क्या चीज है। लेकिन मुझे उससे जो काम लेना है, वो तो लेकर ही रहूंगी। मेरी समझ में दुनिया का सबसे खतरनाक आदमी केशव पण्डित है और मैं उसकी भी परवाह नहीं करती... ।"

"ठीक है...जैसी तुम्हारी मर्जी। तुम्हें मुझसे जो जानकारी चाहिये थी, मैंने दे दीं। अब मुझे बी०एफ० की मास्टर-कॉपी तो दे दो... ।"

"जब मेरा मिशन पूरा हो जायेगा तो दे दूंगी। मुझे क्या उस मास्टर कॉपी का अचार डालना है। अभी तो मुझे दस हजार डॉलर चाहिये— ।"

"दस हजार डॉलर—?"

"यहां रहूंगी तो खर्चा तो होगा ही यार। तुम्हें मैंने बिस्तर पर जन्नत की सैर कराई थी, वो अनमोल है—उसकी कीमत नहीं चुकाई जा सकती। सुहागरात का नजराना समझकर दस हजार डॉलर दे दो— ।"

"चाहो तो ज्यादा रकम ले सकती हो। लेकिन उस फिल्म की मास्टर कॉपी दे दो... ।"

"नहीं, वो अभी नहीं मिलेगी। तुम्हारा क्या भरोसा—वाटसन को मेरे बारे में बतला सकते हो। जब तक उस बी०एफ० की असली डी०वी०डी० मेरे पास है, तब [illegible] कोई गड़बड़ी नहीं कर सकते। जल्दी से रकम दो [illegible] उस बन्दे को फोन करना है, जो तुम्हारे घर के आसपास मंडरा ह। कहीं वो तुम्हारी बीवी के पास ना पहुंच जाये... ।"

रॉबर्ट ने रकम देने में ज्यादा देर ना लगाई।

□□□

□□□

एक साथ दस-ग्यारह च्वींगम मुंह में डालकर राजन कमरे के भीतर तेज कदमों से चहलकदमी करने लगा—इधर से उधर और उधर से इधर।

उसके मस्तिष्क में विचारों के चक्रवात से उठ रहे थे और प्रश्न-उत्तर के ज्वारभाटा भी उभर रहे थे—

"कौन था ये गुमनाम व्यक्ति, जो अपना नाम नारद बतला रहा था? क्या वो चांदनी के बारे में सच बोल रहा था? क्या वास्तव में ही चांदनी और रॉकी के बीच अवैध सम्बन्ध... ।"

"लानत है तुझ पर..." उसके दिल ने उसके मस्तिष्क को डांटते हुये कहा, "...किसी ने बकवास की और तूने उस पर विश्वास कर लिया? क्या तू चांदनी को नहीं जानता? वो देवी है। कितनी अच्छी है वो! ऐसी नेक बीवी है वो, जो ख्यालों में भी अपने पति के साथ बेवफाई करने की कल्पना नहीं कर सकती! वो अपने पति के लिये अपनी जान तक कुर्बान कर देने वाली बीवियों में से है। इतने वर्षों में भी तू चांदनी को नहीं समझ पाया तो तुझ पर लानत ही है। उस ससुरे नारद ने चांदनी के बारे में बकवास की... और तूने विश्वास कर लिया-?"

"नहीं, विश्वास तो नहीं किया था— कतई भी नहीं किया था! लेकिन... ।"

"लेकिन? लेकिन क्या? बोल ना— लेकिन कहकर ही चुप्पी क्यों लगा गया तू?"

"लेकिन नारद ने ये भी बतलाया कि चांदनी रॉकी के बारे में एक डायरी लिखा करती है। उसने वो डायरी लाल सनील वाले बॉक्स में रखी है और वो बॉक्स अलमारी के लॉकर में रखा हुआ है। उस लॉकर की चाबी बेड के बॉक्स में है—एक चांदी की डिबिया में... ।"

"नारद झूठ बोल रहा था... बकवास कर रहा था... ।"

"हो सकता है कि वो झूठ बोल रहा हो—बकवास कर रहा हो, लेकिन चैक करने में भला क्या जाता है? देख लेने में क्या बुराई है? अगर कोई डायरी नहीं मिलती तो क्लियर हो जायेगा कि नारद झूठ बोल रहा था—बकवास कर रहा था। अगर चैक नहीं किया तो दुविधा बनी रहेगी, टेंशन दूर नहीं होगी।"

राजन की चहल कदमियों को ब्रेक लग गया, "क्या मुझे नारद के दावे को चैक करना चाहिये? ये देखना चाहिये कि चांदनी की लिखी कोई डायरी है कि नहीं? अगर नहीं हुई तो क्लियर हो जायेगा कि नारद नाम का वो शख्स झूठ बोल रहा था। तेरी सारी टेंशन अभी के अभी दूर हो जायेगी।"

राजन बेड के करीब पहुंचा और हथेली पर घूंसा मारकर

बोला—"...मैं अगर इस बात की चैकिंग करता हूं तो इसका मतलब ये हुआ कि मुझे चांदनी और उसके प्यार पर ऐतबार नहीं है—मैं एक अन्जान आदमी की बकवास में आकर चांदनी पर शक कर रहा हूँ। नहीं, मुझे डायरी के बारे में सोचना भी नहीं चाहिये...।"

"तुझे कभी भी नारद की बात याद आ सकती है और तू टेंशन में पड़ सकता है...।" उसका मस्तिष्क मानो उसके कान में फुसफुसाया, "...भले ही तुझे चांदनी पर पूरा भरोसा है, लेकिन नारद के दावे को चैक करने में क्या बुराई है? तुझे देख लेना चाहिये कि अलमारी के लॉकर में कोई डायरी है कि नहीं, एक मिनट ही तो लगेगी। डायरी नहीं मिलने से तुझे खुशी का आभास होगा। चांदनी के प्रति तेरा प्यार बढ़ेगा ही... तुझे नारद के दावे को चैक करना ही चाहिये...।"

बेड के करीब से हटकर राजन स्टील की अलमारी अर्थात् सेफ के निकट गया और उसके दोनों पट खोले।

अलमारी में चांदनी के वस्त्र और अन्य सामान था।

"चांदनी भला लॉकर क्यों बन्द करेगी...?" बुदबुदाने पर उसने लॉकर के हैन्डल को घुमाना चाहा, लेकिन वो टस से मस भी नहीं हुआ, जिसका मतलब था कि लॉकर लॉक्ड था।

उसने लॉकर के ऊपर ही रखा चाबियों का गुच्छा उठाया और एक-एक करके सभी चाबियां लगाकर देखीं— लेकिन कोई भी चाबी 'की-हॉल' में नहीं लगी।

"कमाल है। गुच्छे में लॉकर की एक भी चाबी नहीं है। भला चांदनी लॉकर की चाबी गुच्छे से अलग क्यों रखेगी?"

उसने पूरी अलमारी खंगाल डाली, लेकिन कोई चाबी नहीं मिली तो दिमाग के किसी कोने में सुगबुगाहट-सी होने लगी।

लपक कर बेड के करीब पहुंचा।

बेड शीट और तकियों के साथ गद्दे भी खींचकर फर्श पर डाल दिये।

डबल बॉक्स वाला बेड था। एक बॉक्स का प्लाई वाला ढक्कन उठाकर दूसरी तरफ पलट दिया और सामान को इधर-उधर करके डिबिया नहीं मिली तो उसने राहत की सांस ली—लेकिन जब ख्याल आया कि दूसरा बॉक्स भी देखना है तो थोड़ा तनाव हो गया। वो मन-ही-मन

दुआ मनाते हुये कि कोई डिब्बी या चाबी ना मिले, दूसरे बॉक्स की तलाशी लेने लगा।

बर्थ-डे और मैरिज एनीवर्सरी पर मिले उपहारों से भरे बॉक्स को टटोलते हुये उसके हाथ चांदी की एक आयताकार डिबिया लगी तो दिल की धड़कनें तेज हो चलीं। और जब डिबिया खोलने पर एक चाबी के दर्शन हुये तो दिल डूबने-सा लगा।

"इस डिबिया को पहली बार ही देख रहा हूं मैं। चांदनी ने इस डिबिया में चाबी रखकर बॉक्स में सामान के नीचे क्यों रखी है...?"

"इस चाबी को अलमारी के लॉकर में लगाकर देख ना..." उसका दिमाग फुसफुसाया, "...एक बात समझ में नहीं आ रही कि नारद को कैसे मालूम हुआ कि बेड के बॉक्स में चांदी की डिबिया में लॉकर की चाबी रखी हुई है? ओह... नारद ने कहा था कि उसने पार्क में चांदनी को रॉकी से बताते हुये सुना था कि...।"

"शटअप...बकवास मत कर..." चीख-सा उठा राजन, "नारद बेमतलब की बकवास कर रहा था। चांदनी ने ऐसे ही ये चाबी रख दी होगी और किसी से इसके बारे में जिक्र किया होगा, नारद ने सुन लिया होगा और फोन पर मुझसे बकवास कर दी होगी।"

"हां, ऐसा ही होगा लेकिन चैक तो कर कि ये चाबी अलमारी के लॉकर की तो नहीं है?"

राजन ने चाबी निकाल कर डिबिया को बेड के खुले बॉक्स में ही छोड़ दिया और फिर अलमारी के निकट पहुंचा।

चाबी ना सिर्फ लॉकर के 'की-हॉल' में फिट हो गई—बल्कि उसके घुमाने पर लॉक भी खुल गया।

राजन ने लॉकर का हैन्डल पकड़ा तो उसका हाथ कांपने लगा।

हाथ ही क्या...दिल भी कंपकंपाने लगा और दिमाग में भी हलचल-सी होने लगी।

आंखें मूंद लीं उसने और हैन्डल को घुमाकर लॉकर का पल्ला खोल दिया।

डरते-डरते आंखें खोलीं तो दिल की हालत ऐसी ही हो चली कि मानों कोई शरारती बच्चा गुब्बारे में फूंक मारकर उसे फुलाने पर उसकी हवा निकाल रहा हो और फिर फूंक मारकर उसे फुला रहा हो।

पसीने से पेशानी और हथेलियां पसीज उठीं।

लाल सनील से मढ़ा एक बॉक्स मानो उसका मुंह चिढ़ा रहा था।

"ये...ये बॉक्स कहां से आ गया...?" बुदबुदाया वो, "इसे पहले तो कभी नहीं देखा मैंने। न...नहीं ऐसा नहीं हो सकता। वो साला...नारद का बच्चा बकवास कर रहा था। इसमें कोई डायरी नहीं हो सकती। लेकिन मुझे बॉक्स को खोल कर तो देखना ही होगा...।"

उसने बॉक्स को यूं खोला कि मानो उसमें से किसी जहरीले नाग के निकलने की सम्भावना हो।

खुलते ही बॉक्स उसके हाथों से निकलकर फर्श पर जा गिरा।

बेशकीमती आभूषणों व मंगल-सूत्र के साथ लाल रंग की एक डायरी भी फर्श पर पड़ी थी, जिसे देख राजन का कलेजा मुंह को आ गया।

❑❑❑
❑❑❑

"के०पी० स्पीकिंग...।" जम्हाई लेकर केशव रिस्टवाच रूपी ट्रांसमीटर को मुंह के करीब करके बोला, "...कहो, ए०पी०, कोई कामयाबी मिली कि नहीं? ओवर...।"

"सॉरी, के०पी० साहब, यहां अमेरिका में दोपहर हो रही है। जबकि वहां पर रात हो रही होगी। मैंने नाहक ही आपको सोते से जगा दिया...।"

"कोई बात नहीं ए०पी०...।" केशव दूसरी जम्हाई लेकर बोला, "...तुम रिपोर्ट दो...ओवर...।"

"दोनों शिकार यानि के और एस अभी तक हाथ नहीं लगे हैं के०पी० साहब। हमारे बीच चूहें-बिल्ला वाला खेल जारी है। हमारे पहुंचने से पहले ही वो दोनों प्लेन पकड़ कर दूसरे स्टेट या सिटी के लिये उड़ान भर लेते हैं। समझ में नहीं आ रहा है कि क्या किया जाये? ओवर...।"

"एक मिनट रुको ए०पी०। गहरी नींद में था। आंखें मुंदी जा रही हैं। एक सिगरेट सुलगा लूं। तभी नींद काफूर होगी और दिमाग ठीक से काम करेगा...।" कहने पर केशव ने ट्रांसमीटर को बगल में गहरी नींद सो रही सोफिया के पेट पर हौले से रख दिया और फिर बेड की पुश्त पर से चारमीनार की डिब्बी उठाकर एक सिगरेट निकालकर

गुलाबी होंठों के दरमियान दबा ली। डिब्बी रखकर गोल्डन कलर का लाइटर उठाया और उसकी नीली लौ से सिगरेट का अग्रिम सिरा सुलगा लिया।

"तुम और के०एस० इस वक्त कहां पर हो और दोनों शिकार कहां पर हैं...?" उसने ट्रांसमीटर के माध्यम से पूछा केशव ने।

"हम वाशिंगटन में हैं के०पी० साहब, जबकि हमारे यहां पहुंचने से पहले ही के और एस पैराग्वे में पहुंच चुके हैं। समझ में नहीं आता कि उन्हें पकड़ने के लिये क्या करें? ओवर...।"

"तुमने कहा था कि तुम कन्फर्म हो कि उन दोनों का कोई भी आदमी तुम दोनों को वाच नहीं कर रहा है। यानि वो दोनों ऐसे ही भागे फिर रहे हैं। तुम ऐसा करो कि उनके पीछे दौड़ना बन्द कर दो...ओवर...।"

"ये...ये आप क्या कह रहे हैं डै...के०पी० सर? हम दोनों उनके पीछे नहीं जायेंगे तो वो पकड़े कैसे जायेंगे? ओवर...।"

"ऐसे भी कहां वो तुम दोनों की पकड़ाई में आ रहे हैं? वो एक जगह टिक ही नहीं रहे हैं। एक जगह से दूसरी जगह जा रहे हैं। लेकिन वो भागा-दौड़ी अमेरिका के भीतर ही कर रहे हैं। तुम मैक्सिको में ही रहो। वो दोनों लौटकर वाशिंगटन में भी आ सकते हैं। या फिर मैक्सिको के पास किसी स्टेशन पर आ सकते हैं। या फिर ऐसी किसी जगह पर पहुंचेंगे कि तुम दोनों उनके वहां से रवाना होने से पहले ही फ्लाइट पकड़ कर उन तक पहुंच सकते हो, उन्हें दबोच सकते हो। वाच एंड वेट वाला फार्मूला अपनाओ प्यारे। उन दोनों की चालाकी ही उनकी बेवकूफी बन जायेगी। मैं समझता हूं कि बहुत कम समय के भीतर ही वो दोनों तुम्हारे कब्जे में होंगे। वैसे भी दुनिया गोल है। वो घूम-फिर कर वहीं पहुंच जायेंगे, जहां से चले थे। क्या ख्याल है तुम्हारा? ओवर–।"

"आपकी बात जम रही है मुझे के०पी० साहब। यूं भागा-दौड़ी करके कोई फायदा नहीं होने वाला। हम दोनों वाशिंगटन में ही रुकते हैं। वो दोनों वाशिंगटन भी ना आयें—लेकिन किसी नजदीकी शहर में भी आयें तो हम तुरन्त ही वहां पहुंच कर उन्हें दबोच लेंगे। थैंक्यू फॉर दिस एडवाईज। आपको नींद आ रही होगी...सो मैं ट्रांसमीटर ऑफ करता हूं। गुड नाइट...।"

"गुड नाइट...बाय...।" कहने पर केशव ने ट्रांसमीटर को ऑफ कर दिया।



"नारद ने कहा था कि चांदनी के मंगल-सूत्र और आभूषणों के साथ डायरी सनील के लाल रंग के बॉक्स में है जो लॉकर के भीतर रखा हुआ है। लॉकर की चाबी चांदी की डिबिया में है, जो कि बेड के बॉक्स में सामान के नीचे रखी हुई है। डिबिया में रखी चाबी मिली है। लॉकर में बॉक्स मिला, जिसमें डायरी है। तो क्या नारद सच बोल रहा है? क्या उसका दावा सच है? क्या चांदनी और रॉकी के बीच अवैध सम्बन्ध हैं? चांदनी मेरी मुहब्बत और चाहत का सिला बेवफाई से दे रही है?" फर्श पर पड़ी डायरी को एकटक, अपलक घूरते हुये बुदबुदा रहा था राजन, "नहीं...ऐसा नहीं हो सकता। सूरज पूरब की बजाय पश्चिम से उगकर पूरब में छिप सकता है, नदियों का पानी विपरीत दिशा में बहना शुरू कर सकता है, कोई चींटी पहाड़ को उठाकर समन्दर में फेंक सकती है, दिन में तारे चमक सकते हैं, कोई बच्चा फूंक मार कर चांद को उड़ा सकता है, लेकिन मेरी चांदनी बेवफा नहीं हो सकती। एक-दो महीने का नहीं, कई वर्षों का साथ है हमारा। सुख-दुख में साथ दिया है चांदनी ने...मेरी जरा-सी परेशानी से ही वो तड़प उठती है। उसके जिस्म की खुशबू, उसकी सांसों की गर्मी और होठों की मिठास में कोई मिलावट महसूस नहीं की। उसके स्पर्श में कोई छलावा नहीं पकड़ा मेरे दिल और दिमाग ने। अगर चांदनी ने मेरे विश्वास की पीठ पर बेवफाई का खंजर घोंपा है तो फिर दुनिया की किसी भी औरत या बीवी पर भरोसा ही नहीं किया जा सकता। नहीं...मेरी चांदनी वैसी कतई नहीं है...जैसा कि नादर ने बतलाया-।"

"तो फिर बेड के बॉक्स में चांदी की डिबिया में लॉकर की चाबी कैसे मिली...?" उसका दिमाग मानो व्यंगपूर्ण लहजे में बोला, "मंगल-सूत्र, आभूषण और डायरी वाला बॉक्स कैसे हासिल हो गया? ये दिमाग के जादूगर केशव पण्डित का घर है। ऐसा सोचा भी नहीं जा सकता कि कोई बाहरी व्यक्ति यहां दाखिल हो, ये सारा सामान प्लांट करके चला जाये और किसी को भनक तक भी ना लगे। तू ऐसा कर

कि डायरी उठा और उसे खोलकर देख कि उसमें क्या है? कुछ लिखा है तो क्या लिखा हुआ है-?"

राजन झुका। डायरी की तरफ बढ़ता हाथ कुछ यूं ही कांपते हुये बार-बार ठिठक रहा था कि मानो ये डर सता रहा हो कि डायरी में ग्यारह हजार वोल्ट वाला करंट प्रवाहित ना हो रहा हो।

चेहरे के मैदान में तनाव के घोड़े दौड़ लगा रहे थे। और आंखों के तालाब में असमंजस, दुविधा और कौतूहलता की मछलियां 'छप्पक-छप्पक' कर रही थीं।

नाग का फन पकड़ने वाले अन्दाज में ही उसने डायरी को उंगलियों से पकड़कर उठाया और कुर्सी पर बैठकर यूं आंखें मूंद लीं कि ईश्वर से प्रार्थना कर रहा हो। धड़कते दिल के साथ पहला पेज खोला तो यूं ही चिहुंका कि मानो प्रथम पृष्ठ पर शब्द ना लिखे हुये हों, बल्कि जीते-जागते बिच्छू चिपकाये गये हों।

उस छोटे से मैटर का प्रत्येक शब्द राजन के लिये जीते-जागते बिच्छू से कम नहीं था-

लिखा हुआ था-

"मेरे प्राणों से भी प्यारे, मेरी सांसो में ऑक्सीजन की तरह रचे-बसे 'रॉकी' को समर्पित चार शब्द।"

"न...नहीं...ये चांदनी की लिखावट नहीं हो सकती...।" मानो तड़पकर ही बोला राजन, "चांदनी किसी रॉकी के लिये ऐसे शब्द नहीं लिख सकती। वो ऐसा सिर्फ मेरे लिये...अपने राजन के लिये ही लिख सकती है। हो सकता है कि चांदनी ये डायरी मेरे लिये ही लिख रही हो और...और प्यार से उसने मेरा नाम रॉकी रख दिया हो...।"

"हो सकता है कि ऐसा ही हो...।" उसका दिमाग झट से बोल उठा, "लेकिन आगे के पन्ने तो खोल। पढ़ तो सही कि चांदनी ने क्या-क्या लिखा है? पूरी डायरी पढ़ने पर ही मालूम पड़ेगा कि चांदनी ने ये डायरी तेरे लिये लिखी है, या फिर उस रॉकी के लिये, जिसका जिक्र नारद ने किया था...?"



सोनू मुम्बई के डॉन महावीरा के शानदार बंगले में ही रह रहा था।

दोनों शराब और सिगरेट के साथ पनीर और अन्डों का मज़ा लेते हुये शतरंज खेल रहे थे।

"मुझे नींद आने लगी है सोनू जी... ।" महावीरा जम्हाई लेकर बोला, "आपने एलबम में जिस नीलम नाम की बला की हसीन लड़की के फोटो पर उंगली रखी थी, उसे बुला दिया मैंने। वो घन्टे भर से बेडरूम में सोलह श्रृंगार किये बैठी होगी और बेताबी के साथ आपका इन्तजार कर रही होगी। क्या सुहागरात नहीं मनानी है...?"

"तुम मुझसे लगातार पांच बाजी हार चुके हो। छठी शह और मात से बचने के लिये ही उस बुलबुल की याद दिला रहे हो प्यारे–?"

झेंप उठा महावीरा, फिर बोला–"शतरंज दिमाग का खेल है सोनू जी और दिमाग के मामले में आपके मुकाबले मैं तो कुछ भी नहीं हूं। आप अगर शतरंज की प्रतियोगिता में हिस्सा लें तो वर्ल्ड चैम्पियन बन सकते हैं... ।"

"ओह... मेरी कलाई पर ट्रांसमीटर वाली घड़ी की सुईं चुभ रही है। क्रान्ति मुझसे कॉन्टेक्ट करना चाहती है। तुमने अपने लिये भी तो एक बुलबुल मंगवाई है। उसके पास जाकर मौज करो। क्रान्ति से बात करने पर मैं भी नीलम के पास पहुंच जाऊंगा... ।"

महावीरा चुपचाप उठकर वहां से चला गया।

सुईंनुमा एरियल को बाहर खींच कर सोनू ने ट्रांसमीटर ऑन किया और कलाई समेत मुंह के पास लाकर बोला–"हाय डार्लिंग... कैसी हो...ओवर–।"

"एकदम बढ़िया... ।" ट्रांसमीटर के नन्हें-से स्पीकर से क्रान्ति की भिनभिनाती-सी आवाज निकली, "तुम सुनाओ... क्या कर रहे थे? ओवर... ।"

"महावीरा के साथ शतरंज खेल रहा था। तुम बोलो कि प्लान कहां तक कामयाब हुआ? मैंने तो सिर्फ प्लान बनाया ही था–उस पर अमल तुम्हें ही करना है। कामयाबी मिली कि नहीं? ओवर... ।"

"क्रान्ति अपने या किसी दूसरे के बनाये प्लान पर अमल करे तो नाकामी तो मिलेगी नहीं। हां, लेट-सवेर हो सकती है। या हालात के मुताबिक प्लान में थोड़ी-बहुत चेंजिंग हो सकती है। मैं रॉबर्ट को पटा कर उससे जेनी के बारे में जानकारियां हासिल करने में कामयाब रही

हूं। जेनी की कमजोर नस का भी पता चल गया है। उसका नाम हैरी है। वो जेनी का यार है... ।"

"सारी बातें बतलाओ ना डार्लिंग... डिटेल्स में ओवर... ।"

दूसरी तरफ से क्रान्ति विस्तार से सारी बातें बतलाती चली गई।

"तुम्हारी सूझबूझ, काबिलियत और हिम्मत का तो मैं पहले से ही कायल हूँ क्रान्ति ! तुमने एकदम सही राह पकड़ी और तेजी के साथ मन्जिल की तरफ बढ़ रही हो। मुझे विश्वास हो चला है कि हमें अपने मिशन में कामयाबी मिलेगी। ये बतलाओ कि रॉबर्ट के साथ गुजारी वो रात कैसी थी? ओवर... ।"

"बढ़िया! हांलाकि वो मेरी टक्कर का तो नहीं था, लेकिन फिर भी उसमें दम-खम था। ऐ... मेरी खिंचाई तो नहीं कर रहे हो तुम? देखो, ये सब तुम्हारे ही बनाए प्लान का हिस्सा था... ओवर... ।"

"नहीं, खिंचाई नहीं कर रहा हूँ–ना ही मुझे बुरा ही लग रहा है। प्लान मेरा ही था। आगे भी तुम्हें ऐसा करना पड़ेगा। वैसे भी हम पति-पत्नी तो हैं नहीं, हम अच्छे दोस्त हैं। वैसे रात तुम्हारी बहुत याद आई। एक मिनट भी सो नहीं सका मैं ! सो आज महावीरा से कहा कि कोई बढ़िया-सी लड़की मंगवाये। उसने नीलम नाम की एक लड़की मंगवाई है। वो तुम्हारे मुकाबले की तो नहीं है, लेकिन कम उम्र की है–ऐसा फूल, जो अभी ठीक से खिला भी नहीं है। जरूरी नहीं कि रसमलाई ही खाई जाये। भूख लगने पर गुड़ से भी काम चलाना पड़ता है। तो अब तुम्हारा आगे का क्या प्लान है जानेमन? ओवर... ।"

"मैंने तुम्हें बतलाया है कि आज हैरी जेनी के साथ रेस्टोरेन्ट में आया था। जेनी की वजह से सिक्योरिटी का आलम ये था कि मानो रेस्टोरेन्ट में अमेरिका का प्रेसीडेन्ट आया हो। मैं वहां थी। जो मैं चाहती थी और जैसा मेरा विश्वास था, वैसा ही हुआ। हांलाकि जेनी गुलाब के ताजा फूल जैसी ही खूबसूरत है–लेकिन हैरी की नजर मुझ पर पड़ी तो देखता ही रह गया। उसकी पुतलियां और पलकें जाम-सी हो गई थीं। जेनी के टोकने पर उसने मुझसे नजरें हटाईं। लेकिन चोरी से मुझे बार-बार देखता रहा। उसकी आंखों में भूख और होठों पर प्यास देखी मैंने ! क्रान्ति वो मेनका है, जो दुनिया के किसी भी विश्वामित्र का ईमान खराब कर सकती है। मौका मिलने की देर है। रॉबर्ट की तरह ही हैरी

भी मेरे पैरों के तलुअे चाटेगा। वो मेरे जाल में फंसेगा ही फंसेगा। मैं एक-दो दिन के भीतर ही अपना काम कर दूंगी। जो तुम्हारे हिस्से के काम हैं, वो तुम करोगे ही जानी। जाओ भई...नीलम नाम की वो बुलबुल तुम्हारी राह देख रही होगी, ओ०के० बाय। ओवर एण्ड ऑल...।"

❑❑❑

❑❑❑

"मेरे जानू...मेरे हमदम...मेरे सपनों के राजकुमार...मेरे दिल के शहंशाह...मेरे सरताज...आय लव...माय डियर...मेरी प्रत्येक धड़कनों में बसने वाले रॉकी जी...लव यू सो मच...।"

प्रारम्भ की पंक्तियों ने ही राजन के दिमाग की मानो चूलें ही हिला कर रख दीं और उसने डायरी को पूरी शक्ति के साथ फेंक दिया।

दीवार से टकराने पर डायरी फर्श पर इस तरह गिरी कि उसका मोटा कवर फर्श की तरफ था और वह खुली हुई थी।

सिलिंग फैन की हवा में उसके पन्ने इधर-से-उधर होते हुये 'फड़...फड़' की आवाज कर रहे थे। हांलाकि पन्नों की आवाज ज्यादा तेज नहीं थी, लेकिन राजन को अपने दिमाग पर हथौड़े से बजते हुये महसूस हो रहे थे।

फिर स्वयं को नियन्त्रित किया उसने और डायरी उठा ली। कुर्सी पर बैठा और डायरी पढ़ने लगा।

यूं तो आधी डायरी भरी हुई थी। पूरे मैटर को ज्यों का त्यों लिख देना उचित नहीं होगा। हां, संक्षिप्त में उस मैटर का सार लिख देता हूँ, जिसमें चांदनी रॉकी से सम्बोधित होकर लिख रही है–

"हम दोनों एक-दूसरे से प्यार करते थे। मीठे चुम्बन से शुरू हुआ हमारा प्यार जिस्म और आत्मा के मिलन तक जा पहुंचा था। लेकिन हमारे सामने मजबूरी ये थी कि हमारी माँयें आपस में सगी बहनें थीं–अर्थात् रिश्ते में हम मौसेरे भाई-बहन थे। हम उस समाज से सम्बन्ध रखते थे, जो कि रूढ़ीवादी, अन्धविश्वासी और घिसे-पिटे विचारों वाला था। जहां कानून की नहीं, पंचायत की चलती थी और हर कोई पंचायत के फरमान को मानने के लिये बाध्य था। दूर के रिश्ते में भाई-बहन लगने वाले माधव और मोहनी घर छोड़कर भाग गये थे– लेकिन उन्हें पकड़कर गांव में लाया गया था और पंचायत में पेश किया गया था।

मेरे पिताजी पंचों के मुखिया अर्थात् सरपंच थे। उनके आदेश पर माधव और मोहनी को पेड़ पर लटकाकर फांसी दे दी गई थी और फिर खड्डा खोद कर दोनों को दफन कर दिया गया था। उस नजारे को अपनी आंखों से देख मैं डर गई थी।

मैंने तुमसे दूरी बना ली थी और निर्णय कर लिया था कि तुम्हारे साथ घर से भागकर शादी नहीं करूंगी– क्योंकि मुझे अपनी जान से अधिक तुम्हारी जान प्यारी थी। लेकिन तुम मुझे पाने के लिये पागल थे। मेरे समझाने पर भी मान नहीं रहे थे। आये दिन मुझसे मिलने आते थे, या फोन करते थे। इसी बीच मेरी जिन्दगी में राजन शुक्ला आया, जो कि मेरे परिवार वालों को भी दामाद के रूप में पसन्द था। तुम्हारी जान बचाने के लिये मैंने राजन से मुहब्बत का नाटक किया था और फिर उसके साथ शादी भी कर ली थी। तुम पर तो जैसे दुखों के पहाड़ ही टूट पड़े थे–पागल से हो गये थे तुम ! मुझे खोजते-खोजते मुम्बई आ पहुंचे थे। तब दिल पर पत्थर रखकर मैंने तुमसे कहा था कि अब मैं तुमसे नहीं, अपने पति राजन से प्यार करती हूँ, मेरे तन और मन पर सिर्फ राजन का ही अधिकार है। तुम्हें थप्पड़ भी मार दिया था मैंने। इसलिये कि मालूम होने पर ना सिर्फ मेर घरवाले, बल्कि राजन और केशव पण्डित भी तुम्हारे दुश्मन हो जाते और तुम्हें जान से मार दिया जाता।

तुम दिल्ली चले गये थे और वहीं बिजनेस करने लगे थे। लेकिन मुझे भुला नहीं सके थे तुम और तुमने एक से एक बढ़िया रिश्ता आने पर भी शादी नहीं की थी। तुमने मेरी यादों के सहारे ही बाकी की जिन्दगी व्यतीत करने का निर्णय कर लिया था। झूठ नहीं बोलूंगी...राजन बहुत अच्छा इन्सान था और मुझे अपनी जान से भी बढ़कर चाहता था। मेरा दिल और दिमाग बार-बार यही कहते थे कि किसी-किसी भाग्यशाली औरत को ही ऐसा प्यार करने वाला पति मिला करता है। समय बढ़ता रहा और तुम्हारे स्थान पर राजन मेरे मन में बसता चला गया था। मैं भी उसे चाहने लगी थीं, प्यार करने लगी थी। पतिव्रता स्त्री की तरह राजन को अपना पति परमेश्वर मान लिया था मैंने। उसके लिये अपनी जान भी दे सकती थी मैं। उसे जरा-सी तकलीफ होती थी तो मैं तड़प उठती थी। ईश्वर से यही प्रार्थना किया करती थी कि वो राजन के हिस्से

के तमाम दुख मेरे आंचल नें डाल दे। लेकिन होनी या नियति को तो कुछ और ही स्वीकार था।

राजन के साथ हुये समागम के फलस्वरूप मैं दो बार गर्भवती हुई थी—लेकिन विधाता को मेरा मां बनना स्वीकार नहीं था—सो दोनों बार ही गर्भपात हो गया था।

उसके बाद मुझे दिन नहीं चढ़े। मेरे पैर भारी नहीं हुये—मैं गर्भवती नहीं हो सकी। जबकि मैं और राजन साथ-साथ ही रहते थे, हमारा मिलन होता था। लेकिन प्रत्येक माह मैं रजस्वला हो जाती थी। मैं और राजन ही नहीं, केशव, सोफिया, आशीर्वाद, करतार सिंह, अलफांसे, सलमा और माधवी भी चिन्तित थे। सभी चाहते थे कि मेरी कोख हरी हो और मैं मां बनूं। सबसे ज्यादा सोफिया चिन्तित थी। उसने कहा कि शायद मुझमें या राजन में कोई कमी आ गई हो—इसीलिये मुझे गर्भ ना ठहर पा रहा हो। सोफिया ने जिद की कि हम दोनों डॉक्टर के पास जाकर चैकअप करायें—ताकि हम दोनों में से किसी में कमी हो तो उसका इलाज कराया जा सके।

सोफिया ने अपनी सौगन्ध दी तो मैं और राजन मुम्बई के मशहूर सैक्सोलोजिस्ट विश्वास कुदालकर से मिले थे और उसने हम दोनों का चैकअप किया था। अगले दिन उसने अपनी रिपोर्ट देने के लिये कहा था। अगले दिन राजन को केशव पण्डित के साथ कोर्ट जाना था, जहां कत्ल का एक मुकदमा चल रहा था और सोफिया उसमें आई-विटनेस यानि चश्मदीद गवाह थी। सो रिपोर्ट लेने के लिये मैं अकेली ही डॉक्टर विश्वास के पास गई थी, डॉक्टर ने रिपोर्ट दिखलाने के साथ ये बतलाया था कि राजन में कमी है। उसके स्पर्म अर्थात् शुक्राणु कमजोर हो चले हैं—इसीलिये मैं गर्भवती नहीं हो पा रही हूँ और अगर राजन का इलाज नहीं हुआ तो मैं कभी मां नहीं बन सकूंगी।

तब मेरे मन में ये बात आई थी कि राजन को मालूम होगा कि कमी उसमें है और उसकी कमी की वजह से ही मैं मां नहीं बन पा रही हूं तो उसे मानसिक पीड़ा पहुँचेगी...उसमें हीन-भावना उपजेगी। सो मैंने डॉक्टर विश्वास से रिक्वेस्ट की थी कि वो राजन की रिपोर्ट बदल दें और ऐसा लिख दें कि राजन नॉर्मल है, वो पिता बनने में सक्षम है। तब डॉक्टर विश्वास ने कहा था कि ऐसी रिपोर्ट बना दी तो राजन का

इलाज नहीं हो पायेगा और मैं कभी गर्भवती नहीं हो सकूंगी। तब मैंने कहा था कि वो दवा मुझे दे दें—मैं राजन को बतलाये बिना खाने या दूध में मिलाकर उसे दवा देती रहूंगी। मेरी रिक्वेस्ट पर डॉक्टर ने राजन की रिपोर्ट बदल दी थी और मुझे दो तरह की टेबलेट्स दी थीं। एक-एक टेबलेट्स रोजाना राजन को देनी थी, मैं खाने या दूध में मिला कर राजन को वो टेबलेट्स देती रही, लेकिन फिर भी गर्भवती ना हो सकी, मां नहीं बन सकी। मुझे लगा था कि दवाई नाकाम हुई और राजन में पिता बनने की क्षमता ही नहीं रही। किसी औरत का मां ना बन पाना किसी श्राप से कम नहीं होता। भले ही कमी पति में हो, लेकिन दुनिया औरत को ही बांझ समझकर कोसती है। एक दिन मैं भगवान के मन्दिर से मां ना बनने का दुखड़ा लेकर बाहर निकली थी तो तुम मिल गये थे।

मुझे दुखी देख तुम जिद करके नजदीकी पार्क में ले गये थे और मेरे दुखी होने का कारण पूछा था। मेरे सब्र का बान्ध टूट चला था और मैं तुम्हारे सीने से जा लगी थी। तुम्हे बांहों में भर फूट-फूट कर रो उठी थी। तुमने ही मेरे आंसू पोंछे थे और दीवानावार मेरा मुखड़ा चूमते चले गये थे। आश्चर्य की बात कि मैंने तुम्हें रोका-टोका नहीं था और तुम्हारी उस प्रत्याशित हरकत का बुरा भी नहीं माना था। फिर मैंने तुम्हें अपना दुखड़ा सुनाया था। तुमने मेरा दुखड़ा दूर करने का वादा किया और फिर मेरे लिये मोहन पुरी में बंगला खरीद लिया था और मुंम्बई में रहने लगे थे। उस दिन हम दोनों का कई वर्षों बाद 'मिलन' हुआ था लेकिन मुझे अच्छा नहीं लगा था। मुझे लगा था कि कोई पाप किया हो। क्योंकि मैं शादीशुदा थी, किसी और की धर्मपत्नी थी। मेरी भावनाओं को समझकर तुमने कहा था कि मौका मिलते ही हम दोनों शादी कर लेंगे।

हमें वो मौका तब मिला, जब केशव पण्डित के साथ राजन, करतार सिंह को दिल्ली में केन्द्रीय मन्त्री की भतीजी की हत्या की पहेली सुलझाने के लिये दिल्ली जाना पड़ा था। मन्त्री की भतीजी को कुछ लोगों ने गोलियों से भून डाला था। ससुराल वाले कह रहे थे कि गुन्डों ने उनकी बहू के गहने लूटने के लिये उसकी हत्या कर डाली थी। जबकि मृतका के परिवार वालों का इल्जाम था कि ससुराल वालों ने ही उनकी बेटी की हत्या करवाई थी। मैंने सोफिया से कहा था कि मेरी मौसेरी बहन विभा के पति का हर्निया का ऑपरेशन होना है और विभा ने मुझे दो-तीन दिनों के लिये

बुलाया है। राजन को भी फोन पर मैंने यही बतलाया था। फिर अपना फोन जानबूझकर मैंने घर ही छोड़ दिया था, ताकि राजन या सोफिया मुझसे सम्पर्क ना कर सकें। उन्हें बिभा और उसके हसबैन्ड के फोन नम्बर मालूम नहीं थे। मैं विभा और बृजेश जीजाजी के पास ठाणे जाने की बजाय तुम्हारे पास पहुंच गई थी। तुमने पहले ही शादी की तैयारियां कर ली थीं। तुमने मुझे मंगल सूत्र, बेशकीमती और खूबसूरत जेवरों के साथ अपना और मेरा शादी का जोड़ा भी दिखलाया था। फिर तुम मुझे किराये के हेलीकॉप्टर से हिल स्टेशन शिवपुरी ले गये थे। वहां महाकालेश्वर मन्दिर के पुजारी भोले बाबा ने हमारी शादी की सारी तैयारियां की हुई थीं और वरमाला समेत पूजा-पाठ, हवन वगैरा का सामान इकट्ठा करके रखा हुआ था। तुम उस शादी की यादगार बनाना चाहते थे। तुमने भोलेबाबा से पूछा था कि कोई फोटोग्राफर मिल सकता है क्या? भोले बाबा ने बतलाया था कि उसका बेटा कमल ही फोटोग्राफर है और वो सैलानियों की फोटो खींचता है। भोले बाबा ने तुम्हारे फोन पर अपने बेटे कमल से बात करके उसको मन्दिर में बुला दिया था।

उस दिन को कभी नहीं भूल सकती मैं। उस दिन रविवार था और तारीख थी पन्द्रह अगस्त। भगवान भोले शंकर को साक्षी मानकर हमने एक-दूसरे को वरमाला पहनाकर एक-दूसरे को पति-पत्नी के रूप में वरण कर लिया था। पुजारी भोले बाबा ने पूरे विधि-विधान और मन्त्रोच्चारण के साथ हमारी शादी कराई थी। हमने अग्निकुण्ड के गिर्द सात फेरे भी लिये थे। फिर तुम मुझे शिवपुरी के ही शानदार होटल 'शिवम' में ले गये थे। कम सैलानी होने के कारण होटल खाली था। शायद मैनेजर का नाम हरीश नेपाली था। उसने कहा था कि हम कोई भी कमरा पसन्द कर सकते हैं। जब तक हमने भोजन किया था, वेटर बहादुर थापा ने कमरे को और सेज को खुशबूदार फूलों से सजा दिया था।

फिर हम सुहागरात मनाने के लिये सुहाग-कक्ष में पहुंचे थे। तुमने मुंह दिखलाई की रस्म में मुझे डायमंड रिंग भेंट की थी। हालांकि हमारा मिलन तो पहले भी कई बार हो चुका था। लेकिन शादी के बाद हम पति-पत्नी थे और वो हमारी सुहागरात थी। उफ्...वो मिलन...यादगार लम्हें थे वो। मानो हम होटल के कमरे की बजाय स्वर्गलोक की ही सैर कर रहे थे। हम तन और मन से एक हो गये थे। हमने एक-दूसरे को

समर्पित कर दिया था। शिवपुरी से लौटने पर राजन की बीवी बने रहना मेरी मजबूरी थी। लेकिन अब वो सिर्फ नाम को ही मेरा पति है। वरना मेरे वास्तविक पति तो तुम ही हो डार्लिंग। जब भी अवसर मिलता है, हम दोनों मिलते हैं और तन-मन की प्यास बुझा लेते हैं। काश...काश कि मैं राजन से हमेशा के लिये छुटकारा पा सकूं और हमेशा-हमेशा के लिये तुम्हारी होकर रह सकूं। ऐसा कोई चमत्कार हो सके कि हम खुलेआम पति-पत्नी के रूप में रह सकें और हमें समाज की भी मान्यता मिल सके...।"

राजन की दशा ऐसी ही थी कि मानो कुछ देर पहले तक वो किसी अमीर सल्तनत का सुल्तान था, लेकिन अचानक ही सल्तनत छिन गई हो और हाथों में भीख का कटोरा आ गया।

चेहरा फक्क पड़ा हुआ था। होंठ कंपकंपा रहे थे और आंखों में आंसू भरे हुये थे।

"चा...चांदनी...।" मानो वो आवाज कण्ठ की बजाय किसी गहरी कब्र से ही निकली हो, "ये क्या अनर्थ कर डाला तुमने? मेरे प्यार, मेरी चाहत का ये कैसा सिला दिया? मेरे विश्वास का गला बेवफाई के फन्दे से घोट डाला। मेरी पीठ पर नहीं, बल्कि मेरे दिल में ही खंजर घोंपा है, जिसमें सिर्फ तुम ही बसी हुई थी। किसी गैर औरत का ख्याल भी ना किया मैंने। मेरे दिमाग के फ्रेम मे सिर्फ़ तुम्हारी ही तस्वीर बसी हुई थी, जिसे तुमने वासना की आग में फूंक डाला है। मेरे प्यार की चिता जला डाली तुमने। क्यों किया तुमने मेरे साथ ऐसा...मुझे किस कसूर की सजा दी है...?"

वह फूट-फूट कर रो दिया।

❑❑❑

❑❑❑

माधवी ने पांच बजे उठकर दो कप चाय बनाई और पापा रमाकान्त को जगाकर उसके साथ बैठकर पी।

फ्रेश होकर रमाकान्त ने बेंत उठाई और मॉर्निंग वाक के लिये चला गया। जबकि माधवी अपना लैपटॉप लेकर बैठ गई और मुम्बई में हो रहे क्राइम के ऊपर बनने वाले प्रोग्राम का मैटर तैयार करने लगी।

"चलो बुलावा आया है...माता ने बुलाया है...।"

कालबैल बज उठी।

वह लैपटॉप को छोड़ और कमरे से बाहर निकलकर मेन गेट पर पहुंची। सावधानी के तौर पर उसने मैजिक आई पर दायीं आंख लगाई तो दिमाग में झनाका-सा हुआ और मुंह से सिसकारी-सी निकल गई।

बाहर अमित शाह खड़ा था, वो भी लाल रंग के नाइट गाउन में। उसकी उनींदी सी आंखें और सिर के बिखरे हुये रूखे-से बाल बतला रहे थे कि वो रातभर सोया नहीं था।

"दरवाजा खोलो माधवी...हम हैं अमित शाह...।" दरवाजे को थपथपाते हुये बोला अमित शाह, "...तुम्हारे पापा जी तो मॉर्निंग वाक पर पार्क में चले गये हैं। घर में तुम अकेली ही हो। तुम्हारे लिये एक बहुत ही शानदार और नायाब चीज खरीदने का प्लान बनाया है, जो सुहागरात पर मुंह दिखलाई में देंगे। लेकिन वो क्या चीज है, ये अभी नहीं बतलायेंगे, अभी तो शादी के बारे में ही प्लान बनाना है। तुम कहोगी तो तुम्हारे पापाजी के लौटने का इन्तजार करेंगे। हम उनसे तुम्हारा हाथ मांग लेंगे। वो हमें अपना दामाद बनाने से इन्कार नहीं करेंगे। आखिर कमी क्या है हममें? खूबसूरत हैं, हैन्डसम हैं। धन-दौलत और जायदाद की कोई कमी नहीं। सबसे बड़ी बात ये है कि हम तुम्हें अपनी जान से भी बढ़कर चाहते हैं। शाहजहां ने मुमताज को, मजनूं ने लैला को, फरहाद ने शीरी को, रांझा ने हीर को और रोमियो ने जूलियट को भी इतना नहीं चाहा होगा, जितना कि हम तुम्हें चाहते हैं। देखा नहीं तुमने...हमने अपने घर में तुम्हारी ढेरों तस्वीरें लगाई हुई हैं और अपने खून से तुम्हारे नाम सन्देश भी लिखे हैं। देखो, हम यूं नहीं जाने वाले। तुम्हें दरवाजा खोलकर हमें भीतर बुलाना ही होगा।"

कालबैल लगातार बजने लगी और इसी के साथ दरवाजा भी पीटा जाने लगा।

"हे भगवान ! ये सनकी आदमी तेरे पीछे कहां से पड़ गया? ये तो बुद्धि खराब कर देगा। समझ में नहीं आता कि इससे छुटकारा कैसे पाया जाये...?"

यूं ही बड़बड़ाते हुये माधवी सीढ़ियां चढ़कर ऊपर बालकनी में पहुंची और शीशे की एक खिड़की खोलकर चिल्ला-सी उठी—"बन्द करो दरवाजा पीटना और कालबैल बजाना। क्या बेहूदगी है ये? कुछ तमीज

है कि नहीं? सुबह-सवेरे उठकर किसी के घर पर उसे परेशान करने चले आये। दफा हो जाओ—वरना...।"

"तुम क्रोधित क्यों हो माधवी...?" अमित शाह मेनगेट से हटकर सड़क के किनारे आ गया और बड़ी ही मासूमियत के साथ बोला, "...क्या हमने तुम्हें सोते से जगा दिया? तुम्हारे पापाजी को जाते देख हम तो समझे थे कि तुम भी जाग गई होगी। दरवाजा खोलो ना। यहां सड़क पर खड़े होकर तुमसे शादी की बात थोड़े ही की जायेगी...।"

"शटअपऽऽऽ !" वह चीख-चींख कर बोली, "कौन-सी शादी...किसकी शादी? मैं तुमसे प्यार नहीं करती। पहले ही बोल चुकी हूं कि मेरी शादी किसी पंजाबी परिवार में होगी और पापाजी की पसन्द के लड़के से होगी। इसके अलावा किसी और के साथ शादी हुई तो...मेरे धर्मभाई केशव पण्डित की पसन्द से होगी...।"

"और मेरे प्यार...मेरी चाहत का क्या होगा—?"

"भाड़ में गया तुम्हारा प्यार और चाहत...।" विक्षिप्त भाव से ही चिल्ला रही थी माधवी, "...ठेका लिया है क्या तुम्हारी चाहत और प्यार का मैंने? गुन्डों से मेरी मदद क्या की, अपना सिर क्या फुड़वा लिया, मुझ पर अपना जन्मसिद्ध अधिकार ही समझ लिया...।"

"यानि तुम मुझसे प्यार नहीं करतीं—?"

"नहीं...।"

"मुझे कतई नहीं चाहतीं—?"

"नहीं...कतई नहीं—।"

अमित शाह की मुट्ठियां भिच चलीं।

चेहरा मानो ज्वालामुखी का मुहाना हो चला और आंखों से चिंगारियां-सी उड़ने लगीं।

"नहीं...तुम यूं मेरी मुहब्बत...मेरी चाहत को नहीं ठुकरा सकती माधवी...।" किंग कोबरा-सा फुंफकार उठा अमित शाह, "पागलपन...जुनून की हद तक चाहता हूं तुम्हें। ये हो ही नहीं सकता कि हमारे होते तुम किसी दूसरे की हो जाओ। तुम्हें हमारी मुहब्बत का जवाब मुहब्बत से देना होगा और हमीं से शादी करनी होगी—वरना...।"

"वरना? वरना क्या करोगे तुम...?"

"देखना चाहोगी...?"

हांलाकि अमित शाह की सनक से माधवी थोड़ा भयभीत थी, लेकिन मेनगेट बन्द था और शोर-शराबा सुनकर आस-पड़ोस के लोग भी बाहर निकल आये थे—इसलिये वो साहस से काम लेते हुये बोली—"हां, बतलाओ...क्या करोगे तुम—?"

अमित शाह ने गाउन्न की जेब से तेज धार वाली छुरी निकाल ली और उसे माधवी की तरफ तानकर हिंसक भाव से बोला—"हम आखिरी बार पूछ रहे हैं तुमसे माधवी—तुम हमसे प्यार और शादी करोगी कि नहीं—?"

"नहीं...कतई नहीं... ।"

और फिर अमित शाह ने दायें हाथ में थमी छुरी से बायीं कलाई पर ऐसा वार किया कि नसें कट गईं और खून की मोटी धार फूट चली।

आस-पड़ोस वाले घबरा गये—माधवी भी व्याकुल हो चली।

अमित शाह के चेहरे पर पीड़ा के सुई की नोक बराबर भी भाव नहीं थे—उल्टे ही वो यूं मुस्करा रहा था कि मानो कोई मजेदार जोक सुन लिया हो।

"अरे...इस आदमी ने तो अपना हाथ काट लिया है... ।" पड़ोस की एक अधेड़ महिला घबराकर बोली, "...हाय राम...कितना खून बह रहा है। इसके सिर पर पहले से ही पट्टी बन्धी हुई है। ये मर सकता है। कोई इसे डॉक्टर के पास लेकर जाओ ना...अरे... ये...ये क्या कर रहा है...अरे, कोई तो रोको इसे... ।"

तब तक अमित शाह ने छुरी को जख्मी और बायें हाथ में पकड़ी और दायीं कलाई पर भी वार कर दिया।

कटी हुई दायीं कलाई से भी खून बहने लगा।

चींखना-चिल्लाना तो दूर...अमित शाह ने उफ्...तक भी नहीं की। कम्बख्त माधवी को एकटक निहारते हुये मुस्कराये जा रहा था।

फिर उसने शराबी की मानिन्द झूमना शुरू कर दिया और फिर सड़क पर गिर पड़ा।

"ये...ये मर जायेगा...माधवी बेटी... ।" एक पड़ोसी चिल्लाकर बोला, "...इसे बचाने के लिये हॉस्पिटल ले जाना पड़ेगा... ।"

तभी लाल रंग की एक कार वहां आकर रुकी।

"अरे...ये तो अपना अमित है... ।" कार का पिछला दरवाजा

खोलकर एक युवक बाहर निकला और घबराया-सा बोला, "ये जख्मी कैसे हो गया...?"

"इसने छुरी से स्वयं ही अपनी कलाइयां काटी हैं... ।" माधवी का एक पड़ोसी बोला, "इसे जल्दी से हॉस्पिटल ले जाओ—नहीं तो इसकी जान जा सकती है... ।"

कार वाले युवक ने जख्मी अमित शाह को उठाकर कन्धे पर डाला। जख्मी कलाइयों को हवा में लहराते हुये अमित शाह चींख-चींखकर बोला, "हम मर गये तो हमारी लाश को देखने जरूर आ जाना माधवी...वरना हमारी आत्मा को शान्ति नहीं मिलेगी... । हम बच गये तो फिर आयेंगे और इस बार पैट्रोल से भरी जरीकेन लेकर आयेंगे। तुमने हमारी मुहब्बत कबूल नहीं की तो अपने ऊपर पैट्रोल छिड़क जीते-जी अपना दाह-संस्कार कर...लेंगे... ।"

माधवी बालकनी से हटकर कमरे में पहुंची और व्याकुलता के साथ चहलकदमी-सी करते हुये बोली—"ये कौन-सी मुसीबत पीछे पड़ गई। अमित शाह भले ही मेन्टल हॉस्पिटल में रह आया हो...लेकिन वो अभी भी पागल है। क्या करूं मैं...ये तो पीछे ही पड़ गया। इससे छुटकारा पाने के लिये मुझे कुछ-ना-कुछ तो करना ही होगा—लेकिन प्रश्न तो ये है कि मुझे क्या करना चाहिये—?"

❑❑❑
❑❑❑

टी०वी० पर न्यूज चल रही थी। केशव, सोफिया और श्वेता गुप्ता चाय की चुसकियां लेते हुये टी०वी० देख भी रहे थे, सुन रहे थे।

जबकि हाथ में चाय का कप थामें हुये राजन कहीं और ही खोया हुआ था।

केशव, सोफिया और श्वेता ने उससे पूछा भी था कि उसका मूड उखड़ा हुआ क्यों हैं—उसने बहाना बना दिया था कि रातभर नींद नहीं आई और उसके सिर में तेज दर्द है।

तभी चांदनी आ पहुंची।

सूरजमुखी के फूल जैसे रंग की साड़ी...माथे पर लाल बिन्दिया, मांग में चमकता सिन्दूर। कानों में सोने के झुमके, नाक में नन्हें-नन्हें हीरों वाली गोल नथनी और सुराहीदार गले में झूलता मंगलसूत्र।

गोरी, गुदाज व गोल कलाईयों में हरे कांच की चूड़ियों के साथ डायमंड जड़ित कंगन और भिन्डी-सी पतली व लम्बी उंगलियों में रत्न जड़ित अंगूठियां।

बहुत ही हल्का मेकअप किया हुआ था उसने।

स्वर्ग से उतरकर आई कोई अप्सरा ही मालूम पड़ रही थी वो। अगर राजन ने बॉक्स में मंगल-सूत्र व गहने नहीं देखे होते, चांदनी की लिखी डायरी ना पढ़ी होती तो वह चांदनी पर वारी हो उठता—लेकिन उस वक्त उसे वो खून पीने वाली चुड़ैल से कम नजर नहीं आ रही थी। जी तो चाहा कि चांदनी के सिर को पकड़कर उसकी गर्दन को यूं ही मरोड़ता चला जाये, जैसे कोई धोबी गीले कपड़े को निचोड़ता चला जाता है।

चांदनी ने केशव और सोफिया के चरण स्पर्श किये तो सोफिया ने उसे बांहों में भर लिया और उसका माथा चूमकर वारी हो जाने वाले भाव से बोली, "खुश रहो...सदा सुहागिन रहो। पुत्रवती भव। ईश्वर करे कि जल्दी ही तुम्हारी कोख हरी हो और फिर तुम्हारे बच्चे की किलकारियों से ये घर महक उठे...।"

"ईश्वर आपकी ये इच्छा जल्दी ही पूरी करने वाला है जीजी...।"

राजन के जेहन को झटका-सा लगा।

"क्या मतलब...?" सोफिया खुश होकर बोली, "...क्या तुम ये कहना चाहती हो कि तुम प्रेगनेंट...?"

मारे लाज के चांदनी का गोरा मुखड़ा गुलाबी हो चला और उसने नजरें झुकाकर हामी भर दी।

"रियली...।" सोफिया खुशी से झूमते हुये बोली, "तुम्हारा लाख-लाख शुक्रिया प्रभु जी। लम्बे इन्तजार के बाद ये खुशखबरी सुना ही दी। कब से ये खुशखबरी सुनने को कान तरस रहे थे। सुना तुमने केशव...अपनी चांदनी मां बनने वाली है और राजन डैडी...।"

"हां, सुना सोफी...।" कहने पर केशव ने आशीष देने वाले भाव से चांदनी के सिर पर हथेली रखी और बोला, "बधाई हो चांदनी। लड़का हो...चाहे लड़की...कोई फर्क नहीं पड़ता। बेटी भी बेटे के बराबर होती है। बल्कि बेटे से भी बढ़कर होती है। बस, बच्चा स्वस्थ हो। तुम्हें अपना और बच्चे का पूरा ख्याल रखना है। सोफिया के साथ डॉक्टर के पास

जाकर चैकअप करवाना और डॉक्टर की हिदायतें के मुताबिक ही चलना।"

"बधाई हो भाभी जी...।" श्वेता ने चांदनी की कोहली भरकर कहा और फिर राजन से बोली, "आपको भी बहुत-बहुत बधाई शुक्ला जी...आप डैडी बनने वाले हैं...।"

केशव और सोफिया ने भी राजन को बधाई दी।

लेकिन राजन वहां था कहां?

उसका जिस्म तो वहां था लेकिन दिमाग तो कहीं और की ही सैर कर रहा था—

"गर्भवती हो गई हो हरामजादी। मैं तो पिता बनने के काबिल नहीं हूं। लेकिन रॉकी तो पिता बनने में और किसी भी औरत को प्रेगनेंट करने में सक्षम है। तभी तो साली ने उसके साथ शिवपुरी जाकर दूसरी शादी की थी और वहीं के होटल में उसके साथ सुहागरात मनाई थी। अभी भी उसके पास से ही आ रही होगी। रातभर उसके साथ मुंह काला करती रही होगी। दोनों के बीच बार-बार जिस्मानी ताल्लुक बनेंगे तो गर्भवती तो होगी ही। दूसरे का पाप...दूसरे की गन्दगी पेट में लेकर आई है और उसे मेरे प्यार की निशानी बतला रही है। जी तो चाहता है कि साली को अभी किचन में ले जाऊं और गैस बर्नर जलाकर उसकी नीली लौ पर इसके उस खूबसूरत चेहरे को रख दूं—जिस पर मैं बर्षों लट्टू रहा...।"

किसी ने उसके कन्धे पर हथेली रखी तो तन्द्रा भंग हुई—चेहरा घुमाकर देखा तो केशव दिखलाई पड़ा।

"क्या बात है राजन? चांदनी ने मां बनने वाली खुशखबरी सुनाई है। तुम्हें तो मारे खुशी के उछल पड़ना चाहिये था...लेकिन तुम तो गुमसुम से हो गये। मामला क्या है? क्या चांदनी के गर्भवती होने की सूचना से तुम्हें खुशी नहीं हुई...?"

"न...नहीं...ऐसी कोई बात नहीं है गुरुवर...।" बड़ी कठिनता से मनोभावों पर नियन्त्रण रखते हुये बोला वह, "...वो...मैंने बतलाया था ना कि रातभर सो नहीं सका और सिर में तेज दर्द है...।"

"इसे कमरे में ले जाओ...।" केशव चांदनी की तरफ पलटकर बोला, "...इसके सिर में दर्द है। ये रात को सो भी नहीं पाया। तुम्हारी

याद में जागता रहा होगा। इसके सिर पर झन्डू बाम की मालिश कर दो। मुंशी तुम दोनों के लिये वहीं चाय ले आयेगा...।''

''चलो...।'' चांदनी ने राजन का हाथ पकड़ा।

खून फुंक गया राजन का। यूं ही लगा उसे कि मानो कलाई पर कोई जहरीली नागिन लिपट गई हो।

चांदनी से हाथ छुड़ाकर वो तेज कदमों से अपने कमरे की तरफ चल दिया।

''तू शायद जल्दबाजी से काम ले रहा है राजन...।'' सीने में कैद उसका दिल मानो कुनमुनाया, ''...चांदनी को देखकर नहीं लगता कि वो बेवफा होगी। उसके चेहरे पर निश्छल भाव हैं। आंखों में गंगाजल सी पावनता है...।''

''ऐसी मक्कार औरतें एक्टिंग करने में माहिर होती हैं। ऐसे हाव-भाव बनाकर रखेंगी और व्यवहार करेंगी कि मानो उनसे बड़ी कोई सती-सावित्री हो ही नहीं। अगर मैंने डायरी ना पढ़ी होती तो...बाकी लोगों की तरह खुश होता। मारे खुशी के बावला ही हो जाता। चांदनी को बांहों भरकर चूम लेता और जश्न मनाता। क्योंकि मैं इसी गलतफहमी का शिकार रहता कि ये कमीनी औरत मेरे बच्चे की मां बनने वाली है...।''

''हो सकता है कि चांदनी वाकई में तेरे बच्चे की मां बनने वाली हो। डॉक्टर ने तेरे इलाज के लिये दवाई दी थी और डायरी के मुताबिक चांदनी चोरी-छिपे तुझे दवा खिला भी रही थी...।''

''उसी डायरी के मुताबिक दवाइयों से कोई फर्क नहीं पड़ा था। चांदनी मुझसे निराश हो चली थी और रॉकी की गोद में जा गिरी...।''

''हो सकता है कि डॉक्टर ने ऐसी कोई रिपोर्ट ही ना बनाई हो और तेरे इलाज के लिये दवा भी ना दी हो। वो डायरी झूठी ही हो...।''

''नहीं...वो डायरी झूठी नहीं है। मैं चांदनी की राइटिंग को पहचानता नहीं हूं क्या?''

''केशव पण्डित किसी की भी राइटिंग की हू-ब-हू नकल कर सकता है। उसने तुझे भी किसी की राइटिंग की नकल करना सिखलाया है। उसकी और तेरी राइटिंग में इतना फर्क है कि उसकी राइटिंग को कोई एक्सपर्ट भी नहीं पकड़ सकता और तेरी राइटिंग को एक्सपर्ट पकड़

सकता है, लेकिन एक्सपर्ट के सिवाय कोई नहीं पकड़ सकता है। हो सकता है कि किसी शातिर किस्म के आदमी ने चांदनी की राइटिंग में वो डायरी लिखी हो और तुझे साजिश का शिकार बनाया जा रहा हो–।''

''लेकिन कोई डायरी वाले बॉक्स को आलमारी के लॉकर में बन्द करके चाबी वाली डिबिया को बेड के बॉक्स में कैसे रख सकता है...?''

''शायद उसने कोई जुगाड़ भिड़ा लिया हो।''

''नहीं। पण्डित जी के इस बंगले में कोई बाहर वाला इतनी बड़ी गड़बड़ी नहीं कर सकता। अगर हल्का झोंका भी बंगले में दाखिल होता है तो पण्डित जी को मालूम हो जाता है। कोई साजिश नहीं कर रहा है। वो डायरी चांदनी की ही लिखी हुई है...।''

''लगता है कि उस डायरी ने तेरी बुद्धि भ्रष्ट कर दी है–तभी तू अपने गुरु की सीख को भूल गया है...।''

''कौन-सी सीख–?''

''यही कि जासूस को अपनी आंखों और कानों पर भी विश्वास नहीं करना चाहिये, यानि देखी और सुनी हुई बातों पर भी विश्वास नहीं करना चाहिये। इन्वेस्टीगेटर को अपने दिमाग का इस्तेमाल करना चाहिये। ठोक-बजाकर तसल्ली करने, पुख्ता सबूत और गवाही मिलने पर ही किसी बात पर विश्वास करना चाहिये। तूने अपने दिमाग का इस्तेमाल नहीं लिया। नारद का फोन आया था। उसके कहे अनुसार डायरी मिली–लेकिन प्रश्न ये है कि नारद को ये सब कैसे मालूम हुआ? क्या वो अन्तर्यामी था? उसे पहले से ही मालूम था कि चांदनी और रॉकी के बीच सम्बन्ध बनेंगे, जो वह चांदनी और रॉकी के पीछे साया बनकर लग गया था? उसे डायरी में लिखी तमाम बातों की जानकारी कैसे हुई? क्या ये नहीं हो सकता कि नारद ही कोई साजिश रच रहा हो...?''

''लेकिन...।''

''तुझे उस डायरी पर यूं ही विश्वास नहीं कर लेना चाहिये। केशव पण्डित का चेला है तू। इन्वेस्टीगेशन कर। गुपचुप तरीके से डायरी में लिखी तमाम बातों की तस्दीक कर। इन्वेस्टीगेशन के बाद ही किसी फैसले पर पहुंचना। तब तक किसी को हवा भी ना लगने दे कि तेरे भीतर क्या चल रहा है? खास करके चांदनी को तो जरा-सा भी संदेह

नहीं होना चाहिये। माना कि वो तेरे साथ बेवफाई कर रही है और उसका चक्कर रॉकी के साथ चल रहा है। लेकिन वो तेरे बदले हुये व्यवहार पर कारण खोजने की चेष्टा करेगी। उसे लगा कि तुझे उसकी बेवफाई की जानकारी हो चुकी है तो वो होशियार हो जायेगी और रॉकी को भी सावधान कर देगी। मजा तो तब आयेगा, जब तू दोनों के खिलाफ ठोस सबूत हासिल कर ले, लेकिन इससे पहले इस बात की तस्दीक तो कर ले कि चांदनी बेवफा है भी कि नहीं?"

कमरे में पहुंच राजन बिस्तर पर लेट गया।

बेड के किनारे बैठकर चांदनी उसके ऊपर झुकी।

उसके उन्नत उभार राजन के चौड़े सीने पर दबाव डालने लगे और खुशबू से तर-ब-तर गर्म सांसें उसके होठों को थपथपाने लगीं—

"क्या सिर में तेज दर्द है जानू...?"

राजन के दिमाग में एक बार तो आया कि चांदनी के गाल पर झन्नाटेदार थप्पड़ मारकर और उसे धक्का देकर फर्श पर गिरा दे—लेकिन फिर दिल की सलाह पर अमल करते हुये वह क्रोध व घृणा को शर्बत समझकर पी गया और कृत्रिम मुस्कान के साथ बोला—"हां, काफी तेज दर्द था डार्लिंग। लेकिन तुमने ऐसी खुशखबरी सुनाई कि आधा दर्द दूर हो गया। तुम्हारे हाथ के स्पर्श से बाकी का दर्द भी जाता रहेगा। अच्छा, ये तो बतलाओ कि बेटा दे रही हो कि...बेटी...?"

□□□

□□□

एक बार में ड्रिंक लेकर तीस वर्षीय, खूबसूरत और हैन्डसम हैरी बाहर निकला और अपनी नई कार में सवार होकर चला ही था कि अचानक ही क्रान्ति कार के सामने आ गई थी।

हड़बड़ाकर हैरी ने ब्रेक लगाये थे—वैसे भी कार की स्पीड ज्यादा नहीं थी। फिर भी चींख मारकर क्रान्ति सड़क पर गिरी और चेहरे पर पीड़ा के भाव समेटकर झूठ-मूठ ही कराहने लगी थी।

हैरी ने उसे देखा था तो देखता ही रह गया था।

"ये तो वो ही 'माल' है, जिसे कल रेस्टोरेन्ट में देखा था। देखते ही मुंह में पानी आ गया था। अगर जेनी साथ में ना होती तो...इससे तभी मुलाकात करके दोस्ती का हाथ बढ़ा देता। रात को इसी हसीना

के ख्वाब देखता रहा था। सोचा भी नहीं था कि इतनी जल्दी मिल जायेगी। हाय...इसके होंठ कितने सेक्सी हैं। जिस्म का भी जवाब नहीं। एक-एक अंग को मानो किसी कुशल कारीगर ने पूरे परिश्रम से तैयार किया हो...।" बुदबुदाने पर वो चेहरे पर दुख के भाव समेटकर बोला—"आ...आयम सॉरी, मिस। मैंने ब्रेक तो लगाये थे, लेकिन लगता है कि टक्कर हो गई...।"

"नहीं...टक्कर नहीं हुई मिस्टर...आह...मारे घबराहट के मैं सड़क पर जा गिरी। आप चिन्ता ना करें। मुझे कोई गम्भीर चोट नहीं आई है...ओह...!"

"चोट तो आई है...चलिये, मैं आपको किसी हॉस्पिटल या नर्सिंग होम में लिये चलता हूं...।"

"अरे...नहीं। इतनी मामूली चोट के लिये किसी डॉक्टर की जरूरत नहीं। एक-दो पैग लेते ही सारा दर्द दूर हो जायेगा। लेकिन ये बार तो बन्द हो गया है।"

"मेरा नाम हैरी है। अमेरिका की मशहूर कम्प्यूटर कम्पनी 'हैरी एण्ड हैरी' का मालिक हूं। अगर आपको ऐतराज ना हो तो मेरे घर चलिये। वहां पर मैंने बार बनाया हुआ है। देशी-विदेशी...सभी ब्रान्ड मिल जायेंगे...। वैसे आप तो विदेशी मालूम पड़ती हैं। मैं गलती नहीं कर रहा हूं तो आप इन्डियन हैं...।"

"आपने एकदम सही अनुमान लगाया है। मैं इन्डियन ही हूं। मेरा नाम क्रान्ति है। इन्डिया में मेरी भी स्पेयर पार्ट्स की बड़ी कम्पनी है। घूमने-फिरने का शौक है। यहां घूमने के मूड से आई थी। जिस होटल में ठहरी थी—वहां की सर्विस बढ़िया नहीं थी। ऊपर से मेरा सामान भी चोरी हो गया। होटल के मैनेजर ने रिक्वेस्ट की कि मैं पुलिस में कम्पलेन्ट ना करूं—वो नुकसान की भरपाई करने को तैयार था। लेकिन मैंने उससे कुछ नहीं लिया। मामूली रकम लेकर करती भी क्या? लेकिन होटल छोड़ दिया। किसी दूसरे होटल की तलाश में जा रही थी कि...ये हादसा हो गया...। कोई बढ़िया-सा होटल बतलायेंगे...?"

"इस खाकसार को मेहमान नवाजी का मौका दीजिये ना प्लीज...।" गिड़गिड़ा ही उठा था हैरी, "...किसी बड़े होटल से भी

बढ़िया खिदमत होगी आपकी। किसी भी किस्म की कमी नहीं होगी...।"

"ले...लेकिन...।"

"प्लीज...प्लीज...।"

"ओहो...आप इतना प्रेस कर रहे हैं तो मैं इन्कार भी तो नहीं कर सकती। लेकिन सिर्फ एक दिन ही। कल आप मुझे किसी बढ़िया होटल में पहुंचा देंगे। अभी मैं आपके साथ चल रही हूं...।"

हैरी का मन मयूर-सा नृत्य कर उठा। मानो उसकी झोली में दुनियाभर की दौलत आ गिरी थी।

वो क्रान्ति को अपनी शानदार, आलीशान कोठी में ले आया था—जिसे महल भी कहा जा सकता था।

उसने क्रान्ति की जमकर खातिरदारी की।

अन्जान बनते हुये क्रान्ति भी उस पर अपने रूप-यौवन की बिजलियां गिराने में कसर नहीं छोड़ रही थी।

शराब के दौर चले।

क्रान्ति ने हैरी के मुकाबले काफी ज्यादा पी, लेकिन बोतल की बजाय जाम से ही गला तर किया।

पीते-पीते ही दोनों की नजरें मिलती रहीं।

हैरी की दशा उस भिखारी के जैसी ही थी, जो कि क्रान्ति की जवानी के चन्द कतरे पीने की याचना कर रहा था। क्रान्ति ने भी कतरों की बजाय उसे दरिया में डुबोकर अपना मुरीद बना लिया।

सुबह जब वो सोकर उठा तो क्रान्ति ने ये बोलकर उसके दिलो-दिमाग पर बिजली-सी ही गिरा दी—"...थोड़ी देर पहले ही मेरी कम्पनी के जी०एम० का फोन आया था, कोई प्रॉब्लम है। मुझे आज ही इन्डिया वापिस जाना होगा...।"

"ये...ये क्या कह रही हो तुम डार्लिंग...।" हैरी मानो तड़पकर ही बोला, "...तुम अचानक ही कैसे जा सकती हो? तुम्हारे हुस्न के समन्दर की चन्द बूंदें ही चखी हैं मैंने। अभी तो प्यास ने भड़कना शुरू ही किया है। तुम मुझे जल बिन मछली की तरह तड़पते हुये छोड़कर कैसे जा सकती हो भला डार्लिंग...?"

मन-ही-मन अपनी सफलता पर इतराई क्रान्ति। जबकि ऊपर से

हैरी को वारी हो जाने वाली नजरों से निहारते हुये बोली—"जो हाल तुम्हारा है...वही हाल मेरा है। लेकिन मजबूरी है...जाना ही होगा जानू।"

"नहीं...मैं नहीं जाने दूंगा तुम्हें...।" बच्चों की मानिन्द ही जिद की हैरी ने, "...तुम्हारे बिना नहीं रह सकूंगा। हांलाकि जेनी के साथ प्यार करने और शादी भी करने की मजबूरी है मेरी—वरना माफिया किंग वाटसन मुझे नहीं छोड़ेगा। मैं दुनिया के किसी भी कोने में जाकर क्यों ना छिप जाऊं...पाताल में ही क्यों ना छिप जाऊं...वो नहीं छोड़ेगा मुझे। इच्छा होते हुये भी मैं जेनी को छोड़ नहीं सकता और दुनिया की सबसे खूबसूरत लड़की के साथ शादी नहीं कर सकता—लेकिन तुम्हारे साथ कुछ पल ना गुजारे तो...मैं जिन्दगीभर तरसता रहूंगा। प्लीज, तुम जाने का प्रोग्राम कैंसिल कर दो। कैंसिल नहीं तो, दो-चार दिनों के लिये पोस्टपोन तो कर ही दो। क्या तुम्हें मुझ पर तरस नहीं आ रहा है जानेमन...?"

"मेरी मजबूरी तुम समझ नहीं रहे हो...।" ठन्डी आह-सी भरकर बोली क्रान्ति, "...मैं नहीं गई तो कम्पनी का दीवाला पिट जायेगा। तुम एक काम क्यों नहीं करते...तुम्हारी कम्पनी की इन्डिया में भी ब्रांच है और तुम वहां जाते भी रहते हो। ऐसा करो कि कुछ दिनों के लिये इन्डिया का प्रोग्राम बना लो। जेनी को बोल देना कि इन्डिया में तुम्हारी कम्पनी में गड़बड़ी होने की सूचना मिली है—इसलिये तुम्हें आज ही जाना पड़ रहा है। वहां तुम मेरे गेस्ट बनकर रहना। तुम्हें जन्नत की सैर कराऊंगी। वहां मेरे साथ गुजारे हसीन लम्हों को तुम कभी भी नहीं भूल पाओगे...।"

"यानि मैं तुम्हारे साथ इन्डिया चलूं...?"

"मेरे साथ नहीं...।"

"तुम्हारे साथ नहीं? क्या मतलब—?"

"बात को समझो। तुम माफिया किंग वाटसन की बेटी के प्रेमी हो। वाटसन की यूं तो दुनियाभर में ही पहुंच है—लेकिन अमेरिका में तो उसकी समानान्तर सरकार-सी चलती है। अगर हम दोनों को इकट्ठे देख लिया गया तो आफत टूट पड़ेगी।"

सहमति में हौले-हौले सिर को जुम्बिश देकर बोला हैरी—"हां, ये तो तुम ठीक बोल रही हो डार्लिंग। तो फिर क्या करना चाहिये—?"

हैरी की तरफ पीठ करके और हसीन होठों पर मक्कारी भरी मुस्कान सजाकर बोली वह—''ऐसा करते हैं कि हम अलग-अलग फ्लाइट से चलते हैं। हम दोनों की मन्जिल एक ही है...मुम्बई। पहले तुम पहुंचो। अपने सेक्रेटरी को फोन कर दूंगी। तुम्हारी फोटो भी फैक्स कर दूंगी। वो तुम्हें पहचानकर रिसीव कर लेगा और मेरे महल में ले जायेगा। घन्टे-दो घन्टे पश्चात् मैं भी वहां पहुंच जाऊंगी। फिर कुछ दिन साथ रहेंगे। अपनी सभी इच्छायें पूरी कर लेना। जेनी से सम्पर्क बनाये रखना—फोन पर उसे बेवकूफ बनाते रहना।'' फिर वो हैरी की तरफ पलटकर बोली, ''सोचो मत। तुरन्त ही इन्डिया जाने वाली फ्लाइट में टिकिट कन्फर्म कराओ और निकल लो। एयरपोर्ट पर पहुंचकर या प्लेन में सवार होने पर ही जेनी को फोन करके बतलाना कि इमरजेंसी में ही इन्डिया जा रहे हो। उसे पहले फोन कर दिया तो वो तुमसे मिलने आ सकती है या तुम्हारे साथ इन्डिया चलने की जिद कर सकती है।''

''नहीं...मैं यहां फोन नहीं करूंगा। इन्डिया पहुंचकर ही जेनी को बोल दूंगा कि इमरजेंसी की वजह से ही मुझे अचानक ही इन्डिया आना पड़ा। तुम्हारे सेक्रेटरी का नाम क्या है...?''

''सोनू...सोनू महाजन। मैं तुम्हें उसका हुलिया भी बतला देती हूं—ताकि उसे पहचानने में कोई दिक्कत ना हो तुम्हें।''

फिर क्रान्ति ने हैरी को सोनू का हुलिया बतलाया। इसके लगभग चार घन्टे पश्चात् हैरी इन्डिया के प्लेन में सवार हो गया। जबकि क्रान्ति ने वापिस लौटने की कोई प्रतिक्रिया ना की।

उसे वापिस लौटना भी तो नहीं था—उसे तो सोनू के बनाये प्लान पर अमल करना था...बस।

❑❑❑

❑❑❑

''हैलो, विभा...।''

''अरे, जीजू आप...नमस्ते...।''

''नमस्ते, कैसी हो साली साहिबा...?''

कोर्ट के बाद केशव ने राजन से किचन का सामान लाने को कहा था और टाटा इन्डिका में श्वेता गुप्ता तथा केस के दो मुख्य गवाहों के साथ सवार होकर चला गया था। जबकि टाटा सफारी में सवार राजन

मार्केट की तरफ चला और बीच रास्ते में गाड़ी रोककर उसने चांदनी की मौसेरी बहन विभा को फोन मिलाया।

''आपकी बला से जीजू...।'' उसके कान से विभा का कृत्रिम क्रोध से ओत-प्रोत स्वर टकराया, ''...हमारी मैरिज एनीवर्सरी पर ही आये थे आप दोनों। फिर हम आपके घर आये थे तो आपने और चांदनी दीदी ने प्रॉमिस किया था कि मेरे बर्थ डे पर अवश्य ही आयेंगे। बर्थ डे से एक दिन पहले आपको फोन भी किया था, लेकिन आप नहीं आये।''

''आयम सॉरी, साली साहिबा। उस दिन मेरा एक्सीडेन्ट हो गया था। हांलाकि ज्यादा चोटें नहीं आई थीं लेकिन डॉक्टर ने चलने-फिरने से मना कर दिया था। चांदनी से कहा भी था कि वो चली जाये...लेकिन वो भी मुझे छोड़कर जाने को तैयार नहीं हुई थी। फोन पर क्षमा मांग तो ली थी यार...।''

''मांग तो ली थी, लेकिन बाद में तो टाइम निकाला जा सकता था। मेरे बर्थ डे को तीन महीने हो गये। माना कि आप बिजी रहते हैं, लेकिन क्या चांदनी दीदी भी इतना बिजी रहती हैं कि वो भी नहीं आ सकतीं? मैं उनसे बहुत नाराज हूं। उनको फोन भी नहीं किया मैंने। आखिरी बार फोन किया था तो बोल दिया था कि जब तक वो नहीं आयेंगी, मैं उनसे बात नहीं करूंगी।''

राजन के जेहन को झटका-सा लगा, लेकिन वो स्वयं पर नियन्त्रण करके बोला, ''नाराज नहीं होते साली साहिबा। मैं और चांदनी हफ्ते-दस में ही तुम्हारे घर पर आयेंगे। वैसे पन्द्रह अगस्त को मैं पण्डित जी के साथ दिल्ली गया था तो चांदनी को बोल गया था कि वो तुम्हारे पास चली जाये। बाद में चांदनी से पूछना याद नहीं रहा—क्या वो पन्द्रह अगस्त को नहीं आई थी—?''

''अगर वो आई होती तो फिर नाराजगी वाली बात ही क्या रह जाती जीजू? आना तो दूर रहा, वो फोन भी नहीं करती। आपने फोन किया तो बतला नहीं सकती कि मुझे कितना अच्छा लग रहा है...। तो ये पक्का है ना कि आप हफ्ते-दस दिन के भीतर आयेंगे—?''

''हां, आऊंगा...।''

''चांदनी दीदी को भी लायेंगे ना—?''

"हां, ले आऊंगा। अच्छा, बाय...।"

राजन ने फोन बन्द करके गाड़ी के डैश बोर्ड पर फेंक दिया और फिर हथेली पर घूंसा मारकर बोला—"...इस फोन से चांदनी के दो झूठ पकड़े गये हैं। पन्द्रह अगस्त को जब विभा के पति का ऑपरेशन था तो चांदनी ये बोलकर घर से गई थी कि वो विभा के घर गई थी—लेकिन वो नहीं गई थी। फोन पर मुझसे झूठ बोली थी और सोफिया दीदी से भी झूठ बोली थी। झूठ तो बोलना था ही...आखिर उसे रॉकी के साथ शिवपुरी जाना था और वहां दूसरी शादी करके होटल में सुहागरात मनानी थी। कल भी चांदनी ये कहकर गई थी कि विभा बीमार है और उसका पति बृजेश घर पर नहीं है—इसलिये वो रात को विभा के पास ही रहेगी। लेकिन विभा की बातों से क्लियर हो गया कि चांदनी विभा के यहां नहीं गई थी—बल्कि वो रॉकी के पास थी। रातभर रॉकी के साथ मुंह काला करती रही होगी। घर लौटकर गर्भवती होने की खबर सुनाती है। ये नहीं बोली कि मैं अपने यार या दूसरे पति रॉकी के बच्चे की मां बनने वाली हूं। बोलती भी कैसे—सती सावित्री वाला मुखौटा जो उतर जाता कमीनी का...उसका भान्डा नहीं फूट जाता? अब तो शक की जरा-सी भी गुजांईश नहीं रही। ये तय हो गया कि चांदनी बेवफा है। उसके रॉकी के साथ अवैध सम्बन्ध हैं...।"

"इतनी जल्दी नतीजे पर ना पहुंच तू राजन...।" उसका दिमाग फुसफसाया-सा, "...अपने गुरु केशव पण्डित की सीख को याद कर और उस पर अमल भी कर। अभी तेरी इन्वेस्टीगेशन अधूरी है। तुझे पूरी छानबीन करनी है। डॉक्टर विश्वास कुदालकर, शादी कराने वाले पण्डित भोले बाबा, उसके फोटोग्राफर बेटे कमल, होटल शिवम के मैनेजर हरीश नेपाली, वेटर बहादुर से मिलना है और उनसे पूछताछ करके डायरी में लिखी बातों की तस्दीक करनी है।"

"लेकिन...।"

"तुझे एक दिन पण्डित जी ने यू०पी० के जिला मुजफ्फरनगर का एक सच्चा किस्सा सुनाया था। उन्होंने लक्खी बंजारा की स्टोरी सुनाई थी। लक्खी बंजारे को रुपयों की जरूरत पड़ी थी तो उसने अपने वफादार कुत्ते से कहा था कि कर्ज उतरने तक वो सेठ को ही अपना मालिक

समझे। कुछ दिनों बाद सेठ के यहां चोरी हुई तो कुत्ते ने चोरों का पीछा करके ये देख लिया कि चोरों ने माल कहां छिपाया है? बाद में वो सेठ की धोती पकड़कर वहां ले गया, जहां चोरों ने माल छिपाया था। सेठ को माल मिला तो उसने कुत्ते को आजाद कर दिया और उसके गले में लक्खी बंजारे के नाम चिट्ठी लिखकर बान्ध दी, जिसमें उसने लक्खी को लिखा था कि उसके कुत्ते ने अपनी सूझबूझ से उसका सारा कर्जा चुका दिया है, इसलिये वो कुत्ते को आजाद कर रहा है। लक्खी ने जब दूर से कुत्ते को आते देखा तो उसने समझा कि कुत्ता सेठ के यहां से भाग आया है। मारे क्रोध के उसने कुत्ते को बन्दूक से गोली मार दी। पास जाकर चिट्ठी पढ़ी तो अपनी गलती का अहसास हुआ। कुत्ते की लाश से लिपटकर फूट-फूटकर रोया। अपनी गलती पर बहुत ही पछताया वो, लेकिन हो ही क्या सकता था? इसलिये तू भी जल्दबाजी और क्रोध से काम मत ले राजन। कहीं ऐसा ना हो कि बाद में तुझे भी पछताना पड़े। ठन्डे दिमाग से काम ले। पूरी इन्वेस्टीगेशन और पूरी तस्दीक के बाद ही किसी नतीजे पर पहुंचना और कोई निर्णय लेना...।"

"ठीक है...ऐसा ही करूंगा...।" बुदबुदाया राजन, "भावनाओं में नहीं बहूंगा। जल्दी से काम नहीं लूंगा। इन्वेस्टीगेटर बनकर पूरी छानबीन करूंगा। सिर्फ यही नहीं सोचूंगा कि चांदनी बेवफा है। ये भी सोचकर चलूंगा कि कोई चांदनी के खिलाफ साजिश रच रहा है या कोई मुझे अपने चक्रव्यूह में फंसाने की चेष्टा तो नहीं कर रहा है। जरा-सी भी जल्दबाजी से काम नहीं लूंगा मैं और पूरे धैर्य के साथ ही मालूम करूंगा कि असल मामला क्या है—?"

❑❑❑
❑❑❑

केशव और श्वेता के बीच शतरंज की बाजी लगी हुई थी, जबकि सोफिया केशव की बगल में बैठकर टी०वी० पर चल रहा सास-बहू वाला सीरियल देख रही थी।

"चैक एंड मैट...अर्थात् शह और मात...।" कहने पर केशव ने अपने वजीर से श्वेता के बादशाह को बोर्ड से बाहर रखा दिया।

"सत्यानाश...।" हथेलियों से सिर पकड़कर बोली श्वेता, "हर

बार मुझसे गलती हो जाती है गुरुजी और मैं हार जाती हूं।"

केशव के पहले चारमीनार मार्के वाली धूम्रपान दन्डिका सुलगाई और फिर कश लगाकर बोला—"मैंने तुम्हें बतलाया था कि सामने वाले के चाल चलने पर अपनी चाल मत चलो, ना ही अपनी चाल चलने पर ये देखो कि सामने वाला कौन-सी चाल चल रहा है। अपनी चाल चलने से पहले ये सोचो कि तुम्हारी उस चाल के बाद सामने वाला कौन-सी चाल चलेगा? मोहरों से नहीं, सामने वाले के दिमाग से खेलो...।"

"नमस्कार...।" तभी वहां माधवी आ पहुंची।

तभी नौकर मुंशी एक ट्रे में केतली और खाली कप लिये हुये आ पहुंचा। उसके पीछे-पीछे दो प्लेटों में पनीर और गोभी के पकौड़े लिये हुये चांदनी भी कमरे में प्रविष्ट हुई और बोली "नमस्कार। तुम अच्छे समय पर आई हो माधवी। चाय के साथ गरमा-गरम पकौड़े भी तैयार हैं। बैठो और नाश्ता करो...।"

केशव उठा और माधवी के कन्धों पर हथेलियां रखकर बोला "क्या बात है? इतनी टेंशन में क्यों हो तुम—?"

"तुम्हें कैसे पता चल गया भाई कि...मैं टेंशन में हूं...?"

"तुम्हारा चेहरा...खास करके आंखें तुम्हारे मनोभावों की चुगली कर रही हैं मेरी बहना। वैसे भी तुम जिन कपड़ों में सोई थीं, उन्हीं में चली आई हो। स्नान करना तो दूर रहा, तुमने हाथ-मुंह भी नहीं धोया। आराम से बैठो और चाय-नाश्ता लो। फिर बतलाना कि क्या बात है...।"

"बिना ब्रश किये न कुछ नहीं खाती। हां, चाय ले लूंगी।" कहने पर माधवी सोफा चेयर पर बैठ गई।

चांदनी ने केतली से कपों में चाय डालकर सभी को कप पकड़ाये और स्वयं भी चाय सिप करने लगी।

केशव का इशारा होने पर माधवी ने अमित शाह के बारे में बतलाया और फिर खाली हो चुके कप को सैन्ट्रल टेबल पर रखकर दुखी व चिन्तित भाव से बोली, "इस ससुरे अमित शाह ने जबरदस्त टेंशन दे डाली है भाई। दोनों कलाइयों की नसें काटने पर भी वो चींखा या कराहा नहीं

था उल्टे मुस्करा रहा था। ये बोला कि अगली बार पैट्रोल लेकर आयेगा और मैंने उसकी बात नहीं मानी तो आत्मदाह कर लेगा। पूरा सनकी है वो, ऐसा कर भी डालेगा, मेरा तो फजीता ही हो जायेगा।

लोग तरह-तरह की बात बनायेंगे। दूसरे मीडिया वाले भी मेरी खिंचाई करेंगे। मुझे इस अमित शाह से छुटकारा दिलवाओ भाई—मैं तो जबरदस्त टेंशन में आ गई हूं...।"

"तुम चिन्ता क्यों करती हो माधवी। केशव हैं ना। ये उस अमित शाह की ऐसी अक्ल ठिकाने लगायेंगे कि उसे छठी का दूध याद आ जायेगा। उसे जेल की चक्की पीसनी पड़ेगी तो...होश ठिकाने आ जायेंगे...।"

"अमित शाह को आत्महत्या की चेष्टा करने के आरोप में तो कुछ दिनों के लिये जेल भिजवाया जा सकता है सोफी—लेकिन माधवी को परेशान करने के इल्जाम में नहीं। उसने गुन्डों से भिड़कर माधवी की इज्जत और जान बचाई थी और स्वयं जख्मी भी हो गया था। उसने स्वयं को ही चोट पहुंचाई...माधवी को तो जरा-सी खरोंच भी नहीं पहुंचाई। उसको कानून के डन्डे से सबक नहीं सिखलाया जा सकता। उसका कुछ और ही इलाज करना होगा। उसे मैं डरा-धमकाकर वार्निंग दूंगा कि वो आईन्दा माधवी को परेशान ना करे...।"

"वो पागल मालूम पड़ता है गुरुजी। डराये-धमकाये जाने से भी उस पर कोई फर्क नहीं पड़ेगा। उसने पहले अपना सिर फुड़वा लिया था—फिर अपने हाथों से ही कलाइयों की नसें काट लीं। मेरे ख्याल से तो उसे मेंटल हॉस्पिटल भेज देना चाहिये। वहां उसका ट्रीटमेंट भी होगा और इलेक्ट्रिक शॉक भी दिये जायेंगे। वो जब ठीक होकर बाहर निकलेगा तो माधवी जी को भूल चुका होगा...।"

"तुम ठीक ही बोल रही हो श्वेता। अमित शाह का यही इलाज है कि उसे मेंटल हॉस्पिटल भिजवाना पड़ेगा। कहां रहता है वो माधवी—?"

माधवी ने बतलाया।

केशव ने मोबाइल फोन उठाकर एक नम्बर लगाया।

"नमस्कार पण्डित जी...।" दूसरी तरफ से उभरने वाली आवाज

इन्सपेक्टर अनिल यादव की थी।

"नमस्कार, अनिल भाई...कैसे हो—?"

"कृपा है आपकी पण्डित जी। कहिये, ये नाचीज आपके लिये क्या कर सकता है...?"

केशव ने शॉर्टकट में अमित शाह के बारे में बताया और फिर बोला, "माधवी के फ्लैट के किसी करीबी नर्सिंग होम में ही अमित शाह को उसका मित्र ले गया होगा। या फिर वो इलाज कराके अपनी कोठी पर पहुंच गया होगा। मामला तुम्हारे इलाके का है। उसको पकड़ो और मेंटल हॉस्पिटल पहुंचा दो। वो मेंटल ही है। डॉक्टर भी चैकअप करके उसे मेंटल घोषित कर देगा। बाई दा वे...डॉक्टर ने उसे मेंटल नहीं माना तो...।"

"तो भी डॉक्टर यही रिपोर्ट बनायेगा पण्डित जी कि वो खतरनाक किस्म का पागल है। ये काम आप मुझ पर छोड़ दीजिये। माधवी मेरी भी बहन है। उसे परेशान करने वाला यूं साण्ड की तरह खुला नहीं घूम सकता। अमित शाह मेंटल नहीं भी है तो...बना दिया जायेगा।"

"थैंक्यू, अनिल भाई...।"

केशव ने फोन बन्द कर दिया और फिर चाय के साथ गरमा-गरम पकौड़ियों का आनन्द लेने लगा—जबकि माधवी ने सिर्फ चाय ही ली और फिर फ्रेश होने चली गई।

लगभग घण्टे भर पश्चात् इन्सपेक्टर अनिल यादव का फोन आया।

"अमित शाह को चौरसिया नर्सिंग होम में एडमिट किया गया था पण्डित जी—लेकिन होश में आते ही वो डॉक्टरों के मना करने पर भी वहां से चला गया था। वो अपने घर भी नहीं पहुंचा। उसकी कोठी लॉक्ड है। बाहर वाले फाटक पर मोटा ताला लटका हुआ है। मैंने सिविल ड्रैस वाले चार हवलदार उसकी कोठी पर छोड़ दिये हैं। पैट्रोलिंग के वक्त पर भी अमित शाह की खोज की जायेगी। जैसे ही वो पकड़ाई में आयेगा—उसे मेंटल हॉस्पिटल पहुंचा दिया जायेगा—।"

केशव ने उसका आभार व्यक्त करके फोन बन्द कर दिया और माधवी को तसल्ली दी कि जल्दी ही अमित शाह का 'इलाज' हो जायेगा।



"मेरी बॉल दे दो बन्टी भाई। हम लोग मैच खेल रहे हैं... मैच अभी पूरा नहीं हुआ है...।" गोरा-चिटट्टा और खूबसूरत सौभाग्य अपने से छोटे कद और कमजोर जिस्म वाले काले-कलूटे लड़के के सामने गिड़गिड़ा रहा था, "...तुम कल भी मेरा बैट ले गये थे। अच्छा, हमारा मैच पूरा हो जाये तो फिर बॉल ले जाना, मैं कल नई बॉल ले आऊंगा...।"

"चल बे ओये सेठ की औलाद...!" बन्टी सौभाग्य से नया बैट भी छीनकर बोला, "तेरा मैच पूरा हो गया। अब अपुन मैच खेलेगा, वो भी अपने घर पर।"

"ये...ये ठीक नहीं है बन्टी भाई। तुम कल भी मेरा बैट ले गये थे। आज मम्मी ने नया बैट मंगवा कर दिया है। तुम चाहो तो बॉल ले लो—लेकिन बैट नहीं दूंगा...।"

"तू देने वाला कौन है बे...?" बन्टी ने सौभाग्य को धक्का देकर मैदान के कीचड़ वाले हिस्से में गिरा दिया और बैट को गदा की मानिन्द कन्धे पर रखकर रौबीले लहजे में बोला, "...मैं नागपुर के सबसे बड़े दादा भीमा का इकलौता बेटा हूं। आम आदमियों की बात ही छोड़ दे तू...पुलिस वाले भी भीमा दादा को झुक कर सलाम करते हैं। जो भीमा दादा या अपुन से पंगा लेता है, उसके हाथ-पैर तोड़ दिये जाते हैं। इस मैदान को अपुन के बाप ने अपुन के नाम कर दिया है। यहां खेलने वाले को टैक्स देना पड़ेगा। तेरे दोस्तों से भी टैक्स वसूलता हूं। अपुन के यहां रहने तक कीचड़ में ही लेटे रहना। अगर उठने की कोशिश की तो सारे कपड़े उतार लूंगा और घर पर नंगा ही भेजूंगा।"

सात वर्षीय सौभाग्य सहम उठा—उसमें इतनी हिम्मत नहीं थी कि कीचड़ में से उठ सके।

दस वर्षीय बन्टी के साथ आये उसके ही हम उम्र और आवारा किस्म के लड़कों ने सौभाग्य को घेर लिया और ताली बजाकर हंसने लगे, उसका मखौल उड़ाने लगे।

सौभाग्य रुआंसा-सा हो चला।

"सुनो, ओये लड़कों...!" सौभाग्य के साथ आये नौ लड़कों से रौबीले लहजे में बोला बन्टी, "...ये मैदान अपुन का है। यहां पर खेलने का टैक्स लगता है। चलो, अपनी जेबें खाली करो। जेबों में जो भी माल हो निकालकर अपुन के हवाले करो—वरना तुम्हारी खैर ना होगी...।"

डरे-सहमे लड़कों ने चुपचाप जेबों से रुपये-पैसे निकाले और बन्टी को देने के लिये आगे बढ़े ही थे कि काफी देर से पेड़ की ओट में छिपकर तमाशा

देख रहा काली जींस व लाल टी-शर्ट वाला अलफांसे वहां आ पहुंचा। उसने बन्टी से बॉल और बैट छीनकर जमीन पर फेंके और फिर लड़कों से बोला, "कोई भी इसे पैसे नहीं देगा। ये फील्ड इसकी या इसके बाप की नहीं है।"

"ऐ...कौन हो तुम...?" क्रोध से लाल-पीला होकर बोला बन्टी, "क्या जानता नहीं कि अपुन भीमा दादा का बेटा है...?"

"हां, जानता हूं...।" अलफांसे ट्रिपल फाइव की सिगरेट में कश मारकर बोला, "...तुझे भी और तेरे बाप को भी। तू आईन्दा इस मैदान का रुख भी नहीं करेगा। अगर गलती से आ भी गया तो किसी बच्चे को...खास करके सौभाग्य को परेशान नहीं करेगा।"

"सौभाग्य तुम्हारा रिश्तेदार लगता है क्या?"

"हां, रिश्तेदार ही लगता है। तू आईन्दा सौभाग्य को परेशान नहीं करेगा...।"

"तुम अपुन से पंगा लेकर ठीक नहीं कर रहे हो...।"

"ओये...गमले में उगे पोदीने के पेड़...।" अलफांसे ने गिरेहबान पकड़कर बन्टी को हवा में उठा लिया और उसे वाल क्लॉक के पैन्डुलम की मानिन्द ही दायें से बायें, बायें से दायें झुलाते हुये बोला, "...कुऐं के मेंढक की तरह टर्र-टर्र मत कर! तू बालक है, बालक ही रह! जो कहा...उस पर अमल करना...आईन्दा सौभाग्य को परेशान मत करना। बल्कि इससे सामना होने पर नमस्कार करना। अगर नमस्कार करने में शर्म आये तो नजरें और सिर झुकाकर चुपचाप निकल जाना...।"

अपनी समझ में तो बन्टी ने पूरी शक्ति से दोनों पैरों से अलफांसे के पेट पर जोरदार प्रहार किया—जबकि अलफांसे यूं ही मुस्कराया कि मानो किसी ने उसके पेट पर गुदगुदी कर दी हो।

"तेरे बाप ने तुझे बिगाड़ दिया है। थोड़ा-सा प्रसाद देना ही होगा तुझे...।" कहने पर अलफांसे ने बन्टी को हवा में उछाल दिया।

बन्टी मुंह के बल उसी कीचड़ में जा गिरा, जिसमें पहले से ही सौभाग्य पड़ा हुआ था।

अलफांसे को कोई बड़ी तोप समझकर बन्टी के सभी साथी वहां से भाग निकले—बन्टी उन्हें पुकारता ही रह गया।

सौभाग्य का हाथ पकड़कर अलफांसे ने उसे कीचड़ से बाहर निकाला और बोला, "...ये लड़का तुमसे कमजोर ही है—तुम्हें इससे दबना नहीं चाहिये था। शायद इसके बाप भीमा के डर से ही तुम जुल्म सहने को मजबूर थे। कोई बात नहीं...कोई बात नहीं। अब ये आईन्दा तुम्हें परेशान नहीं करेगा...।"

"आप कौन हैं अंकल?"

"तुमने अंकल कहा तो है। तुम्हारा अंकल ही हूं। तुम्हारी मम्मी का खास रिश्तेदार हूं मैं...।"

"अपुन का बाप तुम्हें छोड़ेगा नहीं। वो मार मारेगा कि...आह...!"

अलफांसे ने बाहर निकल रहे बन्टी को धक्का देकर वापिस कीचड़ में गिरा दिया और पैन्ट की जेब से असली लगने वाली खिलौना रिवॉल्वर निकालकर बोला "...अभी तेरे जिस्म में दस-बीस गोलियां ठोक देता हूं। देखता हूं कि तेरा बाप तुझे जिन्दा कर पाता है कि नहीं...?"

बन्टी की हवा गोल—खून का पानी बन गया।

"गो...गाली मत चलाना अपुन पर...गलती हो गई। अपुन आईन्दा सौभाग्य को परेशान नहीं करेगा, कसम खा रहा हूं अंकल जी।"

"सारे कपड़े उतार...।"

"न...नहीं...।"

"चल...अन्डर वियर रहने दे लेकिन बाकी के सारे कपड़े उतार। जल्दी कर। दस तक गिनती बोलूंगा। मेरे मुंह से दस निकलने से पहले अन्डर वियर को छोड़ तेरे जिस्म पर कोई कपड़ा रहा तो...इसी कीचड़ में तेरी लाश पड़ी होगी...एक...दो...तीन...चार...पांच...।"

हड़बड़ाये, घबराये बन्टी ने बला की फुर्ती के साथ जींस, टी-शर्ट निकालकर कीचड़ में ही छोड़ दी।

"चल...अब भाग...मगर पलटकर भी देखा तो तेरी खैर नहीं होगी एक टन के मच्छर...।"

कीचड़ से सना बन्टी गिरता-पड़ता भागा और सौभाग्य खुशी से उछलते-कूदते हुये ताली बजाने लगा।



हैरी मुम्बई पहुंचा तो क्रान्ति के सैक्रेटरी के रूप में सोनू ने वेलकम किया और उसे महावीरा के हैड क्वार्टर पर ले गया।

बेचारा!

क्या सोचकर आया था और क्या हो गया।

ये सोचकर आया था कि उसे क्रान्ति के महल में ले जाया जायेगा, उसका शानदार स्वागत होगा और जमकर खातिरदारी व मेहमान नवाजी होगी।

लेकिन हुआ इसके उलट और रजिया गुन्डों में फंस गई। खास किस्म के बनाये गये टॉर्चर रूम में हैरी को पहुंचाकर स्टील की मजबूत कुर्सी पर बिठलाया गया और चमड़े की मजबूत पट्टियों से इस कदर जकड़ दिया गया कि वो लाख चेष्टा करके भी हिल नहीं सकता था।

पानी मांगने पर पानी तो मिला, लेकिन वो गर्म था और उसमें काफी मात्रा में नमक भी घुला हुआ था।

भूख लगने पर मोटी-मोटी, अधपकी या जली हुयी रोटियां आईं—साथ में सब्जी तो क्या, अचार, प्याज या नमक तक नहीं था। कनपटी पर रिवॉल्वर लगाकर कई रोटियां उसके मुंह में ठूंसी गईं और हलक से नीचे उतरवाकर पेट तक भी पहुंचाई गईं।

उसके कुत्तों को भी मीट के साथ बढ़िया खाना मिलता था।

सिगरेट की बजाय मोटी और कड़वी बीड़ी पिलाई गई। शराब भी आई लेकिन वो भट्टी पर सड़े हुये शीरे से खींची गई थी—सिर्फ उसकी दुर्गन्ध से ही हैरी को मिचली आ गई—लेकिन उसे गुन्डों ने पिटाई करके जबरदस्ती आधी बोतल पिलाई।

गर्मी थी, लेकिन कमरे में कोई पंखा नहीं। जबकि हैरी के बाथरूम और ट्वायलेट तक में ए०सी० लगे हुये थे।

फिर कई घन्टे पश्चात् सोनू टॉर्चर रूम में पहुंचा तो हैरी ने आर्तनाद-सा किया— "...ये क्या हो रहा है मेरे साथ? क्रान्ति ने तो कहा था कि तुम मुझे उसके महल में ले जाओगे और ऐसी-ऐसी खातिरदारी की जायेगी कि मैं जिन्दगीभर भूल नहीं सकूंगा...।"

हैरी के सामने कुर्सी पर बैठकर सोनू ने सिगरेट में कश लगाकर हैरी के चेहरे पर धुआं छोड़ा और फिर घातक किस्म की मुस्कान के साथ बोला, "गलत थोड़े ही बोली थी क्रान्ति। तेरी जो खातिरदारी हो रही है, उसे तू जिन्दगीभर भूल नहीं पायेगा। तेरे साथ अब तक जो कुछ भी हुआ है, उसे खातिरदारी ही समझ हैरी। वैसे ये टॉर्चर रूम है। यहां पर किसी को टॉर्चर करने के लिये लाया जाता है। अगर तूने मेरी बात नहीं मानी तो...तो फिर तुझे टॉर्चर किया जायेगा। ऐसा टॉर्चर कि तेरे फरिश्ते भी थर्रा उठेंगे। प्लास या नोज प्लायर से तेरे हाथों-पैरों के नाखून उखाड़ दिये जायेंगे।

बर्फ तोड़ने वाले सूजे से कानों के पर्दे फाड़ दिये जायेंगे और आंखें भी फोड़ दी जायेंगी। तेरे जिस्म पर ढेर सारा तेजाब डाला जायेगा—बल्कि तेजाब से तुझे स्नान कराया जायेगा। फिर तेरी झुलसी खाल को तेरे जिस्म से खुरच-खुरच कर अलग कर दिया जायेगा। फिर खाल बिहीन जिस्म पर नमक छिड़का जायेगा...।"

हैरी की दशा काटो तो खून नहीं वाली हो चली। जिस्म में खून तो था, लेकिन वो मानो बर्फ की मानिन्द जम चुका था।

दिल ने मानो धड़कना ही बन्द कर दिया हो।

दिमाग मानो लकड़ी का बेजान टुकड़ा बन गया हो। फिर उसने झुरझुरी-सी ली और रुआंसा-सा होकर बोला—"...लेकिन मेरा कसूर क्या है? मुझे किस जुर्म की सजा दी जा रही है? आखिर किया क्या है मैंने? मुझे क्रान्ति से मिलना है। उसे बुलाओ। वो तुम और तुम्हारे आदमियों पर बहुत खफा

होगी। तुम नहीं जानते कि क्रान्ति मुझे कितना प्यार करती है...।"

"क्रान्ति...और प्यार...ह...ह...हा...।" जहरीली किस्म की हंसी हंसकर सर्द से लहजे में बोला सोनू, "...काश...काश कि तू क्रान्ति को जानता। तुझे उसकी हकीकत मालूम होती। वो खूंखार नागिन है, जो सिर्फ फुंफकारना और डसना ही जानती है। क्रान्ति की यही तो खूबी है कि उसका शिकार भी उस पर मर मिटता है। क्रान्ति ने तुझे बेवकूफ बनाया और तू बन गया। बनना भी था—कामयाबी का दूसरा नाम क्रान्ति है। मैंने जो प्लान बनाया था, वो उस पर कामयाबी के साथ अमल कर रही है...।"

"तुम्हारी बातें मेरी समझ में नहीं आ रही हैं। क्रान्ति बोली थी कि मेरे पीछे-पीछे वो भी इन्डिया चली आयेगी। वो आ चुकी होगी... उसे बुलवाओ...।"

"क्रान्ति अभी वापिस नहीं लौटेगी।"

"लेकिन वो तो बोली थी कि...।"

"झूठ बोली थी वो। जब तक वो अपने मकसद में कामयाब नहीं हो जाती...अमेरिका में ही रहेगी वो। उसने तेरे साथ जो कुछ भी किया, वो सब नाटक ही था। वो जानबूझकर रेस्टोरेन्ट में तेरे सामने आई थी और तुझ पर अपने जलवों के तीर चलाये थे, फिर बार के बाहर वो जानबूझकर तेरी गाड़ी से टकराई और तेरे साथ तेरे घर गई थी। तू खुश था कि उसे लूटने का मौका मिल गया। जबकि हकीकत में क्रान्ति ने अपने हुस्नो-शबाब को चारे के रूप में इस्तेमाल किया था, जैसे किसी जानवर को जाल या पिंजरे में कैद करने के लिये उसे खाने-पीने की चीजों का लालच दिया जाता है। उसने तुझ पर ऐसा जादू चलाया कि तूने अपने दिमाग का इस्तेमाल करना ही बन्द कर दिया था। कितनी चालाकी के साथ क्रान्ति ने तुझे यहां...मेरे पास भेज दिया...।"

"ले...लेकिन क्रान्ति तो बोली थी कि उसकी कम्पनी में कोई बड़ी गड़बड़ी चल रही है, इसलिये उसे फौरन ही इन्डिया जाना पड़ेगा?"

"कौन-सी कम्पनी...कैसी कम्पनी? क्रान्ति बिज़नेस लेडी नहीं है। वो मुजरिम है...।"

"ये...ये क्या कह रहे हो तुम...?"

"सच ही बोल रहा हूं प्यारे लाल। क्रान्ति खतरनाक किस्म की मुजरिम है। उसने पहले तुझे अपनी खूबसूरती का गुलाम बनाया और फिर इन्डिया लौटने की बात कही—ताकि तू तड़प उठे। तेरी तड़प का फायदा उठाया उसने और बड़ी ही चालाकी के साथ यहां...मेरे पास भेज दिया। अब तू मेरे रहमो-करम पर है...।"

"तुम क्रान्ति के सैक्रेटरी नहीं हो...।"

"नहीं। हम दोनों तो पार्टनर हैं।"

"पार्टनर? क्या मतलब?"

"मतलब समझकर क्या करेगा तू ओये अमेरिकी बन्दर! इतना ही समझ ले कि मेरी और क्रान्ति की मन्जिल एक ही है– हमारा मकसद भी एक है। इसलिये हम दोनों मिल-जुलकर काम कर रहे हैं। अब तुझे एक काम करना है। तूने वो काम कर दिया तो तुझे बरी कर दिया जायेगा। अगर तूने इन्कार किया तो...तुझ पर कयामत ही टूट पड़ेगी। तुझे बतलाया ही था कि तुझे कैसे-कैसे टार्चर किया जायेगा...।"

हैरी को पसीने छूट चले। फिर वो थूक-सा सटक कर बोला–"क...क्या करना होगा मुझे?"

"अपनी डार्लिंग जेनी को यहां बुलाना होगा। तू तो सिर्फ माध्यम ही है। मेरा और क्रान्ति का असल मकसद तो माफिया बिग वाटसन की बेटी को किडनेप करके अपनी बन्धक बनाना है।"

"कि...किडनेप...?" चौंका हैरी।

यदि वो कसकर बन्धा हुआ ना होता तो उछल ही पड़ता।

"हां, किडनेप...।"

"ये...ये मुमकिन नहीं है। जेनी माफिया किंग की इकलौती और लाड़ली बेटी है। अमेरिका के राष्ट्रपति जितनी ही उसकी सुरक्षा होती है...।"

"मालूम है...।" सोनू हैरी की बौखलाहट का मजा लेते हुये बोला, "तभी तो इस तरह का खेल खेला जा रहा है। अगर अमेरिका में जेनी का किडनेप करना आसान होता तो क्रान्ति को तेरा बिस्तर गरम करने की भला क्या जरूरत थी बे? जेनी तेरी बिलव्ड है और वाटसन भी तुझ पर भरोसा करता है। अगर तू फोन करके जेनी को यहां बुलायेगा तो वो आ जायेगी। लेकिन उसके साथ वाटसन के सिक्योरिटी गार्ड्स भी आयेंगे। उनसे तो निपट लिया जायेगा–लेकिन मैं कोई लफड़ा नहीं चाहता। अगर घी सीधी उंगली से ही निकलता हो तो फिर उंगली को टेढ़ी करने की भला क्या जरूरत है? तू जेनी से फोन पर बात करेगा और बोलेगा कि तेरे सामने ऐसी समस्या आ गई है कि फोन पर नहीं बतला सकता–लेकिन तुझे उसकी जरूरत है। तू जेनी से बोलेगा और उसे इस बात के लिये राजी करेगा कि वो अपने बाप को बतलाये बिना ही...चोरी से...अपने सिक्योरिटी गार्ड्स को धोखा देकर यहां चली आये। जेनी तुझे बहुत चाहती है। तेरे लिये कुछ भी कर सकती है। वो तेरा कहना मानेगी और अपने बाप को बतलाये बिना ही यहां चली आयेगी। बाई दा वे...ऐसा नहीं हो पाता...जेनी अपने बाप और उसकी सिक्योरिटी को धोखा देने में कामयाब नहीं भी हो पाती...तो भी कोई फर्क नहीं पड़ेगा। उसके साथ जो गार्ड्स आयेंगे–उनसे भी निपट लिया जायेगा। बस, जेनी एक बार यहां, इन्डिया में आ जाये। फिर वो हमारे कब्जे में होगी।"

"तो...लेकिन तुम जेनी को अपने कब्जे में क्यों करना चाहते हो...?"

"ये जानकर तू क्या करेगा बे? तुझे बस जेनी से फोन पर बात करनी है और उसे यहां बुलाना है...।"

"न...नहीं... मैं जेनी को नहीं बुलाऊंगा। ना जाने तुम उसके साथ क्या करोगे...!"

"तेरे तो फरिश्ते भी बुलायेंगे मुन्ना...।" सोनू हैरी के सिर पर हथेली फिराते हुये सर्द लहजे में बोला, "...हद-से-हद एक घन्टे तक ही तू मेरे टॉर्चर को बर्दाश्त कर पायेगा। फिर तू टूट जायेगा। सोच ले। अपनी दुर्गति कराके जेनी को यहां बुलायेगा कि ऐसे ही बुलायेगा? तुझे जेनी को यहां बुलाना ही होगा। अभी मैं जा रहा हूं। घन्टेभर बाद वापिस लौटूंगा। तब तूने जेनी से बात करके उसे यहां नहीं बुलवाया तो तुझ पर कहर ही टूट पड़ेगा। सोच ले कि तुझे खुद को सही-सलामत रखना है...या फिर अपनी दुर्गति करानी है?"



सफेद लिबास और कोई मेकअप या आभूषण नहीं–लेकिन फिर भी काफी खूबसूरत लग रही थी आरती।

गाड़ी की पिछली सीट पर बैठी वो अपने बेटे सौभाग्य से बतिया रही थी।

अचानक ही ड्राइवर ने बहुत तेज ब्रेक मारे तो आरती का माथा अगली सीट से टकराया, जबकि उछल पड़े सौभाग्य का सिर छत से लगा।

दोनों के ही मुखों से घुटी-घुटी सी चीख निकल पड़ी।

तभी हॉकी, तलवार, चाकू व मोटर साइकिल की चेन से लैस चार हट्टे-कट्टे और भयानक शक्ल-सूरत वाले गुन्डों ने कार के दरवाजे एक साथ खोले।

"ऐ...ये क्या बदतमीजी...आह...!" ड्राइवर ने विरोध-स्वरूप चन्द शब्द ही कहे थे कि सिर पर चेन का प्रहार हुआ। वो फटे सिर के साथ सड़क पर जा गिरा।

आरती व सौभाग्य घबरा उठे।

तभी तलवार और चाकूधारी गुन्डों ने आरती तथा सौभाग्य को पकड़ा और अलग-अलग दरवाजों से दोनों को बाहर निकाल लिया।

आरती मदद के लिये चिल्लाई तो सौभाग्य भी घबराकर रोने लगा।

चारों गुन्डे दोनों को सड़क के पार खड़ी लाल रंग की खुली जीप के पास ले गये, जिसमें बन्टी के साथ एक काला-कलूटा तथा भैंसे जैसे डील-डौल वाला गंजा भी बैठा हुआ था।

"यही है ना वो छोकरा...?" गंजा सौभाग्य को घूरते हुये फुंफकारा-सा,

"जिसकी वजह से उस हीरो ने तुझे कीचड़ में गिराया था बन्टी और नंगा करके करके भगाया था?"

"हां, ये ही सौभाग्य है बापू और ये इसकी मम्मी है... ।" आरती बन्टी के बाप भीम दादा को भी जानती थी और सौभाग्य ने उसे खेल के मैदान में हुई घटना के बारे में भी बतला दिया था।

"वो आदमी कौन था...मैं नहीं जानती भीमा जी... ।" वह हाथ जोड़कर गिड़गिड़ाने वाले लहजे में बोली, "ना ही मेरा बेटा सौभाग्य ही उसे जानता है... ।"

"झूठ मत बोल सेठ जयभगवान की छोकरी... ।" उस हीरो ने खुद को सौभाग्य का रिश्तेदार बतलाया था। एक दिन पहले बन्टी ने तेरे छोकरे की बॉल छीनी थी। इसीलिये अगले दिन ये अपने रिश्तेदार को साथ ले गया... ।

"भगवान की सौगन्ध ! हम दोनों ही उसे नहीं जानते। वो अपने आप ही वहां पहुंचा था और उसने अपनी मर्जी से ही आपके बेटे के साथ वो हरकत की थी। फिर भी मैं माफी मांगती हूं आपसे। बन्टी बेटा, तुम भी हमें क्षमा कर दो।"

"ऐसे-कैसे क्षमा कर दें री... ।" भीमा जीप से बाहर निकलकर बोला, "...भले ही बन्टी बालक है—लेकिन पूरे शहर में इस बात की चर्चा है कि भीमा दादा के बेटे को कीचड़ में साना गया और फिर नंगा करके दौड़ाया गया। भीमा दादा के बेटे को नंगा किया गया— जिसकी पूरे इलाके में तूती बोलती है—खोटी चवन्नी भी सौ रुपये में चलती है। अपुन का नाम सुनकर अच्छों-अच्छों की पैन्ट गीली हो जाती है। अपुन की जीप यहां आकर रुकी को ड्यूटी दे रहे पुलिस वाले चुपचाप निकल लिये। सभी पुलिस वाले डरते हैं मुझसे। अपुन में दम-खम है, इसीलिये मन्त्री जी ने अपना राइट हैन्ड बनाया हुआ है। बन्टी के रूप में अपुन की बेइज्जती हुई है। लोग तो यही सोचेंगे कि भीमा दादा में दम नहीं रहा है, तभी कोई ऐरा-गैरा, नत्थू-खैरा उसके बेटे को कीचड़ में सानकर नंगा कर गया। नहीं...ये बात बर्दाश्त नहीं होगी अपुन से। कल को कोई अपुन पर भी हाथ डाल सकता है। आज इस भीड़ भरे चौराहे पर ऐसा कुछ होगा कि फिर कोई माई का लाल अपुन के बेटे को तो क्या...अपुन की गली के पिल्ले को भी घूरने की जुर्रत नहीं पायेगा... ।"

अनहोनी की आशंका से आरती का मुखड़ा फक्क पड़ गया।

सौभाग्य ने भी मामले की गम्भीरता को समझा और हाथ जोड़कर भीमा से बोला—"जिन अंकल ने बन्टी के कपड़े उतरवाये थे उन्हें नहीं जानता मैं ! पहले कभी नहीं देखा था उन्हें। लेकिन फिर भी मैं अपनी गलती मानता हूं। आप नाराज मत होइये। मैं अपने कपड़े उतार देता हूं... ।"

"जरूरत से ज्यादा चालाक बन रहा है छोकरे... ।" सौभाग्य के गाल

पर चिकोटी काटकर बोला भीमा, "...तेरे कपड़े उतरवाने से क्या होगा भला? लोग कहेंगे कि भीमा दादा ने एक बच्चे के कपड़े उतरवाकर बुजदिली का परिचय दिया है। वैसे भी तेरे कपड़े उतरवाने से अपने बन्टी के जख्मों पर मलहम नहीं लगेगा। ना ही अपनी खराब हुई पोजीशन ही सुधरने वाली है। खेल का असली मजा तो तब आयेगा, जब तेरी मां के कपड़े उतरेंगे और यहां मौजूद सैकड़ों लोग इसके खूबसूरत हुस्न का दीदार करेंगे... ।"

"न...नहीं...!" घबरा गई आरती और सौभाग्य का हाथ पकड़कर दौड़ी, लेकिन भीमा के चारों गुन्डों ने दोनों को पकड़ लिया।

"बचाओ...बचाओ...!"

"हेल्प...हेल्प...!"

आरती के साथ सौभाग्य भी मदद के लिये चिल्लाया लेकिन दुकानों, फुटपाथ और गाड़ियों में मौजूद तमाशाइयों के हाव-भाव ने इस बात की स्पष्ट चुगली कर दी कि उनमें भीमा से पंगा लेने की सरसों के दाने बराबर भी हिम्मत नहीं है।

भीमा ने बेबाकी से आरती की कलाई पकड़ ली और भद्दी सी हंसी हंसकर बोला, "किन लोगों से मदद की उम्मीद कर रही है तू फुलझड़ी—इनकी बीवियों या बहनों के साथ बलात्कार भी कर दूंगा तो ये ससुरे रोने-गिड़गिड़ाने के सिवाय कुछ भी नहीं कर सकेंगे। यूं तो यहां मर्दों की कोई कमी नहीं है—सभी ने बच्चे पैदा किये हुये हैं—लेकिन भीमा दादा के सामने सभी हिजड़े बन जाते हैं। किसी से मदद की उम्मीद मत कर। कोई नहीं आयेगा। इसलिये जो कह रहा हूं, वो कर। तुझे भीतर के दो छोटे-छोटे कपड़ों को छोड़कर बाकी के सभी कपड़े उतारकर ठुमके लगाने हैं और फिर ऐसे ही कार में बैठे बिना अपने घर तक जाना है... ।"

"न...नहीं...मैं ये नहीं कर सकती। हालांकि मैं इसी शहर की बेटी हूं, ये मेरा मायका है—लेकिन मैंने घर से बाहर निकलने पर कभी सिर भी नंगा नहीं रखा। चुनरी या साड़ी के पल्लू से सिर को हमेशा ढांपे रखा। मैं अपने कपड़े नहीं...ऐसी कल्पना भी नहीं कर सकती। तुम चाहो तो मुझे जान से मार सकते हो—लेकिन मैं तुम्हारी बात नहीं मानूंगी... ।"

भीमा यूं ही मुस्कराया कि मानो आरती ने कोई बड़ी बचकानी बात बोल दी हो। फिर उसने अचानक ही कुर्ते की जेब से रामपुरी चाकू निकाल लिया और खटका दबाकर उसे खोल लिया—

आठ इंच लम्बा, चमकीला व पैना फल।

आरती की कलाई छोड़कर उसने सौभाग्य के बालों को बायीं मुट्ठी में जकड़ा और उसके गले पर चाकू की धार रख दी।

"म...मम्मी...!" घबराकर रोने लगा सौभाग्य।

"सौ...सौभाग्य...!" उसकी मदद को आरती ने आगे बढ़ना चाहा, लेकिन भीमा के गुन्डों ने उसे पकड़ लिया और खींचते हुये पीछे की तरफ ले गये।

"अब देखता हूं कि कैसे अपुन की बात नहीं मानती है तू...।" खूंखार लहजे में बोला भीमा, "...मां अपने बेटे की जान बचाने के लिये कुछ भी कर सकती है। अपनी इज्जत भी लुटवा सकती है। तू कपड़े उतारेगी और पांच मिनट के भीतर ही उतारेगी। नहीं उतारेगी तो तेरी आंखों के सामने ही तेरे बेटे का गला काट दूंगा और इसके सिर को फुटबॉल बनाकर खेलूंगा। अब बोल कि अपुन की बात मानेगी कि नहीं—अपने कपड़े उतारेगी कि नहीं—?"

इन्कार करने को मुंह खोला ही था आरती ने कि सौभाग्य के गले पर लगे चाकू को देख होंठ भिंचते चले गये और आंखों की कटोरियों में बेबसी की मछलियां छटपटाने लगीं।

राजहंस से सफेद दांतों से निचले होंठ को कुचला उसने और हथेलियों को परस्पर रगड़ने लगीं।

"सोचने या फैसला लेने में वक्त जाया मत कर सोन चिरैया।" अपुन के पास ज्यादा वक्त नहीं है। यहां खड़े तमाशाई तेरा खूबसूरत जिस्म देखने को तरस रहे हैं। अभी अपुन का इरादा यही है कि तू ऊपर के कपड़े उतारकर दो-चार ठुमके लगाये और फिर अपने घर चली जाये। देर करेगी तो अपुन को क्रोध आ जायेगा और इरादा बदल जायेगा...फिर तुझे सारे कपड़े उतारने होंगे। ज्यादा क्रोध आ गया तो यहीं...सड़क पर पटककर तेरा बलात्कार कर डालूंगा। सुना नहीं हरामजादी...?" वह अचानक ही गला फाड़कर चिल्लाया, "जल्दी से कपड़े उतार और ठुमके लगाकर सभी का मनोरंजन कर...।"

सहम उठी आरती और आंखों में आंसू भरकर साड़ी का पल्लू सिर से उतारा और सड़क पर गिरा दिया।

"ठहर जाओ आरती! कपड़े मत उतारना...।"

आरती के हाथ ठिठक गये और वो नजरों को इधर-उधर दौड़ाकर आवाज के मालिक को खोजने लगी।

"कौन बोला बे...?" चारों तरफ देखते हुये चीख-चीखकर बोला भीमा, "...किस माई के लाल ने हीरो बनने के चक्कर में भीमा दादा से पंगा लेने की जुर्रत की है? मां का दूध पीया है तो सामने आ—फिर बतलाता हूं कि अपुन से पंगा लेने वाले को तो उसका भगवान भी नहीं बचा सकता...।"

"अबे ओये गंजे की जुल्फ...।" ट्रेफिक जाम के कारण खड़ी बस की ओट से निकला अलफांसे और सिगरेट में कश मारकर बोला, "...भगवान के आश्रित वो होते हैं, जिनमें दम नहीं होता और जो ताली पीटने के सिवाय कुछ और करने के काबिल नहीं होते। अपुन तो शेर का बच्चा है। नसों में

पिघला हुआ फौलाद गर्दिश करता है। कलेजा भी स्टेनलेस स्टील का है। ले, तेरे सामने आ गया। बोल, क्या करेगा तू...?"

"ये...ये वो ही है बापू...।" बन्टी भीमा के पीछे छिपा हुआ बोला, "...जिसने अपुन को कीचड़ में गिराया था और नंगा कर दिया था...।"

शुभम ने भी आरती को अलफांसे के बारे में बतलाया। भीमा की आंखों में खून उतर आया। मुट्ठियां भिंच चलीं।

"ओह, तो तू है वो...जिसने अपुन के बेटे को कीचड़ में फेंका और नंगा करके भगाया था? पहली बार देख रहा हूं तुझे। बाहर का मालूम पड़ता है। अपुन को जानता नहीं है। तभी इतनी जुर्रत कर गया तू। कौन है तू और कहां का रहने वाला है...?"

"अगर अपना परिचय दे दिया तो कपड़े गीले हो जायेंगे तेरे भीमा। बस, इतना ही समझ ले कि मेरा नाम अमरकान्त है और दिल्ली का रहने वाला हूं। लेकिन इसका मतलब ये नहीं कि मैं इस इलाके से अन्जान हूं। गोल्ड का कारोबार है मेरा। सोने की चेन बनाकर कई शहरों में सप्लाई करता हूं। नागपुर में भी बिजनेस शुरू किया है। तेरे बारे में सबकुछ जानता हूं। इस इलाके के रहने वाले प्रदेश मन्त्री का राइट हैन्ड है तू। यहां का इकलौता गैंगस्टर है तू। बहुत से पुलिस वाले भी तेरे तलुओ चाटते हैं—क्योंकि तेरी फेंकी गई रिश्वत की हड्डियां चूसते हैं वो। तेरे पास हथियारों और गुन्डों की कोई कमी नहीं है, इसलिये इलाके के लोग तुझसे खौफ खाते हैं। बड़े बिजनेसमैन से लेकर छोटे दुकानदार तक हफ्ता देते हैं तुझे। यहां तक कि कोठे वालियां और भिखारी तक भी हफ्ता देते हैं। जो तेरी बात नहीं मानता, या तेरी मुखालफत करता है—उसकी जिन्दगी को मौत का कफन ओढ़ा देता है तू...।"

"कमाल है...अपुन के बारे में इतना जानने पर भी तू अपुन से पंगा लेने की बेवकूफी कर रहा है। दिमाग खराब है तेरा कि जिन्दगी से प्यार नहीं है—?"

"दिमाग तो एकदम टनाटन है ओये हथौड़े से बजने वाले हारमोनियम...। रहा प्रश्न जिन्दगी का...तो जन्म और मौत देने वाला तो ऊपर वाला है। ईश्वर का दिया हुआ सांसों का कोटा पूरा हो जायेगा तो...खेल खत्म। कोटा खत्म होने से पहले कोई भी माई का लाल मेरा कुछ नहीं बिगाड़ सकता। इसलिये जिन्दगी की चिन्ता नहीं और मौत का खौफ नहीं। भगवान पर पूरा भरोसा है, इसलिये उसके बनाये इन्सानों से नहीं डरता। तुझ जैसे शैतानों से तो कतई भी नहीं डरता।"

"तू डरेगा भी...और मरेगा भी...।"

"अच्छा— तू डरायेगा और मारेगा? छिपकली डायनासोर को डरायेगी? मेंढक शेर पर भौंकेगा? गलतफहमी के कुऐं से बाहर निकल ओये...।"

"हुक्म दीजिये उस्ताद जी...।" तलवारधारी गुन्डा ऐंठकर बोला, "...अभी इस हीरो का सिर धड़ से अलग किये देता हूं...।"

"नहीं रे मुराद...नहीं। ये हीरो मरेगा जरूर...लेकिन इतनी जल्दी नहीं। ये हीरो बनकर सेठ जयभगवान की बेटी को बचाने आया था। अब इसकी आंखों के सामने ही इस रसभरी को जलील किया जायेगा। पहले इसका चीरहरण होगा और फिर होगा...बलात्कार। अपुन भी देखता है कि ये हीरो इस गुलबदन को बेइज्जत होने से कैसे बचा पाता है? तुम चारों इस हीरो को पकड़कर लो। अपुन इस द्रोपदी का चीरहरण करता है और फिर सड़क को ही सेज बनाकर इसके साथ सुहागदिन मनाता है...।" कहने पर भीमा ने पीछे की तरफ से आरती की कोहली भर ली और उसे उठाकर सड़क पर लिटा दिया।

तभी चारों गुन्डे अलफांसे के नजदीक पहुंचे ही थे कि उन पर कहर टूट पड़ा।

किसी चक्रवात की मानिन्द ही गोल-गोल घूमते हुये हवा में उठा अलफांसे और उसके दायें पैर की जोरदार फ्लाइंग किक मोटर साइकिल की चेन वाले गुन्डे की कनपटी पर 'तड़ाक...से' पड़ी।

गुन्डे की कनपटी पर गहरा खड्डा उत्पन्न हो गया।

वो फर्श पर गिरकर हलाल होते मुर्गे की मानिन्द ही फड़फड़ाया और फिर ठन्डा पड़ गया...हमेशा-हमेशा के लिये।

सड़क पर पैर टिकने से पहले ही गुन्डे की चेन अलफांसे के हाथ में थी और भगवान श्री कृष्ण के सुदर्शन-चक्र की मानिन्द ही घूमते हुये बाकी के तीनों गुन्डों के सिरों से टकराई...तड़ाक...तड़ाक...तड़ाक।

सिर्फ एक-एक वार ही हुआ और गुन्डों के सिर तरबूज की मानिन्द ही फट पड़े।

तीनों सड़क पर गिरे और अपने ही खून में स्नान करते हुये तड़पने और छटपटाने लगे।

अपने चारों गुन्डों का हस्र देख भीमा बौखला उठा और रायफल उठाने के लिये जीप की तरफ दौड़ा।

लेकिन हवा में उछाल भर अलफांसे उससे पहले ही जीप के भीतर पहुंच गया और रायफल को उठाकर जीप से नीचे कूदा।

रायफल की बैरल अपनी तरफ तनी देख भीमा विचलित हो चला और सिकुड़ चली आंखों से अलफांसे को देखते हुये बोला—"कौन हो तुम? कोई बिजनेसमैन तो नहीं हो सकते तुम। तुमने जिस तरीके से अपुन के चेलों को मारा और हवा में उड़कर अपुन की रायफल को कब्जे में किया—उससे लगता है कि तुम कोई पहुंची हुई चीज हो...।"

"मेरी मजबूरी ये है कि अभी तुझे बतला नहीं सकता कि मैं क्या बला

हूं...।" रायफल की बैरल को भीमा के सीने से हटाकर उसके बेटे बन्टी की कनपटी से सटाकर बोला अलफांसे, "फिर भी मेरे बारे में तुझे काफी अन्दाजा हो जायेगा...।"

"ये...ये क्या कर रहे हो तुम? अपुन के बेटे की कनपटी पर रायफल क्यों लगाई...?"

"तूने भी तो सौभाग्य के गले पर चाकू रखा था। तू जो चाहता था, वो हो नहीं पाया। लेकिन मैं जो चाहता हूं, वो होकर रहेगा...।"

"क...क्या चाहते हो तुम—?"

"सामने मार्केट है। वहां से एक लाल साड़ी, सिन्दूर, बिन्दी, मंगल-सूत्र, चूड़ियां, लिपस्टिक और घुंघरू खरीदकर ला। पांच मिनट से ज्यादा का वक्त नहीं लगना चाहिये। अगर छठी मिनट हो गई तो तेरे बेटे का भेजा उड़ा दूंगा—।"

"लेकिन...।"

"पहली मिनट शुरू हो चुकी है...।"

कुछ देर के लिये भीमा असमंजस में पड़ गया—।

वो इलाके का सबसे बड़ा गुन्डा था—उसकी इज्जत दांव पर लगी हुई थी।

लेकिन जब बन्टी के घबराये चेहरे पर नजर पड़ी तो सबकुछ भूलकर मार्केट की तरफ दौड़ पड़ा।

तमाशाइयों के साथ आरती और सौभाग्य ही हैरान थे और अलफांसे को किसी अजूबे की तरह ही देख रहे थे।

चार मिनट के भीतर ही भीमा सारा सामान खरीदकर ले आया और अलफांसे से बोला—"अपुन सामान ले आया बाप। अब अपुन के बेटे को छोड़ दे...।"

"अभी कैसे? अभी तो तमाशा शुरू भी नहीं हुआ है।"

"तमाशा—?"

"हां, बेइज्जती का तमाशा—।"

"बेइज्जती? किसकी—?"

"तेरी...और किसकी...?"

"मे...मेरी...अपुन की...?" चिहुंका भीमा।

"हां, तेरी...।" बन्टी की कनपटी पर रायफल की बैरल लगाये हुये अलफांसे मुस्कराकर बोला, "...तुझे दूसरों की बेइज्जती करने का बहुत शौक है। तुझे भी तो मालूम होना चाहिये कि जब अपनी बेइज्जती होती है तो दिल पर कैसी बीतती है...?"

"ले...लेकिन...तुम चाहते क्या हो...?"

"अक्ल का कोल्हू ही है तू ओये भीमा। ये सामान लाने पर भी तू कुछ नहीं समझा। चल, अपने कपड़े उतार...।"

"क...क्या...?"

"हां, सारे कपड़े...नहीं, अन्डरवियर रहने दे। फिर साड़ी पहन। मांग में सिन्दूर, माथे पर बिन्दी लगा। गले में मंगल-सूत्र और हाथों में चूड़ियां औरं हां, पैरों में घुंघरू बान्धकर नाच...।"

"तू...तुम पागल तो नहीं हो गये हो...?" बौखलाकर बोला भीमा, "अपुन इलाके का गैंगस्टर है...सबसे बड़ा गुन्डा है। अपुन की क्या इज्जत रह जायेगी? किसी को मुंह दिखलाने के काबिल नहीं रह जायेगा।"

"अगर मैं नहीं आता तो शायद आरती भी किसी को मुंह दिखलाने के काबिल नहीं रह जाती। शुक्र मना कि तेरी हड्डी-पसली नहीं तोड़ रहा हूं—तुझे जिन्दगीभर के लिये अपाहिज नहीं बना रहा हूं—या तेरी जान नहीं ले रहा हूं। अपनी बेइज्जती तो तुझे करानी ही होगी प्यारे। या फिर यहां से अपने इकलौते बेटे की लाश ले जानी पड़ेगी...।"

पसीने-पसीने हुआ भीमा चारों तरफ खड़े तमाशाइयों को देखने लगा।

"मैं...मैं आपकी बहुत-बहुत शुक्रगुजार हूं...।" सौभाग्य का हाथ पकड़े हुये आरती अलफांसे के पास आई और खुशामदी से लहजे में बोली, "...पहले सौभाग्य की मदद की थी आपने...और अब मेरी मदद की। मुझे जलील और बेइज्जत होने से बचाया। लेकिन बात को बढ़ाने से कोई फायदा नहीं। मेरी आपसे रिक्वेस्ट है कि आप बात को यहीं खत्म कर दीजिये...।"

मुस्कराया अलफांसे, फिर बोला—"मैं तुम्हारी मनोदशा समझ रहा हूं। तुम भविष्य के बारे में सोच रही हो। ये सोच रही हो कि भीमा तुम्हें, सौभाग्य या तुम्हारे पापा को कोई नुकसान पहुंचा सकता है। लेकिन मेरी फुल गारन्टी है कि ये आज के बाद इस इलाके में नजर भी नहीं आयेगा। तुम्हें जरा-सा भी घबराने की जरूरत नहीं है। रुको, अभी जाना मत। बाकी लोगों के साथ तमाशा देखकर जाना...।"

"लेकिन...।" आरती ने कुछ कहना चाहा, लेकिन अलफांसे उसकी तरफ पीठ करके भीमा से बोला, "चालू नहीं हुआ तू अभी तक? क्या ये चाहता है कि मैं ट्रिगर दबा दूं और तेरे बेटे का भेजा सिर फाड़कर सड़क पर जा गिरे? ठीक है...मैं ट्रिगर दबा देता हूं...।"

"न...नहीं...।" बन्टी घबराकर रोने लगा और चींखकर बोला, "...अपुन को बचा लो बापू...बचा लो...।"

"न...नहीं...गोली मत चलाना...।" थूक-सा सटककर बोला भीमा, "...अपुन बन्टी को मौत के मुंह में जाते हुये नहीं देख सकता...।"

"तो फिर जो कहा है...वो करके दिखला...फौरन से पेशतर। ज्यादा देरी तेरे बेटे के लिये नुकसानदायक हो जायेगी...।"

बेचारा भीमा।

कल्पना भी नहीं की थी कि कभी ऐसी 'मनहूस' घड़ी भी आयेगी। जिन लोगों पर वो खौफ व दहशत के हथियारों से हुकूमत कर रहा था, उनके सामने ही उसे जलील और बेइज्जत होना पड़ेगा।

अन्डरवियर को छोड़ तमाम कपड़े यूं ही उतारे कि मानो अपने जिस्म से खाल ही उतार रहा हो।

ना जाने कितनी अबलाओं की साड़ियां उतारी थीं उसने—लेकिन बान्धनी कहां आती थी। जैसे-तैसे करके लाल रंग की साड़ी को उल्टी-सीधी करके बान्धा।

मन-ही-मन तो सभी तमाशाई खुश थे—कई तो मुंह फेरकर मुस्कराने लगे और होठों पर हथेली रखकर हंसी को रोकने की चेष्टा करने लगे।

जबकि आरती और सौभाग्य ये सोचकर चिन्तित थे कि भविष्य में भीमा उन्हें नुकसान ना पहुंचा दे।

साड़ी बान्धने पर भीमा ने टकले सिर पर सिन्दूर, माथे पर बिन्दी लगाई। गले में मंगल-सूत्र, कलाइयों में चूड़ियां पहनी और पैरों में घुंघरू बान्ध लिये।

बड़ा ही अजीब-सा लग रहा था वो।

"फिल्मी गाने आते हैं—?" अलफांसे ने बन्टी से पूछा। बन्टी ने मुन्डी हिलाकर हामी भरी।

"मुन्नी बदनाम हुई वाला आता है—?"

"हां...।"

"तो गा। लेकिन जोर से गाना। वरना तेरे साथ-साथ तेरे बाप को भी गोली मार दूंगा...।"

"मुन्नी बदनाम हुई...डार्लिंग तेरे लिये...मैं झन्डू बाम हुई डार्लिंग तेरे लिये...।" बन्टी गाने लगा और अलफांसे के इशारे पर भीमा भद्दे अन्दाज में नाचने लगा, ठुमके लगाने लगा।

तमाशाइयों में सम्मलित छोटे बच्चे ताली बजाकर जोर-जोर से हंसने लगे।

अलफांसे ने भीड़ में खड़े अपने चेले टोनी को गुप्त इशारा किया और फिर आरती के करीब पहुंचकर बोला, "मेरा नाम अमरकान्त है। दिल्ली निवासी हूं। सोने के गहनों का व्यापार करता हूं। तुम्हें कतई भी डरने की या चिन्तित होने की जरूरत नहीं। भीमा बाल भी बांका नहीं कर पायेगा। अब तुम सौभाग्य के साथ घर जा सकती हो। तुम्हारे जख्मी ड्राइवर को मैं हॉस्पिटल पहुंचा दूंगा—।"

"ड्राइवर होश में आ चुका है। उसे घर ले जाती हूं। वहीं फोन करके फैमली डॉक्टर को बुला लूंगी। गाड़ी को मैं ड्राइव कर लूंगी। आपका बहुत-बहुत शुक्रिया। मगर आप भी हमारे साथ चलें और मेहमान नवाजी का मौका देकर कृपा करें–।"

"नहीं...अभी तो नहीं चल सकूंगा मैं। आज मंगलवार है। मुझे पंचमुखी हनुमानजी के मन्दिर में जाकर पूजा करनी है...।"

"वैसे आप यहां ठहरे कहां हैं–?"

"होटल रूप। रूम नम्बर टेन।"

"आप रात को डिनर पर आइये ना...।"

"मैं मंगलवार के दिन बहुत देर तक पूजा-अर्चना करता हूं...। पता नहीं कि रात के दस बज जायें कि ग्यारह।"

"तो फिर कल आइये ना...प्लीज...।"

"आपको आना ही होगा अकंल जी...।" सौभाग्य अलफांसे का हाथ पकड़कर जिद भरे लहजे में बोला, "प्लीज, कह दीजिये कि कल आप आयेंगे...।"

मन-ही-मन खुश होते हुये अलफांसे ने अगले दिन आने का प्रॉमिस कर लिया।

उधर टोनी ने बन्टी के गाने पर ठुमके लगाते भीमा के कान में बतला दिया कि उसको तिगनी का नाच नचाने वाला इन्टरनेशनल क्रिमिनल अलफांसे है।

भीमा के होश फाख्ता हो चले।

वो बोला कि फौरन ही अपने बेटे को लेकर अपने गांव लौट जायेगा और फिर कभी भी लौटकर उस इलाके में नहीं आयेगा।

□□□
□□□

"अरे, शुक्ला जी...नमस्कार! मोस्ट वेलकम! आइये, पधारिये...।"

"हैलो, डॉक्टर साहब...।" राजन ने अधेड़ उम्र के तथा अधगंजे डॉक्टर विश्वास कुदालकर से हाथ मिलाया और विजिटर चेयर पर बैठकर बोला, "...इधर से गुजर रहा था तो सोचा कि आपसे मिलता चलूं...।"

"ये तो आपने बहुत अच्छा किया शुक्ला जी। पण्डित जी कैसे हैं...?"

"बढ़िया...एकदम फर्स्ट क्लास।"

"क्या लेंगे...ठन्डा कि गर्म? देखिये, इन्कार मत कीजिये...प्लीज...।"

"आप जिद करते हैं तो चाय मंगा लीजिये...।"

डॉक्टर ने इन्टरकॉम पर किसी को दो चाय और नाश्ता भेजने के लिये

कहा और फिर गोल्ड फ्लैक की डिब्बी व माचिस मेज की दराज से निकालकर बोला–"आप तो पीते नहीं...क्या मुझे इजाजत है?"

"बिल्कुल...शौक से पीजिये डॉक्टर साहब। मुझे जरा-सी भी दिक्कत नहीं होगी। आप तो जानते ही हैं कि मैं पण्डित जी के साथ रहता हूं और वो एक तरह से चेन स्मोकर ही हैं...।"

डॉक्टर ने सिगरेट सुलगा ली और फिर थोड़ा झिझकते हुये बोला, "...और सुनाइये...कोई खुशखबरी है कि नहीं? मेरा मतलब है कि मिसेज शुक्ला उम्मीद से हैं कि नहीं...?"

"हां, चांदनी प्रेगनेंट है डॉक्टर साहब। कल ही तो उसने ये खुशखबरी दी है...।"

"ये तो बहुत बड़ी खुशखबरी है...कॉंग्रेचेलशन शुक्ला जी...।"

"थैंक्स, डॉक्टर। बल्कि डबल थैंक्स...।"

"डबल थैंक्स? वो किसलिये...?"

"क्यों...क्या आप मेरे इलाज के लिये चांदनी को दवाइयां नहीं दे रहे थे...?"

सकपकाया डॉक्टर। बल्कि कुछ समय के लिये उसकी दशा रंगे हाथों पकड़े गये चोर की सी हो चली। फिर वो झिझकते हुये बोला, "ये बात आपको कैसे पता चली शुक्ला जी–?"

"ऐसे ही...भई डिटेक्टिव हूं। दिमाग के जादूगर का असिस्टेन्ट हूं। मुझे मालूम हो गयी थीं सारे बातें...।"

सिगरेट में कश लगाकर नथुनों से धुआं उगला डॉक्टर ने और फिर गम्भीर होकर बोला–"...आपकी रिपोर्ट पोजेटिव नहीं आई थी शुक्ला जी। ऐसा नहीं कि सीमेन में स्पर्म नहीं थे–लेकिन वो कमजोर थे। वो इतने पॉवरफुल नहीं थे कि ऐग के साथ मिक्स होकर मिसेज शुक्ला हो प्रेगनेंट कर पाते। बेचारी...मिसेज शुक्ला दुखी और चिन्तित हो चली थीं। फिर मैंने उन्हें आश्वस्त किया कि आप ट्रीटमेंट लेने पर ठीक हो जायेंगे, लेकिन वो बोली थीं कि रिपोर्ट देखकर आपको सदमा पहुंचेगा–आपके अहम को ठेस लगेगी। मुझसे बोली थीं कि मैं आपकी रिपोर्ट चेंज कर दूं और लिख दूं कि आप नॉर्मल हैं। वो बोली थीं कि मैं आपके लिये दवाइयां देता रहूं–वो आपको बतलाये बिना खाने-पीने की चीजों में दवा मिलाकर देती रहेंगी। उनकी बात मानकर मैंने रिपोर्ट चेंज कर दी थी और उन्हें दवाइयां देता रहा था...।"

राजन के भीतर कुछ पिघलने-सा लगा–उसके कृत्रिम मुस्कान के आवरण में मनोभाव छिपा लिये।

चाय और नाश्ता आ गया।

चाय व नाश्ते के पश्चात् राजन ने डॉक्टर विश्वास कुदालकर से विदा

लेने से पहले ये प्रॉमिस लिया कि चांदनी से मुलाकात होने पर वो उसको ये बात नहीं बतलायेगा कि राजन को वास्तविकता मालूम हो चुकी है।

फिर वो वहां से चांदनी के कथित प्रेमी रॉकी का बंगला देखने के लिये चल दिया।

वो घर से रॉकी का बंगला देखने के लिये ही निकला था—लेकिन बीच में ही डॉक्टर विश्वास का क्लीनिक पड़ता था—सो वो उनसे भी मिल लिया।

डॉक्टर की बातों ने रहस्यमयी नारद के दावे के साथ चांदनी की लिखी डायरी की भी पुष्टि कर दी थी।

घन्टेभर में ही वो अन्धेरी रोड पर पहुंच गया। वहां होटल महताब के ठीक सामने से गई सड़क पर गाड़ी को मोड़ दिया।

मोहन नगर में रोड नम्बर दस पर पीपल के बड़े वृक्ष के नीचे साईं बाबा का मन्दिर था और मन्दिर के सामने ही हरे रंग का शानदार बंगला था।

गाड़ी को बंगले के बाहर रोक लिया उसने और सोचने लगा कि क्या करे?

बंगले के भीतर जाये?

"नहीं, भीतर जाना ठीक नहीं होगा...।" बुदबुदाया वह, "...रॉकी से अभी आमना-सामना करना ठीक नहीं होगा। पहले तो इस बात की तसल्ली करनी है कि इस बंगले का मालिक रॉकी है भी कि नहीं? अगर है भी तो अपनी आंखों से देखूंगा कि चांदनी उससे मिलती-जुलती है कि नहीं? औरत के चरित्र का कोई भरोसा नहीं। रोने-धोने का नाटक करके रॉकी को सगे भाई से भी बढ़कर भाई बोल देगी और झूठी कसमें खा लेगी। मुझे दोनों के खिलाफ ठोस सबूत चाहिये। वो सबूत फोटो या वीडियो फिल्म के रूप में हो सकते हैं...।"

तभी चौंका राजन।

उस बंगले से अधेड़ उम्र का एक धोती-कुर्ते वाला व्यक्ति फाटक खोलकर बाहर निकला था—जिसने कन्धे पर अंगोछा डाला हुआ था।

"ये...ये तो शिवालिक है...।" बुदबुदाबा वो।

इसी के साथ उसका मस्तिष्क एक साल पीछे पहुंच गया।

शिवालिक बिहार का रहने वाला था और जयहिन्द सोसायटी के एक सेठ के यहां नौकरी किया करता था। बिहार में हैजे से उसकी बीवी का निधन हो गया था और घर में अठारह वर्ष की इकलौती बेटी रेशमा अकेली रह गई थी। वहां ऐसा कोई सगा-सम्बन्धी नहीं था कि जिस पर ऐतबार करके रेशमा को उसके यहां छोड़ देता—आखिर जवान और सुन्दर बेटी का मामला था।

पत्नी के सभी क्रिया-कर्म करने पर वो बेटी रेशमा को भी अपने साथ मुम्बई ले आया था। जो ट्रेन दिन में ही आ जानी चाहिये थी, वो लेट होने के कारण आधी रात को ही आई थी।

दोनों ऑटो में सवार होकर चले। अपनी बीमार बीवी की ख़ैरियत पूछने के बहाने आटो ड्राइवर ने पी०सी०ओ० से फोन कर अपने तीन दोस्तों से बात की और कहा कि अधेड़ के साथ जवान और खूबसूरत बेटी भी है। उसने दोस्तों को रूट बतलाकर एक होटल के सामने मौजूद रहने के लिये कहा।

तीनों दोस्त होटल के सामने मिले लेकिन दिखावे को ड्राइवर ने उन्हें बिठलाने से मना कर दिया था। तब तीनों दोस्तों ने स्वयं को सगे भाई बतलाकर और रूआंसे से होकर बतलाया कि उनके पिता का एक्सीडेन्ट हो गया है और वो हॉस्पिटल में आखिरी सांसे गिन रहा है।

शिवालिक ने ही तरस खाकर ड्राइवर से कहा था कि तीनों को बिठा ले और हॉस्पिटल पर छोड़ दे।

लेकिन थोड़ा आगे चलते ही तीनों दोस्तों ने चाकू निकालकर शिवालिक और उसकी बेटी रेशमा को क्लोरोफॉर्म सुंघाकर बेहोश कर दिया था।

दोनों को होश आया तो एक पुराने कब्रिस्तान में थे। ड्राइवर और तीनों दोस्त शराब पी रहे थे।

खतरे को भांप बाप-बेटी ने भागना चाहा था, लेकिन चारों शैतानों ने पकड़ लिया था। उन्होंने अपने इरादे भी स्पष्ट कर दिये थे कि वो जी भर जाने तक रेशमा के साथ मुंह काला करेंगे और कानून की मार से बचने के लिये दोनों बाप-बेटी को मारकर कब्रों में दफना देंगे।

शिवालिक और रेशमा मदद के लिये चिल्लाये।

शैतानों का ख्याल था कि इतनी रात गये उस सुनसान कब्रिस्तान में कोई भी मददगार नहीं आयेगा—लेकिन वहां राजन आ पहुंचा था।

एक मुजरिम का पीछा करते हुये ही राजन वहां पहुंचा था। एक युवक ने एक सेठ को गोली मारकर उसके हीरे लूट लिये थे और राजन ने दूर से लूटपाट और फायरिंग का नजारा देखा था। वो कार लेकर बाइक सवार गुन्डे के पीछे दौड़ा था। हड़बड़ाहट में गुन्डा बाइक समेत सामने से आ रहे ट्रक के नीचे आकर मर गया था। राजन ने पुलिस को फोन करके बुला लिया था।

इलाके का थानेदार ईमानदार और केशव पण्डित का मुरीद इन्सपेक्टर अनिल यादव था। लूट के हीरे अनिल यादव के हवाले करके राजन वापिस लौट रहा था तो उसने कब्रिस्तान से आती शिवालिक और रेशमा की चीखो-पुकार सुन ली थी।

कब्रिस्तान के भीतर जाकर उसने चारों गुन्डों की इतनी जबरदस्त धुनाई की थी कि वो जिन्दगीभर के लिये ही अपाहिज हो गये थे।

चारों अपाहिजों को पुलिस के हवाले करके राजन ने शिवालिक और रेशमा को उनके सेठ की कोठी पर छोड़ा था, जहां शिवालिक को सर्वेन्ट क्वार्टर मिला हुआ था। कहने या लिखने की आवश्यकता नहीं कि शिवालिक और

रेशमा राजन के अहसानमन्द हो गये थे—राजन उनके लिये देवता या फरिश्ते से कम नहीं था।

बाद में शिवालिक ने एक अच्छा लड़का देख रेशमा की शादी कर दी थी और उस शादी में राजन भी सम्मलित हुआ था। उसने बड़े भाई का ही फर्ज अदा किया था और दूल्हे को प्यार से समझा दिया था कि अगर रेशमा को जरा-सी भी तकलीफ हुई तो उसकी खैर नहीं होगी।

इसके बाद कई बार शिवालिक मिला तो उसने हाथ जोड़कर राजन का आभार व्यक्त किया।

मुंह में च्यूइंगम डाली राजन ने और बुदबुदाया—"शिवालिक इस बंगले से निकला है—यानि ये यहीं नौकरी कर रहा है। शिवालिक से बेहतर जानकारी कौन दे सकता है भला? ये कोई बात छिपायेगा भी नहीं। इससे मिलता हूं और पूछताछ करता हूं। मालूम पड़ जायेगा कि सच्चाई क्या है—?"



हनुमानजी के मन्दिर में पूजा की सामग्री के साथ प्रविष्ट हुये सेठ जयभगवान ने केसरिया रंग का कुर्ता व धोती धारण की हुई थी और गले में मनकों की माला डाली हुई थी, जिनके बीच में हनुमान जी के चित्र वाला लॉकेट पड़ा हुआ था।

"जो यह पढ़ै हनुमान चालीसा—होये सिद्धि साखी गौरीसा। तुलसीदास सदा हरि चेरा—कीजै नाथ हृदय महं डेरा। पवन तनय संकट हरन, मंगल मूर्ति रूप—राम लखन सीता सहित, हृदय बसहु सुर भूप। प्रेम से बोलो...बजरंग बली हनुमान की जय...। बाल समय रवि भक्षि लियो तब, तीनहू लोक भयो अंधियारो...।"

ठिठक उठा जयभगवान और आलथी-पालथी मारकर बैठे अलफांसे को देखने व सुनने लगा।

"कमाल की बात है...।" अलफांसे के चुप होने पर वो बुदबुदाया, "...शर्ट-जींस वाला लड़का है। हैन्डसम और पढ़ा-लिखा मालूम पड़ता है। आजकल के बच्चे पूजा-पाठ में कहां दिलचस्पी लेते हैं। मन्दिर आयेंगे भी तो दूर से ही प्रणाम करके...भगवान पर अहसान-सा करके चलते बनेंगे। इसने बिना किताब के ही हनुमान चालीसा, श्री सकंटमोचक हनुमानाष्टक, श्री हनुमान-स्तवन, श्री बजरंग बाण का पाठ किया और आरती भी गाई। ये तो पक्का भक्त मालूम पड़ता है हनुमान जी का...सबकुछ याद है इसे। आज के जमाने में इतने धार्मिक युवक कहां देखने को मिलते हैं...।"

पुजारी जी को पूजा-पाठ की सामग्री देकर और 'अभी आया पुजारी जी' बोलकर वो अलफांसे के पीछे लपक लिया।

"सुनो बेटा...!"

मन्दिर की सीढ़ियों की तरफ बढ़ रहा अलफांसे पलटा। एक तो उसके माथे पर तिलक लगा हुआ था—ऊपर से चेहरे पर मासूमियत समेटकर बोला, "जी, आपने मुझे पुकारा श्रीमान जी...?"

"हां, मैंने ही बेटा...।"

"जी, कहिये...क्या बात है...?"

"कुछ नहीं बेटा...बस, ऐसे ही...।" अलफांसे का हाथ पकड़कर मन्दिर की सबसे ऊपर वाली सीढ़ी पर ही बैठ गया जयभगवान और बोला, "...तुम्हें हनुमान बाबा की पूजा-आराधना करते देखा...सुना। बहुत ही अच्छा लगा। कोई विश्वास नहीं करेगा कि तुम जैसा पढ़ा-लिखा, हैन्डसम और स्मार्ट युवक इतने धार्मिक विचारों वाला भी हो सकता है। तुम्हें तो सबकुछ याद है पुत्र...।"

"जी, श्रीमान जी। मैं अनाथ हूं। एक साल का ही था कि माता-पिता एक दुर्घटना में ईश्वर को प्यारे हो गये थे। छोटे से मन्दिर के पुजारी जी ने ही मेरी परवरिश की। उनके सान्निध्य में पूजा-पाठ सीखी। धर्म से लगाव हुआ। पुजारी बाबा से धर्म और अध्यात्म के बारे में काफी ज्ञान मिला।"

"रहते कहां हो बेटा? काम क्या करते हो—?"

"दिल्ली में रहता हूं। पुजारी जी तो पांच वर्ष पूर्व ही स्वर्ग सिधार गये थे। ट्रस्ट वालों ने मुझे मन्दिर से निकाल दिया था। मेहनत-मजदूरी करके, अखबार बेचकर और बच्चों को ट्यूशन देकर ग्रेजुएशन किया था। पहले एक सर्राफ के यहां नौकरी की थी। फिर कुछ पूंजी जमा करके अपना बिजनेस स्टार्ट किया। सोना खरीदकर उसकी लेडीज और जेन्ट्स चेन तैयार कराता हूं और सप्लाई करता हूं। यहां...नागपुर में तो अभी आना शुरू किया है। सोच रहा हूं कि दिल्ली छोड़ दूं और मुम्बई में बस जाऊं...।"

"नागपुर भी बुरा नहीं है। यहां भी काफी कारोबार हैं। तुम्हें दुकान और मकान वगैरा दिलवाने में मैं तुम्हारी मदद करूंगा...।"

"आप...?"

"जयभगवान नाम है मेरा! पहले बिजनेसमैन हुआ करता था लेकिन बाद में एक हादसे ने बिजनेस से मोह भंग कर दिया। ईश्वर की कृपा से रुपये-पैसे और प्रोपर्टी की कोई कमी नहीं है। यहां पर कहां ठहरो हुये हो...?"

बातों का सिलसिला चलता रहा।

अलफांसे ने बीच-बीच में संस्कृत के श्लोकों और धार्मिक किस्सों का भी वर्णन किया और अपने उद्देश्य में सफल होते हुये जयभगवान के पेट मे जूतों समेत उतरता चला गया।



हैरी को टॉर्चर करने की नौबत ही नहीं आई।

सोनू ने उसे डरा-धमका कर ही इतना भयभीत कर दिया था कि वो उसकी बात मानने को बाध्य हो गया।

हैरी ने फोन पर जेनी से सम्पर्क किया और उससे कहा कि वो अति व्यस्त होने के कारण कई दिनों तक वापिस नहीं लौट सकेगा, जबकि उसके बिना उसका मन नहीं लग रहा है, इसलिये वो तुरन्त ही इन्डिया चली आये और बेहतर होगा कि वो अकेली ही आये—ताकि दोनों के प्रेमालाप में कोई बाधा ना आये।

प्रेम दीवानी जेनी तुरन्त ही अमेरिका से चलकर भारत आ गई—लेकिन उसके साथ चार हथियारबन्द बॉडीगार्ड भी थे।

एयर पोर्ट से बाहर निकलने पर सोनू के निर्देश पर महावीरा के गुन्डों ने हथियारों के दम पर चारों गार्ड्स को किडनेप कर लिया और जंगल में ले जाकर उनकी हत्या कर डाली।

जेनी को महावीरा के हैड क्वार्टर पर पहुंचा दिया गया, जहां हैरी को बन्धक के रूप में देख जेनी चौंक उठी और चिन्तित हो चली—लेकिन सोनू ने उससे कहा कि उसने एक आवश्यक काम के लिये ही ऐसा किया है—काम पूर्ण हो जाने पर दोनों को मुक्त कर दिया जायेगा।

सोनू ने ये भी कहा कि वो दोनों भले ही हैड क्वार्टर से बाहर नहीं निकल सकेंगे और उनकी निगरानी भी की जायेगी—लेकिन दोनों की मेहमानों की तरह ही खातिरदारी की जायेगी और किसी भी किस्म की तकलीफ नहीं होने दी जायेगी।

सोनू ने जेनी से उसके बाप वाटसन का वो फोन नम्बर पूछा, जिस पर उसके खासमखास आदमी ही सम्पर्क कर सकते थे। थोड़ी ना-नुकर करने पर जेनी ने वो नम्बर बतला दिया और सोनू ने उक्त नम्बर क्रान्ति को दे दिया।

अमेरिका में एक होटल में ठहरी क्रान्ति ने वाटसन के उक्त नम्बर को मिलाया—

"हैलो, कौन हो तुम...?" भारी-भरकम और गरजता-सा स्वर उभरा, "...तुम्हें ये नम्बर कहां से मिला?"

"तुम्हारी बेटी जेनी से...।" जवाब देने पर क्रान्ति ने बोतल से व्हिस्की की घूंट भरी।

"हमारी बेटी जेनी से? क्या बकवास करती हो तुम? जेनी तक किसी और आदमी की पहुंच नहीं हो सकती।"

"पहुंच नहीं हो सकती...।" वह व्यंग भरे लहजे में बोली, "बहुत बड़ी

गलत फहमी के शिकार हो तुम वाटसन। अभी जेनी को फोन लगाओ—उससे बात करो। मैं बतलाऊंगी तो तुम विश्वास नहीं करोगे लेकिन जेनी जो भी बतलायेगी—उस पर तो विश्वास करोगे ही। जेनी से बात कर लो। मैं दस मिनट बाद फोन करती हूं...।"

फोन बन्द करके क्रान्ति ने सिगरेट सुलगा ली और कश लगाने के साथ-साथ व्हिस्की की भी घूंट भरती रही।

दस मिनट पश्चात् वाटसन का ही फोन आया, जो कि क्रोधित भी था और बौखलाया हुआ भी था—

"हमारी बेटी ने हमें सारी बातें बतला दी हैं। पहले हैरी को किडनेप किया गया और फिर हैरी के जरिये जेनी को इन्डिया बुलाकर उसे भी बन्धक बना लिया गया। जेनी ने किसी सोनू का नाम बतलाया था। फिर सोनू ने हमसे बात की और हमें तुम्हारे बारे में बतलाया। तो तुम क्रान्ति हो। वो क्रान्ति... जो पूर्व माफिया किंग यमराज की बीवी बनने वाली थी?"

"हां, मैं वो ही क्रान्ति हूं।"

"तुम्हारे बारे में काफी जानकारी है हमें। तुमने हैरी और हमारी बेटी का किडनेप करके ठीक नहीं किया है। अपनी मुसीबतों को न्यौता दे दिया है। बल्कि अपनी मौत को ही न्यौता दे दिया है। बचोगी नहीं तुम। हमारे आदमी होटल मिनर्वा पर पहुंचने ही वाले हैं। हो सकता है कि पहुंच भी चुके हों। जब तुम्हारा फोन आया था, तभी हमने ये मालूम करा लिया था कि फोन कहां से किया जा रहा है और अपने आदमियों को रवाना कर दिया था...।"

"यानि मैं जो चाहती थी, वो ही हो रहा है...।"

"क्या मतलब?"

"मैं तुमसे मुलाकात करना चाहती थी वाटसन, आमने-सामने बैठ कर बातें करना चाहती थी। तुम्हारे आदमी आ रहे हैं तो मैं उनके साथ तुम्हारे पास आ जाऊंगी।"

"मुझे इन्डियन से नफरत है—क्योंकि मेरी प्यारी बीवी को इन्डिया में कत्ल कर दिया गया था। मेरे आदमी तुम्हें उठाने के लिये आ रहे हैं। तुम्हारी मेहमान नवाजी नहीं होगी बल्कि तुम पर कहर टूटेगा और फिर मौत का जामा पहना दिया जायेगा...।"

"अफसोस...तुम या तुम्हारे आदमी ऐसा कुछ नहीं कर पायेंगे।"

"ओहो...इतनी बड़ी तोप है तू?"

"तोप की भी मां हूं मैं वाटसन। मेरे बारे में सबकुछ जानने पर भी तू नादानों जैसी बात कर रहा है। क्या बेवकूफ थी मैं, जो होटल से फोन किया था? मैं किसी पी०सी०ओ० से भी फोन कर सकती थी लेकिन नहीं किया क्योंकि मेरा मकसद तुझसे बचने का नहीं, बल्कि तुझसे मुलाकात करने का

था। अपनी मुलाकात भी होगी और तुझे मेरी मेहमान नवाजी भी करनी होगी। इतना ही नहीं...तुझे वो सब भी करना होगा, जो मैं चाहती हूं...सोनू चाहता है। तेरे आदमियों का बेताबी के साथ इन्तजार कर रही हूं मैं। उनसे फोन या ट्रांसमीटर पर कॉन्टेक्ट करके बोल दे कि वो मेरे साथ जरा-सी भी बदतमीजी ना करें। अगर कोई क्रान्ति को घूरेगा तो उधर इन्डिया में तेरी लाड़ली जेनी की आंखें फोड़ दी जायेंगी...।"

इतना बोलने पर ही क्रान्ति ने फोन काट दिया।



पनवाड़ी की दुकान से खैनी का पाउच खरीदकर शिवालिक पलटा तो राजन को देखकर चौंका और फिर हाथ जोड़कर हर्षित भाव से बोला, "अरे, शुक्ला जी आप...और यहां? नमस्कार...नमस्ते। आपके पैर छूने का मन कर रहा है, लेकिन आपने कसम दे दी थी और कहा था कि मैं आपसे बड़ी उम्र का हूं। विश्वास ही नहीं हो रहा है कि आप यहां पर...मेरे सामने हैं। सोचा भी नहीं था कि आप अचानक सामने आ जायेंगे। क्या यहां किसी से मिलने आये हैं आप?"

"हां, मिलने तो आया था। वो जो सामने वाला...हरे रंग का जो बंगला है, उसके मालिक से मिलने आया था...।"

"रॉकी साहब से...?"

राजन के दिल से 'आह-सी' निकली, जबकि उसकी मनोदशा से अनभिज्ञ शिवालिक उत्साहित भाव से बोला, "मैं उन्हीं के यहां ही काम कर रहा हूं...। लेकिन आप रॉकी साहब को कैसे जानते हैं--?"

"वो रिश्ते में मेरा साला लगता है। मेरी धर्मपत्नी का मौसेरा भाई है। वो दिल्ली में रह रहा था। मेरा एक परिचित रॉकी का भी दोस्त है। उसने ही बतलाया कि रॉकी आजकल मुम्बई में ही रह रहा है। उसी ने मुझे यहां का पता दिया। क्या रॉकी बंगले में है--?"

"नहीं...वो तो कल दिल्ली चले गये थे। उनका काम-धन्धा दिल्ली में ही है।"

"कमाल है! काम-धन्धा दिल्ली में है और वो रह रहा है यहां...मुम्बई में...कब खरीदा उसने ये बंगला...?"

"खरीदा नहीं है...किराये पर लिया है।"

"ओह, अच्छा...किराये पर लिया है।"

"हां। इस बंगले के मालिक मेरे पहले मालिक के दामाद विजय कपूर हैं। आपको तो मालूम है ही कि मेरे पहले मालिक और उनकी बीवी एक्सीडेन्ट में मारे गये थे। तब उनकी बेटी सोनिया और दामाद विजय कपूर मुझे अपने

यहां ले आये थे। वो मुझे अच्छी तरह जानते थे। मेरे काम और ईमानदारी से प्रभावित भी थे। उनका पुराना नौकर घर से नगदी चुराकर भाग गया था। उन्हें नौकर की जरूरत थी और मैं खाली हो गया था। सो मैं यहां आ गया था...।"

"तो अब सोनिया और विजय कहां हैं...?"

"अरे...आप सारी बातें यहीं खड़े-खड़े ही करेंगे क्या? भले ही आपके साले रॉकी साहब यहां पर नहीं हैं—मैं तो हूं ना। बंगले में चलिये। मुझे थोड़ी खातिरदारी करने का मौका तो दीजिये। आइये, बंगले में चलिये...।"

राजन शिवालिक के साथ बंगले में पहुंचा, जोकि भीतर से भी आलीशान और शानदार था।

शिवालिक पहले पानी और फिर चाय के साथ बिस्किट, ड्राई फ्रूट्स वाली नमकीन भी लाया।

दोनों चाय के साथ नाश्ता करने लगे।

"अब तो बतलाओ शिवालिक काका कि विजय और सोनिया कहां पर हैं...?"

कप से चाय की घूंट भरकर बोला शिवालिक—"दोनों पति-पत्नी कम्प्यूटर इंजीनियर हैं। दोनों मुम्बई में ही इन्डिया कम्प्यूटर कम्पनी में सर्विस करते हैं। कम्पनी की एक ब्रांच इंग्लैंड में भी है। कम्पनी ने दोनों की तनख्वाह बढ़ाकर इंग्लैंड भेज दिया है। विजय ने अखबारों में किराये पर बंगला देने का विज्ञापन दिया था तो रॉकी साहब आये थे...कोई एक महीना पहले। विजय बाबू दिल्ली में अपने किसी दोस्त की पार्टी में रॉकी साहब से मिल चुके थे और उन्हें जानते थे। इसीलिये बिना किसी गारन्टर के ही रॉकी साहब को किराये पर बंगला दिया था और मुझे नौकर के तौर पर रखने को कहा था और मेरी तारीफें की थीं। सो रॉकी साहब ने मुझे रख लिया था। रॉकी साहब ने ये भी वादा किया था कि विजय बाबू और सोनिया बेटी के वापिस लौटने से पहले ही उनका बंगला छोड़ देंगे। वो किराये का दूसरा बंगला ले लेंगे—या कोई बंगला खरीद लेंगे। खैर, रॉकी साहब से फोन पर बात कर लीजिये। उनका नम्बर बतला देता हूं मैं आपको...।"

"नहीं...फोन नहीं करूंगा साले साहब को। चार पैसे क्या आ गये...दिमाग सातवें आसमान पर पहुंच गया। मुझसे मिलने नहीं आया—फोन नहीं किया।"

"वो वापिस लौटेंगे तो मैं उन्हें बोलूंगा...।"

"नहीं, तुम कुछ नहीं बोलोगे काका। आपको मेरी और रेशमा की सौगन्ध है। तुम मेरे यहां आने के बारे में रॉकी को नहीं बतलाओगे। मुझे देखना है कि वो कब तक मुझसे या अपनी बहन से सम्पर्क नहीं करता है?"

"ठीक है...आप बोलते हैं तो मैं रॉकी साहब को कुछ भी नहीं बोलूंगा...।"

तभी राजन की नजरें दीवार पर लगे रॉकी के बड़े साइज के फोटो पर पड़ीं तो चाय का स्वाद जहर जैसा तीखा व कड़वा हो गया।

दिल से उफान और दिमाग से तूफान-सा उठा।

अपने क्रोध व घृणा को वो चाय की अगली घूंट के साथ निगल गया और कृत्रिम मुस्कान के साथ बोला—"रॉकी पर क्रोध तो बहुत आ रहा है—लेकिन उससे प्यार भी है। आखिर है तो रिश्तेदार ही—तभी तो उसके बारे में जानकारी मिलते ही यहां तक दौड़ा चला आया। ये बतलाओ काका कि रॉकी का शादी करने का इरादा है कि नहीं—?"

शिवालिक के चेहरे पर दुविधा और हिचकिचाहट के भाव परिलक्षित हुये।

हंसा राजन और बोला, "...मुझसे क्या छिपाना काका? मैं सब जानता हूं। रॉकी चांदनी नाम की लड़की से प्यार करता था। चूंकि चांदनी रॉकी के रिश्ते में थी और बहन-भाई वाला रिश्ता बैठता था—इसलिये दोनों की शादी नहीं हो सकी थी। चांदनी की शादी दूसरी जगह हो गई थी। रॉकी को काफी सदमा लगा था। वो रतनगढ़ से दिल्ली चला गया था और उसने शादी नहीं की। लेकिन मुझे और मेरी बीवी को रॉकी की चिन्ता लगी रहती है। अभी तो वो जवान है। लेकिन आगे चलकर क्या होगा? बिना जीवनसाथी के जिन्दगी अधूरी होती है। घर में बीवी और बच्चे ना हों तो जिन्दगी बेकार हो जाती है। रॉकी का इरादा शादी करने का है कि नहीं? क्या कोई ऐसी लड़की उसकी जिन्दगी में नहीं आई जिसने उसके दिल से चांदनी की चाहत निकालकर अपनी जगह बनाई हो—?"

"भगवान को रॉकी साहब पर दया आ गई है शुक्ला जी। उनकी जिन्दगी में एक बार फिर से उनकी पुरानी महबूबा चांदनी आ गई है...।"

राजन ने अपने दिल को मसोसने पर खुशी का झूठा इजहार करते हुये कहा, "रियली? क्या सचमुच ही रॉकी की जिन्दगी में फिर से चांदनी आ चुकी है—?"

"हां...ये सच है...।"

"लेकिन कैसे? चांदनी की तो शादी हो गई थी—?"

"हां, चांदनी की जिस शख्स के साथ हुई थी, वो शैतान निकला...।"

"शैतान? क्या मतलब—?"

"एक दिन चांदनी जी ने रोते हुये मुझे अपने पति के बारे में बतलाया था...इत्तफाक से उसका नाम भी राजन है। लेकिन नाम से क्या होता है? एक नाम के दुनिया में कई लोग होते हैं। कोई अच्छा तो कोई बुरा होता है।

जरूरी नहीं कि किसी का नाम राम हो तो वो भगवान राम जैसा ही मर्यादा वाला हो, महान हो...।"

"चांदनी ने अपने पति के बारे में क्या बतलाया था—?"

"यही कि वो एक नम्बर का अय्याश है। शराब पीता है, जुआ खेलता है। उसके ना जाने कितनी औरतों के साथ अवैध सम्बन्ध हैं। भला कोई औरत ये कैसे बर्दाशत कर सकती है कि उसका पति बाजारू किस्म की छिनाल औरतों के साथ मुंह काला करता फिरे? चांदनी ने विरोध किया तो उसके पति ने उसे पहले तो लताड़ा, फिर हाथ उठा दिया। बाद में तो वो कसाई बेचारी चांदनी को बुरी तरह मारने लगा था।"

"लेकिन चांदनी ने अपने राक्षस पति के अत्याचार बर्दाश्त किये ही क्यों? वो पुलिस की शरण में जा सकती थी—या फिर अपने मायके जा सकती थी...।"

"वो अपने बीमार ससुर की वजह से मजबूर थी—।"

"ससुर...?" चौंका राजन।

"हां, ससुर। उसे ब्लड कैंसर है। वो चांदनी को अपनी बहू नहीं, बेटी ही मानता है। वो जब तक स्वस्थ था, उसने चांदनी का पिता की तरह ही ध्यान रखा और किसी चीज की कमी नहीं होने दी। उसने अपने बेटे की ही मुखालफत की—उसे डांटा, फटकारा। हमेशा चांदनी का फेवर लिया। एक बार जब चांदनी को उसके पति ने पीटा तो चांदनी के ससुर ने अपने बेटे को छड़ी से मारा था और चेतावनी दी थी कि अगर उसने चांदनी को आईन्दा परेशान किया तो वो सबकुछ चांदनी के नाम लिख देगा और उसे जायदाद से बेदखल कर देगा। फिर ससुर बीमार होकर हॉस्पिटल पहुंच गया तो चांदनी का पति शेर हो गया। वो चांदनी को सताने लगा, उस पर जुल्म करने लगा। यहां तक कि कम्बख्त घर में ही बाजारू औरतों को लाने लगा था। चांदनी को बेडरूम से निकालकर उसके बेड पर ही अय्याशी करता। नाच-गाने की महफिल सजाता। शराब और जुओ के दौर चलने लगे। वेश्या या बार गर्ल घर में ही आकर नाचने-गाने लगीं। अपने बीमार ससुर की वजह से ही चांदनी अपने पति के जुल्म बर्दाश्त करती रही। वो अपने पति की करतूत भी छिपाती रही—ये सोचकर कि मारे सदमे के ससुर वक्त से पहले दम ना तोड़ दे...।"

'हरामजादी...नौटंकीबाज। क्या स्टोरी बनाकर सुनाई कुतिया ने। मैं उल्लू का पट्ठा ही था, जो एक जहरीली नागिन को नौलखा हार समझता रहा। नाली के गन्दे पानी को गंगाजल समझता रहा। त्रिया-चरित्र का इससे बड़ा उदाहरण नहीं हो सकता।' मन-ही-मन कुढ़ते हुये बुदबुदाया राजन और फिर अपने जजबातों पर काबू करके बोला, "...फिर चांदनी और रॉकी का मिलन कैसे हुआ काका—?"

"ऐसे ही हो गया। बिजनेस के सिलसिले में रॉकी साहब मुम्बई आये थे तो चांदनी से मुलाकात हो गई। चांदनी से जब हालचाल पूछे तो वो खुद पर काबू ना रख सकी और फूट-फूट कर रोने लगी थी। उसने रॉकी साहब को अपना दुखड़ा सुनाया, साथ ही ये भी बताया कि उसका पति हिजड़ा है, वो पिता बनने के काबिल नहीं है... ।"

राजन के दिल में मानो भला घोंप दिया गया हो। जबकि उसकी मनोदशा से मनभिज्ञ शिवालिक अपनी ही धुन में बोले जा रहा था—"रॉकी साहब ने जब चांदनी की बातें सुनीं तो...वो भी रो दिये थे। उन्होंने फैसला कर लिया था कि चांदनी की दुखी जिन्दगी में खुशी भर देंगे—उसके दामन से कांटें निकालकर फूल भर देंगे। चांदनी भी टूट चुकी थी। इसीलिये उसने भी रॉकी साहब के प्यार का सहारा ले लिया। दोनों चोरी-छिपे मिलने लगे फिर बाद में तो रॉकी साहब ने ये बंगला ही ले लिया था। इससे पहले वो किसी होटल में रहते थे।"

"तो दोनों ने शादी करने का फैसला कर लिया है?"

"दोनों शादी कर चुके हैं... ।"

"क्या? शादी कर चुके हैं? लेकिन चांदनी तो...क्या उसने अपने पति से तलाक ले लिया?"

"नहीं। अपने ससुर की वजह से तलाक नहीं लिया। इसीलिये तो दोनों ने चोरी से शिवपुरी जाकर वहां के मन्दिर में शादी की और वहीं के एक होटल में सुहागरात भी मनाई थी। चांदनी के ससुर ज्यादा दिनों के मेहमान नहीं हैं। उनके स्वर्गवासी होते ही चांदनी अपने पति से तलाक ले लेगी और फिर दोनों भरे समाज में धूमधाम के साथ शादी कर लेंगे। लेकिन अभी भी वो पति-पत्नी ही हैं। मौका मिलने पर चांदनी रॉकी साहब से मिलती रहती है... ।"

"क्या यहां भी आती है वो?"

"हां आती है। परसो रात आई थी। सारी रात यहीं रही थी। कल सुबह रॉकी साहब को दिल्ली जाना था। वो उन्हें एयर पोर्ट पर छोड़कर ही अपनी ससुराल गई होगी। वैसे वो बहुत खुश थी। दोनों ही खुश थे। खुशी की बात भी है। चांदनी मां बनने वाली है। वो रॉकी साहब से गर्भवती हुई है। चांदनी का ससुर मरे तो दोनों फौरन ही शादी कर लेंगे। चांदनी अपने दुष्ट पति से तलाक ले लेगी... ।"

अचानक ही राजन उठ खड़ा हुआ।

"क्या हुआ, बैठिये ना, शुक्ला जी।"

"नहीं...एक जरूरी काम याद आ गया। मुझे फौरन ही जाना होगा काका! मेरे आने के बारे में रॉकी को मत बतलाना। मैंने अपनी और रेशमा की सौगन्ध दी है ना? मुझे उम्मीद है कि रॉकी जल्दी ही मुझसे मिलेगा। तब

मैं आऊंगा ही। उसकी और चांदनी की शादी में तो अपनी धर्मपत्नी के साथ सम्मलित होऊंगा। अच्छा, अभी मैं चलता हूं... ।"

"नमस्ते... ।"

"नमस्ते... ।"



काले सूट वाले एक दर्जन सिक्योरिटी गाड्र्स रूपी माफिया के हथियारबन्द गुन्डों के साथ क्रान्ति माफिया के हैड क्वार्टर पर पहुंची।

बाहर से देखने पर किसी सेवन स्टार होटल से कम नजर ना आने वाले हैड क्वार्टर के भीतर सिक्योरिटी के इतने टाइट इन्तजाम थे कि मक्खी-मच्छर तो क्या...हवा का झोंका भी प्रविष्ट नहीं हो सकता था।

दीवारों व छतों में ना सिर्फ सी०सी०टी०वी० फिट थे, बल्कि आवश्यकता पड़ने पर ऑटोमैटिक हथियारों की बैरल्स निकलकर अन्धाधुन्ध फायरिंग कर सकती थी, बल्कि कोई भी हिस्सा बन्द बैरक बन सकता था और उसमें जहरीली गैस भर सकती थी। कदम-कदम पर हथियारों से लैस कमान्डोज रूपी शार्प शूटर तो तैनात थे ही।

एक शानदार हॉल में ईगल या बाज के आकार जैसे सिंहासन पर कोई साठ वर्षीय व्यक्ति विराजमान था, जो कि गंजा और लाल त्वचा वाला था। उसके पतले व लम्बे जिस्म पर सफेद रंग का सूट था। पैरों में जूते भी सफेद रंग के।

हॉल में ऊपर की तरफ तीन ओर बॉलकनी बनी हुई थी, जहां तैनात गाड्र्स रूपी गुन्डों के पास ना सिर्फ ए०के० छप्पन, बल्कि मशीनगन और रॉकेट लांचर जैसे हथियार भी थे।

सिंहासन पर विराजमान माफिया किंग वाटसन की अगल-बगल में काली पोशाक वाली लम्बी व बहुत तन्दुरुस्त अमेरिकी युवतियां अटेंशन की पोजीशन में खड़ी थीं—जिनके कूल्हों पर होलेस्टर्स झूल रहे थे।

काली डेनिम की जींस तथा लाल टी शर्ट वाली क्रान्ति के आकर्षण से बचने की चेष्टा करते हुये वाटसन ने चेहरे पर खूंखार किस्म के भाव समेटे और बायें पैर के घुटने पर दायें पैर को रखकर रौबीले लहजे में बोला—"तो तुम हो वो क्रान्ति—जिसने अपने साथी सोनू के साथ मिलकर हैरी और हमारी बेटी जेनी को किडनेप करने की गुस्ताखी की है...? अपने अन्जाम की भी चिन्ता नहीं की तुमने? तुम दोनों ने क्या सोचा था...जेनी और हैरी को इन्डिया में बंधक बना लोगे तो हम उन्हें मुक्त नहीं करा सकेंगे? तुम्हें तो मालूम होना चाहिये कि माफिया इन्टरनेशनल क्रिमिनल ऑर्गेनाइजेशन है। दुनिया का ऐसा कोई मुल्क नहीं है, जहां माफिया की पहुंच ना हो। माफिया के आदमी दुनिया

के चप्पे-चप्पे पर तैनात हैं। वो कहीं पर भी पहुंचकर कमान्डोज वाली कार्रवाई कर सकते हैं। किसी भी खतरनाक किस्म के मिशन को कामयाबी के साथ कम्पलीट कर सकते हैं। हमारे कमान्डोज को बिल्कुल वो ही ट्रेनिंग दी जाती है, जो अमेरिकन मिलिट्री के कमाण्डोज को दी जाती है। हमारे कमान्डोज हर किस्म के हथियारों और बमों का इस्तेमाल करने में माहिर हैं। वो उस जगह को तहस-नहस कर देंगे...सोनू समेत सभी लोगों को खत्म कर देंगे और जेनी, हैरी को सही-सलामत छुड़ा लेंगे।"

"मैं माफिया के बारे में काफी कुछ जानती हूं माफिया किंग वाटसन...।" बेखौफ भाव से ही बोली क्रान्ति, "...लेकिन चैलेंज के साथ बोल रही हूं कि माफिया के कमान्डोज वर्षों तक भी पता नहीं लगा पायेंगे कि जेनी और हैरी कहां पर हैं? उन दोनों की वो अंगूठियां उतार ली गई हैं, जिनके भीतर ट्रांसमीटर्स फिट थे। उन ट्रांसमीटर्स को नष्ट कर दिया गया है, जो जेनी और हैरी की लोकेशन बतला सकते थे। हैरी के मोबाइल को तो पहले ही नष्ट कर दिया गया था। तुमसे बातें कराने पर जेनी के मोबाइल को भी नष्ट कर दिया है सोनू ने। यानि सर्विलांस के जरिये भी जेनी और हैरी की लोकेशन मालूम नहीं की जा सकती।"

"माफिया का खुफिया तन्त्र बहुत मजबूत...।"

"फेल हो जायेगा तुम्हारा खुफिया विभाग।"

"तू तो हमारे कब्जे में है लड़की। तू हमारे कमान्डोज को जेनी और हैरी तक पहुंचायेगी...।"

यूं ही मुस्कराई क्रान्ति कि मानो वाटसन ने कोई घटिया जोक सुना दिया हो। वो दो कदम आगे बढ़ी और वाटसन की लाल आंखों से नजरों के पेंच लड़ाते हुये सर्द-से लहजे में बोली, "...मेरे बारे में सबकुछ जानते हो तुम। चाहे जितना टार्चर कर लेना, लेकिन मेरे मुंह से जेनी और हैरी का पता नहीं निकलेगा। वैसे भी मेरे जिस्म में बहुत ही शक्तिशाली किस्म का ट्रांसमीटर फिट है, जिससे एक माइक भी अटैच है। हमारे बीच हो रही बातें सुनी जा रही हैं। सोनू मेरा कोई रिश्तेदार नहीं है। ना ही हमारे बीच ऐसा कुछ है कि उसे मेरी जान की चिन्ता होगी। इतनी बातें सुनकर ही वो अपना ठिकाना बदल देगा, जिसके बारे में मुझे भी जानकारी नहीं होगी। यानि मैं चाहूं भी तो...तुम्हें या तुम्हारे आदमियों को सोनू के ठिकाने तक नहीं पहुंचा सकूंगी। वैसे भी मैं जेनी और हैरी तक पहुंचाने वाली नहीं। मेरे बारे में थोड़ी-बहुत जानकारी रखते हो तो मालूम होगा कि मुझे अपनी जान की कोई परवाह नहीं। मौत कल की आती...आज आ जाये। मर तो बहुत पहले ही गई थी। सिर्फ उस साले केशव पण्डित से इन्तकाम लेने को ही जिन्दा हूं। मेरे जबड़ों में एक नकली दांत है, जिसमें पोटेशियम सायनाइड भरा है। जब भी चाहूं...खुदकुशी कर सकती हूं।

इसी के साथ एक खास जानकारी और ले लो। जेनी ने तुम्हें बतलाया भी होगा कि उसे और हैरी को थोड़ी देर के लिये बेहोश किया गया था और उनकी बांह पर पट्टियां बन्धी हैं। दरअसल उन दोनों की बांह में कैप्सूल साइज के, लेकिन बहुत ही शक्तिशाली बम फिट किये गये हैं और वो बम रिमोट से ब्लास्ट होते हैं। किसी चमत्कार से तुम्हारे कमान्डोज सोनू के ठिकाने तक पहुंच भी गये तो सोनू रिमोट का इस्तेमाल करेगा। धड़ाम...धड़ाम की आवाज के साथ जेनी और हैरी के जिस्म के परखच्चे उड़ जायेंगे...खील-खील हो जायेंगे।"

वाटसन के माथे पर ऐसी सिलवटें पड़ीं कि मानों खाल के भीतर कैद केंचुए बाहर निकलने के लिये छटपटा रहे हों।

अपनी बेटी जेनी की मौत की कल्पना भी नहीं कर सकता था वो। जेनी की चिन्ता ने उसे माफिया किंग से एक बाप...एक पिता बना दिया।

"तुम तो नाहक ही टेंशन ले रहे हो वाटसन...।" आगे बढ़ी क्रान्ति और बेबाकी से वाटसन के घुटने पर गोरी, गुदाज हथेली रखकर बोली, "...अपना इरादा जेनी या हैरी को जरा-सा भी नुकसान पहुंचाने का नहीं है। उनसे या तुमसे कोई दुश्मनी नहीं है अपनी। ना ही अपना इरादा तुमसे कोई फिरौती वसूलने का ही है...।"

"तो फिर...?" वाटसन ने चेहरा उठाया और क्रान्ति की बड़ी-बड़ी व नशीली आंखों में झांकते हुये पूछा, "इरादे क्या हैं तुम्हारे? मुझसे क्या चाहिये—?"

"तुम्हारी बीवी का मर्डर इन्डिया में हो गया था तो इसका मतलब ये नहीं कि सभी इन्डियन तुम्हारे दुश्मन हो गये। मेहमान हूं तुम्हारी। पहले मेहमान नवाजी तो करो। अपने रेजीडेन्स में लेकर चलो मुझे। शराब और कबाब हो जाये। शबाब तो तुम्हारे सामने मौजूद है ही। तुम्हारी आंखें चुगली खा रही हैं कि तुम मुझ पर मर-मिटे हो। तुम्हारी कोई खता नहीं। मैं चीज ही ऐसी हूं कि किसी की भी नीयत डोल जाये। तुम माफिया के बादशाह...तो मैं हुस्न की मलिका। दोनों प्यार के समन्दर में सुनामी पैदा कर सकते हैं। पहले तन-मन की बातें हो जायें...फिर बतला दूंगी कि जेनी और हैरी को किडनेप क्यों किया गया है—मुझे तुमसे क्या चाहिये—।"



धांय...की आवाज के साथ चली गोली ने बाइक के पिछले टायर को शहीद कर दिया।

बाइक सड़क पर गिरी और चिंगारियां छोड़ते हुये काफी दूर जाकर रुकी। ये शुक्र रहा कि माधवी बाइक के ऊपर थी और उसे कोई चोट नहीं आई।

बाइक से उठकर वो कपड़े झाड़ ही रही थी कि लाल रंग की होन्डा सिटी कार रुकी और अमित शाह बाहर निकला।

माधवी को उसके हाव-भाव खतरनाक लगे। सुनसान इलाके में दूर-दूर तक कोई दिखलाई भी नहीं पड़ रहा था—सो माधवी ने भागने में ही भलाई समझी।

धांय...की आवाज के साथ एक गोली उसकी दायीं कनपटी से फुटभर की दूरी से गुजरी और अमित शाह की हिंसक-सी आवाज उभरी—"रुक जाओ माधवी! वैसे भी हम कॉलेज टाइम में रेस की कई प्रतियोगितायें जीत चुके हैं—तुम हमसे तेज नहीं दौड़ सकती...।"

और फिर ओवरटेक करके अमित शाह ने माधवी का रास्ता रोक लिया और अपने लाल कोट की भीतरी जेब से सफेद रूमाल निकालकर रिवॉल्वर कोट की बाहरी जेब में ठूंस दी। फिर रूमाल को माधवी की नाक पर रख दिया।

रूमाल से उठती तीखी गन्ध से माधवी समझ गई कि अमित शाह के इरादे उसे क्लोरोफॉर्म से बेहोश करने के हैं। उसने दोनों हाथों से उसकी कलाई पकड़ ली और रूमाल समेत नाक से दूर करने की चेष्टा करने लगी। लेकिन अमित शाह की कलाई या हाथ टस से मस भी नहीं होकर दे रहा था—ऊपर से उसने दूसरे हाथ की हथेली माधवी के सिर के पृष्ठभाग पर जमा दी, ताकि माधवी चेहरे या सिर को पीछे ना कर सके।

माधवी ने सांसें रोक ली—लेकिन कब तक?

दम घुटने पर उसने सांस ली और सांसों के साथ तीखी गन्ध कण्ठ के रास्ते फेफड़ों और दिमाग में जा पहुंची। परिणामस्वरूप वो अचेत हो गई।

जब होश आया तो उसने स्वयं को गुदगुदे सोफे पर पाया और पैरों की तरफ खड़ा अमित शाह भी दिखलाई पड़ा।

चिहुंक कर उठी वह और सोफा छोड़ दिया।

काफी बड़ा हॉल कमरा था वह, जिसका सारा फर्नीचर बढ़िया, सुन्दर व कीमती था। दीवारों पर ना सिर्फ जंगली जानवरों की पेन्टिंग्स लगी थीं, बल्कि शेर, लोमड़ी, रीछ व हिरण के कटे हुये सिर भी सजे हुये थे।

वह बड़े साइज के लोहे, पीतल व तांबे के दरवाजे की तरफ दौड़ी तो पीछे से अमित शाह की मखौल उड़ाने जैसी हंसी सुनाई पड़ी।

दरवाजे की कुन्डी और ऊपर वाली सिटकनी खुली हुई थी, लेकिन पूरे जोर लगाने पर भी वो टस-से-मस भी नहीं हुआ।

"ये नहीं खुलेगा माधवी...।" दरवाजे के करीब आकर सिगरेट में कश लगाया अमित शाह ने और माधवी के चेहरे पर धुएं का गोला-सा छोड़कर बोला, "...दरवाजे में वो की-हॉल देख रही है तू? वो हजमी ताला है...इन्टरलॉक। उसकी चाबी हमारे पास है। जब तक चाबी ना लगेगी...ताला नहीं खुलेगा—ताला नहीं खुलेगा तो दरवाजा भी नहीं खुलेगा। दरवाजा इतना

मजबूत है कि अगर कुल्हाड़ी या हथौड़ा लेकर भी चेष्टा करेगी तो तोड़ नहीं सकेगी...।"

"ले...लेकिन तुम मुझे यूं...इस तरीके से यहां क्यों लेकर आये हो? तुम्हारे इरादे क्या हैं? आखिर तुम चाहते क्या हो...?"

"हम तुमसे मुहब्बत करते हैं माधवी...।"

"तभी इस तरह किडनेप करके लाये हो...?" भयभीत होने पर भी व्यंग भरे लहजे में बोली वह।

"क्या करें...मजबूरी है। तुम ये तो मानोगी कि हम पागलपन की हद तक तुम्हें चाहते हैं?"

"लेकिन मैं तुम्हें नहीं चाहती। हमारे यहां लड़कियां प्यार-मुहब्बत या लव-मैरिज नहीं करतीं। लड़कियां अपने बड़ों की पसन्द के लड़के से अरेंज मैरिज करती हैं...।"

"तुम्हारे पापा जब अपना आशीर्वाद दे देते तो वो अरेंज मैरिज ही होती ना...?"

कुछ बोलते-बोलते रुकी माधवी और चालाकी से काम लेने की सोचकर बोली, "...ठीक है, पापाजी से मिल लेते हैं। वो तुम्हें अपना दामाद बनाने को राजी हो जाते हैं तो...मुझे तुमसे शादी करने में कोई ऐतराज नहीं होगा...।"

गुलाबी होठों पर जहरीली किस्म की मुस्कान घसीट ली अमित शाह ने और माधवी की आंखों में झांकते हुये फुसफुसाया-सा—"...स्वयं को चालाक समझती हो तुम? हां, चालाक तो तुम हो...न्यूज चैनल की रिपोर्टर जो हो। लेकिन हमें उल्लू नहीं बना सकतीं। नीलम ने भी हमें उल्लू का पट्ठा समझकर बेवकूफ बनाने की चेष्टा की थी। वो तो स्वयं को तुमसे भी ज्यादा चालाक समझती थी। लेकिन हमने नीलम को बतला दिया था कि वो चालाक नहीं, बेवकूफ थी...।"

"नीलम? कौन नीलम...?"

"हमारी बीवी...हमारी धर्मपत्नी। अय्याश थी वो। एक मर्द से भला नहीं होता था उसका। उसने हमारे ही परम मित्र नीरज को अपने हुस्न के जाल में फांस लिया था। तुम्हें मालूम नहीं कि हम शादीशुदा थे...?"

"हां, मालूम है। तुम्हारे नौकर ने बतलाया था...।"

"क्या बतलाया था...बहादुर ने—?"

"यही कि आपकी पत्नी बेवफा थी और अपने प्रेमी के साथ भाग गई थी। तुम उसकी बेवफाई बर्दाश्त नहीं कर सके थे और...।"

"और पागल होकर मेंटल हॉस्पिटल पहुंच गये थे...।" सिगरेट को फर्श पर डाल उसे किसी संपोलिये की मानिन्द ही जूते की नोक से कुचलकर बोला

वो, "...हां, ये हकीकत भी है। हम नीलम की बेवफाई बर्दाश्त नहीं कर पाये थे, वो ना सिर्फ खूबसूरत थी, बल्कि ड्रामेबाज भी थी। उसने अपनी अदाओं से हमें अपना गुलाम ही बना लिया था। एक दिन हम बिजनेस के सिलसिले में सप्ताहभर के लिये दिल्ली जाने के लिये घर से निकले थे। लेकिन मौसम खराब हो जाने की वजह से फ्लाइट कैंसिल हो गई थी। हम वापिस लौटे। ये सोचकर कि नीलम को परेशान क्यों करें...कालबैल नहीं बजाई। नीलम को सरप्राईज भी देने का इरादा था। जब हम उससे विदा ले रहे थे तो वो फूट-फूटकर रोई थी और बोली थी कि वो हमारे बिना एक घन्टा भी नहीं रह सकती—उसे सात दिन सात जन्मों के बराबर ही लगेंगे। एक खिड़की खुली थी—उसी से भीतर प्रविष्ट हुये थे तो अपने बेडरूम में नीलम और नीरज को मुंह काला करते हुये पाया था। पागल-से होकर दोनों पर टूट पड़े थे। लेकिन नीलम ने पीतल का गुलदान हमारे सिर पर मारकर हमें बेहोश कर दिया था और घर की सारी नगदी और गहने चुराकर नीरज के साथ भाग निकली थी। हम उसकी बेवफाई बर्दाश्त नहीं कर पाये थे और पागल हो गये थे। आओ, तुम्हें एक बढ़िया चीज दिखलाते हैं...।"

"क...कहां ले जा रहे हो मुझे...हाथ छोड़ो मेरा...।"

लेकिन अमित शाह ने माधवी की कलाई नहीं छोड़ी और उसे खींचते हुये हॉल के कोने में रखे बड़े बक्से जैसे फ्रिजर के पास ले गया।

माधवी की कलाई छोड़ी उसने और बोला—"हिलना मत। वैसे भी दरवाजा लॉक्ड है। भाग नहीं सकोगी। तुम्हें बहुत खास चीज दिखलाने जा रहे हैं हम...।"

उसने कोट की भीतरी जेब से चाबी निकाली और उस पीतल के बड़े ताले को खोला, जो कि फ्रिजर के ढक्कन में पड़ी जंजीर से जुड़ा हुआ था।

ताले और जंजीर को निकालकर फर्श पर डाला और फिर भारी-भरकम ढक्कन को उठाया अमित शाह ने तो भीतर से ढेर सारी ठन्डी-ठन्डी भांप निकली।

अमित शाह ने माधवी को पकड़कर फ्रिजर के पास किया तो उसकी आंखें चौड़ी हो चलीं और पुतलियां फैलने लगीं। मुंह भी खुला, लेकिन गले में रेत-सी भर जाने के कारण आवाज नहीं निकल सकी।

कलेजा मुंह को आ गया।

एक बारगी को तो लगा कि मानो दिल ने धड़कना ही बन्द कर दिया हो।

फिर मुख से घुटी-घुटी-सी चींख निकली और जिस्म यूं ही थरथराने लगा कि मानों तेज भूकम्प आ गया हो। अमित शाह की पकड़ से छूटकर वो तेजी के साथ पीछे हटी और लड़खड़ाकर फर्श पर जा गिरी।

दिल मानो बन्दर का बच्चा बनकर सीने के पिंजरे में उछल-कूद मचाने लगा—पसलियों में मानो सुनामी आ गई।

क्षणभर में ही समूचा जिस्म पसीने से लथपथ हो चला।

उसने फ्रिजर के भीतर लाल साड़ी वाली महिला की सिर कटी लाश देखी थी, जिस पर बर्फ की परत जमी हुई थी।

अमित शाह ने नई सिगरेट सुलगा ली और फ्रिजर का ढक्कन गिराकर बोला, "ये नीलम है...मेरी बेवफा बीवी। ये गहने और नगदी चुराकर अपने यार नीरज के साथ भाग गई थी और ऊटी में मौज-मस्ती कर रही थी। ऊटी क्या...दोनों इधर-उधर कई-कई हिल स्टेशनों पर गये। फिर दोनों मुम्बई लौटे। दोनों ने दिल्ली में बसने का निर्णय किया था। उन्हें किसी से पता चला था कि मैं पागल हो गया और मेन्टल हॉस्पिटल में हूं। नीरज ने सोचा था कि वो अपना बंगला और प्रोपर्टी बेचकर नगदी बना लेगा। लेकिन दोनों को मालूम नहीं था कि मैं मेंटल हॉस्पिटल से बाहर आ गया हूं। नीरज के बंगले पर दोनों के सिर पर डन्डे मारकर बेहोश किया और हाथ-पैर बान्धकर यहां...अपने फार्म हाउस पर ले आया था। पहले नीरज को रुलाया था, सताया था। फिर नीलम की भी गर्दन काट डाली थी। नीरज की लाश के टुकड़ों को जंगल में खड्डा खोदकर दफना दिया था। उसको कब्र में बोरियत ना हो...इसलिये नीलम के सिर को भी दफना दिया था। साली की लाश पर थूककर अपनी नफरत और क्रोध को कम करने की चेष्टा करता हूं। यूं तो औरत जात से नफरत हो चली थी। लेकिन तुम्हें देखा तो ना जाने क्यों तुमसे मुहब्बत हो चली थी। तय कर लिया था कि तुमसे शादी करके नीलम की लाश को जंगल में दफना दूंगा। लेकिन तुमने मेरी चाहत की कद्र नहीं की। मजबूरन मुझे तुम्हें जबरदस्ती उठाकर यहां लाना पड़ा।"

माधवी के होश फाख्ता हो चले।

वो ये तो जानती थी कि अमित शाह सनकी किस्म का है—लेकिन अब ये भी जान चुकी थी कि वो खतरनाक किस्म का मुजरिम है और बेरहमी के साथ अपनी पत्नी और उसके प्रेमी को कत्ल कर चुका है।

दिमाग में सवाल उभरा कि अमित शाह उसे यहां क्यों लाया है—उसके इरादे क्या हैं?

उत्तर जल्दी ही मिला, वो भी अमित शाह के मुख से—"तुम्हें कुछ वक्त के लिये यहां अकेली रहना होगा माधवी। हम वापिस मुम्बई जा रहे हैं। वहां से तुम्हारे और अपने लिये जोड़ा लाना है।"

"जो...जोड़ा...कैसा जोड़ा—?"

"शादी का जोड़ा...।"

"शा...शादी...?"

"हां, शादी...तुम्हारी और हमारी...।"

"न...नहीं...।"

"...मेकअप के सामान की तो जरूरत नहीं—भगवान ने तुम्हें बला की खूबसूरत बनाया है। पण्डित की भी जरूरत नहीं। आजकल शादी के मन्त्रों वाली डी०वी०डी० मिल जाती है। एक अग्निकुन्ड होगा। डी०वी०डी० पर मन्त्र चलेंगे और हम फेरे ले लेंगे। हम तुम्हारी मांग में सिन्दूर भरकर मंगल-सूत्र पहना देंगे। फिर जंगल में मंगल होगा। यहीं पर सुहागरात और यहीं पर हनीमून। आयम सॉरी डार्लिंग। तुम्हें बेहोश करना पड़ेगा...।"

अमित शाह ने माधवी की कनपटी पर शक्तिशाली घूंसा जड़कर उसे बेहोश कर दिया। फिर उसे उठाकर कुर्सी पर बिठाया और नायलोन की मजबूत डोरी से मजबूती के साथ बान्ध दिया।



अलफांसे आरती और सौभाग्य से मिलने उसके घर पहुंचा था तो वहां उपस्थित जयभगवान भी उसे देखकर चौंका था और खुश हुआ था।

आरती और सौभाग्य ने जयभगवान को बतलाया कि कैसे अलफांसे अर्थात् अमरकान्त ने उनकी मदद की थी और भीमा दादा की दुर्गति की थी।

कुल मिलाकर जयभगवान अलफांसे पर फिदा हो गया।

अलफांसे ने सौभाग्य को भी बढ़िया तोहफे देकर, उसे स्टेडियम में भारत-पाकिस्तान वन डे मैच दिखलाकर और उसके साथ क्रिकेट खेलकर उसका दिल जीत लिया।

इसी के साथ वो आरती का भी दिल जीतने की चेष्टा कर रहा था।

जयभगवान तो आरती पर पहले से ही दबाव डाल रहा था कि वो दूसरी शादी कर ले। उसने आरती से कहा कि वो अमरकान्त यानि अलफांसे के साथ शादी कर ले—अमरकान्त उसके लिये अच्छा पति और सौभाग्य के लिये बढ़िया पिता साबित होगा।

आरती ने ना-नुकर की तो उसने धमकी दे डाली कि उसके और सौभाग्य के नाम दस-बीस लाख रुपये छोड़कर बाकी नगदी और प्रोपर्टी किसी सामाजिक या धार्मिक संस्था के नाम कर देगा।

सौभाग्य ने भी आरती से जिद की कि वो अमरकान्त यानि अलफांसे से शादी करके उसे उसका डैडी बना दे।

आरती ने स्वीकृति दी तो एक मन्दिर में बहुत ही सादगी के साथ दोनों की शादी कर दी गई।

सुहागरात पर आरती ने स्वयं को बीमार बतलाकर कहा कि वो कुछ दिनों तक उसके साथ नहीं सो सकेगी।

अलफांसे को मानो मुंह मांगी मुराद मिल गई। वो भी अपनी सलमा के साथ कब बेवफाई करना चाहता था—उसने आरती से कहा कि वो जब तक ठीक नहीं हो जाती वो दोनों अलग-अलग सोयेंगे।

आरती ने दूध पिया और अलफांसे को कॉफी पिलाई—क्योंकि अलफांसे दूध नहीं पीता था।

घन्टाभर तक जागने पर अलफांसे सो गया तो आरती खुश हो गई। क्योंकि उसने कॉफी में गहरी नींद लाने वाली गोलियों का पाउडर जो मिला दिया था।

अलग कमरे में सो रहे सौभाग्य और जयभगवान के दूध में भी उसने यों ही पाउडर मिला दिया था। जबकि नौकर तो डिप्रेशन का पेशेंट होने के कारण नींद की गोलियां खाकर ही सोता था।

रास्ता साफ था। कार में सवार होकर आरती विशेष के बंगले पर पहुंची।

बिल्लौरी आंखों, सुनहरे बालों वाले गोरे-चिट्टे विशेष ने दरवाजा खोलते ही आरती को बांहों में भर लिया और उसके होंठों को चूमकर बोला—"...बेताबी के साथ तुम्हारा ही इन्तजार कर रहा था डार्लिंग। साथ ही डर भी रहा था कि तुम अमरकान्त को बेहोश करने में कामयाब ना हो सकी हो और तुम्हारा बीमारी वाला बहाना भी ना चला हो। आखिर तुम बला की खूबसूरत हो। अमरकान्त ने तुम पर फिदा होकर ही तो शादी की है। वो तुम्हारे साथ जबरदस्ती भी कर सकता...।"

"वो इस टाइप का आदमी नहीं है। मैंने बीमारी का बहाना बनाया तो मान गया था। बोला था कि जब तक मेरी तबियत ठीक नहीं हो जाती...दोनों अलग-अलग ही सोयेंगे। लेकिन मुझे जरा भी अच्छा नहीं लग रहा है विशेष...।" आरती उदास होकर मुरझाये से भाव से बोली, "...क्या किस्मत पाई है...प्यार तुमसे किया, लेकिन पहले राहुल के साथ शादी हुई और अब अमरकान्त के साथ...। राहुल के साथ ना जाने कितनी बार सोना पड़ा मुझे। अमरकान्त को भी कब तक रोक सकूंगी मैं? जब उसके सब्र का पैमाना छलक उठेगा तो वो मेरे साथ जबरदस्ती करेगा। मैं ना तो विरोध कर सकूंगी और ना ही किसी से शिकायत कर सकूंगी। क्योंकि मेरा बाप भी यही चाहेगा कि मैं अमरकान्त को तन-मन से पति मानूं। उसकी बात नहीं मानूंगी तो धमकी दे देगा कि वो अमरकान्त के नाम वसीयत लिख देगा। इसी धमकी के दम पर उसने मुझे राहुल के साथ सोने पर मजबूर कर दिया था...।"

"लेकिन तुम मेरे ही बच्चे की मां बनी...।"

"वो तो मैंने सावधानी बरती थी। इस बात का ख्याल रखा था कि अगर प्रेगनेंट होऊं तो तुमसे ही। लेकिन जरूरी तो नहीं कि मैं अमरकान्त से बच सकूं। उसके बच्चे की मां नहीं बनना चाहूंगी मैं...।"

"नहीं बनोगी। अमरकान्त को इसका मौका ही नहीं मिलेगा। इससे पहले कि वो तुम्हारे साथ कुछ करे...उसका खात्मा कर देंगे...।"

"कैसे—?"

"जैसे राहुल का किया था...।" आरती को गोद में उठाकर बोला विशेष, "...उसको मारकर एक्सीडेन्ट का रूप दे दिया था मैंने। आज तक भी यही समझा जाता है कि राहुल एक्सीडेन्ट में मरा था। इस साले अमरकान्त को भी ऐसे खत्म करूंगा कि...एक्सीडेंन्ट ही नजर आयेगा। चूंकि तुम दो बार विधवा हो चुकी होगी—इसलिये कोई भी बन्दा तुमसे तीसरी शादी करने के लिये तैयार नहीं होगा।"

"लेकिन मेरा बाप फिर भी तुम्हें अपना दामाद बनाने को राजी नहीं होगा...।"

"डोन्ट वरी...यार। वो बुड्ढा आज नहीं तो कल तो मरेगा ही। तब हम शादी कर लेंगे।"

"बहुत जान है उसमें। दस-बीस साल तक वो लुढ़कने वाला नहीं है वो...।"

"तो फिर एक काम करते है। तुम्हें स्लो प्वायजन ला दूंगा। दूध या खाने में बुड्ढे को देना शुरू कर दो। वो बीमार होकर मरेगा—किसी को शक भी नहीं होगा कि उसकी स्लो प्वायजन से मौत हुई है—।"

"अमरकान्त को भी स्लो-प्वायजन दे देते हैं ना...?"

"नहीं...वो जवान और तन्दुरुस्त हैं—मरने में ज्यादा समय लेगा। वैसे भी ससुर-दामाद की एक तरीके से ही मौत होगी तो लोगों को शक होगा। अमरकान्त के कत्ल की तो किसी ट्रक वाले को सुपारी दे दूंगा। वो अमरकान्त को ठोक देगा। अब उदास क्यों हो मेरी जान? तुम्हारी दोनों प्रॉब्लम दूर हो जायेंगी और जल्दी ही हम दोनों की शादी भी हो जायेगी। तब हम खुलेआम एक साथ रहेंगे और ऐश करेंगे। अभी तो हमेशा की तरह चोरी-छिपे वाली सुहागरात ही मनाते हैं...।"

विशेष अनीता को गोद में उठाये हुये बेडरूम में पहुंचा और उसे बेड पर गिराकर चूमने और सहलाने लगा। आरती भी मुख से कामुकता भरी सिसकारियां निकालते हुये विशेष को 'ईंट का जवाब पत्थर' से देने लगी।

गरम सांसों का ऐसा तूफान उठा कि कमरा बिना हीटर के ही दहकने-सा लगा।

मन्जिल पर पहुंचकर दोनों हांफने लगे और उतरे हुये वस्त्रों से जिस्म का पसीना पोंछते हुये फेफड़ों में गहरी-गहरी सांसें भरने लगे।

"वाह...क्या सीन है...!"

दोनों यूं ही चिहुंके कि मानो अचानक ही बेड में ग्यारह हजार वोल्ट

का करेंट दौड़ने लगा हो। विशेष से अलग होकर आरती ने स्वयं को बेडशीट से छिपाने की चेष्टा की तो विशेष बेड के दूसरी तरफ कूद गया और उसकी ओट लेकर बोला, "तु...तुम...?"

"हां, मैं...।" सिगरेट में कश मारकर और धुंओं के सैकड़ों छल्ले हवा में उड़ाकर बोला अलफांसे. "आरती देवी जी के पीछे-पीछे ही चला आया था। तुम दोनों की तमाम बातें भी सुनीं और हरकतें भी देखीं। वैसे तो दोनों ही महान हो—लेकिन आरती देवी तो इतनी महान हैं कि इनकी आरती उतारने को मन करता है। त्रिया-चरित्र जाने नहीं कोई...पति को मारकर सती होई। भले ही राहुल को तूने मारकर एक्सीडेन्ट का रूप दिया था विशेष—लेकिन सहमति तो आरती देवी की भी थी। बेचारे को बलि का बकरा दिया। जब तक वो जिन्दा रहा, तब तक भी पति तो तू ही था। मैंने आरती देवी से दूसरी शादी कर ली तो दोनों के पेट में मरोड़े उठने लगे। मुझे भी मारकर एक्सीडेन्ट का रूप देने का प्लान बन गया। चलो, मैं तो एक तरह से गैर ही हूं। अपने बाप की प्रोपर्टी बचाने के लिये ही आरती देवी ने मेरे साथ शादी की। लेकिन सेठ जयभगवान तो आरती देवी के सगे पिता हैं, जन्मदाता हैं। उन्हें भी स्लो प्वायजन देकर मारने का प्लान बना लिया...।"

आरती का चेहरा निचुड़ सा गया—वो सूख चले होठों पर जिव्हा फिराने लगी।

"लेकिन...आरती ने तो तुम्हें दूध में नींद की गोलियों का पाउडर मिलाकर दिया था और तुम गहरी नींद सो भी गये थे। फिर यहां कैसे...?"

अलफांसे मुस्कराकर बोला, "...कभी अलफांसे का नाम सुना है तूने या तेरी इस धन्नो ने--?"

"अलफांसे...वो खतरनाक मुजरिम, जिसे दुनिया के चन्द बड़े मुजरिमों में गिना जाता है...?"

"हां, वो ही हूं मैं...।"

विशेष चिहुंका, आरती भी चिहुंकी।

"ओह...तो तुम अलफांसे हो...जिस तरह तुमने भीमा दादा की दुर्गति की और उसे यहां से भागने को मजबूर कर दिया था...मुझे लगा था कि तुम कोई मामूली आदमी नहीं हो। लेकिन ये नहीं सोचा था कि तुम अ...अलफांसे भी हो सकते हो। लेकिन तुमने आरती के साथ शादी क्यों की...?"

"बजरंगपुरा वाले टोनी को तो जानता ही होगा तू? वो चेला है मेरा। उसी कम्बख्त ने जिद की थी। सेठ जयभगवान की दौलत और प्रोपर्टी के लिये ही मैंने सारा खेल खेला था। लेकिन अब मुझे सेठजी की प्रोपर्टी में कोई दिलचस्पी नहीं रही—क्योंकि सेठजी से सहानुभूति है मुझे...उनसे हमदर्दी हो गई है। ऊपरवाला किसी दुश्मन को भी आरती जैसी बेटी ना दे। तुम दोनों

के बारे में टोनी ने ही मुझे बहुत कुछ बतला दिया था। बाकी की जानकारी अब मिल गई। जब आरती ने मुझे कॉफी का मग पकड़ाया तो इसकी आंखों ने चुगली कर दी थी कि अवश्य ही कोई गड़बड़ी है। वर्षों से क्राइम की लाइन में हूं। सामने वाले के चेहरे से उसके मन की भावना को पकड़ लेता हूं। कॉफी को गुलदान में डालकर और खाली मग होठों से लगाकर कॉफी पीने का नाटक किया था। फिर सोने का नाटक किया था, ये जानने के लिये कि आरती देवी के इरादे क्या हैं? इनका पीछा किया और यहां पहुंचकर सब देख और सुन लिया। दोनों ही कमीने हो। मैं तो निकल जाऊंगा। लेकिन सेठ जयभगवान का क्या होगा? उन्हें तो तुम दोनों स्लो प्वायजन देकर या किसी दूसरे तरीके से मार डालोगे। नहीं, अलफांसे भले ही मुजरिम है, लेकिन केशव पण्डित और सलमा के सम्पर्क में आने पर मुझमें थोड़ी-बहुत मानवता आ गई है। मैं सिर्फ अपने नहीं...दूसरों के बारे में भी सोचने लगा हूं। तुम दोनों के बारे में भी सोचा है।"

"क...क्या—?"

"क्या...?"

आरती और विशेष के मुंह से एक साथ निकला।

मुस्कराया अलफांसे और फिर कोट की भीतरी जेब से रिवॉल्वर निकालकर बोला, "...दोनों में से एक की हत्या होगी और दूसरा उसकी हत्या के इल्जाम मे जेल जायेगा...।"

"न...नहीं...।"

"न...नहीं—।"

"दोनों में से जो सबसे बड़ा पापी है...उसे मेरे हाथों से नरकलोक जाना पड़ेगा। जो कम पापी है, उसको कानून या अदालत सजा सुनायेगी...।"

"ये...ये है सब बड़ी पापी...मुझसे भी बड़ी...।"

"ये...ये क्या कह रहे हो तुम विशेष...?" आरती बौखलाकर बोली, "...मैं...मैंने किया ही क्या है? मेरे पहले पति राहुल की हत्या तुमने की थी। पापाजी को मारने का प्लान भी तुम्हीं ने बनाया। तुम्हीं ने अलफांसे जी को बेहोश करने के लिये नींद की गोलियां दी थीं...।"

"मैंने जो कुछ भी किया...तेरे कहने पर किया। तूने कहा था कि मुझे विधवा कर दो...तो मैंने राहुल को मरवा दिया था। तू ही बोली थी कि तुझे अमरकान्त यानि अलफांसे जी के साथ नहीं, मेरे साथ सुहागरात मनानी है। तू ही बोली थी कि मेरा बाप दस-बीस साल मरने वाला नहीं है। कई बार सेठजी को खत्म करने के लिये बोली तू—लेकिन मैं इन्तजार करता रहा कि वो बुढ़ापे में बीमार होकर अपनी मौत मर जायें और मैं कानून के फन्दे में ना फंसूं। अपने दूसरे पति यानि अलफांसे को भी मरवाने के लिये बोली थी तू...।"

"झू...झूठ...झूठ बोलता है तू हरामजादे...।"

"हरामजादी तो तू है। तभी तो डायन बनकर अपने पहले खसम को खा गई थी। अगर सौभाग्य मेरा खून ना होता तो उसे भी मरवा देती तू। फटाक से अपने बाप की स्लो प्वायजन से जान लेने को राजी हो गई तू। इसे मार डालिये अलफांसे जी...मार डालिये। अदालत मुझे जो सजा देगी...वो मैं भुगत लूंगा...।"

आरती भौचक्की-सी विशेष को देखती रह गई।

"सुना...तूने आरती...?" व्यंगभरे लहजे में बोला अलफांसे, "...ये रेत से बना रसगुल्ला क्या बोल रहा है? तुझे मारने के लिये बोल रहा है ये। इसकी कौन-सी खूबी पर तू इस पर मरती थी और तूने निर्दोष राहुल की हत्या करा दी थी? इसी के लिये अपनी मर्यादा लांघकर तू वासना के कीचड़ में धंसती चली गई थी। क्या अभी भी तेरी समझ में नहीं आया कि ये तुझसे नहीं, तेरे पापा की प्रोपर्टी से प्यार करता था? इसके बारे में तेरे पापा का जो ख्याल था, वो एकदम ठीक था। और तू विशेष! देख लिया कि आरती तुझे कितना चाहती है? थोड़ी देर पहले जब तुम दोनों बिस्तर पर एक-दूसरे के साथ मुंह काला कर रहे थे तो तुझे अपनी जान बोल रही थी...सपनों का राजा...मन का मीत...ना जाने क्या-क्या बतला रही थी तुझे ये। लेकिन जब जान देने की बारी आई तो फौरन ही तुझे मारने के लिये बोली ये। एक्चुअली, ये तेरे जिस्म और जिस्म की ताकत या मर्दानगी की ही दीवानी थी। तुझसे हवस का रिश्ता जोड़ा था इसने। तुम दोनों अगर एक-दूसरे से प्यार करते तो...अपनी जान देकर दूसरे की जान की भीख मांगते। लेकिन तुम दोनों ही मतलबी और स्वार्थी हो। इन्सानियत तो है ही नहीं तुम दोनों में...तुममें तो सिर्फ वासना और स्वार्थ के कीड़े भरे पड़े हैं। जी तो चाहता है कि तुम दोनों को ही मार डालूं...लेकिन नहीं...अपना प्लान चेंज नहीं करूंगा मैं। दोनों में से एक ही मरेगा...।"

धांय...धांय—।

"आ...आह...आह...।"

सीने पर दो गोलियां खाकर विशेष फर्श पर गिरा और हथेलियों से खून को रोकने की चेष्टा करते हुये उस मुर्गे की मानिन्द ही छटपटाने और तड़फड़ाने लगा जिसे पैनी छुरी से हलाल किया जा रहा हो।

"न...नहीं...।" घबराकर चीखी आरती और थर-थर कांपते हुये फट पड़ने को तैयार आंखों से विशेष को मौत के मुंह में जाते हुये देखने लगी।

"एक बार तूने ही अपने जन्मदिन पर सेठजी से रिवॉल्वर की मांग की थी और उन्होंने तुझे रिवॉल्वर दिलवा दी थी...।" वो आवाज अलफांसे की ही थी, "उसी रिवॉल्वर से तेरे यार को शूट किया है मैंने। थोड़ी देर पहले तूने

विशेष के साथ मुंह काला किया था—ये बात मेडिकल चैकअप से भी साबित हो जायेगी। तेरी सेफ से दो लाख रुपये भी निकाल लाया था मैं—जिन्हें यहीं पर छोड़ दूंगा मैं। रिवॉल्वर और नोटों की दोनों गड्डियों पर सिर्फ तेरे ही फिंगर प्रिंट्स होंगे। अपने फिंगर प्रिंट्स साफ करके तेरे फिंगर प्रिन्ट्स छाप दूंगा। पीतल के उस गुलदान से तेरे सिर पर वार करके तुझे बेहोश कर दूंगा और उस गुलदान पर विशेष के फिंगर-प्रिन्ट्स होंगे। तो कहानी ये बनेगी कि तू यहां मौज-मस्ती करने आई थी और विशेष को रुपये भी दिये तूने। फिर किसी बात पर तुम दोनों में झगड़ा हुआ। तूने अपनी लाइसेंसी रिवॉल्वर से विशेष को मार दिया—जबकि विशेष ने तुझ पर गुलदान से प्रहार किया था। पुलिस ये कहानी भी बना सकती है कि विशेष तुझे ब्लैक-मेल कर रहा था। तेरे जिस्म से भी खेल रहा था और तुझसे रकम भी ऐंठ रहा था—तंग आकर तूने उसे ठोक दिया...।"

"न...नहीं...ईश्वर के लिये मुझ पर दया करो...।" रोते हुये गिड़गिड़ाई आरती, "...मुझ पर नहीं तो मेरे बेटे सौभाग्य पर ही तरस खाओ। मुझे सजा हो गई तो सौभाग्य की परवरिश कौन करेगा—?"

"उसके नानाजी हैं ना। बकौल तेरे...वो दस-बीस साल तक मरने वाले नहीं है। वो सौभाग्य की परवरिश कर लेंगे। उसे पढ़ा-लिखाकर इस काबिल कर देंगे कि वो अपने पैरों पर खड़ा हो सके। फोन पर उन्हें समझाऊंगा कि वो सौभाग्य से नफरत ना करें और उसे अपने बुढ़ापे का सहारा समझें। तुझ जैसी नीच औरत पर तरस नहीं खाना चाहिये। तुझे उम्रकैद की सजा मिलेगी। फांसी की सजा होनी भी नहीं चाहिये। जिन्दा रहेगी तो अपने पापों और अपने यार को याद करके खून के आंसू तो बहायेगी। तेरी हकीकत दुनिया के सामने आ ही जायेगी। दुनिया और समाजवालों के साथ तेरा बेटा भी तुझसे नफरत करेगा...तू है भी इसी काबिल। बेशक, तू पुलिस को मेरे बारे में बतलायेगी लेकिन सारे सबूत तेरे खिलाफ होंगे। तुझे बेहोश करके मैं गुमनाम व्यक्ति बनकर पुलिस को फोन कर दूंगा। पुलिस आयेगी और तुझे विशेष की हत्या के इल्जाम में अरेस्ट कर लेगी। तू हद-से-हद पुलिस को मेरा असली नाम और हुलिया बतला सकती है—लेकिन मुझ पर कोई फर्क नहीं पड़ेगा। अपने चेहरे की प्लास्टिक सर्जरी करा लूंगा तो ये चेहरा बदल जायेगा...।"

"ले...लेकिन...मुझे सजा दिलवाकर तुम्हें क्या मिलेगा? क्यों ना हम विशेष की लाश को गायब कर दें? हमारी शादी तो हो ही चुकी है। मैं कसम खाकर बोलती हूं कि तुम्हारी...सिर्फ तुम्हारी बनकर रहूंगी। तन-मन से तुम्हारी सेवा करूंगी। किसी गैर मर्द को आंख उठाकर भी नहीं देखूंगी। सौभाग्य और पापा तुम्हें पसन्द करते ही हैं। तुम पापा की दौलत और प्रोपर्टी पर ऐश करना।

चाहे जितना खर्चा करना, चाहे जो खरीदना। तुम अपने तमाम शौक पूरे करना...मैं रोकूंगी नहीं...नहींऽऽऽ।"

अलफांसे ने रिवॉल्वर फर्श पर फेंक स्टूल पर से पीतल का भारी गुलदान उठाया और फिर आरती के सिर पर ऐसा प्रहार कर दिया कि वो दो-तीन घन्टे बेहोश तो रहे, लेकिन मरे नहीं।

उसने पहले से ही हथेलियों पर स्किन कलर के पतले दस्ताने चढ़ाये हुये थे—सो उसके फिंगर प्रिंट्स ट्रेस होने का प्रश्न ही नहीं उठता था। वो प्राण त्याग चुके विशेष के करीब पहुंचा और उसके दायें हाथ में गुलदान को ऐसे फंसा दिया कि लगे कि उसने ही आरती के सिर पर प्रहार किया था।

फिर उसका इरादा रिवॉल्वर और नोटों की गड्डियों पर बेहोश आरती के फिंगर-प्रिंट्स ट्रेस करने का था, लेकिन गड़बड़ी हो गई।

कोई सुईं-सी उसकी गर्दन के पिछले हिस्से में चुभी, जिसे निकालने की नाकाम चेष्टा करते हुये वो पलटा तो सोनू के दर्शन हुये।

सोनू ने दायें हाथ से हैन्डीकैम पकड़ा हुआ था और बायें हाथ में प्लास्टिक की वो गन थी, जिससे बेहोशी की दवा से भींगी सुईं चली थी।

अलफांसे सोनू की तरफ बढ़ा भी...लेकिन उस तक पहुंचने से पहले ही भरभराकर गिरा और बेहोश हो गया।

होश में आया तो वो पुलिस स्टेशन के लॉकअप में बन्द था और बाहर दो दर्जन हथियारों से लैस पुलिस वाले तैनात थे।

मोहनलाल नाम के इन्सपेक्टर ने उसे अलफांसे के नाम से सम्बोधित करते हुये बतलाया कि किसी ने फोन करके पुलिस को बतलाया था कि इन्टरनेशनल क्रिमिनल अलफांसे ने अमरकान्त बनकर पहले आरती के साथ शादी की और फिर आरती के प्रेमी विशेष को मारकर आरती को भी गुलदान से बेहोश कर दिया। फोनकर्ता ने हैन्डीकैम से फिल्म बना ली थी और नशीली सुईं से अलफांसे को बेहोश करके कानून या पुलिस की मदद करने के लिये हैन्डीकैम भी घटनास्थल पर छोड़ दिया था।

अलफांसे को प्लान फेल होने या अपने गिरफ्तार होने का अफसोस नहीं हुआ—क्योंकि उसे स्वयं पर पूरा विश्वास था कि वो जल्दी ही आजाद हो जायेगा और प्लास्टिक सर्जरी से नया चेहरा हासिल कर लेगा तथा नाम बदलकर और सलमा से शादी करके नई जिन्दगी की शुरूआत करेगा—लेकिन वो ये नहीं सोच पा रहा था कि सोनू ने उसके साथ क्या खेल खेला था और क्यों खेला था?



होश में आते ही माधवी उठी और बुदबुदाई, "मुझे किसी भी तरीके से यहां से निकलना होगा। अगर वो सनकी अमित शाह वापिस लौट आया

तो...गड़बड़ी हो जायेगी। वो मेरे साथ जबरदस्ती शादी करेगा और फिर मेरे साथ ना जाने कैसी बदसलूकी करेगा...।"

हॉल का दरवाजा बहुत मजबूत और लॉक्ड था। पूरे जोर लगाकर भी वो दरवाजा नहीं खोल सकी—खोलना तो क्या...उसे हिला भी नहीं सकी।

दो खिड़कियां थीं—लेकिन वो भी बहुत मजबूत थीं और बाहर की तरफ से बन्द थीं।

कई रोशनदान भी थे—लेकिन वो काफी ऊंचाई पर थे और उन पर मजबूत लोहे की जालियां भी फिट थीं।

"हे भगवान...अब क्या होगा मेरा...?" वह रूआंसी-सी हो चली, "...वो कमीना आता ही होगा। कौन बचायेगा मुझे उससे? मेरी मदद के लिये ऐसे ही दौड़े चले आओ कृष्ण मुरारी, जैसे द्रोपदी की लाज बचाने को नंगे पांव दौड़े चले आये थे। अगर स्वयं नहीं आ सकते तो...अपने किसी बन्दे को ही मेरा मददगार बनाकर भेज दो...।"

तभी बाहर किसी के कदमों की आहट उभरी तो माधवी का दिल धाड़-धाड़ करके बज उठा। पसीने से नहा उठी वो और इधर-उधर नजरें दौड़ाने लगी।

पीतल के दो फुट लम्बे गुलदान पर नजर पड़ी उसकी। बासी व सूख चले फूलों को निकालकर फेंका उसने और गुलदान को उठाकर दरवाजे के करीब पहुंच गई। दरवाजे की ओट में होकर गुलदान को दोनों हाथों से कसकर सिर से भी ऊपर उठा लिया।

"हम शादी का जोड़ा, मंगल-सूत्र, सिन्दूर, चूड़ियां और ज्वैलरी ले आये हैं माधवी डार्लिंग। शादी के मन्त्रों वाली डी०वी०डी० भी लाये हैं। हवन-कुन्ड नहीं मिला। कोई बात नहीं। फर्श पर दो-चार लकड़ियां जलाकर फेरे ले लेंगे...।"

दरवाजा खुला और सामान की चार पोलीथीन लिये हुये अमित शाह भीतर प्रविष्ट हुआ और माधवी ने उसके सिर पर गुलदान से भरपूर प्रहार कर दिया...तड़ाक...।

पहले पोलीथीन गिरी, फिर अमित शाह भी फर्श पर लम्बलेट हो गया।

गुलदान को फेंककर माधवी दरवाजे से निकलकर गिरती-पड़ती दौड़ी।

कार के करीब पहुंचकर वो रुकी और झुककर तथा घुटनों पर हथेलियां रखकर हांफने लगी।

कार का दरवाजा खोलना चाहा, लेकिन वो लॉक्ड था।

"हे भगवान...चाबी नहीं है। ये फार्म हाउस ना जाने कहां पर है? लेकिन घने जंगल में है। यहां से मुम्बई ना जाने कितनी दूर होगी? कितनी दूर तक

पैदल दौड़ूंगी? रास्ते में जंगली जानवर, चोर, लुटेरे और डाकू भी तो मिल सकते हैं। क्या करूं मैं—?"

"अमित शाह के पास कार की चाबी होगी। चाबी लेकर आ और कार में बैठकर चलती बन...।"

"लेकिन...।"

"तूने बहुत जोर से गुलदान मारा। अगर वो मरा भी नहीं होगा तो...कई दिनों तक होश में तो आयेगा नहीं। कोमा में भी जा सकता है वो। सोच मत—देर मत कर। चाबी ला और यहां से निकल ले—।"

अपने दिमाग की बात मानकर वो वापिस फार्म हाउस के हॉल में पहुंची।

अमित शाह निस्चेष्ट पड़ा था।

वो झुकी और उसकी जेबों की तलाशी लेनी।

अचानक ही बहुत जोरों से चींखी वो।

अमित शाह दबाकर छोड़े गये स्प्रिंग की मानिन्द ही उठा और उसे दबोचकर हंसने लगा।

उसका खून से सना चेहरा बहुत ही खूंखार व डरावना दिखलाई पड़ रहा था।

"तू क्या सोच रही थी...गुलदान के प्रहार से हम मर जायेंगे? बेहोश हुये थे, लेकिन होश में आ गये। अब हमारी शादी होगी। फिर सुहागरात और फिर हनीमून...।"

"न...नहीं...।"

"तेरे नहीं कहने से कुछ नहीं होगा। आज तुझे हमारी धर्मपत्नी बनने से कोई माई का लाल नहीं रोक सकता। माई का लाल तो क्या...भगवान भी नहीं रोक सकता...।"

"इतने बड़े बोल नहीं बोला करते ओये पागल के बच्चे...।"

"भा...भाई...!" केशव को देख माधवी खुश हो गई—जबकि अमित शाह आंखें सिकोड़कर बोला—"केशव पण्डित तुम...?"

"हां, मैं...।" दरवाजे से भीतर कदम रखकर बोला केशव, "...तुझ जैसे पागल से निपटने के लिये भगवान जी को पधारने की आवश्यकता नहीं—उनका ये मामूली बन्दा ही बहुत है...।"

बला की फुर्ती के साथ कोट की जेब से छुरी निकालकर अमित शाह ने माधवी के गले पर रख दी और हिंसक भाव से बोला, "...आज माधवी हमारी धर्मपत्नी बनकर ही रहेगी। हमारा मिलन होकर ही रहेगा। हमें मालूम है कि माधवी तेरे गुरु रमाकान्त की बेटी और तेरी धर्मबहन है। तू इसकी हत्या होते नहीं देख सकता। उधर अटैच्ड बाथरूम है। उसके भीतर जा और दरवाजा बन्द कर ले। हम बाहर से कुन्डी लगा देंगे और वो लाल बटन दबा

देंगे। लाल बटन के दबते ही बाथरूम में जहरीली गैस भरेगी और तेरा राम नाम सत्य हो जाएगा। उस फ्रिजर में हमारी धर्मपत्नी की सिर कटी लाश है। तेरी लाश को भी उस फ्रिजर में ठन्डा करेंगे और फिर टुकड़े-टुकड़े करके जंगल में फेंक देंगे। चल, जल्दी कर...बाथरूम के भीतर जा—वरना हम दिल पर पत्थर रखकर माधवी का गला काट देंगे...।"

तभी अप्रत्याशित घटना हुई—

केशव ने कोट की जेब से रिवॉल्वर निकालकर ट्रिगर दबा दिया...धांय।

सुहागिन स्त्री माथे पर जहां बिन्दिया लगाती है, वहीं अमित शाह के माथे में गोल सूराख हुआ। धुएं की लकीर के साथ खून की पिचकारी निकली और इसी के साथ बिना चींखे और कराहे अमित शाह पीछे की तरफ फर्श पर जा गिरा।

"भ...भाई...!' माधवी दौड़कर केशव के सीने से जा लगी—मारे उत्तेजना के उसका जिस्म थरथरा रहा था।

"रिलेक्स...!" केशव उसकी कंपकंपाती पीठ पर हथेली फिराते हुये बोला, "वो मर चुका है...।"

"लेकिन...मुझे विश्वास नहीं हो रहा है कि उस सनकी इन्सान से छुटकारा मिल चुका है...हे भगवान! आप नहीं आते तो...लेकिन तुम यहां कैसे आ गये भाई...?"

"प्रदीप जैन नाम के एक आदमी ने तुम्हें किडनेप होते देखा था। वो तुम्हें पहचानता था और अमित शाह को भी पहचानता था। पुलिस स्टेशन जाकर उसने अनिल यादव को सारी बातें बतलाईं। अनिल ने मुझे फोन किया। राजन तो यहां नहीं है। उसके किसी दोस्त का एक्सीडेन्ट हो गया, जोकि शिवपुरी का रहने वाला है—राजन शिवपुरी गया है। मैं और श्वेता, गुरुजी और अनिल यादव के साथ पुलिस वाले भी तुम दोनों की तलाश में निकले। इत्तफाक से मैंने अमित शाह को कार में देखा तो उसका पीछा किया। रास्ते में पंक्चर हो जाने पर मुझे स्टपनी बदलनी पड़ी। लेकिन शुक्र है कि मैं सही वक्त पर यहां पहुंच गया। लेकिन मेरे हाथों अमित शाह का मर्डर हो गया। हालत ही ऐसे थे कि मुझे गोली चलानी पड़ी। अमित शाह को नहीं मारता तो कोई ना कोई अनर्थ हो जाता। कानून से बचना है—इसलिये मैं इसकी लाश को ठिकाने लगा दूंगा। तुम ऐसा करो कि अमित शाह की गाड़ी लेकर चली जाओ।"

"नहीं...हम दोनों साथ चलेंगे ना...भाई...।"

"नहीं...मुझे अमित शाह की लाश को ठिकाने लगाने में वक्त लग सकता है। गुरुजी मेरे घर पर हैं। उनके साथ-साथ सोफी, श्वेता और चांदनी भी तुम्हारे लिये चिन्तित हैं। तुम बहादुर लड़की हो। अकेली यहां से निकल सकती हो। तुम्हें बाहर निकलकर राइट हैन्ड यानि पूरब दिशा की तरफ बढ़ना

है। दस किलोमीटर चलकर हाईवे आ जायेगा और वहां से तुम्हें मुम्बई पहुंचने में कोई दिक्कत नहीं होगी। चलो, तुम्हें बाहर तक छोड़ देता हूं। फिर सोचूंगा कि इस अमित शाह की लाश का क्या करना है...?"



दोस्त के एक्सीडेन्ट का बहाना करके राजन शिवपुरी आया था। महाकालेश्वर मन्दिर के बूढ़े पुजारी भोले बाबा ने स्वीकार किया कि पन्द्रह अगस्त के रोज उसने एक युगल जोड़े की शादी करवाई थी और उसके बेटे ने उस शादी की फ़ोटो खींची थी। राजन ने पुजारी को ग्यारह सौ रुपये दिये और उसके बेटे कमल से मिलने की इच्छा प्रगट की।

भोले बाबा ने फोन पर अपने बेटे कमल से बात की और उसे मन्दिर पर चले आने को बोल दिया—।

कोई पच्चीस वर्षीय कमल घन्टेभर पश्चात् आ गया। राजन ने भोले बाबा की तरह उसे भी बतलाया कि चांदनी उसकी बीवी है और उसने गैर कानूनी तरीके से दूसरी शादी की है। राजन ने कमल को दस हजार रुपये देकर कहा कि वो चांदनी और रॉकी की शादी वाली तस्वीरें तैयार करके दे दे—ताकि वो अपनी बेवफा बीवी से अदालत के जरिये तलाक ले सके।

कमल ने कहा कि पर्यटन स्थल होने के कारण शिवपुर में लैब हैं और घन्टेभर में ही तस्वीरें तैयार करके दे देगा।

कमल ने अपना वादा निभाया भी और घन्टेभर में ही दो दर्जन तस्वीरें लाकर दे दीं।

तस्वीरें चांदनी और रॉकी की शादी की ही थीं—जिन्हें देख राजन के सीने पर सांप से लोटने लगे।

दिल में हूक-सी उठी और आंखें गीली होने लगीं। लेकिन उसने फिर स्वयं को सम्भाला और बुदबुदाकर बोला—"एक बेवफा और नीच औरत के लिये कैसा शोक करना राजन...?"

उसने पुजारी बाबा और कमल को धन्यवाद दिया और फिर होटल शिवम पहुंचा।

उसने होटल मैनेजर हरीश नेपाली को अपना असली परिचय दिया तो हरीश नेपाली ने उसका आदर-सत्कार किया।

राजन ने चांदनी और रॉकी की शादी वाली तस्वीरें उसके सामने रख दीं और बोला, "ये मेरी बेवफा बीवी चांदनी है मैनेजर साहब।"

"हे...पशुपति भगवान...क्या कलियुग आ गया है—?" हैरानी व अफ़सोस के साथ ही बोला हरीश नेपाली, "आप जवान, हैन्डसम और खूबसूरत हैं। ऊपर से पण्डित जी जैसे मशहूर आदमी के असिस्टेन्ट भी हैं। पण्डित जी

के साथ अखबारों में आपकी भी फोटो छप चुकी हैं। आप टी०वी० पर भी आते रहते हैं। आपके मुकाबले में रॉकी तो कुछ भी नहीं था। फिर भी आपकी धर्मपत्नी ने आपके साथ बेवफाई की और रॉकी के साथ शादी की। उनका दिमाग खराब तो नहीं हो गया है शाब?"

"रॉकी चांदनी का पहला प्यार...पहला प्रेमी है मैनेजर साहब। आपने सुना ही होगा कि औरत मरते दम तक भी अपने प्रेमी को नहीं भूल पाती। खैर, वो दोनों आपके होटल में सुहागरात मनाने आये थे। उनके बारे में कुछ बतलाइये मुझे...।"

"तब ऑफ शीजन चल रहा था। शारा होटल खाली पड़ा था। मैंने वेटर बहादुर थापा और रशोइये शंकर को छोड़कर बाकी स्टाफ की छुट्टी कर दी थी। मैंने उन दोनों शे कहा था कि सारा होटल खाली पड़ा है—वो अपनी पशन्द शे कोई भी कमरा ले शकते हैं। मैं तो काउन्टर पर ही रहता था। उनकी शेवा में बहादुर ही लगा रहा था। वो ही उनके बारे में ज्यादा शे ज्यादा जानकारी दे शकता है...।"

"बहादुर थापा को बुलाइये ना मैनेजर साहब...।"

हरीश नेपाली ने डोर बैल बजाकर एक वेटर को बुलाया और बहादुर थापा को बुलाकर लाने को कहा। थोड़ी देर पश्चात् ही नेपाली मूल का, छोटी-छोटी आंखों और छोटे कद वाला बहादुर थापा आ गया। हरीश नेपाली ने उसका राजन से परिचय कराया और फिर चांदनी व रॉकी के बारे में बतलाने को कहा।

बहादुर थापा ने राजन को चांदनी व रॉकी के बारे में काफी बातें बतलाईं।

खिन्न मन से राजन ने दोनों का आभार व्यक्त किया और कार में सवार होकर मुम्बई के लिये चल दिया। चार-पांच किलोमीटर ही चला था कि डैश बोर्ड पर रखा फोन कुनमुनाने-सा लगा।

गाड़ी को सड़क किनारे रोककर राजन ने फोन उठाया और उसकी स्क्रीन पर उभरते नम्बर को देखा।

पहले तो वो नम्बर अजनबी लगा, लेकिन फिर याद आया कि उक्त नम्बर उस रहस्यमयी नारद का है, जिसने उसे चांदनी व रॉकी के सम्बन्धों के बारे में बतलाया था।

"है...हैलो...।"

"हाय...परम मित्र...क्या हाल हैं तुम्हारे? नारद बोल रहा हूं मैं...।"

"हां...मैं जानता हूं...।"

"तुम्हें मैंने इधर-उधर जाकर इन्वेस्टीगेशन करते...पूछताछ करते हुये देखा। अब तो तुम्हें विश्वास हुआ कि तुम्हारी बीवी चांदनी बेवफा है और उसका अपने ही मौसेरे भाई रॉकी के साथ चक्कर चल रहा है...?"

"...।" राजन चुप।

बोले भी तो क्या बोले?

"चांदनी इस वक्त भी अपने यार रॉकी के साथ है...।"

"क्या बकते हो? वो इस वक्त रॉकी के पास कैसे हो सकती है भला? इस वक्त तो उसे घर पर होना चाहिये...।"

"भला मैं तुमसे झूठ क्यों बोलूंगा परम मित्र? सोफिया को बुखार है। चांदनी घर का सामान खरीदकर लाने के बहाने ही घर से निकली है। उसने सामान के साथ रॉकी के लिये गिफ्ट भी खरीदा है। आज रॉकी का हैप्पी बर्थ-डे है ना? दोनों हैप्पी बर्थ-डे मना रहे हैं। फिर सुहागदिन भी मनायेंगे। विश्वास नहीं होता तो अभी रॉकी के बंगले पर जाकर देख लो। तुम्हें उन दोनों को रंगे हाथों पकड़ना भी चाहिये। अपनी आंखों से उन दोनों की गन्दी करतूत देखनी भी चाहिये। वैसे देरी मत करो। चांदनी ज्यादा देर तक वहां नहीं रुकेगी। उसे घर वापिस भी लौटना है।"

"लेकिन तुम कौन हो और...।"

कथित नारद ने कोई जवाब दिये बिना ही फोन काट दिया।

राजन ने फोन को डैश बोर्ड पर फेंका और जबड़ों को चक्की के पाटों की मानिन्द ही कसकर एक्सीलेटर पर पैर का इतना दबाव बढ़ाया कि कार मानो हवा नहीं, आन्धी से ही बात करने लगी हो।

दो घन्टे पश्चात् वो रॉकी के बंगले पर था।

मेन गेट बन्द था, लेकिन एक खिड़की खुली हुई थी—उसी से राजन भी अन्दर प्रविष्ट हुआ।

हॉल में एक बड़ी सी मेज पर आधा कटा केक रखा हुआ था, जिस पर बुझी हुई मोमबत्तियां लगी हुई थीं।

नाश्ते की प्लेटों के साथ विदेशी शराब की एक आधी भरी हुई बोतल भी रखी हुई थी।

लेकिन चांदनी और रॉकी कहां पर थे?

"ये तो तुम मेरे साथ अन्याय कर रही हो चांदनी...मेरी जान...हिच...।" शराब के नशे में डूबी वो आवाज एक कमरे से उभरी थी, जिसका दरवाजा खुला था, सिर्फ पर्दा गिरा हुआ था, "जी भरा भी नहीं और तुम झटपट से कपड़े पहनकर चलने को तैयार हो गई।"

"सोफिया को बुखार है। मैं सामान खरीदने के बहाने से ही आई थी", वो आवाज चांदनी की थी, "...घर से निकले हुये पूरे चार घन्टे हो गये राजा। जब तक घर पहुंचूंगी...पांच घण्टे हो चुके होंगे। बहाने बनाने पड़ेंगे। बोल दूंगी कि सारा सामान खरीदने के लिये कई बाजारों और दुकानों पर जाना पड़ा। एक सहेली मिल गई थी—उसके पति को बुखार था और वो उसके लिये दवा

खरीदने आई थी—इन्सानियत के नाते मुझे उसके साथ उसके पति को देखने जाना पड़ा। कई बहाने बनाने पड़ेंगे और सोफिया को बेवकूफ बनाना पड़ेगा...।'

"जैसे अपने खसम को बना रही हो...।"

"राजन को मेरा खसम मत कहो रॉकी! ठीक है कि उसके साथ मेरी शादी हुई थी। लेकिन जब मुझे मालूम पड़ा था कि वो बाप बनने में सक्षम नहीं है तो वो मेरे मन से उतर गया था। तुम मिले तो मैं तन और मन से तुम्हारी हो गई। वैसे भी मेरे साथ पहली सुहागरात तुम्हीं ने तो मनाई थी। मुझे सोलह वर्ष की उम्र में ही तुमने लड़की से औरत बना दिया था। मुझे वो सुख दिया था मानो मैं स्वर्ग में ही पहुंच गई थी। फिर तो तुम्हारी दीवानी हो गई थी और एक दिन भी तुम्हारे बिना रह पाना मुहाल हो गया था। वैसे भी हमने शिवपुरी में शादी कर ली है। मेरे असली पति तो तुम ही हो...।"

"तभी मुझे यूं प्यासा छोड़कर जा रही हो तुम चांदनी।"

"अभी तुम्हारे साथ सुहागदिन मनाया तो है यार! लेकिन तुम्हारा जी है कि भरता ही नहीं है।"

"तुम ऐसी लाजवाब चीज हो जानेमन कि एक बार में पेट भरता ही नहीं। प्लीज, कपड़े उतारकर बिस्तर पर आ जाओ ना। एक बार फिर से...।"

"नहीं, अभी तो मुझे जाना ही होगा...।"

"तुम्हारे यार का बर्थ-डे है...बेचारे का दिल क्यों तोड़ती हो...?" कमरे में प्रविष्ट होकर बोला राजन, "...ना जाने कितनी बार इसके साथ हवस का खेल, खेल चुकी हो—एक बार और इसे खुश कर दो ना...।"

"तु...तुम...!" चांदनी का चेहरा फक्क पड़ गया और पेशानी पर पसीने की बुन्दकियां उभर आईं।

बेड पर सिर्फ अन्डरवियर पहने बैठा रॉकी भी चौंका। दोनों की दशा ऐसी कि मानो सांप सूंघ गया हो और काटो तो खून नहीं।

"मैं...मैं बाजार से सामान खरीदने आई थी...।" स्वयं को किसी तरह सम्भालकर बोली चांदनी, "रास्ते में रॉकी भाई मिल गये। बोले कि मुम्बई में बिजनेस शुरू करने जा रहे हैं और किराये पर बंगला लिया है। मुझे बंगला दिखलाने ले आये थे...।"

चटाक...।

राजन ने ऐसा थप्पड़ जड़ा कि चांदनी घुटी-घुटी-सी चींख के साथ फर्श पर जा गिरी और राजन को फटी-फटी-सी नजरों से देखने लगी।

क्रोधातिरेक थर-थर कांपते हुये नफरत और हिकारत के साथ बोला राजन—"ये त्रिया चरित्र किसी और को दिखलाना हराम की बच्ची, तेरी सारी हकीकत जान चुका हूं मैं। भला हो उस गुमनाम शख्स नारद का...जिसने

मुझे तेरे बारे में सबकुछ बतला दिया था। मैंने तेरे हाथ की लिखी डायरी पढ़ी। डॉक्टर विश्वास, तेरी मौसेरी बहन विभा से बात की। शिवपुरी से ही आ रहा हूं। होटल मैनेजर हरीश नेपाली, बहादुर थापा, पुजारी बाबा और उसके बेटे कमल से मिला। कमल से तुम दोनों की शादी की तस्वीरें भी लेकर आया हूं—जो तेरे खिलाफ पुख्ता सबूत हैं। पण्डित जी, सोफिया दीदी, आशीर्वाद, करतार सिंह, श्वेता, माधवी, अलफांसे, सलमा और बाकी उन लोगों को तेरा असली रूप दिखलाऊंगा, जो तुझे देवी मानते हैं...।"

"घबराने या परेशान होने की जरूरत नहीं चांदनी...।" अचानक ही चूहे से शेर बनकर बोला रॉकी, "इसकी बातों से ये बात साफ हो चुकी है कि हमारे बारे में सबकुछ जान चुका है ये। इसके पास सबूत और गवाह भी हैं। बहाने बनाने से कोई फायदा नहीं! जो होता है...अच्छा ही होता है। कब तक चोरी-छिपे मिलते रहते हम? अब तुम इससे तलाक लो और हमेशा के लिये मेरी हो जाओ। शिवपुरी में तो हमने चोरी से शादी की थी—लेकिन अब खुले आम शादी करके साथ-साथ रहेंगे और जी भरके ऐश करेंगे। डरने या शर्मिन्दा होने की जरूरत नहीं। दुनिया वालों की नजरों में हम दोनों चाहे जो हों, लेकिन हम दोनों एक-दूसरे की जिन्दगी हैं और एक-दूजे के बिना नहीं रह सकते। भगवान ने हमें एक-दूजे के लिये ही बनाया है। वो तो गलती से तुम्हारी शादी इस आदमी के साथ हो गई थी। लेकिन तुम मेरी बीवी हो और मैं तुम्हारा पति हूं। उठो और दिलेरी के साथ इस आदमी का सामना करो...।"

गिरगिटनी की मानिन्द ही रंग बदलकर उठी चांदनी और बेड पर पहुंच गई। उसने रॉकी की पीठ पीछे पहुंचकर उसके गले में मखमली बांहें डालीं तथा उसके गाल-से-गाल मिलाकर बेशर्मी के साथ बोली—"जब तुम सबकुछ जान ही चुके हो तो फिर मुझे भी सच्चाई कबूल कर लेनी चाहिये। वैसे भी सच्चाई कबूलने में ही मेरी और मेरे दिलबर रॉकी की भलाई है। ठीक है कि तुमसे शादी होने पर मैं तुम्हें चाहने और प्यार करने लगी थी—लेकिन जब मुझे पता चला कि तुम बाप बनने के काबिल नहीं रहे हो तो...मेरे दिल से उतर गये थे। रॉकी दोबारा मेरी जिन्दगी में आया तो मैं फूल-सी खिल उठी थी। वैसे भी औरत अपने पहले प्यार को कभी नहीं भूल सकती। रॉकी ने मुझे वो अनमोल तोहफा दिया है, जो तुम नहीं दे सके राजन। मेरी कोख में रॉकी का ही प्यार पल रहा है। मैं इसके ही बच्चे की मां बनने वाली हूं। हां, रॉकी के साथ सोकर ही मैं गर्भवती हुई हूं।"

"चांदनी...!" मुट्ठियों को भींचे हुये गुर्राया राजन, "तुम इतनी बेशर्म और जलील किस्म की औरत होगी—मैंने कल्पना भी नहीं की थी। माना कि मुझमें थोड़ी कमी आ गई थी तो इलाज के बाद ठीक हो सकता था मैं—तुम मेरे बच्चे की मां बन सकती थी...।"

"शायद बन जाती—लेकिन जो हुआ, अच्छा ही हुआ। तुममें और रॉकी में बहुत फर्क है। सेक्स के मामले में रॉकी तुमसे स्ट्रांग है। तुम सिर्फ खच्चर हो, जबकि रॉकी दौड़ में कभी ना थकने वाला घोड़ा...।"

"चांदनी SSS!"

"चींखो मत! बिस्तर पर रॉकी से मुझे जो सुख मिलता है, वो तुमसे कभी नहीं मिला।"

"ठीक ही बोल रही है मेरी जान...।" रॉकी ने थोड़ा सिर घुमाकर चांदनी का गाल चूमा और फिर राजन से बोला, "...औरत के साथ सुहागरात तो कोई भी मना सकता है लेकिन औरत को अपना दीवाना बनाने की खूबी हर किसी में नहीं होती। मैं मर्द हूं—तभी तो चांदनी मेरी दीवानी है। तू इस मामले में फैल है। पता नहीं कि तू मर्द है भी कि नहीं...।"

"रॉकी SSS!" चींख-सा उठा राजन, "अपनी जुबान को लगाम दे हरामजादे...।"

"चींख मत! जोर से चींखने पर कोई मर्द नहीं हो जाता। हिजड़े भी जोर से चींख सकते हैं...।"

"रॉकी...!" चींखकर राजन ने कोट की जेब से पिस्टल निकाली और रॉकी पर फायर झोंक दिया...धांय।

"आह SSS!" सीने पर दिल वाले स्थान पर हथेली रखकर चींखा रॉकी और फिर बेड से नीचे गिरकर बुरी तरह तड़पने लगा।

"रॉकी...रॉकी...!" चादनी भी बेड से उतरी और रॉकी को झिंझोड़ते हुये चींखी, "ये...ये क्या हो गया? नहीं... तुम मुझे यूं बीच मझधार में छोड़कर नहीं जा सकते। मैं तुम्हारे बच्चे की मां बनने वाली हूं। तुमहारे बिना नहीं जी सकूंगी मैं। आंखें खोलो...भगवान के लिये...।"

रॉकी ने एक हिचकी-सी ली और फिर उसका सिर एक ओर को लुढ़क गया।

"रॉ...रॉकी...।" चींखी चांदनी—उसने रॉकी के सीने पर कलाइयां पटक कर चूड़ियां तोड़ डालीं और फूट-फूट कर रोने लगी। अचानक ही उसकी रुलाई रुकी। आंखों में आंसुओं की बजाय खून के कतरे से भरे हुये वो उठी और चिल्ला-चिल्ला कर बोली, "राजन...कुत्ते...कमीने...नाशपीटे...ये क्या किया तूने? मेरे प्यार...मेरे पति को मार दिया तूने। छोडूंगी नहीं मैं तुझे कुत्ते...तेरा खून पी जाऊंगी...।"

बर्दाश्त नहीं कर पाया राजन और वो चांदनी पर फायरिंग करता चला गया।

पांच गोलियां खाकर चांदनी फर्श पर गिरी और अपने खून से ही नहाते हुये तड़पने लगीं।

तभी रॉकी का नौकर शिवालिक दबे पांव कमरे में प्रविष्ट हुआ और उसने पीछे से राजन के सिर पर लोहे की रॉड का ऐसा प्रहार किया कि राजन भरभराकर गिरा और अचेत हो गया।

उसे जब होश आया तो वो पुलिस स्टेशन के लॉकअप में बन्द्र था और बाहर नीम के वृक्ष तले बैठे पुलिस इन्सपेक्टर को शिवालिक बतला रहा था कि उसकी आंखों के सामने ही राजन ने चांदनी व रॉकी को गोलियां मारकर कत्ल किया है।

❑❑❑
❑❑❑

"माधवी...मेरी बच्ची...!" केशव के बंगले पर मौजूद रमाकान्त ने माधवी को बांहों में भर लिया और रोते हुये बोला, "जब से मालूम पड़ा कि अमित शाह नाम का एक पागल आदमी तुम्हें किडनेप करके ले गया है...मेरी जान निकली जा रही थी। केशव के साथ तुम्हारी तलाश में निकला भी था, लेकिन तबियत खराब हो गई और केशव ने जिद करके वापिस भेज दिया था...।"

"तुम ठीक तो हो ना माधवी...?" श्वेता के साथ करीब आई सोफिया ने पूछा।

"भगवान का शुक्र है कि मैं सही सलामत हूं। ऐन वक्त पर केशव भाई ने वहां पहुंचकर मेरी हेल्प की। अमित शाह तो पागल था। जबरदस्ती मेरे साथ शादी करने की चेष्टा कर रहा था...। वो मुझे अपने फार्म हाउस पर बन्दी बनाकर मुम्बई में शादी का सामान खरीदने आया था। भाई ने देखा और उसका पीछा करके फार्म हाउस तक पहुंचे। कम्बख्त ने मेरे गले पर चाकू रख दिया था...।"

"हाय राम...!" श्वेता कौतूहलता में पड़ी हुई बोली—"तो फिर आप कैसे बचीं?"

"केशव भाई के होते हुये भला कोई मेरा बाल भी बांका कर सकता था? भाई ने उसे गोली मार दी थी। वो पागल मर गया...।"

"तो केशव कहां है—वो तुम्हारे साथ नहीं आया...?"

"भाई बोले कि वो अमित शाह की लाश को ठिकाने लगाकर आयेंगे...।"

"ये...ये क्या कह रही हो तुम माधवी...?" सोफिया चौंककर बोली, "केशव ने ऐसा कहा कि वो अमित शाह की लाश को ठिकाने लगाकर आयेंगे...?"

"हां। वो बोले थे कि कानून से बचने के लिये लाश को ठिकाने लगाना पड़ेगा...।"

"नहीं...केशव ऐसा नहीं कह सकता...ऐसा नहीं कर सकता...।"

"मैं झूठ थोड़े ही बोल रही हूं भाभी...।"

"केशव को लाश ठिकाने की जरूरत नहीं थी माधवी। सेल्फ डिफेंस या किसी की जान बचाने के लिये किसी मुजरिम को मारा जा सकता है। केशव कानून के पण्डित हैं। उन्हें अमित शाह की हत्या के लिये कोई सजा नहीं होनी थी—वो अपना बचाव कर लेते। मुझे किसी गड़बड़ी की बू आ रही है। मुझे बात करनी होगी केशव से...।" कहने पर सोफिया ने मेज पर से मोबाइल फोन उठाया और फिर केशव का नम्बर मिलाने लगी।

"हैलो, सोफी...।"

"तुम कहां हो केशव?"

"मैं अमित शाह के फार्म हाउस की तरफ जा रहा हूं सोफी, पूछताछ करने पर पता चला है कि माधवी को अमित शाह किडनेप करके अपने फार्म हाउस पर ले...।"

मुख से सिसकारी-सी निकालकर बोली सोफी, "ये...ये तुम क्या कह रहे हो केशव? थोड़ी देर पहले ही माधवी यहां लौटी है और...।"

"क्या? माधवी घर पहुंच गई?"

"हां, पहुंच गई, लेकिन उसका कहना है कि अमित शाह ने उसके गले पर चाकू लगा दिया था तो तुमने अमित शाह को गोली मार दी...।"

"मैंने?" दूसरी तरफ से केशव चौंककर बोला, "ये...ये क्या कह रही हो तुम सोफी? मैं तो अभी अमित शाह तक पहुंचा भी नहीं हूं...।"

"ये...ये क्या कह रहे हो तुम भाई...?" स्पीकर फोन से निकलती केशव की आवाज को सुन रही माधवी सोफिया से फोन लेकर बोली, "...तुम अमित शाह के फार्म हाउस पर आये थे...।"

"मैं...?"

"हां। तुमने मुझे बचाने के लिये अमित शाह को गोली मारी...।"

"मैंने...?"

"हां , फिर बोले कि कानून से बचने के लिये अमित शाह की लाश को ठिकाने लगाना पड़ेगा...।"

"ये क्या बोले जा रही हो तुम माधवी? मैं अभी मुम्बई में ही हूं। मैं घर वापिस लौट रहा हूं। तुमसे सारी बातें मालूम करूंगा। फिर सोचूंगा कि आगे क्या करना है...।"

फिर केशव ने सोफिया से बात की और उसे कहा कि माधवी को नाश्ता या खाना खिलाये और यदि वो जख्मी हो तो उसकी मल्हम-पट्टी करे।

माधवी ने खाना खाने से मना कर दिया तो सोफिया ने नौकर मुंशी होशियार चन्द से बोलकर चाय के साथ नाश्ता करवाया।

फिर केशव आ पहुंचा। उसके पूछने पर माधवी सारी बातें बतलाने लगी।

तभी इन्सपेक्टर अनिल यादव आ पहुँचा और उसने हाथ जोड़ कर सभी का अभिवादन किया।

"क्या बात है अनिल भाई...?" केशव उसे ध्यान से, गहरी नजरों से देखते हुये बोला, 'तुम टेंशन में मालूम पड़ रहे हो— व्हाट हैपन?"

"वो...वो...थोड़ी देर पहले ही टी०वी० चैनल पर एक मूवी दिखलाई गई पण्डित जी। फिर एक बच्चा आया और मुझे भी उस मूवी की डी०वी०डी० दे गया। उसे वो डी०वी०डी० किसी बुर्केवाली ने दी थी और पुलिस स्टेशन में पहुंचाने के लिये सौ रुपये भी दिये थे। रास्ते में एक टी०वी० शोरूम के सामने बहुत भीड़ लगी थी, मैंने वहां देखा कि अलग-अलग न्यूज चैनल पर वो ही मूवी दिखलाई जा रही है...।"

"कैसी मूवी है...?"

"आप ही देख लीजिये...।"

केशव ने अनिल यादव से डी०वी०डी० ली और टी०वी० से जुड़े डी०वी०डी० प्लेयर पर चलाई।

मूवी में अमित शाह के फार्म हाउस के दृश्य थे। अमित शाह ने माधवी के गले पर छुरी लगाई और केशव को अटैच्ड बाथरूम में चले जाने को कहा। केशव ने उसके माथे पर गोली मारी और माधवी से कहा कि वो अमित शाह की लाश को ठिकाने लगाकर आयेगा, वो अमित शाह की गाड़ी से घर चली जाये। फिर माधवी के चले जाने पर केशव ने अमित शाह की लाश को कन्धे पर डाला और उसे एक गहरी खाई में फेंक दिया।

फिर केशव लाल रंग की टाटा सफारी में सवार हुआ। वो गाड़ी केशव की गाड़ी जैसी ही थी और नम्बर भी वो ही था।

मूवी देखने पर चिन्तित होने की बजाय केशव मुस्कराया।

"आप मुस्करा रहे हैं पण्डित जी...।" अनिल यादव चिन्तित भाव से बोला, "जबकि मैं परेशान हूं। समझ नहीं पा रहा हूं कि क्या करूं?"

"तुम पुलिस इन्सपेक्टर हो...।" केशव उसका बायां गाल थपथपा कर बोला, "...मूवी के मुताबिक मैं फिलहाल अमित शाह का कातिल हूं। तुम्हारा यही फर्ज बनता है कि मुझे अरेस्ट कर लो...।"

"ये...ये क्या कह रहे हो तुम केशव...?" सोफिया घबराकर बोली, "...वो तुम नहीं हो, वो तुम्हारा कोई डुप्लीकेट है। उसने अमित शाह को मारकर तुम्हें फंसाने की चेष्टा की है...।"

"ये बाद की बातें हैं सोफी! तुमने भी लॉ की डिग्री हासिल की है और कई बार मेरे साथ इन्वेस्टीगेशन पर भी गई हो। मुझे निर्दोष साबित करने की जिम्मेदारी तुम पर...।"

"ले...लेकिन...।"

"डोन्ट वरी! तुम्हारी मदद के लिये राजन और श्वेता तो हैं। अनिल भाई का भी भरपूर सहयोग मिलेगा तुम्हें। समझो कि ये तुम्हारी परीक्षा है। देखना है कि तुम परीक्षा में पास हो पाती हो कि नहीं?"

केशव को अनिल यादव के साथ गये हुये कुछ ही वक्त हुआ था कि दूसरे पुलिस स्टेशन से खबर आ गई कि राजन लॉकअप में कैद है और उस पर अपनी बीवी चांदनी व उसके प्रेमी रॉकी को कत्ल करने का चार्ज लगा है।

□□□
□□□

"कमाल हो गया पटियाला वाले अंकल जी...!"

"की होया निक्के पुत्तर जी...?"

भुने हुये चनों की फंकी मारकर करतार सिंह से बोला आशीर्वाद—"...ये देखिये...ट्रांसमीटर वाली घड़ी। दोनों बिन्दु बतला रहे हैं कि क्रान्ति और सोनू यहीं पर हैं... वाशिंगटन में। काफी समय बाद ऐसा हुआ है कि हम किसी शहर में आये और वो दोनों हमसे ही पहले किसी दूसरे शहर के लिये नहीं निकले। ये हमारे लिये गोल्डन चांस है अंकल जी! हमें अभी दौड़ लगा देनी चाहिये। इससे पहले कि दोनों शिकार उड़न छू हो जायें...उन्हें दबोच लेना चाहिये...।"

"चंगी गल कीती निक्के पुत्तर जी! फौरन ही उन दोनों शैतानों नू फड़ लेते हैं...।"

और फिर आशीर्वाद तथा करतार सिंह होटल से निकले और एक टैक्सी में सवार होकर चल दिये।

रिस्टवाच रूपी ट्रांसमीटर के डायल पर मौजूद दोनों बिन्दु दिशा की जानकारी दे रहे थे।

चारदीवारी से घिरे एक बहुत बड़े मैदान के गेट पर आशीर्वाद ने टैक्सी रुकवाई और बाहर निकलकर करतार सिंह से बोला, "ट्रांसमीटर के मुताबिक वो दोनों इस मैदान के भीतर ही हैं।"

"दोनों ने हमे बहुत तंग कीता वे पुत्तर जी! दोनों नूं बहुत माड़ी मार मारांगे...।"

दोनों गेट से मैदान में प्रविष्ट हुये और शिकारों की तलाश में चहुं ओर नजरें दौड़ाने लगे।

"उधर...उस पेड़ के पीछे...।" फुसफुसाया आशीर्वाद, "ट्रांसमीटर उसी तरफ इशारा कर रहा है...।"

करतार सिंह ने कोट की जेब से पिस्टल निकाल ली और आशीर्वाद के साथ उक्त वृक्ष की तरफ बढ़ा।

बाकी पार्क खाली दिखलाई पड़ रहा था— उन दोनों के सिवाय तीसरा कोई भी दिखलाई नहीं पड़ रहा था।

वृक्ष के पीछे क्रान्ति और सोनू की बजाय दो चीनी मूल के छोटे कद के युवक दिखलाई दिये, जो कि आशीर्वाद और करतार सिंह को देखकर मखौल उड़ाने वाले भाव से ही मुस्कराये।

आशीर्वाद ने दोनों को आग्नेय दृष्टि से घूरा और पूछा—"ऐ...तुम दोनों कौन हो...?"

"मेरा नाम चांगू और ये सांगू। हम दोनों यूं तो महामहीम सिंगही जी के सेवक हैं—लेकिन इस मिशन पर हम क्रान्ति और सोनू जी के अन्डर में काम कर रहे थे। उनके जिस्मों में लगाये गये ट्रांसमीटर्स हमारे जिस्मों में फिट कर दिये गये थे और हम तुम दोनों को इधर से उधर दौड़ा रहे थे...।"

"ऐ की स्टोरी है पुत्तर जी...?"

"थोड़ी-थोड़ी समझ में आ तो रही है पटियाले वाले अंकल जी। ये दोनों हमें इधर-से-उधर दौड़ाते रहे और हम इन्हें क्रान्ति और सोनू समझते रहे।" करतार सिंह को जवाब देने पर लड़के ने चांगू-सांगू से पूछा—

"जब तुम दोनों का मकसद हम दोनों को यहां से वहां भगाना था तो फिर आज तुम दोनों दूसरे शहर की तरफ क्यों नहीं भागे?"

"क्योंकि ये मेरा ऑर्डर था केशव के छोरे...।"

एक दूसरे वृक्ष की ओट से निकली खूबसूरत युवती बोली;

"तुम...?" आशीर्वाद आंखें सिकोड़ कर बोला, "तुम्हारी आवाज तो क्रान्ति जैसी है, लेकिन सूरत उसकी नहीं...।"

"क्रान्ति ही हूं मैं...।" वह गुलाबी होठों पर जहरीली किस्म की मुस्का सजाकर बोली, "मैंने और सोनू ने कानून से बचने के लिये प्लास्टिक स.. से चेहरे बदलवा लिये हैं।"

"लेकिन तूने या सोनू ने सांगू-चांगू के माध्यम से ये गेम क्यों खेला?"

"मुझे और सोनू को एक गेम खेलना था। उस गेम का एक हिस्सा ये था कि तुझे और इस सरदार को बन्धक बनाकर रखा जाये। माफिया किंग वाटसन के जरिये ही तुम दोनों को बन्धक बनाना था लेकिन वाटसन को लाइन पर लाने में वक्त लगना था। मुझे उसकी बेटी जेनी को किडनेप करके इन्डिया पहुंचाना पड़ा। पहले उसके प्रेमी हैरी को बहाना बनाकर इन्डिया भेजा गया। वहां सोनू ने उसे महावीरा के यहां बन्धक बनाकर रखा। हमारा ठिकाना महावीरा का हैडक्वार्टर ही है—इसलिये वाटसन को मेरा साथ देने के लिये मजबूर होना पड़ा। अब तुम दोनों को वाटसन के उस हैडक्वार्टर में बन्धक बनकर रहना पड़ेगा, जहां पर सिक्योरिटी के कड़े बन्दोबस्त हैं...।"

"तू क्या समझती है कि मुझे या अंकल जी को बन्धक बनाने में कामयाब हो जायेगी...?"

"मैं तेरी खूबियों के बारे में जानती हूं लड़के। इसलिये तुझे मजबूर करने के बन्दोबस्त कर लिये थे। वो...उधर देख...पीले रंग का हेलीकॉप्टर उड़ा चला आ रहा है। उसके निचले हिस्से में तेरे गुरु शाओलीन की बीवी सुगामा और बेटी मिसामा बन्धी हुई है। वाटसन के गुन्डे गामापुर गये थे और इन दोनों को किडनेप करके ले आये...।"

इतने में ही पीले रंग का हेलीकॉप्टर करीब आ गया और मैदान के ऊपर स्थिर हो गया।

वास्तव में ही उसके निचले हिस्से में आशीर्वाद के गुरु शाओलीन की बीवी सुगामा और बेटी मीसामा डोरियों के सहारे लटकी हुई थीं।

शर्ट की ऊपरी जेब से एक रिमोट निकालकर बोली क्रान्ति—"उन दोनों के जिस्मों पर बम बन्धे हुये हैं और उन बमों का रिमोट मेरे पास है आशीर्वाद। कोई चालाकी या होशियारी नहीं प्यारे। चुपचाप स्वयं को वाटसन के आदमियों के हवाले कर दो—नहीं तो सुगामा और मीसामा के परखच्चे उड़ा दूंगी...।"

"लेकिन इस बात की क्या गारन्टी है कि सुगामा मां और मीसामा को मुक्त कर दिया जायेगा?"

"मेरी इन दोनों से कोई दुश्मनी नहीं है आशीर्वाद! मैं तुम्हें वचन देती हूं कि तुम दोनों के वाटसन के हैडक्वार्टर पहुंचते ही इन्हें गामापुर पहुंचा दिया जायेगा।"

"हुण की करें पुत्तर जी...?" फुसफुसाया करतार सिंह।

"मजबूरी है अंकल जी...।" आशीर्वाद कन्धों को ढीला छोड़कर बोला, "...मैं मीसामा और मां सुगामा की जान को खतरे में नहीं डाल सकता। रहा प्रश्न बन्धक बनने का...तो मौका मिलते ही आजाद भी हो जायेंगे...।"

तभी क्रान्ति ने मुंह में दो उंगलियां डालकर जोर से सीटी बजाई।

इधर-उधर छिपे वाटसन के हथियारबन्द आदमी बाहर निकले और आशीर्वाद व करतार सिंह की तरफ बढ़ने लगे।

क्रान्ति के होठों पर विजयी किस्म की मुस्कान थिरक उठी।

❑❑❑

❑❑❑

सोफिया की चक्करघिन्नी बनी हुई थी।

एक तो अमित शाह के कत्ल के आरोप में केशव गिरफ्तार हो चुका था। उधर चांदनी और रॉकी के कत्ल के आरोप में राजन गिरफ्तार हो चुका था।

उधर ये खबर आ चुकी थी कि नागपुर में अलफांसे ने आरती नामक युवती के प्रेमी निशेष को कत्ल करके आरती को फंसाने की चेष्टा की थी, लेकिन अलफांसे को ही पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया था।

अचानक ही श्वेता गुप्ता, मुंशी होशियार चन्द, सलमा, माधवी और रमाकान्त गायब हो गये।

उधर कोई ट्रक वाला इन्सपेक्टर अनिल यादव की गाड़ी को जोरदार टक्कर मार गया था और अनिल यादव बेहोशी की दशा में हॉस्पिटल में एडमिट था।

अकेली पड़ चुकी सोफिया की समझ में नहीं आ रहा था कि वो क्या करे—किसकी मदद ले?

फिर मुसीबत का अवतार बनकर सोनू उसके घर आ पहुंचा।

सोफिया ने तो उसे पहचाना ही नहीं—उसने ही अपना परिचय दिया और बतलाया कि उसने और क्रान्ति ने प्लास्टिक सर्जरी से चेहरे परिवर्तित करा लिये हैं।

सोनू ने कोट की जेब से एक हैन्डी कैम निकाला और उसकी नन्ही-सी स्क्रीन दिखलाई तो सोफिया की हालत पहले से भी ज्यादा पतली हो चली।

हैन्डी कैम की स्क्रीन पर आशीर्वाद और करतार सिंह दिखलाई दिये। उन दोनों को कुर्सियों पर बिठाकर चमड़े की पट्टियों से कसकर बान्धा गया था।

दोनों लोहे के मजबूत सींखचों के बने बड़े साइज के पिंजरे के भीतर कैद थे और पिंजरे के बाहर आधुनिक व ऑटोमैटिक हथियारों से लैस दो दर्जन काले सूट वाले युवक तैनात थे।

"केशव ने होशियारी का परिचय देते हुये मेरे और क्रान्ति के जिस्मों में नन्हें-नन्हें ट्रांसमीटर्स फिट करके की होशियारी दिखलाई थी। लेकिन सिंगही साहब को उन ट्रांसमीटर्स के बारे में पता चल गया था। उन्होंने दोनों ट्रांसमीटर्स निकालकर अपने दो आदमियों चांगू-सांगू के जिस्म में फिट कर दिये थे। आशीर्वाद और करतार सिंह मेरे और क्रान्ति के भ्रम में चांगू-सांगू के पीछे लगे रहे। क्रान्ति ने मेरे प्लान पर अमल करते हुये माफिया किंग वाटसन की बेटी जेनी और जेनी के प्रेमी को बड़ी ही चालाकी के साथ इन्डिया भेजा और मैंने दोनों को बन्धक बना लिया। अपनी बेटी जेनी के लिये वाटसन मजबूर हो गया और उसने आशीर्वाद के साथ करतार सिंह को भी अपने यहां बन्धक बना लिया...।"

"लेकिन...तुमने ऐसा क्यों किया?"

हैन्डी कैम को मेज पर रखकर सोनू सोफा चेयर पर पसर गया। उसने पहले लक्की स्ट्राइक ब्रान्ड की सिगरेट सुलगाई और कश मारते हुये बोला, "सिर्फ आशीर्वाद और करतार सिंह को नहीं फंसाया गया बल्कि अलफांसे, राजन शुक्ला और दिमाग के जादूगर केशव पण्डित को भी फंसाया गया है, जानना चाहेगी कि मैंने ये सारे काम कैसे किये?"

सोफिया ने कोई उत्तर तो नहीं दिया लेकिन उसकी हरी आंखों ने चुगली खाई कि वो जानना चाहती थी।

सोनू ने पहले अलफांसे के बारे में बतलाया और जानकारी दी कि अलफांसे के चेले टोनी के बीवी-बच्चों को किडनेप करके और जान से मारने की धमकी देकर अलफांसे के पास भेजा गया था। जयभगवान की प्रोपर्टी के लालच में अलफांसे नागपुर गया और उसने आरती के साथ शादी की। अलफांसे अपनी चालाकी और आदत के मुताबिक आरती के पीछे-पीछे विशेष के घर गया और उसने वहां विशेष को गोलियां मारकर आरती को फंसाने की चेष्टा की थी—लेकिन उसने (सोनू ने) वीडियो फिल्म बना ली थी और अलफांसे को बेहोश करके पुलिस के हवाले कर दिया था।

"जरूरी तो नहीं था कि अलफांसे भाई ऐसा ही करते?"

"हां, जरूरी तो नहीं था मिसेज पण्डित! लेकिन आरती और विशेष को अलफांसे से छुटकारा पाने के लिये उसके खिलाफ कोई साजिश तो रचनी ही थी। अलफांसे जैसे शातिर को उनकी साजिश मालूम हो ही जानी थी—या फिर किसी तरीके से उसे मैं बतलाता तब अलफांसे ने उन दोनों को सजा देनी ही थी। या फिर मैं अलफांसे को बेहोश करके आरती और विशेष को मारकर रिवॉल्वर पर अलफांसे के फिंगर-प्रिंट्स ट्रेस कर देता। कुल मिलाकर मुझे अलफांसे को गिरफ्तार कराना था। उसने ना जाने कितने जुर्म किये हैं। भले ही उसने प्लास्टिक सर्जरी से चेहरा बदलवा लिया हो—लेकिन फिंगर प्रिंट्स से तो उसे अलफांसे साबित हो ही जाना था। मेरा मकसद तो उसे कानून के जाल में फंसाने का था, सो फंसा दिया।"

सोनू ने नई सिगरेट सुलगा ली और फिर सामने खड़ी सोफिया की हरी आंखों में झांकते हुये बोला, "माधवी के साथ जो-जो भी हुआ, उसने तुम्हें बतला ही दिया होगा। अमित शाह भले ही मैंटल हॉस्पिटल से इलाज कराके आया था, लेकिन उसकी दिमागी हालत ठीक नहीं थी। तभी तो उसने अपनी बीवी और उसके प्रेमी को कत्ल किया और बीवी की सिर कटी लाश को फ्रिजर में रखा हुआ था। मैंने अमित शाह को किडनेप कराके उसे हिप्नोटाइज किया था। उसे माधवी की तस्वीरें दिखलाकर उसके दिमाग में माधवी के लिये मुहब्बत भर दी थी और माधवी के पीछे लगा दिया था। जरूरत पड़ने पर मैं उससे मिलता भी था और फोन पर भी उसे हुक्म देता था। मेरे कहने पर ही उसने माधवी को किडनेप किया था और शादी करने के लिये फार्म हाउस पर ले गया था। केशव जैसी गाड़ी पर उसकी गाड़ी का नम्बर लगाकर मैं फेस मास्क, विग और मेकअप से केशव बनकर वहां गया और अमित शाह को मारकर उसकी लाश को खाई में फेंक दिया था। मेरे एक आदमी ने तमाम वाकये की वीडियो फिल्म बना ली थी। उस फिल्म की कई डी०वी०डी० तैयार करके

पुलिस और मीडिया वालों के पास पहुंचा दी थी—ताकि केशव बच ना सके। नतीजा ये कि वो आज कानून की पकड़ में है...।"

सोफिया ने मुस्करा रहे सोनू को भस्म कर देने वाली नजरों से घूरा, लेकिन फिर क्रोध पर काबू करके बोली—"मैं राजन से मिली हूं। उसने मुझे सारी बातें बतलाई हैं। लेकिन मैं ये मानने के लिये तैयार नहीं हूं कि चांदनी बेवफा या चरित्रहीन थी।"

"हां, ये सच है। चांदनी बेवफा या चरित्रहीन नहीं थी। उसका रॉकी से कभी अफेयर नहीं रहा। शादी से पहले भी नहीं।"

चौंकी सोफिया और कौतूहलता में पड़ी हुई बोली, "लेकिन चांदनी ने वो डायरी क्यों लिखी...?"

"वो डायरी चांदनी ने नहीं लिखी थी...।"

"तो फिर?"

"वो डायरी तो मैंने लिखी थी। श्वेता गुप्ता मोन्टी को अपनी जान से भी ज्यादा प्यार करती है। क्योंकि मोन्टी पूर्व जन्म में श्वेता का मंगेतर रवि गोयल था। मोन्टी को किडनेप करके और मारने की धमकी देकर श्वेता को मजबूर किया तो उसने मुझे चांदनी की हैन्डराइटिंग मुहैया करा दी थी। मैं किसी भी राइटिंग की हू-ब-हू कॉपी कर सकता हूं। एक्सपर्ट भी चकमा खा जाये—बेचारे राजन की तो बिसात ही क्या थी।"

"लेकिन वो डायरी चांदनी की अलमारी के लॉकर में थी और उसकी चाबी बेड के भीतर थी। ये सब कैसे हुआ? हमारे बंगले में कोई बाहरी आदमी घुसकर ऐसा काम नहीं कर सकता...।"

"लेकिन श्वेता तो कर सकती है। बतलाया ना कि मोन्टी को किडनेप करके और जान से मारने की धमकी देकर श्वेता को मजबूर किया गया था। उसी ने मंगलसूत्र, गहनों और डायरी वाला वो बॉक्स अलमारी के लॉकर में रखा था और उसकी चाबी चांदी की डिबिया में रखकर बेड के भीतर रखी थी।"

"ओह...ये बात थी। फिर तो नारद बनकर तूने ही राजन को फोन किया होगा?"

मुस्कराया सोनू और फिर बोला, "काफी अक्लमन्द हो तुम। हो भी क्यों नहीं...आखिर दिमाग के जादूगर की बीवी हो।"

"चांदनी कहां है...?"

पहले तो सकपकाया सोनू, फिर मुस्कराकर बोला—"तुम कैसे जानती हो कि राजन के हाथों मारी गई चांदनी...असली चांदनी नहीं थी?"

"चांदनी वर्षों से मेरे साथ रह रही है। उसके जिस्म, तिल और बोन मार्क की जानकारी है मुझे। उस लाश को देखते ही मैं जान गई थी कि वो नकली है—असली चांदनी नहीं है। असली चांदनी कहां है?"

"वहीं है...जहां पर श्वेता, मुंशी, माधवी, रमाकान्त, मोन्टी हैं। वो सभी मेरे कब्जे में हैं।"

"ये नकली चांदनी कौन थी?"

"माधुरी नाम की एक स्टेज आर्टिस्ट। वो एड्स की मरीज थी और अपनी बीमार मां के साथ तीन छोटी बहनों और भाई के लिये चिन्तित थी। मोटी रकम के बदले वो चांदनी बनने को तैयार हो गई थी।

जबकि रॉकी का बिजनेस ठप्प पड़ गया था और वो ड्रग्स का धन्धा करने लगा था। उसकी मुम्बई के डॉन महावीरा के साथ डील थी। वो मुम्बई आता रहता था। एक दिन नशे में उसने कम उम्र की लड़की को रेप किया और वो लड़की मर गई। महावीरा ने लड़की की लाश को तो ठिकाने लगा दिया था लेकिन कमरे में पहले से ही लगे कैमरे से वीडियो फिल्म बना ली थी और रॉकी महावीरा की मुट्ठी में आ गया था। मेरे प्लान के मुताबिक ही रॉकी ने किराये पर बंगला लिया। चांदनी रूपी माधुरी उसके बंगले पर जाती थी। फिर दोनों ने शिवपुरी जाकर शादी की और होटल जाकर सुहागरात मनाई। रॉकी को माधुरी के एड्स की जानकारी नहीं थी।

मैंने नारद के रूप में राजन को रॉकी के बंगले पर भेजा। वहां माधुरी और रॉकी ने जानबूझकर राजन को भड़काया और राजन ने दोनों को गोलियां मार दीं। जबकि दोनों से झूठ बोला गया था कि राजन की रिवॉल्वर में नकली गोलियां डाल दी गई हैं। भले ही हालात मैंने क्रियेट किये लेकिन राजन ने माधुरी और रॉकी को मारा। कातिल तो है ही। उसे सजा तो मिलेगी ही।"

"रॉकी का नौकर शिवालिक तो राजन का अहसानमन्द था—फिर उसने राजन से गद्दारी क्यों की?"

"उसकी इकलौती बेटी अपने कब्जे में है। बेटी की इज्जत और जान बचाने के लिये ही उसने राजन से गद्दारी की—जैसे मोन्टी के लिये श्वेता ने मेरे कहे मुताबिक काम किया था...।"

"यानि शिवपुरी के पण्डित, उसके बेटे कमल, होटल के मैनेजर और वेटर के बयान सच्चे हैं। लेकिन डॉक्टर विश्वास और चांदनी की मौसेरी बहन विभा झूठ क्यों बोली?"

"डॉक्टर विश्वास की फैमली को महावीरा के गुन्डों ने उठा लिया था—इसलिये वो राजन से झूठ बोला था। वरना राजन की रिपोर्ट भी पोजेटिव थी। चांदनी ने रिपोर्ट चेंज नहीं करवाई थी और ना ही डॉक्टर ने चांदनी को राजन के लिये कोई दवा दी थी। विभा के पति ब्रिजेश को भी उठा लिया गया था—तभी वो फोन पर राजन से झूठ बोली कि चांदनी उसके यहां नहीं आई थी। वरना चांदनी पन्द्रह अगस्त को भी उसी के पास थी—जब रॉकी ने नकली चांदनी यानि माधुरी से शादी की थी। चांदनी का रॉकी से कोई सम्बन्ध नहीं रहा है। वो राजन के ही बच्चे की मां बनने वाली है। अब तेरे दिमाग में ये

यक्ष-प्रश्न उठ रहा होगा कि मैंने ये सारे गेम क्यों खेले? केशव, राजन और अलफांसे को कानून के शिकंजे में क्यों फंसाया?

आशीर्वाद और करतार सिंह को वाटसन के हैडक्वार्टर में बन्धक क्यों बनाया? इन्सपेक्टर अनिल यादव का एक्सीडेन्ट भी मैंने ही करवाया। श्वेता, मोन्टी, मुंशी, माधवी और रमाकान्त भी मेरे कब्जे में हैं। जानती है क्यों?"

"क्यों?"

"ताकि तू अकेली पड़ जाये। तेरा कोई भी मददगार ना रहे। तू तन्हा और कमजोर हो जाये। केशव पण्डित से इन्तकाम लेना है मुझे। ऐसी सजा देनी है कि वो जिन्दगीभर खून के आंसू बहाये। अगर मैं तेरे साथ शादी करूं तो...।"

"चुप...बदतमीज...।" सोफिया का हाथ घूमा और सोनू के गाल पर थप्पड़ के रूप में पड़ा। क्रोधातिरेक थर-थर कांपते हुये चीख-चीख कर बोली वह, "ऐसा कहने या सोचने की हिम्मत भी कैसे हुई तेरी? मैं सिर्फ केशव की हूं। किसी और मर्द का ख्याल भी मन में नहीं ला सकती मैं। अगर ज्यादा बकवास की तो तेरा खून पी जाऊंगी मैं...।"

"तो फिर चांदनी, श्वेता, मोन्टी, मुंशी, माधवी और रमाकान्त का क्या होगा?" फुंफकारा-सा सोनू, "उन्हें बहुत बुरी मौत मारा जायेगा। उनकी जान ही नहीं, बल्कि चांदनी, श्वेता और माधवी की इज्जत भी तो खतरे में है। अगर तू सोचती कि पुलिस की मदद ले लेगी तो...कुछ नहीं होगा। सभी लोगों को ऐसी जगह पर छिपाकर रखा गया है, जहां पुलिस नहीं पहुंच सकती। पहुंच भी गई तो...सभी के परखच्चे उड़ जायेंगे। सभी के जिस्मों पर बम बान्धे गये हैं और उन बमों का सम्बन्ध रिमोट से है। पुलिस वहां पहुंची तो रिमोट का बटन दबाकर सभी को उड़ा दिया जायेगा। तू मजबूर है। ऐसा कोई नहीं है जो तेरी मदद कर सके।"

सोफिया की हरी आंखें सिकुड़ने लगीं।

"तू तो इन्डियन पुलिस को जानती ही है कि वो कैसी है? अधिकांश पुलिसवाले भ्रष्ट, रिश्वतखोर हैं। मोटी रकम खर्च करूंगा तो पुलिस वाले केशव को जंगल में ले जाकर मार देंगे। बोल देंगे कि केशव ने भागने की चेष्टा की थी—वो मुठभेड़ में मारा गया। मैं खाने-पीने की वस्तु में भी केशव को जहर दिलवा सकता हूं। अगर तूने मेरी बात नहीं मानी तो चौबीस घन्टे के भीतर ही केशव को मारकर तुझे विधवा कर दूंगा। उधर माफिया किंग वाटसन को बोलूंगा तो अपनी बेटी जेनी के लिए वो करतार सिंह समेत तेरे बेटे आशीर्वाद को भी मार देगा। सोच ले...तुझे मेरे साथ शादी करनी है कि...बाकी लोगों के साथ केशव और आशीर्वाद की भी हत्या करवानी है?"

सोफिया चेहरे पर दुविधा व असमंजस के भाव थे।

आंखों में गीलापन उतर आया।

"मैं आखिरी बार पूछ रहा हूं कि तू मेरे साथ शादी करेगी कि नहीं...?"

सोफिया ने घुटने पर घूंसा मारा और रोने लगी।

होठों पर विजयी किस्म की मुस्कान सजाकर ही बोला सोनू—"...तू शेरनी से ज्यादा शक्तिशाली, नागिन से ज्यादा खतरनाक और लोमड़ी से ज्यादा बुद्धिमान है सोफिया। लेकिन तेरी कमजोरी ये थी कि तू भारतीय नारी थी, जो कि अपने पति और सन्तान के लिये कोई भी बलिदान कर सकती है। तेरी इसी कमजोरी का फायदा उठाया मैंने और आज तू किसी कठपुतली की तरह ही मेरी उंगलियों के इशारे पैर नाचने के लिये विवश है...मजबूर है। मुझे तेरे साथ शादी करनी है और तुझे अपनी बीवी बनाना है। मैं समझता हूं कि तू मेरे गले में 'वरमाला' डालकर मेरे साथ सात फेरे लेने से इन्कार करने की हालत में नहीं है। अभी बोल कि मेरे साथ शादी करेगी कि नहीं?"

"हां—मैं तेरे साथ शादी करूंगी—लेकिन मेरी एक शर्त है। मैं तेरे साथ श्मशान में ही सात फेरे लूंगी। क्या तुझे मेरी शर्त कबूल है?"

"श्मशान में फेरे...?" बुरी तरह चौंककर बोला सोनू, "तेरा दिमाग तो खराब नहीं हो गया है? श्मशान में मुर्दे का अन्तिम-संस्कार किया जाता है—ना कि शादी की जाती है।"

"वो शादी तेरे लिये ही होगी। कोई भारतीय नारी पति के जीवित होते हुये भी गैर मर्द के साथ शादी करे—ये उसके लिये मरने जैसी ही बात है। शादी का जोड़ा उसके लिये कफन से कम नहीं होता। जिस अग्नि के गिर्द वो फेरे लेती है, वो उसके लिये चिता से कम नहीं होती। तुम्हारे लिये जो खुशी होगी, वो मेरे लिये मातम ही होगा। सो मैं श्मशान में ही सात फेरे लेना चाहूंगी...।"

"ओ०के। मुझे कोई ऐतराज नहीं...।" कन्धों को उचकाकर बोला सोनू, "शादी मन्दिर में हो, चाहे श्मशान में...होगी तो शादी ही। तू मेरी बीवी बन जायेगी। दुनिया की सबसे खूबसूरत औरत का पति बन जाऊंगा मैं। जब केशव को तेरी और मेरी शादी की जानकारी मिलेगी तो उसके सीने पर सांप लोटेंगे। खून के आंसू रोयेगा वो। मेरे एक दर्जन हथियारबन्द आदमी इस बंगले के भीतर और बाहर तैनात रहेंगे। कल एक ब्यूटीशियन आयेगी और तेरा मेकअप वगैरा करके तुझे दुल्हन बनायेगी। तुझे श्मशान में लाया जायेगा। आज से ही श्मशान में शादी की तैयारियां शुरू हो जायेंगी...।"

"कौन से श्मशान में?"

"आनन्द विहार के पास वाले श्मशान में। वहां की लोकेशन बहुत बढ़िया है। वहां पर हरियाली भी है और एक खूबसूरत झील भी है।"

"शादी कल शाम को होनी चाहिये...दिन में नहीं।"

"शाम को ही कर लेंगे। दिन में तो वैसे भी तेज धूप रहती है। इतने क्रान्ति भी आ जायेगी। शादी में बाराती भी तो होने चाहिये। बैन्डबाजा होगा।

नाच-गाना होगा। धूमधाम के साथ ही अपनी शादी होगी। कल शाम को हम दोनों परिणय-सूत्र में बन्ध जायेंगे। हाय...कितना सुहाना समा होगा वो। शादी होने पर सोचेंगे कि सुहागरात कहां मनेगी और हनीमून के लिये कहां जाया जायेगा...।"



व्यवधान के लिये क्षमा करें!

हम केशव पण्डित एवं आशीर्वाद पण्डित के उपन्यासों में उच्च कोटि का कथानक व प्रकाशन देते आये हैं। हमारी मेहनत व लगन तथा आपके सहयोग व आशीर्वाद के फलस्वरूप ही आज 'केशव पण्डित' एवं 'आशीर्वाद पण्डित' का नाम उपन्यास जगत में डंका बजा रहा है। आप 'केशव पण्डित' एवं 'आशीर्वाद पण्डित' के उपन्यासों को पढ़कर सराहते हैं तथा आगामी उपन्यास की बेचैनी के साथ प्रतीक्षा करते हैं।

इसका कारण क्या है?

कारण बड़ा ही स्पष्ट है। जब आप उपन्यास पढ़ते हैं तो समय व पैसा खर्च करते हैं तथा बदले में अच्छे व उच्च कोटि के कथानक की आशा रखते हैं। 'केशव पण्डित' के सभी एक सौ छब्बीस उपन्यास एवं 'आशीर्वाद पण्डित' के छब्बीस उपन्यास आपकी कसौटी पर सदैव ही खरा सोना साबित हुए हैं।

तभी तो उपन्यास जगत में आज 'तुलसी साहित्य पब्लिकेशन्स' एवं 'धीरज पॉकेट बुक्स' तथा 'केशव पण्डित' एवं 'आशीर्वाद पण्डित' का स्थान सर्वोच्च है।

आपको अच्छी तरह ज्ञात है कि आशीर्वाद पण्डित के मात्र पच्चीस उपन्यासों ने तहलका मचा दिया है। आशीर्वाद पण्डित का पहला उपन्यास 'दस साल का वकील' जब 'तुलसी साहित्य पब्लिकेशन्स' से प्रकाशित हुआ तो उसने सफलता के अनगिनत रिकॉर्डों को तोड़ दिया।

आशीर्वाद पण्डित का दूसरा उपन्यास 'कानून का बाप' 'धीरज पॉकेट बुक्स' में प्रकाशित हुआ तो उसने बड़े-बड़े लेखकों के छक्के छुड़ा दिये। आशीर्वाद पण्डित का तीसरा उपन्यास 'बेटा हिन्दुस्तान का', चौथा उपन्यास 'छः फुट का नेवला', पांचवां 'दो पैरों वाला बम', छठा उपन्यास 'दिमाग का चैम्पियन' व सातवां उपन्यास 'अर्जुन ललकारे कृष्ण को', आठवां उपन्यास 'आधा जोकर आधा मदारी', नौवां उपन्यास '24 घण्टे का जादूगर', दसवां उपन्यास 'लोमड़ी का दूध', ग्यारहवां उपन्यास 'तू पण्डित मैं शनिचर', 'बेटे से बड़ा है देश', 'राधा गोरी मैं क्यों काला', '15 बम पाकिस्तान खत्म', 'कर लो लंका फतह', 'चक्रव्यूह में फंसा भारतपुत्र', 'जोकर भिड़ेगा चैम्पियन' से, 'सौ के बराबर अकेला', 'देख मेरे दिमाग का जादू', 'अनाड़ी नहीं खिलाड़ी हूं', 'एक महाभारत और सही' प्रकाशित हो चुके हैं। आशीर्वाद पण्डित का

छब्बीसवां नया उपन्यास **'मंगलसूत्र बनेगा फंदा'** शीघ्र ही 'धीरज पॉकेट बुक्स' में प्रकाशित होगा।

हमारी सफलता से बौखलाकर अन्य प्रकाशक लंगड़े घोड़े पर सवार होकर सफलता की मन्जिल स्पर्श करने के लिये निम्न स्तरीय तरीके अपनाने पर विवश हो गये हैं।

'केशव पण्डित' के नाम का लाभ उठाने के लिये वे छद्म नामों को जन्म देकर आपको धोखा देने के प्रयास में लीन हैं।

परन्तु 'केशव पण्डित' एवं 'आशीर्वाद पण्डित' तथा उन मिलते-जुलते नामों वाले लेखकों में कितना अन्तर है, ये उन लोगों की सफलता से ही स्पष्ट हो गया है। परन्तु फिर भी यदा-कदा कुछ पाठक भ्रम का शिकार हो जाते हैं। वो 'केशव पण्डित' एवं 'आशीर्वाद पण्डित' के भुलावे में दूसरे किसी भी उपन्यास को पढ़ सकते हैं तथा फिर अपना माथा पीट लेने पर विवश हो सकते हैं।

सो हमने आपकी सुविधा के लिये 'केशव पण्डित' के उपन्यासों के टाइटल-कवर के ऊपर भी 'धीरज पॉकेट बुक्स' अथवा 'तुलसी साहित्य पब्लिकेशन्स' का नाम देना शुरू कर दिया है। कृपया आप 'केशव पण्डित' का उपन्यास लेते समय उपन्यास के कवर पर 'धीरज पॉकेट बुक्स' अथवा 'तुलसी साहित्य पब्लिकेशन्स' का नाम अवश्य देख लें, ताकि आप माथा पीटने से बचे रहें।

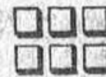
आपका प्यार व आशीर्वाद ही 'केशव पण्डित' एवं 'आशीर्वाद पण्डित' तथा 'धीरज पॉकेट बुक्स' अथवा 'तुलसी साहित्य पब्लिकेशन्स' की सफलता की गारन्टी है। आप 'धीरज पॉकेट बुक्स' अथवा 'तुलसी साहित्य पब्लिकेशन्स' व 'केशव पण्डित' एवं 'आशीर्वाद पण्डित' देखकर उपन्यास खरीदेंगे तो आपको निराश नहीं होना पड़ेगा। हम दावे के साथ आपको विश्वास दिलाते हैं कि आपके पैसे व समय का समुचित प्रतिफल मिलेगा।

बस इतना ध्यान रखें कि एक सौ सत्ताईस बेहतरीन उपन्यासों के रचयिता, दिमाग के जादूगर 'केशव पण्डित' के पूर्व प्रकाशित 127 उपन्यास तथा नये उपन्यास अब केवल दो फर्म 'धीरज पॉकेट बुक्स' एवं 'तुलसी साहित्य पब्लिकेशन्स' से प्रकाशित होते हैं, अन्य कहीं से नहीं।

तथा आपके चहेते 'आशीर्वाद पण्डित' के उपन्यास भी दो फर्म 'धीरज पॉकेट बुक्स' एवं 'तुलसी साहित्य पब्लिकेशन्स' से ही प्रकाशित होते हैं। अन्य कहीं से नहीं।

धन्यवाद!

प्रकाशक
धीरज पॉकेट बुक्स एवं
तुलसी साहित्य पब्लिकेशन्स



महावीरा के घर पर सोनू की शादी की तैयारियां चल रही थीं। ब्यूटी पार्लर से आई लड़कियां सोनू को हल्दी उबटन लगाने तथा नहलाने के बाद उसको दूल्हे वाला जोधपुरी सूट पहनाकर मेकअप कर रही थीं।

कई बार-बालायें डी०जे० सिस्टम पर बज रहे शादी-ब्याह के गीतों पर डांस कर रही थीं।

"कांग्रेचुलेशन सोनू...!" सोनू के तैयार होने पर क्रान्ति वहां पहुंची और बोली— "तुम्हारा प्लान कामयाब हुआ और केशव पण्डित की बीवी सोफिया के साथ तुम्हारी शादी होने वाली है...।"

"लेकिन तुम इतना लेट क्यों हो गई? तुम्हें तो सुबह ही आ जाना चाहिये था...।"

"वो...मेरी तबियत खराब हो गई थी। फ्लाइट की टिकिट कैंसिल कराके कुछ घण्टों तक हॉस्पिटल में एडमिट रहना पड़ा। फिर कई घन्टे बाद की फ्लाइट से ही आ सकी हूं। वैसे मैं ठीक समय पर आ गई हूं। अभी तुम्हारी घुड़चढ़ी शुरू नहीं हुई है। मुझे तो विश्वास ही नहीं हो रहा है कि तुम्हारी सोफिया के साथ शादी हो रही है। सिंगही को भी विश्वास नहीं हुआ था। वो बहुत खुश हुआ। उसने कहा कि वो तुम्हारी शादी में आयेगा। मैंने भी उसे इन्वाइट किया था।"

"क्या सिंगही जी भी आ रहे हैं...?"

"हां, क्यों नहीं? कोई मामूली शादी नहीं है ये। दिमाग के जादूगर केशव पण्डित की बीवी सोफिया के साथ फेरे लेने जा रहे हो तुम...।"

"ये तो और भी खुशी की बात है। कब तक आ जायेंगे सिंगही जी...?"

"तुमने याद किया और हम आ गये सोनू...।" उभरने वाली वो आवाज सिंगही की ही थी लेकिन वो दिखलाई नहीं दिया।

"कमरे में मौजूद सभी लड़कियों को बाहर भेज दिया जाये—कहीं ऐसा ना हो कि इनमें से कोई मारे दहशत के दम ही तोड़ दे।"

क्रान्ति ने सोनू को सजाने वाली युवतियों को कमरे से बाहर भेज दिया।

तब फर्श पर लाल, नीली और पीली रोशनी उत्पन्न हुई और ऊपर की तरफ उठने लगी। पांच फुट की ऊंचाई पर पहुंचने पर रोशनी ने मानव आकृति का रूप ले लिया।

फिर वो आकृति सिंगही के रूप में परिवर्तित हो गई।

सिल्वर कलर के जूतों के साथ मुर्दे जैसे चेहरे वाले सिंगही ने पीले रंग की जिस्म से चिपकी पोशाक धारण की हुई थी।

"क्रान्ति ने हमें इन्वाइट किया तो हम स्वयं को रोक नहीं सके। तुम

कमाल ही करने जा रहे हो सोनू। हमारे सबसे बड़े दुश्मन केशव पण्डित की बीवी सोफिया के साथ सात फेरे लेने जा रहे हो...वो भी श्मशान में। तुम्हारे दिमाग को मान गये...।"

"शुक्रिया, महामहीम जी...।" सोनू बांहें फैलाकर सिंगही की तरफ बढ़ा ही था कि सिंगही फुर्ती के साथ पीछे हटकर बोला, "ये क्या बेवकूफी करने जा रहे हो? इतना तेज करंट लगेगा कि...बेहोश हो जाओगे। अपने उत्साह पर काबू रखो। दूर से ही हमारा आशीर्वाद ले लो...।"

तभी कमरे में महावीरा प्रविष्ट हुआ और हाथ जोड़कर तथा सिर झुकाकर बोला—"सादर चरण स्पर्श महामहीम जी। इस नाचीज के गरीबखाने में भावी विश्व-सम्राट का हार्दिक स्वागत है। घोड़ी, बैन्ड-बाजा और बाराती तैयार हैं। आप तो अपने विशेष यान से आये होंगे। उसी से श्मशान पर पहुंचेंगे महामहीम जी...।"

"सिंगही जी नहीं जानते कि कौन से श्मशान में शादी होनी है...।" मेज पर से व्हिस्की की बोतल उठाकर बोली क्रान्ति, "मैं इनके साथ ही आऊंगी। तुम घोड़ी पर सवार होकर श्मशान पहुंचो सोनू। मैं सिंगही जी के साथ पहुंच जाऊंगी। बुरा मत मानना...श्मशान पर ही जमकर नाच लूंगी...।"

दूल्हे के भेष वाला सोनू महावीरा के साथ कमरे से बाहर चला गया।

क्रान्ति ने मखमली बांहें उठाकर अंगड़ाई ली और होठों पर सेक्सी अन्दाज में जीभ फिराकर बोली, "सोनू और सोफिया की शादी होती रहेगी। अभी मैं काम-वासना के ज्वर में जल रही हूं। आपकी टक्कर का पूरी दुनिया में एक भी मर्द नहीं है। क्यों ना एक राउन्ड हो जाये...?"

सिंगही ने छोटी-छोटी आंखों से क्रान्ति के जिस्म को ध्यान से देखा तो मुंह में पानी भर आया।

□□□
□□□

घोड़ी पर सवार सोनू के आगे बैन्ड की धुन पर महावीरा और उसके गैंग के आदमी नाच-गा रहे थे।

बारात श्मशान में पहुंची।

थोड़ी देर पश्चात् ही तीन कारें वहां आ पहुंचीं।

बीच वाली कार को फूलों से सजाया गया था।

दुल्हन के भेष में सोफिया बीच वाली कार से बाहर निकली तो सोनू का चेहरा खिल उठा। लेकिन जब अगली और पिछली कारों से केशव, राजन, आशीर्वाद, करतार सिंह, चांदनी, माधवी, मुंशी होशियार चन्द, रमाकान्त, श्वेता और मोन्टी बाहर निकले तो उसके दिमाग को ग्यारह हजार वोल्ट का झटका-सा लगा।

"ये...ये लोग यहां कैसे...?" वह बौखलाकर बोला, "...अपने आदमियों से बोलो महावीरा कि इन सभी को भून डालें।"

लेकिन महावीरा ने सिर झुका लिया।

"ये...ये क्या हो रहा है महावीरा...? तुम कुछ कर क्यों नहीं रहे हो...?" विचित्र भाव से ही चींखा सोनू, "केशव पण्डित और राजन तो पुलिस कस्टडी में थे। लेकिन बाकी लोग तो तुम्हारे हैडक्वार्टर पर बन्धक थे—ये लोग आजाद कैसे हो गये?"

"मेरा इकलौता बेटा कुशाग्र बोर्डिंग स्कूल में पढ़ता है सोनू...।" महावीरा सिर झुकाये हुये बोला, "उसके सिवाय मेरा है ही कौन? पण्डित जी ने उसे वहां से उठवा लिया और उसके जिस्म पर बम बान्ध दिया। इन्होंने मुझे कुशाग्र की वीडियो फिल्म दिखलाई तो मैं मजबूर हो गया। सरेंडर कर दिया मैंने। सभी बन्धकों को छोड़ दिया मैंने। पुलिस ने मेरे हैडक्वार्टर को अपने कब्जे में ले लिया है। मैं और मेरे आदमी कल से ही सिविल ड्रेस वाले पुलिसवालों की कस्टडी में थे। पण्डित जी के हुक्म पर ही मैं शादी में शामिल होने और शादी की तैयारियां करने का ड्रामा करता रहा। इस श्मशान को पुलिस ने पहले से ही घेरा हुआ है। हम सभी कानून के शिकंजे में फंसे हुये हैं...।"

इधर-उधर छिपे पुलिसवाले बाहर निकल आये और महावीरा के साथ-साथ उसके आदमियों को भी हथकड़ियां पहना दीं।

सोनू की दशा खराब।

मानो उसके दिमाग ने काम करना ही बन्द कर दिया हो। केशव उसके सामने पहुंचा और चारमीनार की सिगरेट में कश लगाकर बोला "...दिखावे को ही मैं पुलिस कस्टडी में था। पुलिस अफसरों और होममिनिस्टर तक को भी विश्वास था कि मैं निर्दोष हूं और किसी ने मुझे फंसाने की घटिया चाल चली है। मैं आजाद ही था। अमेरिका में क्रान्ति ने आशीर्वाद को सारी बातें बतला दी थीं। तब आशीर्वाद ने रिस्ट वाच रूपी ट्रांसमीटर को ऑन कर दिया था और मैं जान गया था कि तुम दोनों ने महावीरा के यहां अपना डेरा जमाया हुआ है। महावीरा के बेटे कुशाग्र को उठा लिया मैंने और सभी बन्धकों को छुड़ाकर महावीरा का बैन्ड बजा दिया। जेनी और हैरी मेरे कब्जे में थे तो माफिया किंग वाटसन से सौदा किया। उसके आदमी आशीर्वाद और करतार सिंह को लेकर आये और जेनी, हैरी को ले गये। सोफिया को सारी बातें मालूम थीं और हमारा सम्पर्क भी बना हुआ था। कल तूने सोफिया को शादी के लिये कहा। सोफिया ने ऐसा जाहिर किया कि ये मजबूर हो। तुझे बेवकूफ बनाते हुये शादी की हामी भर दी और शर्त लगा दी कि श्मशान में ही सात फेरे लेगी। लेकिन तेरे साथ नहीं, मेरे साथ। चलो, सोफी...सामने शिव मन्दिर है। हम सात फेरे ले आते हैं...।"

सोफिया लुटे-पिटे से सोनू के पास आई और हाथ घुमाकर ऐसा थप्पड़ मारा कि सोन घुटी-घुटी सी चींख के साथ जलती चिता के करीब जाकर गिरा।

"बड़ा आया मुझसे शादी करने वाला...।" वह सोनू की पसलियों पर ठोकर जमाकर बोली, "...मेरी जूती भी तेरे साथ शादी ना करे। बेवकूफ थी मैं, जो तुझ पर और क्रान्ति पर तरस खाकर आशीर्वाद से जिद की थी और तुम दोनों को ठीक करा दिया था। भूल गई थी कि नाग-नागिन को चाहे जितना दूध पिला लो, लेकिन वो फुंफकारने और डसने से बाज नहीं आयेंगे। इसकी कनपटी पर वार करके इसे कोमा की दशा में पहुंचा दो आशीर्वाद...।"

"क्रान्ति और सिंगही भी तो आ जायें मम्मी जी! तीनों को एक साथ ही कोमा में पहुंचा दूंगा।

चौंका सोनू—समझ नहीं सका कि आशीर्वाद को सिंगही के आने की खबर कैसे है?

केशव ने सिगरेट में कश मारकर धुएं का गुबार सोनू के थोबड़े पर फेंका और फिर बोला—"मेरे कहने पर अपनी बेटी जेनी और हैरी के लिये वाटसन ने एक काम और किया था। उसने क्रान्ति को भी आशीर्वाद और करतार सिंह के हवाले कर दिया था। ऑपरेशन के जरिये क्रान्ति के जिस्म में रिमोट बम फिट किया गया था और बम के साथ एक ट्रांसमीटर और माइक भी लगाया गया था। मुझे मालूम होते रहना था कि क्रान्ति कहां है और क्या बातें कर रही है। उसके जिस्म में फिट बम को सौ-दो सौ किलोमीटर की दूरी से भी रिमोट से ब्लास्ट किया जा सकता है। मेरे ही कहने पर क्रान्ति ने सिंगही को तेरी शादी के बहाने यहां पर बुलाया। सिंगही क्रान्ति का दीवाना है। अपने हुस्न का लालच देकर क्रान्ति सिंगही की पोशाक, जूते और वो ब्रेसलेट उतरवा लेगी, जिससे वो गायब हो जाता है और लाल किरणों से किसी को भस्म कर सकता है। क्रान्ति सिंगही को शराब में मेरी दी हुई गोली मिला कर पिलायेगी और उसे बेहोश करके यहां ले आयेगी। क्रान्ति जब तक सिंगही के साथ आये, तब तक मैं और सोफिया सात फेरे ले आते हैं। फिर तुझे, क्रान्ति और सिंगही को कानून के हवाले कर दिया जायेगा। तुझे मुझे और राजन को अदालत में निर्दोष साबित करना है। अरे, गम मत कर यार। तू बड़े शौक से दूल्हा बना है। तेरे भी सात फेरे होंगे। तेरे लिये भी दुल्हन का इन्तजाम किया है मैंने।"

सोनू समझ नहीं पाया कि केशव ने उसके लिये कौन-सी दुल्हन का इन्तजाम किया है?



श्मशान के करीब ही शिव मन्दिर था। केशव और सोफिया वहां गये और एक-दूसरे का हाथ पकड़कर शिवलिंग के गिर्द सात फेरे लिये।

दोनों मन्दिर से बाहर निकले तो एक कार से क्रान्ति वहां आ पहुंची। उसके साथ बेहोशी की अवस्था में सिंगही भी था, जिसके कंकाल जैसे जिस्म पर सिर्फ अन्डर वियर ही था।

केशव के कहने पर आशीर्वाद ने क्रान्ति से सिंगही की ड्रेस, जूते और ब्रेसलेट ले लिया। केशव ने सिंगही को एक इंजेक्शन लगाया तो वो होश में आ गया।

श्मशान का वातावरण देखकर वो समझ गया कि गड़बड़ी हो गई है और वो एक बार फिर दिमाग के जादूगर के जाल में फंस चुका है। उसने क्रान्ति को भस्म कर देने वाली नजरों से घूरा।

"मैं मजबूर थी सिंगही जी। इस केशव पण्डित ने मेरे जिस्म में रिमोट बम फिट किया हुआ है। अपनी जान की कोई परवाह नहीं मुझे—लेकिन यूं ही मर जाना कबूल नहीं था मुझे। मरूंगी तो कुछ करके ही मरूंगी। मैंने जो कुछ भी किया, मजबूरी में किया...।"

सिंगही को करतार सिंह ने और क्रान्ति को आशीर्वाद ने दबोच लिया।

"भई...अब सोनू की भी शादी करा दी जाये। वरना इसके दूल्हा बनने का फायदा ही क्या होगा? इसकी दुल्हन को तो लाना राजन...।"

"जरूर...क्यों नहीं गुरुजी...।" राजन सोनू के चेहरे पर घूंसा जड़कर और उसे जमीन पर गिराकर क्रोध व घृणा के साथ बोला, "इस कमीने ने मेरे साथ ऐसी चाल चली कि...मैं चांदनी को बेवफा और चरित्रहीन समझने लगा था...।"

"गलती तो तुम्हारी भी है राजन। तुम्हें मुझे बतलाना चाहिये था। खैर, जो होना था... हो गया। तुमने जो भी किया...सोनू की वजह से मानसिक सन्तुलन खोकर किया। सोनू की गवाही और अपनी पैरवी से मैं तुम्हें सजा से बचा लूंगा। अभी तो तुम सोनू की दुल्हन को लाओ। बेचारा सात फेरे लेने के लिये तरस रहा है...।"

राजन सोनू को घूरते हुये वहां से चला गया।

वो फिर एक गधी को पकड़े हुये वापिस लौटा, जिसे लाल रंग की पोशाक पहनाई गई थी।

"ये...ये क्या मजाक है...?" सोनू बौखलाकर बोला।

केशव उसके करीब पहुंचा और उसकी आंखों में झांकते हुये बोला, "जो मुझसे पंगा लेता है, मैं उसकी जिन्दगी को मजाक ही बनाकर रख देता हूं। तू सोफिया के साथ सात फेरे लेने का ख्वाहिशमन्द था—लेकिन तेरी औकात एक गधी के साथ ही फेरे लेने की है...।"

"न...नहीं...मैं इस गधी के साथ फेरे नहीं लूंगा...।"

"तेरे तो फरिश्ते भी इस गधी के साथ फेरे लेंगे ओये खोतेया...।"

कहने पर करतार सिंह ने सोनू को उठाकर जबरदस्ती गधी पर बिठा दिया और राजन ने उसे डोरी की मदद से बान्ध दिया।

फिर करतार सिंह ने गधी के गले में पड़ी डोरी को पकड़ा और एक जलती चिता के इर्द-गिर्द फेरे लगवाने लगा।

क्रान्ति और सिंगही कुढ़ तो रहे थे लेकिन वो विरोध करने की स्थिति में क़तई नहीं थे।

"बैन्ड बजाओ भई...!"

आशीर्वाद के कहते ही बैन्ड बजने लगा।

आशीर्वाद, राजन, चांदनी, माधवी, मोन्टी, सोफिया, मुंशी इत्यादि डांस करने लगे।

केशव ने सिंगही के गले में हाथ डाला और बोला—"हम दोनों तुम्हारे यान से तुम्हारे हैड क्वार्टर चलेंगे। तुम्हारे जिस्म में एक रिमोट बम फिट किया जायेगा। पहले तुम्हें वो खतरनाक केमिकल नष्ट करना होगा, जिसने मच्छरों को इतना खतरनाक बना दिया था कि सैंकड़ों निर्दोष लोगों की जान ले ली—उनके वजूद तक को ही नष्ट कर दिया। फिर मैं एक शक्तिशाली बम से तुम्हारे आदमियों समेत तुम्हारे हैड क्वार्टर को उड़ा दूंगा। फिर तुम्हें वापिस लौटकर क्रान्ति और सोनू के साथ फांसी के फन्दे पर झूलना है...।"

—समाप्त—

"तू शेरनी से ज्यादा शक्तिशाली, नागिन से ज्यादा खतरनाक और लोमड़ी से ज्यादा बुद्धिमान है सोफिया ! लेकिन तेरी कमजोरी ये थी कि तू भारतीय नारी थी, जो कि अपने पति और सन्तान के लिये कोई भी बलिदान कर सकती है । तेरी इसी कमजोरी का फायदा उठाया मैंने और आज तू किसी कठपुतली की तरह मेरी उंगलियों के इशारे पर नाचने के लिये विवश है...मजबूर है ! मैं समझता हूं कि तू मेरे गले में 'वर-माला' डालकर मेरे साथ सात फेरे लेने से इन्कार करने की हालत में नहीं है, अभी बोल कि मेरे साथ शादी करेगी कि नहीं ?"

"हां-मैं तेरे साथ शादी करूंगी-लेकिन मेरी एक शर्त है । मैं तेरे साथ श्मशान में ही सात फेरे लूंगी । क्या तुझे मेरी शर्त कबूल है ?"





₹ 50

धीरज पॉकेट बुक्स